“અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્” ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૮૨

કાવ્યપ્રકાશ ભાગ - ૨

: દ્રવ્ય સહાયક :

શ્રી પ્રેમ-ભુવનભાનુસૂરિજી સમુદાયના દીક્ષાદાનેશ્વરી
પૂ. આ. શ્રી ગુણરત્નસૂરીશ્વરજી મ.સા. ના શિષ્ય
પૂ. શ્રી જિતરત્નવિજયજી મ. ની પ્રેરણાથી
શ્રી સુમતીનાથ શ્વે. મૂ. જૈન સંઘ, મેમનગર
જ્ઞાનખાતામાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૭૧ ઈ. ૨૦૧૫

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્વાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રુમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**374**
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રુમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**238**
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	**194**
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**192**
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	**254**
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**238**
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	**114**
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	**910**
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	**436**
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**336**
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**230**
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	**322**
089	એન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	**114**
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	**560**

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची।
यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
200	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक – पुरातत्त्वाचार्य, जिन विजय मुनि

[सम्मान्य संचालक - राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान]

★

राजस्थानराज्यसमायोजित

जैसलमेरज्ञानभण्डार - ग्रन्थोद्धारग्रन्थावलि - क्रमांक २

भट्टसोमेश्वरविरचित काव्यादर्शसंकेतसमन्वित
मम्मटाचार्यकृत

काव्यप्रकाश

★

द्वितीय भाग

[प्रस्तावना, विविध पाठभेद, परिशिष्टादि]

★

प्र का श क
राजस्थानराज्यसंस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
(राजस्थान ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टीट्यूट)
जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्यद्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

❀

प्रधान संपादक

पुरातत्त्वाचार्य, जिन विजय मुनि

[ऑनररी मेंबर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य-भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य सभा, अहमदाबाद; विश्वेश्वरानन्द वैदिकशोध संस्थान, होशियारपुर, पञ्जाब; निर्वृत्त-सम्मान्य नियामक (ऑनररी डायरेक्टर) - भारतीय विद्याभवन, बंबई; प्रधान संपादक-गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर ग्रन्थावली; भारतीय विद्या ग्रन्थावली; सिंघी जैन ग्रन्थमाला; जैन साहित्यसंशोधक ग्रन्थावली; - इत्यादि, इत्यादि।

ग्रन्थांक ४७

भट्ट सोमेश्वरविरचित - काव्यादर्शसंकेत - संयुक्त

मम्मटाचार्यकृत

का व्य प्र का श

द्वितीय भाग

[विस्तृत प्रस्तावना-पाठभेद-परिशिष्टादि]

प्रकाशक

राजस्थानराज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(राजस्थान ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टीट्यूट)

जो ध पु र (रा ज स्था न)

★

विक्रमाब्द २०१५
राष्ट्रीय शकाब्द १८८०

राज्यनियमानुसार सर्वाधिकार सुरक्षित

खिस्ताब्द
१९५९

भट्टसोमेश्वरविरचित - काव्यादर्शसंकेत - समवेत

मम्मटाचार्यकृत

का व्य प्र का श

[विस्तृतप्रस्तावना, विविधपाठभेद, बहुविधपरिशिष्टादि समन्वित]

संपादनकर्ता

प्रा. रसिकलाल छोटालाल परीख

[अध्यक्ष - भो० जे० उच्चतर अध्ययन - संशोधन प्रतिष्ठान, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद]

•

द्वितीय भाग

[प्रस्तावना, विविध पाठभेद, परिशिष्टादि]

•

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(राजस्थान ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टीट्यूट)

जोधपुर (राजस्थान)

•

विक्रमाब्द २०१५
राष्ट्रीयशकाब्द १८८०

[प्रथमावृत्ति - प्रतिसंख्या ७५०]

खिस्ताब्द
१९५९

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

●

प्रधान संपादक

मुनि जिनविजय द्वारा संपादित ग्रन्थ

१ त्रिपुराभारती लघुस्तव – महाकवि लघुपण्डित कृत
२ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा कृत
३ करुणामृतप्रपा – कवि सोमेश्वर ठक्कुर कृत
४ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह कृत
५ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र कृत
६ मुग्धावबोधादि औक्तिक संग्रह – अनेकविद्वत्कृतिरूप
७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कृत
८ रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थसंग्रह – ठक्कुर फेरू रचित
९ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दरगणिकृत
१० राठोडांरी वंशावलि – राजस्थानी ऐतिहासिक भाषारचना
११ राजस्थानी सुभाषितसंग्रह
१२ हमीर महाकाव्य – नयचन्द्रकविकृत (सटीक एवं सटिप्पण)

* * *

RĀJASTHĀN PURĀTANA GRANTHAMĀLĀ

General Editor - Āchārya Jina vijaya Muni, Purātattvāchārya
[Honorary Director, Rājasthāna Prāchya Vidyā Pratiṣṭhāna, JODHPUR]

KĀVYAPRAKĀŚA
OF
MAMMAṬA
WITH
THE SAṀKETA NAMED KĀVYĀDARŚA
OF
SOMEŚVARA BHAṬṬA

Part Second
[Introduction, Appendixes, Indexes etc.]

Published By

The Rājasthāna Prāchya Vidyā Pratiṣṭhāna
(The Rajasthan Oriental Research Institute)
Established by the Government of Rajasthan
JODHPUR (**Rajasthan**)

Rājasthāna Purātana Granthamālā

Published by the Government of Rājasthāna

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa, Old Rājasthānī-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rājasthān in particular

★

General Editor

Achārya Jina Vijaya Muni, Purātattvāchārya

Honorary Member of the German Oriental Society, (Germany); Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; and Viśveśvrananda Vaidic Reasearch Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujarāt Sāhitya Sabhā, Ahmedabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay; General Editor, Gujarat Purātattva Mandira Granthāvalī; Bhāratiya Vidyā Series; Singhi Jain Series; etc. etc.

★

No. 47

KĀVYAPRAKĀŚA

OF

MAMMAṬA

WITH

THE SAṀKETA NAMED KĀVYĀDARŚ

OF

SOMEŚVARA BHAṬṬA

PART SECOND

[Introduction, Appendixes, Indexes etc.]

●

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

by

The Director, Rājasthāna Prāchya Vidyā Pratiṣṭhāna

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2015]

All Rights Reserved

[1959 A. D.

KĀVYAPRAKĀŚA

OF

MAMMAṬA

WITH

THE SAṀKETA NAMED KĀVYĀDARŚA

OF

SOMEŚVARA BHAṬṬA

(Son of Devaka of the Bhāradvāja family)

EDITED

with introduction, appendixes containing variant readings, and indexes of verses, names of author's works, of important words etc. etc.

BY

Prof. RASIKLAL C. PARIKH

Director B. J. Institute of Learning and Research,
Gujarat Vidyasabha, Ahmedabad.
[Postgraduate teacher of Sanskrit & Ancient Indian Culture of the Gujarat University]

●

PART SECOND

(Introduction, Appendixes, Indexes etc.)

●

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

BY

The Director, Rājasthāna Prāchya Vidyā Pratiṣṭhāna
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2015] [1959 A. D.

Works by Prof. R. C. Parikh

VAIDIKA PĀṬHĀVALI

(a selection from the Vedas and the Brāhmaṇas
with Gujarati translation and notes)

KĀVYAPAKAŚĀ (ULLASAS 1 to 6)

(Gujarati translation jointly with Prof. R. V. Pathak)
Published by Gujarat Vidya Pith, Ahmedabad

KĀVYĀNUŚĀSANA OF HEMACANDRA

Vols. I & II

(Critically edited with an introduction in English on the cultural history of Gujarat and life and works of Hemacandra)

TATTVOPAPLAVASIMHA OF JAYARĀŚI BHAṬṬA

(Edited with an introduction in Eglish jointly with Pandit Sukhalalji)
Published in the Gaekwad Oriental Series, Baroda

KĀVYAPRAKĀŚAKHAṆḌANA OF SIDDHICHANDRA

(Critically edited with an introduction in English)
Published in Singhi Jain Series.

NṚTYARATNAKOŚA OF RĀNĀ ŚRĪ KUMBHA

(Edited with introduction in English jointly with Prof. Dr. Priyabala Shah)
Published in Rājasthān Purātana Granthamālā, Jaipur.

CONTENTS

INTRODUCTION 1 to 110

1 General remarks 1

Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa- Saṃketa 1

2 Critical notice of the manuscripts 2–6

Kāvyaprakāśa 2–4

Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa-Saṃketa 4–6

3 Authorship, Date etc. 6–21

The double authorship of Kāvyaprakāśa 6–7

The date of Mammaṭa 7

The date of Someśvara 8–20

(i) The date of Māṇikyacandra's Saṃketa 12–14

(ii) Rucaka or Ruyyaka 14–15

(iii) Hemacandra 15–19

(iv) Conclusion 19

(v) Someśvara's native place 19–20

(vi) Someśvara's other works 20

(vii) Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa Saṃketa 20–21

Appendix A 23–86

Parallelisms in the Saṃketas of Someśvara and Māṇikyacandra.

Appendix B 87–110

Parallelisms in the Saṃketas of Rucaka and Someśvara

काव्यादर्शनामसंकेतसमेतः काव्यप्रकाशः १–३५२

प्रथम उल्लासः—काव्यस्य प्रयोजनकारणस्वरूपविशेषनिर्णयो नाम १—१०

द्वितीय उल्लासः—शब्दनिर्णयो नाम ११—३०

तृतीय उल्लासः—अर्थव्यञ्जकतानिर्णयो नाम ३१—३५

चतुर्थ उल्लासः—ध्वनिनिर्णयो नाम ३६—८३

पञ्चम उल्लासः—ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्यसङ्कीर्णभेदनिर्णयो नाम ८४-१०९

षष्ठ उल्लासः—शब्दार्थचित्रनिरूपणं नाम ११०-१११

सप्तम उल्लासः—दोषदर्शनो नाम ११२-१९५

अष्टम उल्लासः—गुणालंकारभेदनियतगुणनिर्णयो नाम १९६-२२२

नवम उल्लासः—शब्दालङ्कारनिर्णयो नाम २२३-२५२

दशम उल्लासः—अर्थालङ्कारनिर्णयो नाम २५३-३५२

परिशिष्टानि

I	काव्यप्रकाशवाचनायाः पाठान्तराणि	1–26
II	काव्यादर्शकाव्यप्रकाशसंकेतस्य पाठान्तराणि	27–34
III	काव्यप्रकाशस्य A संज्ञित-ताडपत्रादर्शस्य टिप्पणानि	35–45
IV	काव्यादर्शकाव्यप्रकाशसंकेतस्य A. B. संज्ञितादर्शयोः पार्श्वगतानि टिप्पणानि	46–47
V	काव्यप्रकाशस्थविषयाणामकाराद्यनुक्रमः	48–52
VI	काव्यप्रकाशोदाहृतपद्यानामकाराद्यनुक्रमः	53–65
VII	काव्यप्रकाशोदाहृतप्राकृतपद्यानां संस्कृतच्छायासहितानामकाराद्यनुक्रमः	66–70
VIII	संकेते प्रमाणत्वेनोदाहृतानां संदर्भाणामकाराद्यनुक्रमणी	71–75
IX	संकेतोदाहृतपद्यानामकाराद्यनुक्रमणी	76–81
X	संकेतोदाहृतानां प्राकृतपद्यानां संस्कृतच्छायासहितानामकाराद्यनुक्रमः	82
XI	संकेतस्थविशिष्टानां पदानामकाराद्यनुक्रमणी	83–88
XII	संकेते निर्दिष्टानां ग्रन्थानामकाराद्यनुक्रमणी	89
XIII	संकेते निर्दिष्टानां वादिनां ग्रन्थकृतां च अकाराद्यनुक्रमणी	90–91
XIV	संकेतावतरणानां संपादकेन समुपलब्धानां मूलग्रन्थानामकाराद्यनुक्रमणी	92
	Additons and Corrections	93–94

Abbreviations of the Names of Works and Authors

अ. को. —अमरकोश सं. वामनाचार्य झळकीकर, आवृत्ति, ५ मुंबई १८९६
अ. च. —अर्जुनचरित
अ. भा. —अभिनवभारती Vol I Second Edition, Gaekwad Oriental Series, Baroda, 1956
अ. रा. —अनर्घराघव आवृत्ति ३, काव्यमाला सिरिझ, मुंबई १९०८
अ. वृ. मा. —अभिधावृत्तिमातृका निर्णयसागर, मुंबई १९१६
अ. श. —अमरुशतक आवृत्ति २, काव्यमाला, मुंबई १९२९
अ. शा. —अभिज्ञानशाकुन्तल आवृत्ति ८, निर्णयसागर, मुंबई १९२२
अ. स. —अलङ्कारसर्वस्व आवृत्ति २, त्रिवेन्द्रम संस्कृत सिरिझ १९२६
औ. वि. च. —औचित्यविचारचर्चा गुच्छक १ (पृ. ११५-१६०) काव्यमाला, आवृत्ति ३, निर्णयसागर, मुंबई १९२९
उ. का. सा. सं —उद्भटकाव्यालङ्कारसारसंग्रह Gaekwad Oriental Series, Baroda, 1931 with विवृति (तिलक)
उ. लं. ल. वृ. —उद्भटालङ्कारलघुवृत्ति निर्णयसागर, मुंबई १९१५
क. म. —कर्पूरमञ्जरी संस्करण ४ निर्णयसागर, मुंबई १९४९
का. —कादम्बरी आवृत्ति ७, निर्णयसागर, मुंबई १९२८
का. द. —काव्यादर्श प्रकाशक महेरचंद्र लक्ष्मणदास, लाहोर १९२५
काव्यकल्पलतार्थोत्पत्तिस्तबकोद्धार (हस्तलिखित) मुनिपुण्यविजय
का. मी. —काव्यमीमांसा आवृत्ति ३, Gaekwad Oriental Series, Baroda, 1934
काव्यादर्श का. प्र. संकेत—काव्यादर्शकाव्यप्रकाशसंकेत
काव्यालङ्कारसारसंग्रह—उद्भट, Gaekwad Oriental Series, 1931
काव्यालङ्कार—भामह, चौखम्बा संस्कृत सिरिझ, बनारस, १९२८
काव्यालङ्कार—रुद्रट, आवृत्ति ३ काव्यमाला, मुंबई. १९२८
काव्यालङ्कारसूत्र—वामन, काव्यमाला, आवृत्ति ३, मुंबई १९२६
का. सं. —काठकसंहिता
कि. किरातार्जुनीय आवृत्ति ६ निर्णयसागर, मुंबई शा. १८२९
कुन्तक
कु. म. —कुट्टनीमत, गुजराती न्युझ प्रिन्टींग प्रेस, मुंबई १९२४
कु. सं. —कुमारसंभव, संस्करण १४, निर्णयसागर, मुंबई १९५५
गा. स. —गाथासप्तशती काव्यमाला २१, निर्णयसागर, मुंबई १८८९
चन्द्रचूडचरित
जै. पु. प्र. सं. —जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह प्रथमभाग सिंघी जैन ग्रंथ माला मुंबई १९४३
जैमिनि
ज्ञानदर्शनचारित्रसंवादरूपवीरस्तवन, कर्ता विजयलक्ष्मीसूरि (हस्तलिखित) मुनिपुण्यविजय
तं. वा. —तंत्रवार्तिक आनन्दाश्रम संस्कृत सिरिझ, पूना
तिलक
द. रू. अ. —दशरूपकावलोक आवृत्ति ५, निर्णयसागर, मुंबई १९४१
दे.. श. —देवीशतक
धनिक

ध्व. —ध्वन्यालोक, चौखम्बा संस्कृत सिरिझ, बनारस, १९४०
न. सा. —नवसाहसाङ्कचरित प्रथमभाग, बॉम्बे संस्कृत सिरिझ नं. ५३, मुंबई १८९५
ना. —नागानन्द आ. ५, श्रीबालमनोरमा सिरिझ मद्रास, १९४८
ना. शा. —नाट्यशास्त्र (अ. १-२७ Gaekwad Oriental Series) २८-३६ Chaukhamba Sanskrit Series.
प. प्रा. —पद्मप्राभृतक चतुर्भाणी १, मद्रास
पा. अष्टा. —पाणिनीय अष्टाध्यायी
पा. म. भा. —पातञ्जलमहाभाष्य
पा. शि. —पाणिनीय शिक्षा
प्रि. द. —प्रियदर्शिका edited by Prof. Kangle, Publisher C. M. Parikh, Ahmedabad, 1928
ब्र. पु. —ब्रह्माण्डपुराण
बा. रा. —बालरामायण सं. पंडित गोविंददेवशास्त्री, बनारस, १८६९
बि. का. —बिह्लणकाव्य (पृ. १४५-१६९), काव्यमाला. गु. १३ आ २, १९१६
भ. का. —भट्टिकाव्य, सं. कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी बॉम्बे संस्कृत सिरिझ, १८९८
भट्ट कुमारिल
भट्ट तोत
भर्तृहरि
भ. वै. श. —भर्तृहरि वैराग्यशतक, वाणीविलास प्रेस, मद्रास. १९१८
भ. श. —भल्लटशतक काव्यमाला गु. ४, पृ. १४०-१५६, १८८७
भ. शृं. श. —भर्तृहरि शृङ्गारशतक
भा. का. लं. भामह काव्यालङ्कार चौखम्बा संस्कृत सिरिझ बनारस, १९२८
भास
म. च. —महावीरचरित आवृत्ति ३, निर्णयसागर, मुंबई १९१०
म. भा. द्रो. प. —महाभारत द्रोणपर्व
,, शां. प. — ,, शांतिपर्व } कुम्भकोणम्
,, स्त्री. प. — ,, स्त्रीपर्व
मा. मा. —मालतीमाधव edited by R. G. Bhandarkar, Bombay Sanskrit Series 1905.
आ. ३, निर्णयसागर, १९१५
मा. श्रौ. सू. —मानवश्रौतसूत्र
मी. द. —मीमांसादर्शन
मे. दू. —मेघदूत आ. ४, निर्णयसागर, शा. १८१३
र. —रत्नावली. संस्करण २, निर्णयसागर, मुंबई १९१८
र. वं. —रघुवंश आवृत्ति ७, निर्णयसागर १९२९
रा. —रामायण संस्करण ४, निर्णयसागर १९३०
रु. का. लं. —रुद्रटकाव्यालङ्कार आवृत्ति ३, काव्यमाला, मुंबई १९२८
व. जी. —वक्रोक्तिजीवित आ. २, कलकत्ता ओरिअन्टल सिरिझ, १९२८
वा. का. लं. सू. —वामनकाव्यालंकारसूत्र आवृत्ति ३, काव्यमाला, मुंबई १९२६
वि. उ. or विक्र —विक्रमोर्वशीय आवृत्ति ६, निर्णयसागर, मुंबई १९२५
वि. शा. भं. —विद्धशालभञ्जिका कलकत्ता ओ. सिरिझ, नं ३०, १९४३
वे. सं. —वेणीसंहार आवृत्ति ८, निर्णयसागर मुंबई १९३५

व्य. वि. — व्यक्तिविवेक त्रिवेन्द्रम संस्कृत सीरिझ १९०९

शि. व. — शिशुपालवध संस्करण ९, निर्णयसागर १९२७

श्री जेसलमेरुदुर्गस्थ जैनताडपत्रीय ग्रंथभंडारसूचीपत्र, सं. मुनिश्री पुण्यविजयजी, जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स, मुंबई (मुद्रयमाण)

श्लो. वा. — श्लोकवार्तिक चौखम्बा संस्कृत सीरिझ, बनारस, १८९८

सु. — सुभाषितावलि बॉम्बे सं. सीरिझ. १८९६

सु. र. भा. — सुभाषितरत्नभाण्डागार संस्करण ५, १९१९, निर्णयसागर, मुंबई

सू. श. — सूर्यशतक आ. २, काव्यमाला १९००, निर्णयसागर, मुंबई

ह. च. — हर्षचरित संस्करण ५, निर्णयसागर, मुंबई १९२५

हनु. — हनुमन्नाटक

A. C. Alaṁkāracūḍāmaṇi of Kāvyānuśāsana (see K. S.)

A. S. Amaruśataka – with Arjunavarmadeva's Commentary – Kāvyamālā Series, No. 18. 2nd edition, 1929.

A. S. Alaṃkārasarvasva of Rucaka – Trivendrum Sanskrit Series, 2nd edition, 1926.

Dhvanyāloka Kāvyamālā Series, 2nd edition, 1911 & Caukhambā Sanskrit Series, 1940.

D. C. G. C. M. Descriptive Catalogue of the Government Collections of Manuscripts, Vol. XII, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1937.

H. C. Harṣacarita of Bāṇa with a Commentary of Śankara Kāvyamālā Series, 1925, Nirnayasagar Press, Bombay.

History of Classical Sanskrit Literature – by Krishnamachari, Madras, 1937.

Historical Inscriptions of Gujarat Vol. II edited by Acharya Girijashankar Vallabhaji.

H. S. P. History of Sanskrit Poetics – by M. M. Kane – 1951

Introduction to Surathotsava – Kāvyamālā Series, 1902, Nirnayasagar Press, Bombay.

J. O. R. Journal of Oriental Research, vol. XIII, Madras, 1939.

K. P. Kāvyaprakāśa.

K. D. K. P. S. Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa Saṃketa.

K. S. Kāvyānuśāsana of Hemacandra, Vol. I, edited by Prof. R. C, Parikh. Mahāvira Jain Vidyālaya, Bombay, 1938.

K. M. Kāvyamīmāṃsā of Rājaśekhara - Gaekwad Oriental Series, 3rd edition, 1934.

K. P. S. Kāvyaprakāśa with Māṇikya's Saṃketa - edited by R. Shamashastry, Sanskrit Series No. 60, University of Mysore, 1922.

Kāvyaprakāśa with Māṇikya's Saṃketa, edited by M. M. Abhyankar Shastri, Anandāśrama Sanskrit Series.

Kāvyaprakāśa with Maheśvara's Ādarśa - (with an Introduction by S. K. De) edited by Amarendramohan & Upendramohan, Calcutta Sanskrit Series No. VI, 1936.

Kāvyaprakāśa with Rucaka's Saṃketa edited by Śivaprasāda Bhattāchārya - Calcutta Oriental Journal, Vol. II. No. 6, March 1935, Vol. II, No. 12, Sept. 1935.

Kāvyaprakāśa edited by Jhalakikar, 4th edition, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1921.

Kāvyālaṃkārasārasaṃgraha - by K. S. Ramaswami Shastri, Gaekwad Oriental Series, 1931.

L. C. V- Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla by B. J. Sandesara. Singhi Jain Series, Bombay 1953.

Sarasvatīkaṇṭhābharaṇa - 2nd edition 1934, Nirnayasagar Press, Bombay.

S. P. Sanskrit Poetics - Vol. I, by S. K. De, 1923.

Śṛṅgāraprakaśa - by V. Raghavan, Karnatak Press, Bombay.

प्रधान संपादकीय किंचित् वक्तव्य ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

द्वारा प्रकाशित राजस्थान पुरातन ग्रन्थ मालाका, यह ४७ वां ग्रन्थ, मम्मट महाकविकृत काव्यप्रकाश के द्वितीय भागके रूपमें, विद्वानोंके सम्मुख उपस्थित हो रहा है। इसके पूर्वके ग्रन्थांक ४६ के 'किंचित् प्रास्ताविक' में हमने इस के विषयमें जैसा सूचित किया है, यह भाग उक्त ग्रन्थका विस्तृत प्रस्तावना एवं परिशिष्टादि संग्रहात्मक स्वरूप है। इसके अवलोकनसे विज्ञ अभ्यासियोंको प्रतीत होगा कि संपादक विद्वान् श्रीयुत परिखने इसके संपादन कार्यमें कितना परिश्रम उठाया है और किस प्रकारकी ग्रन्थसंबद्ध मूल्यवान सामग्रीका संकलन किया है। इसके लिये हम यहां पुनः हमारे परमप्रीतिपात्र और चिरमित्र स्वरूप इनके प्रति अपना हार्दिक कृतज्ञ भाव प्रकट करना चाहते हैं।

इसके पूर्व ग्रन्थमें हमने निर्दिष्ट किया ही है कि राजस्थान सरकारने, जैसलमेरके प्राचीन ज्ञान भंडारमें, हमारे राष्ट्रीय साहित्यके जो अमूल्य ग्रन्थरत्न छिपे पडे हैं उनको प्रकाशमें लानेकी एक विशिष्ट योजना स्वीकार की है और तदनुसार, हमने राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके अन्तर्गत **'जैसलमेर ज्ञानभंडार ग्रन्थोद्धार ग्रन्थमाला'** नामकी एक पृथक् श्रेणि (सीरीझ) प्रकट करना प्रारंभ किया है। उसीके द्वितीय अंकके रूपमें यह पुस्तक प्रकट हो रही है।

इस पुस्तकमें, मूल प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिके ४ पन्नोंके फोटोब्लाक बनवाकर उनके चित्र दिये जा रहे हैं जिससे विद्वानोंको उसकी लिपि आदिका यथेष्ट दर्शन हो सकेगा।

विशेष आभार प्रदर्शन

हम यहां पर, जैसलमेर के ज्ञानभण्डारविषयक ग्रन्थोद्धार का सुमहत् आयोजन करने निमित्त, राजस्थान राज्य के प्रेरक प्राणस्वरूप, वर्तमान मुख्य मंत्री महोदय, श्री श्री मोहन लालजी सुखाडिया तथा मुख्य सचिव श्री भगवन्त सिंहजी मेहता और शिक्षा-सचिव श्री विष्णुदत्तजी शर्मा के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रदर्शित करना चाहते हैं, जिनके राज्यकल्याणकारी सद्विचारों और सत्प्रयासों के परिणामस्वरूप, राजस्थान के सामाजिक एवं सांस्कारिक जीवन में नूतन उत्साह, नूतन प्रेरणा और नूतन संगठन का प्रसार हो रहा है और साथ में राजस्थान की प्राचीन संस्कृति के संरक्षण और समुद्धार के निमित्त भी **राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान** द्वारा प्रस्तुत 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के प्रकाशन जैसी देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करने वाली साहित्यिक प्रवृत्तियों का विकास भी प्रशंसनीय रूप में वृद्धि प्राप्त कर रहा है।

११ जनवरी, १९६०
राजस्थान प्राच्यविद्या
प्रतिष्ठान, जोधपुर

—मुनि जिनविजय

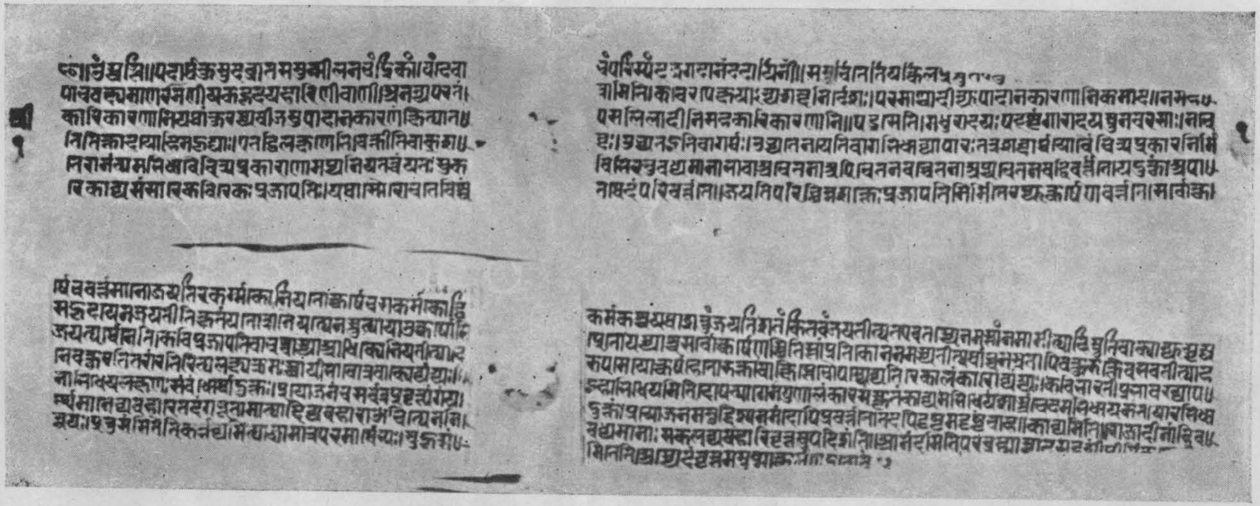

जेसलमेरस्थित-जैनग्रन्थभण्डारगत
ताडपत्रात्मक प्राचीनतम पुस्तकके आदि २ पत्र।

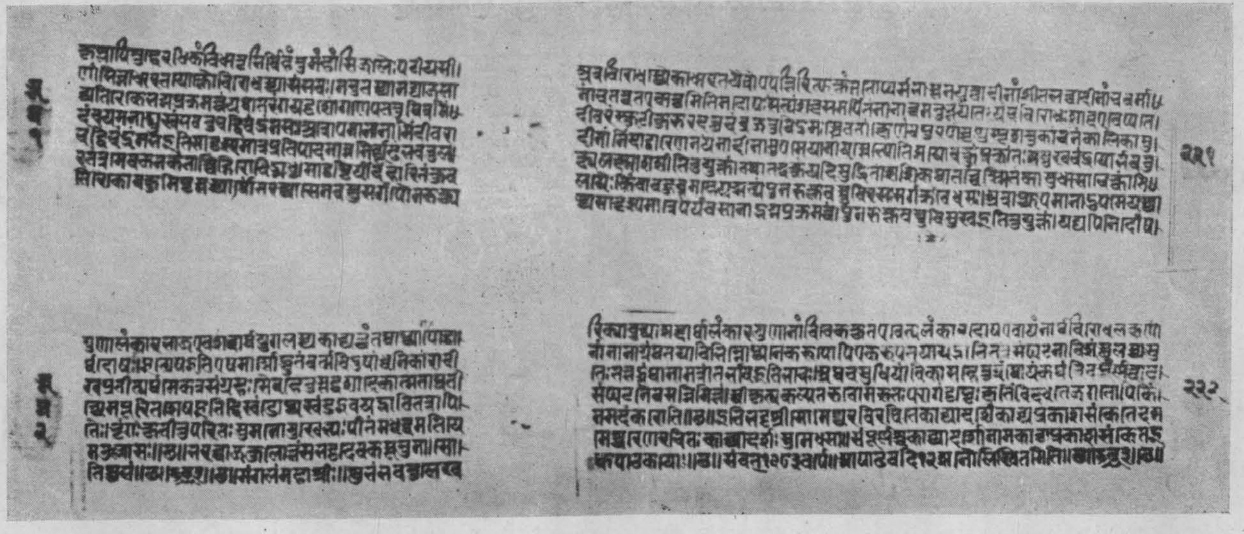

जेसलमेरस्थित-जैनग्रन्थभण्डारगत
ताडपत्रात्मक प्राचीनतम पुस्तकके अंतिम २ पत्र।

INTRODUCTION

General remarks

This work on Kāvyaprakāśa brings to light the hitherto unpublished commentary of Bhaṭṭa Someśvara, known by the name of Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa-saṁketa, one of the earliest commentaries on Kāvyaprakāśa. For the editing of Kāvyaprakāśa itself, there is new material in the form of two very old manuscripts, one on palm-leaf and the other on paper, none of them, probably used before. Various readings from the edition of Kāvyaprakāśa with Māṇikyacandra's Saṁketa (1921 A. S. S. Poona) and its fourth edition with Jhalkikara's commentary (1921 B. O. R. I. Poona), have also been noted. These are respectively named A, B, C and D.

Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa-saṁketa

The text of Kāvyādarśa Kāvyaprakāśa-saṃketa is based upon a copy of two palm-leaf Mss. belonging to the Baḍā-Bhaṇḍāra of Jesalmere in Rajasthan. This copy which belongs to the mss. collection of Gujarat Vidya Sabha of Ahmedabad was prepared by Pandit Keshavaram Shastri who was deputed by the institution for the purpose of inspecting the Mss. of the Bhandaras under the guidance of Acharya Shri Jinavijaya Muni. One of the palm-leaf Mss. is complete, the other comes upto the seventh Ullāsa. Both these palm-leaf Mss. have been noted by C. D. Dalal in his Catalogue of Manuscripts in the Jain Bhandars at Jesalmere (p. 43 and p. 12 respectively). These have been described by Muni Shri Punyavijayaji also in his श्री जेसलमेरुदुर्गस्थ-जैनताडपत्रीय-ग्रंथभण्डार-सूची to be published shortly by the Jain Śvetāmbar Conference, Bombay. There is a very recent paper ms. of this work in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, also. This paper ms. seems to be a copy of the palm-leaf ms. No. 346 of the Baḍā-Bhaṇḍāra. It is described in the Descriptive Catalogue of the Government Collections of Mss. Vol. XII pp. 77–78. These Mss. are called A. B. C. respectively.[1]

---

1 There is another palm-leaf Ms. of the Saṃketa in one of the Bhandars at Patan It is too worn out to be handled.

Critical notice of the Manuscripts

Kāvyaprakāśa

Description of the manuscripts:

A. Source: Baḍā Bhaṇḍāra of Jesalmere; bearing the number 183.
Material: Palm-leaf.
Number of leaves: 178: 1a and 178b unwritten.
Length: 15″; breadth: $1\frac{1}{4}''$ to $1\frac{3}{4}''$.
Lines per page: 2 to 4. Each line is made up of two parts of about 5″ and 7″ respectively. Each part contains about 25 and 27 letters respectively.
Script: Devanāgarī.
Date: Saṁvat 1215, Aśvina śudi 14, Budha = Wednesday October 8 1158 A. D.[1], in the reign of Kumārapāla.
Place: Aṇahila-pāṭaka.
Name of the scribe or patron: Paṇḍita Śri Lakṣmīdhara.

In the middle of the wooden puṃṭhi काव्यप्रकाशालङ्कारः. Begins: ९० ॥ ॐ नमो गणपतये ॥ ग्रन्थारम्भे etc.

Ends: संपूर्णमिदं काव्यलक्षणं काव्यप्रकाशे अर्थालंकारनिर्णयो नाम दशम उल्लासः ।, ६ ❀ ३ ॥ इत्येष मार्गो विदुषां etc. to हेतुः ॥ छ ॥ ६ ❀ ३ ॥ समाप्तोयं काव्यप्रकाशः काव्यलक्षणं ॥ कृती राजानकमम्मटालकयोः ॥ छ ॥ ६ ❀ ३ ॥ छ ॥ संवत् १२१५ अश्विनशुदि १४ बुधे अद्येह श्रीमदणहिलपाटके समस्तराजावलीविराजित-महाजाधिराजपरमेश्वर-परमभट्टारक-उमापतिवरलब्धप्रसाद-प्रौढप्रताप-निजभुजविक्रमरणाङ्गणविनिर्जितशाकम्भरी-भूपाल-श्रीकुमारपालदेवकल्याणविजयराज्ये पंडितलक्ष्मीधरेण पुस्तकं लिखापितमिति ।[2]

---

1 I am thankful to Prof. Harihar Bhatta of the B. J. Institute, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad, for finding out this and subsequent equivalent dates of the Christian era.

2 On this Dr. P. K. Gode remarks: "If the word "लिखापितम्" is taken in its strict sense the statement would mean that Paṇḍita Lakṣmīdhara got this copy prepared for him. If, however, लिखापितम् be interpreted to mean लिखितम्, Lakṣmīdhara himself becomes the scribe" (p. 53). On the strength of the identity of the passage श्रीमदणहिलपाटके to विजयराज्ये in the above colophon, with the one found in the inscription of V. S. 1213 (= A. D. 1156) in the temple of Pārśvanātha in Naḍḍula = Nadol whose scribe was Paṇḍita Mahīpāla, Dr. Gode says, "Can we suppose that Paṇḍita Mahipāla's sentence quoted above is reproduced by Paṇḍita Lākṣmīdhara in the Kāvyaprakāśa colophon? If Paṇḍita Lakṣmīdhara is supposed to be a different person from the copyist of the Kāvyaprakāśa Ms., it may be possible to suggest that Kāyastha Mahīpāla may have copied the Ms. of the Kāvyaprakāśa for Paṇḍita Lakṣmīdhara and in doing so he only repeated a sentence from his inscription of A. D. 1156 two years later." Dr. Gode, however, adds that more evidence is needed for this inference and suggests as an alternative inference that Paṇḍita Lakṣmīdhara had before him in 1158 A. D. the earlier Nadol grant of 1156 A. D. (J. O. R. Madras: Vol. XIII pp. 52–53).

B. Source: Gujerat Vidya Sabha.
Material: Paper.
Number of leaves: 134.
Length: 8·5″, breadth 3″.
Lines per page: about 7.
Letters per line: about 37.
Margin on each side: 1″. Upper margin and lower margin: 7″ each.
Script: Devanāgarī; handwriting beautiful.
Date: Śāke 1211. Khara-saṁvatsara, Jyeṣṭha Śukla 5, Guru.
= Thursday 26th May, 1289 A. D.[1]
Name of the scribe: Lakṣmaṇasūri, son of Śrī Viṣṇubhaṭṭa.
The Ms. came into the possession of Dayāsāgaragaṇi in Saṃvat 1536 (1480 A. D.) when in Ahmedabad.

Folio 1a: in the middle ॥ काव्यप्रकाशः ॥
1b: begins: श्री गणाधिपतये नमः । ग्रंथारंभे विघ्नविघाताय etc.

Ends: 134a. न पृथक् प्रतिपादनमर्हन्तीति संपूर्णमिदं काव्यलक्षणं ॥ २ ॥ इति
॥ इति श्रीकाव्यप्रकाशेऽर्थालंकारनिर्णयो नाम दशमोल्लासः ॥
इत्येष मार्गो etc ॥ समाप्तोयं काव्यप्रकाशः ॥
Colophon: शीके चन्द्रविलोचने (illegible) शशिभिः क्लृप्ते खरे वत्सरे
ज्येष्ठे मासि सिते दले गुरुयुते पंचम्यभिख्ये तिथौ ।
साधूनां परितोषपोषविधये श्रीविष्णुभट्टात्मजे—
—नायं लक्ष्मणसूरिणा विलिखितः काव्यप्रकाशः स्वयं ॥
शुभमस्तु ॥ In a different, bolder hand: सं. १५३६ वर्षे श्री अहम्मदावादनगरे वा० दयासागरगणिभिः परिगृहीता प्रतिरियं ।

These would be interesting suggestions if they were not based on the identity of a passage which is of a conventional nature and to be found with slight variations in other colophons and inscriptions of Kumārapāla. For example, compare: संवत् १२०८ ज्येष्ठशुदि ६ रवौ अद्येह श्रीमदणहिलपाटके समस्तराजावलीसमलंकृत-महाराजाधिराज-उमापतिवरलब्धप्रसाद-प्रौढप्रताप-निजभुजविनिर्जितरणांगणोपेतशाकंभरीभूपाल-श्रीमत्कुमारपालदेवराज्ये (p. 106. जै. पु. प्र. सं. प्रथमभाग सिं. जै. ग्र. मा.).

In volume II of Historical Inscriptions of Gujarat edited by Acharya Girijasankara Vallabhaji a similar reference would be found on p. 14 with the addition श्रीअवन्तीनाथ who was subjugated by Kumārapāla by that time (V. S. 1220).

1 I am obliged to Prof. Harihara Bhatta for the following note:. "शाके चन्द्रविलोचने x शशिभिः, खरसंवत्सर, ज्येष्ठशुक्लपंचमी, गुरुवार. x stands for a letter, which is not legible; it may by न्दु or षु. Thus the readings may be I चन्द्र[1]विलो[3]चनेन्दु[2]शशि[1]भिः or II चन्द्र[1]विलो[2]चनेषु[5]शशि[1]भिः।

Reading I gives शक ११२१ or १२११ according as the digits are taken from right to left or left to right-both of which dates are earlier than the date mentioned in the manuscript.

Now ज्येष्ठशुक्लपंचमी of शक ११२१ was शनिवार, रविवार or सोमवार, most probably रविवार, but it was *certainly*, not गुरुवार. So शक १२११ remains the only alternative.

Now ज्ये. शु. ५ of श. १२११ was बुधवार, गुरुवार or शुक्रवार, most probably गुरुवार.

The खर संवत्सर recently was शालिवाहन शक १८७३. So the cycle of 60 years of the संवत्सरs gives शक १२१३ as खर संवत्सर, and not १२११.

The letter after ने is illegible. It may be नेंदु or नेषु, most probably नेंदु. Reading the digits from right to left the year would be शाके ११२१ = 1199 or 1200 A. D. which is not possible because the तिथि and वार do not agree.

There is another reason also. 1200 A. D. is a bit too early for a paper ms. Reading the digits, however, from right to left according to an older custom, the year would be शाके १२११ = 1289 A. D. In this case the तिथि and वार agree. The oldest paper mss. are known to be in about this time.

Kāvyādarśa-Kāvyaprakāśa saṃketa

Description of manuscripts:

A. Source: Baḍā Bhaṇḍāra of Jesalmere; bearing the number 346
Material: Palm-leaf.
Number of leaves: 222.
Length: $14\frac{1}{2}''$; breadth $2\frac{1}{8}''$ to $1\frac{1}{4}''$.
Lines per page: 7; on a few pages 3 to 6. Each line is made up of two parts of about $4\frac{1}{4}''$ to $6\frac{1}{4}''$, the first part containing about 23 to 25 letters, the second about 33 to 35. 1a and 222b blank.
Script: Devanāgarī.

The difference arises from the fact that there was formerly the custom of dropping one संवत्सर in every 85 years, as 85 years = 86 revolutions of Jupiter (गुरु). The 60 year cycle of the संवत्सरs was created to be *roughly* equal to 5 revolutions of Jupiter, but, to be exact, the correction of one संवत्सर is necessary as shown above. So it appears that the correction of 2 years had already been made before शक १२११, thus bringing खर संवत्सर in शक १२११.

Incidentally, it shows us also the fact that the custom of dropping one संवत्सर in 85 years may have originated 2 × 85 = 170 or 3 × 85–255 years before शक १२११, i. e. between 956 and 1041 years of the शक era.

So, शक १२११ may be खर संवत्सर according to the ancient practice of dropping a संवत्सर, which was called a क्षय संवत्सर like क्षय मास or क्षय तिथि.

Thus शालिवाहन शक १२११ ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी गुरुवार = *26 May 1289 A. D.* (*Thursday*) seems to be the correct date and the reading seems to be शाके चन्द्रविलोचनेंदुशशिभिः. Here we have to take the digits from left to right, which was also a custom in older times. In later times, the custom became mostly to read from right to left.

Now we discuss the other reading चन्द्रविलोचनेषुशशिभिः. The manuscript came in the possession of दयासागरगणि in Vikram Saṁvat १५३६ i. e. Śalivāhana Śaka १४०१. This reading (°षु) gives १५२१ or १२५१ शालिवाहन शक, of which १५२१ is inadmissible, being later than शक १४०१, the date of the Ms. coming in the possession of दयासागरगणि. The years शालिवाहनशक १२५१ is not, however, a खर संवत्सर, lying as it does at an interval of 22 years from शा. श. १२७३, which comes as खरसंवत्सर, if no क्षयसंवत्सर is allowed. So it is also inadmissible, for this reaseon.

शा. श. १२५१ ज्ये. शु. ५ falls on Thursday, 4th May 1329 A. D. most probably, though it may be one day earlier or later. Here the वार (day of the week) is satisfactory, but as it cannot be a खरसंवत्सर, this date also cannot be admitted.

Thus शा. श. १२११ ज्ये. शु. ५ गुरुवार = 26 May 1289 A. D. seems to be the correct date."

Date Saṃvat 1283 Āṣāḍha Vadi 12 Śani = A. D. 1226, April 25 Saturday, or A. D. 1227 May 15 Saturday[1].

Begins: ई० ॥ स्वस्ति ॥

पदार्थकुमुदव्रातसमुन्मीलनचन्द्रिकाम् । वन्दे वाचं परिस्पन्दजगदानन्ददायिनीम् ॥
समुचितेति । यत् किल प्रस्तुतं वस्तु etc.

Ends : द्विखण्डोऽपि अखण्ड इव यद् भाति तत्रापि संघटनैव संनिमित्तम् ।
स्वीकृत्य कल्पतरुतो मरुतः परागं दृष्टेः क्षतिं विदधते जगतोऽपि किं तैः ।
भृङ्गः कृती तु परितः सुमनोमुखेभ्यः पीतं मधूद्वमति येन मदं करोति ॥
॥ छ ॥ इति भट्ट श्रीसोमेश्वरविरचिते काव्यादर्शे काव्यप्रकाशसंकेते दशम उल्लासः ॥ छ ॥
भरद्वाजकुलोत्तंसभट्टदेवकसूनुना । सोमेश्वरेण रचितः काव्यादर्शः सुमेधसा ॥
संपूर्णश्च काव्यादर्शो नाम काव्यप्रकाशसंकेत इति शुभम् ॥ छ ॥
संवत् १२८३ वर्षे आषाढ वदि १२ शनौ लिखितमिति ॥ छ ॥ ६ ❀ ३ ॥ छ ॥

B. Source : Baḍā Bhanḍāra of Jesalmere; bearing the number 99.
Material : Palm-leaf, incomplete.
Number of leaves: 207; upto the seventh Ullāsa.
Length: $11\frac{3}{4}''$, breadth $1\frac{3}{4}''$—rarely $1\frac{1}{2}''$.
Lines per page: 5, rarely 4 or 3. Each line made up of two parts of about $3\frac{3}{16}''$ and $4\frac{13}{16}''$, containing about 38 to 40 letters.
Script : Devanāgarī.
Date: About the latter half of the 14th century.[2]

Begins: पदार्थकुमुद etc.

Ends: इति मतं स्वीकृतम् ॥ ६३ ॥

येषां ताण्डवमाधत्ते चित्ताध्वनि रसध्वनिः । त एवास्य सुवर्णस्य परीक्षाकषपट्टकाः ॥
इति भट्टश्रीसोमेश्वरविरचिते काव्यादर्शे काव्यप्रकाशसंकेते सप्तम उल्लासः ॥

C. Source : Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona
C. PL Ms., p. 12

Material : Paper.
Number of leaves : 128.
Length : 10″; breadth : 13″.
Lines per page : 30 to 35; about 36 letters per line.
Script : Devanāgarī.
Age : Saṃvat 1931 = 1875 A. D.

---

1 I am indebted to Prof. Harihar Bhatt for the following:
"The date April 25, 1226 A. D. Saturday is according to the Chaitrī or Āṣāḍhī Saṁvatsara and Paurṇimānta Māsa as in Northern India (Chaitrī).

The date would be 15th May 1227 A. D. Saturday, if the Saṁvatsara is Kārtiki and the Māsa is Amāvāsyānta as at present in Gujarat ,but I think Kārtikī custom was not prevalent at the date in question.

2 पृ. १३५. श्री जेसलमेरुदुर्गस्थ-जैनताडपत्रीय ग्रंथभंडार-सूचीपत्र, prepared by Muni Shri Punyavijayaji; to be published shortly by the Jain Śvetāmbar Conference, Bombay.

Begins: श्रीगणेशाय नमः । ॐ स्वस्ति ॥
पदार्थकुमुदव्रात etc. वंदे वाचं परिस्यन्दजगदानंददायिनीं ।
Ends: अथ च सुधियां etc. इति भट्ट श्रीसोमेश्वरविरचिते etc. संपूर्णश्च काव्यादर्शो नाम काव्यप्रकाशसंकेत इति शुभं । छ. सं. १९३१ आषाढप्रथमकृष्णसप्तम्यां चंद्रवासरे लिपीकृतं व्यास टीकमदास श्री जयशैलनगरे वैरीशालराज्ये शुभं भवतु ।[1]

The various readings of K. P. are given in appendix I. So also the variants of A and B mss. of the Kāvyādarśa-Kāvyaprakāśa-saṁketa are given in appendix II. The paper ms. C appears to be only a copy of A.

The indexes speak for themselves.

Authorship, Date etc.

The double authorship of Kāvyaprakāśa

This question pertains to two different matters: one, the attribution of the authorship of Vṛtti and Kārikās of Kāvyaprakāśa to separate persons and the other to the attribution of authorship of a part of Kāvyaprakāśa as a whole to one, and a part to another. The first matter has been discussed in detail by M. M. Dr. P. V. Kane. In his History of Sanskrit Poetics published in 1951, he comes to the conclusion that Mammaṭa must be held to be the author of Kārikās also (that is in addition to his being the author of Vṛtti). But one of the references mentioned by him as an argument requires to be corrected. He says "None of the earlier commentators such as माणिक्यचंद्र, जयन्त, सरस्वतीतीर्थ, सोमेश्वर makes any distinction between the author of the कारिकाs and of the वृत्ति[2]." Now as far as Someśvara is concerned, he refers to वृत्तिकृद् and वृत्तिकार as if he is a different author. For example, Someśvara after explaining the Kārikā लक्ष्यं न मुख्यं etc. (उ. २.१६. पृ. २५) says: एतद् वृत्तिकृद् व्याचष्टे—नापि गङ्गाशब्द इति. So also in Ullāsa 10 pp. 262 and 291 तत्र युक्तमित्याह वृत्तिकारः—क्रूरस्येति and तथात्रैव द्वयोर्युगपद् अनुपादानेऽपि ज्ञेयमित्याह वृत्तिकृद् अत्रैव तुच्छेति । respectively.

Considering the fact that Someśvara is earlier than Māṇikyacandra as we shall see later, the question of the separate authorship of Kārikās and Vṛtti still remains open.[3]

---

1 For other details see pp. 77-78 D. C. G. C. M. vol XII, 1936.

2 p. 259.

3 See also R. Shama Shastry pp. VII-VIII Introduction to K. P. with Māṇikya's Saṃketa, Sanskrit Series, University of Mysore, 1922. See also S. K. De: Sanskrit Poetics, Vol. I, p. 161 (1923); also his introduction pp. 19-21 to K. P. with Maheśvara's Ādarśa. Calcutta S, S. Vol. VI 1936.

The other matter viz. some part in the latter portion of K. P. was composed by some other writer, has been discussed at length by our two historians of Sanskrit Poetics, Dr. De and M. M. Dr. Kane. Arjunavarmadeva (13th Century A. D.) in his commentary on the Amaruśataka (verse 30. Kāvyamālā Series), refers to the joint authorship of K. P. According to him 'Alaka had a hand not only in the 10th but also in the 7th Ullāsa.' He probably regarded Mammaṭa and Alaka as the joint authors of the whole work.[1]

Rājānaka Ānanda, a Kasmirian commentator, in his K. P. Nidarśana (1665 A. D.) is more explicit and quotes a traditional verse which records Mammaṭa's authorship upto the topic of Parikara-Alaṁkāra (X-32) and attributes the rest to 'Alaṭa, Allaṭa or Alaka'.

The three Saṃketas refer in a general way[2] to the double authorship of K. P. It should be noted that our palm-leaf ms. A. of K. P. which is the oldest Ms. (1158 A. D.) of the work known to us refers in the colophon to the double authorship of K. P. in the words "कृती राजानकमम्मटालकयोः ।" As Dr. Gode says "In view of the absence of Alaka's name in Ruyyak's allusion of the 12th century and in view of the other references being removed from Mammaṭa's date by about a century, the importance of Paṇḍita Lakṣmīdhara's colophon of the Kāvyaprakāśa Ms. in 1158 A. D. is a better and more explicit corroboration of the Kasmirian tradition about the double authorship of Kāvyaprakāśa than that furnished by Rājānaka Ānanda in the 17th century or Arjunavarman in the 13th century.[3]

The date of Mammaṭa:

Dr. S. K. De in his Sanskrit Poetics assigns Mammaṭa's literary activity roughly to the last quarter of the 11th Century.[4] M. M. Dr. Kane would put the date of the K. P. between 1050 and 1100 A. D.[5]

---

1 History of Sanskrit Poetics, 1951, pp. 260-61; S. K. De's Sanskrit Poetics Vol. I (1923) pp. 161-62; Introduction to K. P. with Maheśvara's Commentary, p. 20.

2 Rucaka's Saṃketa p. 75 (C. O. J. Vol. II, No. 12 September 1935), Someśvara's Saṃketa-p, 352; Māṇikya's Saṃketa p. 3o4 (A. S. S. Poona).

3 pp. 51, 52 vol. XIII J. O. R. S. Madsas 1939. This Ms. has also another importance noted by Dr. Gode. It provides a definite lower limit to Mammaṭa's date by about two years. Ibid p. 49.

4 S. P. Vol. I. p. 160, also p. 19; Introduction to K. P. with Maheśwaras's commentary.

5 History of Sanskrit Poetics, p. 213.

The date of Somes'vara:

The colophon of the palm-leaf ms. of K. D. K. P. S. as noted in its description has the following:-

भरद्वाजकुलोत्तंसभट्टदेवकसूनुना । सोमेश्वरेण रचितः काव्यादर्शः सुमेधसा ॥
संपूर्णश्च etc. संवत् १२८३ वर्षे आषाढवदि १२ शनौ लिखितमिति ।

From this we gather that Bhaṭṭa Someśvara was the son of Bhaṭṭa Devaka and belonged to the Kula *i. e.* family of Bharadvājas.

The palm-leaf ms. was completed on Saturday the 12th of the dark-half of Āṣāḍha Saṃvat 1283 *i. e.* Saturday April 25, 1226 A. D., or Saturday May 15, 1227 A. D.

This is all the first hand information that we have about Someśvara, the author of K. D. K. P. S. The lower limit of the times in which he must have lived is either April 1226 A. D. or May 1227 A. D., when the writing of our Ms. A was finished.

This Someśvara was taken by Peterson and Aufrecht to be the author of Kīrtikaumudī[1] and a contemporary and a close friend of Vastupāla (who died in 1240 A. D.).[2] This mistake has been corrected by S. K. De, M. Krishnmachari and Sandesara.[3] Krishnamachari, however, places our Someśvara in the 14th Century,[4] which is obviously wrong, because the palm-leaf ms. A. of K. D. K. P. S. is dated 1226 or 1227 A. D.

The authors and works referred to by Someśvara in his Saṃketa are not later than Mammaṭa. Amongst others however, we may mention Tilaka to whom Someśvara refers on p. 295. He was the author of a commentary on Udbhaṭa's Alaṃkārasāra Saṃgraha called Udbhaṭaviveka or Udbhaṭavicāra. He is placed between 1075-1125 A. D. by K. S. Ramaswami Sastri and between 1100-1125 A. D. by M. M. Dr. Kane.[5]

---

1 S. K. De, Sanskrit Poetics Vol. I. p. 172.

2 Sandesara, Literary Circle of Mahāmātya Vastupala; Singhi Jain Series, 1953 p. 32. Pandits Śivadatta and Kasinatha credit him with the authorship of Kāvyaprakāśaṭīka & Kāvyādarśa, p. 16, Introduction to Surathotsava, K. M. Series, 1902.

3 L. C. V. p. 49.

4 See p. 757 and footnote 4, History of Classical Sanskrit Literature, 1937, Madras.

5 History of Sanskrit Poetics pp. 130-131. See also pp. 34, 41, 45, Sanskrit Introduction of K. S. Ramaswami Sastri to his edition of Kāvyālaṇkārasārasaṃgraha G. O. S. 1931. Sri K. S. Ramaswami Sastri. refers to the possibility of other works of Rājānaka Tilaka on account of certain references to him made by Rucaka in his Alaṃkārasarvasva not found in his edition of Udbhaṭaviveka (pp. 38-39). M. M. Kane, however, brushes aside this possibility by saying that the opinion is based on bare conjectures (p. 131 H. S. P.). But the opinion of K. S. Ramaswami Sastri is strengthened by the fact that the quotation in connection with Ākṣepa Alaṃkāra attributed to Tilaka by Somes'vara is also not found in the Udbhaṭaviveka on p. 21 of the text where it would be expected.

So in order to narrow down the time gap between 1125 and 1227 A. D., I made a comparative study of Someśvara's Saṃketa with Māṇikyacandra's Saṃketa on the one hand and Rucaka's Saṃketa[1] on the other. This comparison shows that Māṇikyacandra profusely borrows from Someśvara, just as Someśvara does from Rucaka. Let us take Maṇikycandra's Saṃketa first. (I used for the first three Ullāsas the A. S. S. edition but as some portion in Ullāsa V (p. 115) was found missing in it when compared with Mysore edition, I changed to it for the remaining portion.)

The number of parallel passages I found in both the Saṃketas is as follows, Ullāsa-wise:

U. I–16; U. II–15; U. III–6; U. IV–19; U. V–22; U. VI–1; U. VII–34; U. VIII–12; U. IX–23; U. X–91.[2]

Before we proceed to draw any conclusions from these parallel passages, it must be pointed out that some allowance must be made for the similarities and identities because both the works are commentaries on the same work. One has also to consider the possibility of a common source for both the works. But even after due deductions are made on these grounds, the identities, similarities and paraphrases in both the Saṃketas cannot be regarded as accidental. In fact, any one who will go through the parallel passages given in appendix A will be left in no doubt that either of the two has adopted considerable portions from the other work. The question, therefore, to be settled is whether Someśvara has borrowed from Māṇikya or vice versa. Careful consideration of these paralellisms should incline one to think that Māṇikyacandra has borrowed from Someśvara. This opinion gets corroboration from other facts also.

Māṇikycandra in the Praśasti to his Saṃketa[3] frankly says:

नानाग्रन्थसमुद्धृतैरसकलैरप्येष संसूचितः संकेतोऽर्थलवैर्भविष्यति नृणां शङ्के विशङ्कं तमः ।
निष्पन्ना ननु जीर्णशीर्णवसनैर्नीरन्ध्रविच्छित्तिभिः प्रालेयप्रथितां न मन्थति कथं कन्था व्यथां सर्वथा ॥ १२

In this verse Māṇikya tells us that his Saṃketa has been 'pieced together (संसूचितः)' with small passages taken from various works and compares it to a Kanthā 'a patched garment.' In fact he informs us that he has prepared his Saṃketa with the help of borrowings from other works. R. Shama Sastry has in the introduction to his edition of

1 Edited by Sivaprasad Bhattacharya and published in C. O. J. vol. II. nos. 6, and 12.

2 See appendix A.

3 P. 496, K. P. S., Mysore edition.

the work given parallel passages to show Māṇikya's indebtedness to the Kāvyānuśāsana of Hemacandra.[1] The parallel passages shown by me would open the probability of similar borrowings from Someśvara's Saṃketa also. This probability becomes almost a certainty when we find that at two places in Māṇikya's Saṃketa referring to the opinions of others there are unmistakable references to the views expressed in Someśvara's Saṃketa.

Māṇikya while discussing the verse शशी दिवसधूसरो etc. as an illustration of Samuccaya Alaṁkāra says: "अन्यमताभिप्रायेण विशेषणविशेष्ययोरत्र वैपरीत्ये प्रक्रमभङ्गः।"[2] Someśvara in the same context gives this view. He says विशेष्यस्य खलत्वेन अशोभनत्वमिति विपर्ययात् प्रक्रमभङ्गो दोषः। (पृ. ३१२). It may be noted that this reference is not to be found either in the Saṃketa (p. 67), or Alaṁkārasarvasva of Rucaka (pp. 183–84).[3]

While discussing the verse तं ताण etc. as an illustration of Paryāya, Māṇikya says: अन्ये तु सकलरत्नसारतुल्योऽधर इति तेषां तत्र प्रीतिर्वास्तवीति व्यङ्ग्योपमामाहुः। This is the opinion expressed by Someśvara in the following words:

सकलरत्नसारतुल्यो बिम्बाधर इति तेषां बहुमानो वास्तव एवेति प्रतीयमानोपमापि। (पृ. ३१४).

This is also not found in Rucaka's works.[4] But we have a more convincing proof than these. In the parallel passage No. 13 in Ullāsa VII it will be found that Māṇikya gives the following Sanskrit verse as an illustration of दुष्क्रमत्व:

क्षौरं विधाप्य स्नानादि भोजनादि विधाय च। कश्चिच्चचाल दैवज्ञं प्रष्टुं तिथिवारकान्॥ (p. 247).

Now this is really the Sanskrit translation of a Prakrit verse which is to be found as follows in Someśvara's Saṃketa:

काराविऊण खउरं गामउडो मज्जिउण जिमिऊण। नक्खत्ततिहिवारे जोअसिअं पुच्छिउं लग्गो॥ (पृ. १५६)[5]

Now if we ask who may be the borrower in this passage taken as a whole, we can certainly say that if the Brāhmaṇa writer Someśvara had borrowed from Māṇikya, he would not have translated an original Sanskrit verse into Prakrit. The traditional practice has always been to translate Prakrit into Sanskrit and not vice versa. Therefore about this passage we can certainly say that the original is that of Someśvara, Māṇikya having given only the Sanskrit version.

1 pp. XII-XVI.

2 p. 415: Mysore Edition.

3 Trivendrum Sanskrit Series. Second edition. 1926. Not found also in the Kāvyānuśāsana of Hemacandra. See Viveka, p. 393, M. J. V. edition.

4 Not found also in K. S., see p. 74 (M. V. J. edition).

5 Hemacandra quotes this verse in Prakrit p. 264. The verse occurs in the Sarasvatīkaṇṭhābharaṇa also, p. 31. K. S. S. 1934.

If we add to this the consideration that Brahmana writers generally do not borrow passages from Jain writers, particularly in works of such subjects, the proof of Māṇikyacandra borrowing from Someśvara is almost complete, falling short only in the absence of a direct mention of Someśvara by name. But Māṇikya has not mentioned Hemacandra or Kāvyānuśāsana also. He has, however, made a general acknowledgement of his debts to the previous works in the verse quoted above.

Thus mainly on the strength of the character of parallel passages found in both the Saṃketas corroborated by other considerations, I come to the conclusion that Māṇikyacandra has borrowed from the Saṃketa of Someśvara and that, therefore, Someśvara precedes Māṇikyacandra in time.

Now let us consider the parallel passages in the Saṃketa of Rucaka and the Saṃketa of Someśvara. Their number Ullāsa-wise is as follows:

U. I–4; U. II–3; U. III–3; U. IV–5; U. V–11; U. VI–no Saṃketa of Rucaka; U. VII–4, 4a–b–c; U. VIII–2; U. IX–25; U. X–72.

A close scrutiny of these parallel passages leaves no doubt that Someśvara has absorbed in his Saṃketa, particularly in the tenth Ullāsa, quite a good portion of Rucaka's Saṃketa. Now if we consider the meaning of the term Saṃketa as used to denote a type of commentary, the relation between these two Saṃketas will become clear. Monier Williams in his S. E. Dictionary explains the word as follows: "a short explanation of a grammatical rule (= 2 śailī. q. v), M. W; a special or particular interpretation (a concise explanation of a grammatical aphorism)". Thus Saṃketa is a short explanatory commentary. Śaṅkara, the author of a commentary on Harṣacarita of Bāṇa, describes his Saṃketa as "संप्रदायानुरोधतः । गूढार्थोन्मुद्रणं चक्रे" etc.[1]

Now when we compare the Saṃketa of Rucaka with that of Someśvara we find that the former is a real Saṃketa in the proper meaning of the term —a short explanatory commentary of difficult and recondite passages, consisting of 75 pages (royal octavo), while that of Someśvara consists of 352 pages of the same size. This explains the small number of parallel passages, but we find that in the case of the tenth Ullāsa the number is as big as 72. Rucaka, in addition to explanations of difficult words, no doubt, introduces a few discussions. But these compared to those of Someśvara are very few in number. In fact it will be found that explanatory portions of both the Saṃketas are very

1 p. 258. H. C. (Kāvyamālā Series), 1925.

often in indentical words; while they often differ in their discussion of general points.

This is sufficiently indicative of Someśvara's Saṃketa being later than that of Rucaka.

Thus we are able to place Someśvara between Rucaka and Māṇikyacandra.

The Date of Māṇikyacandra's Saṃketa:

The date of Māṇikyacandra's Saṃketa has been taken as V. S. 1216 = A. D. 1160[1] on the strength of the following verse of the Praśasti of the work:

रसवक्त्रग्रहाधीशवत्सरे मासि माधवे । काव्ये काव्यप्रकाशस्य सङ्केतोऽयं समर्थितः । (p. 470).

But this date of Māṇikya has been controverted by Prof. Dr. Sandesara in his work 'Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla'. His main argument for not accepting this date is based upon the irreconcilability of this date with the date of another work of Māṇikyacandra. Our Māṇikyacandra finished the composition of his Mahākāvya Pārśvanāthacaritra in V. S. 1276 = A. D. 1220 at Div in an island on the southern coast of Saurashtra. The Prasasti runs as follows:

रसर्षिरविसंख्यायां समायां दीपपर्वणि । समर्थितमिदं वेलाकूले श्रीदेवकूपके ॥

Thus the interval of 60 or 61 years between 1159-60 A. D., the date of Saṃketa and 1220 A. D., the date of Pārśvanātha Caritra, cannot be reconciled according to Dr. Sandesara. He says: "Now, if the author wrote his Saṃketa, a fruit of his mature learning and ripe intelligence, in 1160 A. D., it is difficult to believe that he should have been fit enough to compose a Mahākāvya sixty years afterwards—in 1220 A. D., if at all he could have lived so long."[2] He therefore proposes that 'Vaktra' in the verse of Māṇikya's Saṃketa should be interpreted as either six (mouths of Kārtikeya) or four (mouths of Brahman). In support of this interpretation he relies upon certain old authorities which he has discussed in his work. On this interpretation the date of Māṇikya's Saṃketa would be either 1246 V. S. = 1190 A. D. or 1266 V. S. = 1210 A. D.

Māṇikyacandra's close contact with Vastupāla (died 1240. A. D.) is another fact which Dr. Sandesara adduces in support of the date of 1190 or 1210 A. D.[3]

---

1 See p. 2. Introduction to A. S. S. edition; p. IV. Mysore edition; p. 169. S. P. Vol, I; H. S. P. p. 263.

2 See pp. 80-81, L. C. V., Singhi Jain Series, 1953.

3 This is based on the evidence of Prabandhāvalī (1234 A. D.) of Jinabhadra, a contemporary work.

But these arguments though plausible are not decisive. If we assume that Māṇikyacandra might have been of thirty years of age when he, by borrowing from several previous works on Alaṃkāra, particularly Someśvara's Saṃketa, composed his Saṃketa, there would not be anything inherently impossible in Māṇikyacandra finishing his Mahākāvya at the age of ninety. One need not assume that he composed the whole poem at a time in his old age. He might have commenced his Mahākāvya much earlier and given the finishing touch in old age. As to his contact with Vastupāla, there is nothing impossible in the same taking place in Māṇikya's old age. Many Jain Sadhus have been known to have lived to the age of ninety or hundred.

But the argument based on the interpretation of the Śabdāṅka would deserve greater consideration, if it could be proved that the word वक्त्र and its synonyms did not signify the number 1. But it is not so. Dr. Sandesara and Shri Nahta have not been able to quote any reference in which the word Vaktra and its synonyms are used alone. They are generally found used with Brahman (= 4), Śiva (= 5) and Kārtikeya (= 6) or their synonyms. Dr. Sandesara on the authority of Sri Agarchand Nahta says that in later times the word Vaktra and its synonyms were used alone to signify 4 or 6. But no instance is quoted. While in the following late reference in the ज्ञानदर्शनचारित्र-संवादरूप-वीरस्तवन of Vijaya Lakṣmīsūri, the word वदन definitely signifies 1:

"मुँनिकेरसिद्धिर्वदेनने वर्शें आठमसुदि भले भावेरे"

Here no other interpretation of वदन excepting number one is possible. Vijaya Lakṣmīsurī would not have used the word वदन to signify one, if he had no traditional support.

This is corroborated by what is said in the ms. of काव्यकल्पलता अर्थोत्पत्तिस्तबकोद्धार—"यदा एकसंख्यः पदार्थो विवक्षितः तदा एकसंख्या अन्येऽपि पदार्थाः।"
This means that in addition to the traditional Śabdas for one, all the words for things which are one in number can be used to signify one. वक्त्र or वदन for mouth is one such word.[1]

Māṇikyacandra who shows great knowledge of all the different topics of Kavi-śikṣā could not be so inexact as to use the word Vaktra which, without Brahman or Guha qualifying it, could signify four or six, if he really did not mean one.

So I see no adequate reason to give up the usually accepted interpretation of रसवक्त्रग्रहाधीश = V. S. 1216 = A. D. 1160 the year in which Māṇikyacandra completed his Saṃketa.

---

1 I am indebted to Muni Shri Punyavijayaji for the references from वीरस्तवन by Vijaya Lakṣmīsūri and काव्यकल्पलताअर्थोत्पत्तिस्तबकोद्धार. He informs me that the ms. of this latter work belongs to the 16th century of the Vikrama Era.

Consequently we can place Someśvara's Saṃketa prior to 1160 A. D.

Rucaka or Ruyyaka:

At the end of the text of Saṃketa published in Calcutta Oriental Journal Vol. II No. 12, the colophon reads, इति राजानकरुचकस्य ।

This Rājānaka Rucaka is the same as Rājānaka Ruyyaka who is famous in Sanskrit literature as the author of Alaṃkārasarvasva.[1] His date has been put by S. K. De in the second and third quarters of the 12th century, that is between 1125 and 1175 A. D.[2] Kane places the composition of A. S. between 1135–1150 A. D.[3]

So Someśvara's Saṃketa may be placed after 1135–1150 A. D.

The date of the palm-leaf ms. of Someśvara's Saṃketa is, as we have seen, 1226 A. D. By a comparative study of the three Saṃketas, it becomes possible to put Someśvara's work earlier than 1160 A. D., somewhere between 1135–50 and 1160 A. D.

Certain passages of Someśvara's Saṃketa are similar or identical with those of Alaṁkāracūḍāmaṇi and Viveka of the Kāvyānuśāsana of Hemacandra also. Though I have not made a thorough comparison of the two works, the passages that came to my notice are sufficient to raise the question of borrowing by one from the other or from a common source. Hemacandra lived from 1089 A. D. to 1173 A. D. (K. S. Vol. II p. CCLXX and CCXC). His K. S. was written after his Śabdānuśāsana which was finished by 1143 A. D. (K. S. Vol. II CCXCI). If we can take the K. S. with its Alaṁkāracūḍāmaṇi and Viveka as being written between 1143 A. D. and 1150 A. D., chronology itself cannot help in solving the question of borrowing. So let us consider a few of these parallel passages.

In the Saṃketa on the seventh Ullāsa treating of Doṣas, Someśvara explains दिव्यादिव्याः प्रकृतयः thus: दिव्यादिव्यास्तु चतुर्धा and then illustrates the different types with a number of verses. This whole passage of about thirty lines in Someśvara's Saṃketa is similar to one found in the

Muni Punyavijayaji himself has collected about a thousand शब्दाङ्कs which he proposes to publish with the relevant references. He informs me that in fifteen or twenty instances in which the word मुख and its synonyms are used, they are always preceded by Brahman, Śiva or Guha or their synonyms. He has also not met with any instance of the word मुख and its synonyms being used alone where they would signify four, five or six. The late reference of the use of वदन alone that has been quoted above signifies one.

1 pp. 193–195, S. P. Vol. I; pp. 264–274 and p. 267, H. S. P.

2 p. 194, S. P. Vol. I.

3 p. 273, H. S. P.

Viveka of K. S. pp. 174–75. The Viveka passage however is longer because it describes the three other Prakṛtis, viz., Pātālīyā, Martyapātālīyā and Divyapātālīyā. Now, this whole passage of Viveka is taken from the Kāvyamīmāṃsā (pp. 42–43) of Rājaśekhara (900–925 A. D.).

Similarly Someśvara in his Saṃketa on the same Ullāsa (pp. 183–186) which is a shortened form of one found in the Viveka pp. 179–198, while explaining देश and काल gives a long passage. This passage is to be found in Māṇikya's Saṃketa also (p. 275). Hemacandra has taken this passage also from the Kāvyamīmāṁsā, pp. 89–112.

So in these two cases we can trace the parallelism to a common source, viz., the Kāvyamīmāṃsā of Rājaśekhara.

The third passage that is worthy of comparison is in the eighth Ullāsa which treats of Guṇas. Mammaṭa while explaining the difference between Guṇa and Alaṁkāra gives a general definition of Alaṁkāra as one which may help the Rasa, if there is one, but which, otherwise, only adorns the body-poetic. Mammaṭa gives two examples in one of which an Alaṁkāra does not help the Rasa even though there is one, and in the other of which the Alaṁkāras help the Rasa. Someśvara, after commenting on this, gives a few more points with illustrations in which the position of Alaṁkāra is shown in the following ways : (1) अलङ्कारस्य निवेशो, (2) न बाधकत्वताटस्थ्याभ्याम्, (3) बाधकत्वेन and, (4) ताटस्थ्येन. Then he illustrates the following : (5) अनङ्गत्वेऽपि कालेऽवसरे ग्रहणम्, (6) अकाले ग्रहणम्, (7) गृहीतस्यावसरे त्यागः, (8) अनवसरे त्यागः, (9) नातिनिर्वाहः, (10) अतिनिर्वहणम्, (11) निर्वाहेऽप्यङ्गत्वम् and (12) निर्वाहेऽप्यनङ्गत्वम् ।

Hemacandra has regarded this topic as important and given it a whole sūtra (Adhyāya I. sūtra 14, p. 35) and in the Alaṁkāracūḍāmaṇi and Viveka discussed it in detail. Pages 198–200 of Someśvara's Saṃketa are almost identical with the pp. 36–41 of the K. S. An interesting point may be noted here. Hemacandra has quoted the verse चलापाङ्गां दृष्टिं etc. in the A. C. and explained it in the Viveka, while Someśvara after quoting the verse follows it up with the explanation. The same is the case with the verse उद्दामोत्कलिकाम् etc.

Hemacandra, we find, has adopted in his works the method of taking his material from several authors and arranging and marshalling it in a more systematic way. Can we say, here, that he took his material from Someśvara and arranged it differently? Or have both the authors a common source?

In the same Ullāsa, Someśvara has an elaborate discussion on the different theories and definitions of Guṇas (pp. 204–208). Hemacandra in his Viveka has given a longer dissertation on the same subject

(pp. 274–288). The matter that is common is almost in identical words and contains the same illustrations. Here it appears that both have a common source, probably the missing portion of the K. M., Hemacandra giving a longer and more detailed version.

In the same Ullāsa, Someśvara has a big digression on the different types of Sanskrit literature, viz. आख्यायिका and कथा with its different varieties, अनिबद्ध with its different varieties and महाकाव्य, as also a long account of the रूपक with its ten varieties as well as uparūpakas (pp. 211–222).

If we compare this digression with the eighth Adhyāya of the Kāvyānuśāsana, we find that it is very similar not only in content but words also.

Now we find that in the Dhvanyāloka, Uddyota 3, Kārikā 7 there is a mention of *Kāvyaprabheda*. The Vṛtti explains it as follows:

"यतः काव्यस्य प्रभेदा मुक्तकं संस्कृतप्राकृतापभ्रंशनिबद्धम्। संदानितकविशेषककलापककुलकानि पर्यायबन्धः, परिकथा सकलकथा खण्डकथा सर्गबन्धोऽभिनेयार्थमाख्यायिकाकथेत्येवमादयः (पृ. १४१)."

On this Abhinavagupta in the Locana says:

मुक्तकमिति। मुक्तमन्येन नालिङ्गितम्। तस्य संज्ञायां कन्। तेन स्वतन्त्रतया परिसमाप्तनिराकाङ्क्षार्थमपि प्रबन्धमध्यवर्ति मुक्तकमित्युच्यते। मुक्तकस्यैव विशेषणं संस्कृतेत्यादि। क्रमभावित्वात्तथैव निर्देशः। द्वाभ्यां क्रियासमाप्तौ संदानितकम्। त्रिभिर्विशेषकम्। चतुर्भिः कलापकम्। पञ्चप्रभृतिभिः कुलकम्। इति क्रियासमाप्तिकृता भिद इति द्वन्द्वेन निर्दिष्टाः। अवान्तरक्रियासमाप्तावपि वसन्तवर्णनाद्येकवर्णनीयोद्देशेन प्रवृत्तः पर्यायबन्धः। एकं च धर्मादिपुरुषार्थमुद्दिश्य प्रकारवैचित्र्येणानन्तवृत्तान्तवर्णनप्रकारा परिकथा। एकदेशवर्णना खण्डकथा। समस्तफलान्तेतिवृत्तवर्णना सकलकथा। द्वयोरपि प्राकृतप्रसिद्धत्वाद् द्वन्द्वेन निर्देशः। पूर्वेषां तु मुक्तकादीनां भाषायामनियमः महाकाव्यरूपः पुरुषार्थफलः समस्तवस्तुवर्णनाप्रबन्धः सर्गबन्धः संस्कृत एव। अभिनेयार्थं दशरूपकं नाटिकात्रोटकरासकप्रकरणिकाद्यवान्तरप्रपञ्चसहितमनेकभाषाव्यामिश्ररूपम्। आख्यायिकोच्छ्वासादिना वक्त्रापरवक्त्रादिना च युक्ता। कथा तद्विरहिता। उभयोरपि गद्यबन्धस्वरूपतया द्वन्द्वेन निर्देशः, आदिग्रहणाच्चम्पूः। यथाह दण्डी—'गद्यपद्यमयी चम्पूः' इति। (पृ. १४१)."[1]

Now we find this material both in Someśvara's Saṃketa as well as Hemacandra's Kāvyānuśāsana. This means that the common source for both the works is Dhvanyāloka and Locana. But there is much identical additional matter on this topic in both the works which is not to be found in Dhvanyāloka and Locana. Let us take the different *Kathāprabhedas*. Both Hemacandra and Someśvara mention twelve varieties of *Kathās* as against the three of Dhvanyāloka.

काव्यानुशासनम्—धीरशान्तनायका गद्येन पद्येन वा सर्वभाषा कथा ॥ ८ ॥

आख्यायिकावन्न स्वचरितव्यावर्णकोऽपि तु धीरशान्तो नायकः तस्य तु वृत्तमन्येन कविना वा यत्र वर्ण्यते, या च काचिद् गद्यमयी यथा कादम्बरी, काचित्पद्यमयी यथा लीलावती, या च सर्वभाषा काचित् संस्कृतेन काचित् प्राकृतेन काचिन्मागध्या काचिच्छूरसेन्या काचित् पिशाच्या काचिदपभ्रंशेन बध्यते सा कथा।

1 Kāvyamālā series, 2nd edition, 1912.

प्रबन्धमध्ये परबोधनार्थं नलाद्युपाख्यानमिवोपाख्यानमभिनयन् पठन् गायन् यदेको ग्रन्थिकः कथयति तद्गोविन्दवदाख्यानम् ।

तिरश्चामतिरश्चां वा चेष्टाभिर्यत्र कार्यमकार्यं वा निश्चीयते तत्पञ्चतन्त्रादिवत्, धूर्तविटकुट्टनीमतमयूर-मार्जारिकादिवच्च निदर्शनम् ।

प्रधानमधिकृत्य यत्र द्वयोर्विवादः सार्धप्राकृतरचिता चेटकादिवत् प्रवह्लिका ।

प्रेतमहाराष्ट्रभाषया क्षुद्रकथा गोरोचना-अनङ्गवत्यादिवन्मन्थल्लिका ।

यस्यां पुरोहितामात्यतापसादीनां प्रारब्धानिर्वाहे उपहासः सापि मन्थल्लिका ।

यस्यां पूर्वं वस्तु न लक्ष्यते पश्चात्तु प्रकाश्यते सा मत्स्यहसितादिवन्मणिकुल्या ।

एकं धर्मादिपुरुषार्थमुद्दिश्य प्रकारवैचित्र्येणानन्तवृत्तान्तवर्णनप्रधाना शूद्रकादिवत् परिकथा ।

मध्यादुपान्ततो वा ग्रन्थान्तरप्रसिद्धमितिवृत्तं यस्यां वर्ण्यते सा इन्दुमत्यादिवत् खण्डकथा । समस्तफलान्तेतिवृत्तवर्णना समरादित्यादिवत् सकलकथा । एकचरिताश्रयेण प्रसिद्धकथान्तरोपनिबन्ध उपकथा । लम्भाङ्किताद्भुतार्था नरवाहनदत्तादिचरितवद् बृहत्कथा । एते च कथाप्रभेदा एवेति न पृथग्लक्षिताः ।

गद्यपद्यमयी साङ्का सोच्छ्वासा चम्पूः ॥ ९ ॥

संस्कृताभ्यां गद्यपद्याभ्यां रचिता, अभिप्रायेण यान्यङ्कनानि स्वनाम्ना परनाम्ना वा कविः करोति तैर्युक्ता उच्छ्वासनिबद्धा चम्पूः । यथा वासवदत्ता दमयन्ती वा । (पृ. ४६३-४६५).

संकेतः—कथायामिति । सुकुमाररचनाप्राया गद्येन पद्येन वा सर्वभाषा धीरशान्तनायका कथा, यथा कादम्बरी, पद्यमयी तु लीलावती । एकं धर्मादिपुरुषमुद्दिश्यानन्तवृत्तान्तवर्णनप्रधाना शूद्रकादिवत् परिकथा । मध्याद् उपान्ततो ग्रन्थान्तरतः सिद्धमितिवृत्तं यस्यां वर्ण्यते सा खण्डकथा ॥ सर्वफलान्तेतिवृत्तवर्णनप्रधाना सकलकथा ॥ एकचरिताश्रयेण प्रसिद्धकथान्तरोपनिबन्ध उपकथा । लम्भकाङ्किताद्भुतार्था नरवाहनदत्तादिचरितवद् बृहत्कथा । संस्कृतगद्यपद्याभ्यां साभिप्रायस्वनामपरनामाङ्किता सोच्छ्वसा वासवदत्तादिवत् चम्पूः । अभिनयन् गायन् पठन् यदेको ग्रन्थिकः कथयति तद् गोविन्दवद् आख्यानम् ॥ तिरश्चामतिरश्चां वा चेष्टाभिर्यत्र कृत्याकृत्ये निश्चीयेते तत् पञ्चतन्त्रादिवत् कुट्टनीमतमयूरमार्जारादिवच्च निदर्शनम् । यत्र द्वयोर्विवादः प्रधानमधिकृत्य सार्धप्राकृतरचिता चेटकादिवत् प्रवह्लिका ॥ प्रेतमहाराष्ट्रभाषया क्षुद्रकथा गोरोचनानङ्गवत्यादिवद् मन्थल्लिकेत्यादि तु कथाभेद एवेति न पृथगौचित्यमत्रोक्तम् । (पृ. २११-२१२).

In the above quotations we find that though Someśvara defines Sakalakathā, he does not mention any example of it, as Hemacandra does. What must be the reason ? Is it because Samarādityakathā is the work of a Jain writer Haribhadrasūri ? If that were so, we could say that Someśvara has taken his material from Hemacandra omitting the Nāstika Jain work. But we find that Hemacandra quotes in Viveka verses which are his authorities for the definitions and examples of (1) Upākhyāna- Ākhyāna, (2) Nidarśana, (3) Pravahlikā, (4) Manthallikā, (5) Maṇikulyā, (6) Parikathā, (7) Khaṇḍakathā, (8) Upakathā, and (9) Bṛhatkathā, but about *Sakalakathā* he simply says 'चरितमित्यर्थः' and gives no authority. This means that Hemacandra must have no authority for *Sakalakathā* other than that of Dhvanyāloka and Locana. We have seen that these works do not mention any names of works as examples.

This would lead us to believe that Someśvara must have drawn upon the same common source as the work whose verses are quoted

by Hemacandra which, as we have seen, has nothing to say about *Sakalakathā* and that Hemacandra on his own must have removed the defect by mentioning Samarādityakathā.[1]

While introducing what are called Uparūpakas, Someśvara says गेयं तु प्रेक्ष्यं काव्यं पदार्थाभिनयस्वभावं श्रीगदितादि (p. 221). Now it is Hemacandra who divides काव्यं into प्रेक्ष्यं श्रव्यं च and subdivides प्रेक्ष्यं into पाठ्यं गेयं च (p. 432), and further divides (प्रेक्ष्यं) गेयं into डोम्बिका to श्रीगदितरागादि (p. 445). Here the interesting words to be noted in both are गेयं-प्रेक्ष्यं. It would appear that Someśvara has taken his wording from Hemacandra, though the quotation about the varieties of प्रेक्ष्यगेयं- in both is from the commentary of Abhinavagupta who himself introduces the passage with the words तदुक्तं चिरंतनैः (p. 181) ना. शा. vol. I 2nd edition G. O. S.

The last point to be noted is a small one. Someśvara in the tenth Ullāsa while explaining शोभाशून्यत्वम् says शोभाशून्यत्वमहृद्यत्वम् । तत्र चोपमादयोऽपि नालंकारा इति सर्वसंमतम् । (पृ. ३०५). Here we have to note the words अहृद्यत्वम् and उपमादयोऽपि. We know that it is Hemacandra who has defined उपमा as हृद्यं साधर्म्यम् । (p. 339). Someśvara seems to say that where there is no हृद्यत्व there is no Alaṁkāra, and this applies to Upamā also. He seems to imply that this is a characteristic common to all Alaṃkāras and not

---

1 It is well known that Bhāmaha in his Kāvyālaṁkāra gives five kinds of Kāvya viz. सर्गबन्ध (महाकाव्य), अभिनेयार्थ (नाटक), कथा, आख्यायिका and अनिबद्ध (श्लो. १८. परि. १. पृ. ३. चौ. सं. सि.), while Daṇḍin in his Kāvyādarśa recognizes (1) मुक्तक, (2) सर्गबन्ध महाकाव्य, (3) कथा and rejects आख्यायिका as a separate kind (श्लो. १३-२८. परि. १. पृ. १०-१९. ed by Rangacharya, Madras 1910). As mixed varieties of verse and prose he gives two-viz. नाटक and चम्पू (श्लो. ३१. पृ. २१ ibid). Both these early writers do not give any sub-varieties.

Rudraṭa in the sixteenth adhyāya of his Kāvyālaṃkāra mentions काव्य (क्षुद्र), महाकाव्य, कथा, आख्यायिका (अ. १६. श्लो. २. पृ. १६७. का. सं. सि. १९२८), and खण्डकथा, प्रशस्ति, कुलकादि, नाटकादि (अ. १६, श्लो. ३३-३६. पृ. १७२ ibid).

Bhoja in his Sarasvatīkaṇāṭhābharaṇa gives a division of Kāvya into श्रव्य and दृश्य, but offers no varieties of the former, while for latter gives six-viz. लास्य, ताण्डव, छलिक, संपया, हल्लीसक and रास (पृ. ३०६-३०७ K. M. S. 2nd edition 1934). Dr. V. Raghavan however, in his work on Bhoja's Śṛngāra Prakāśa (pp. 28-29) mentions 24 kinds of Śrāvya Prabandhas out of which (1) Ākhyāyikā, (2) Nidarśanā, (3) Pra-vahlikā, (4) Manthallikā, (5) Maṇikulyā, (6) Kathā, (7) Parikathā, (8) Khaṇḍakathā, (9) Upakathā, and (10) Bṛhatkathā and (11) Champū, may be noted. If this list is complete, we have to say that Bhoja also does not mention Sakalakathā and that therefore the authority for it for Hemacandra and Someśvara may be different. Only after the text of Śṛngāraprakaśa of Bhoja is published, we can say whether the verses quoted in Viveka as authorities for sub-varities of Kathā can be traced to that work or some other work referred by it.

the particular one of Upamā. Can we say that this is a fling at Hemacandra ?[1]

Thus the parallelisms in the Saṃketa of Someśvara and the Kāvyānuśasana of Hemacandra do not give us any definite clue as to the priority of the one or the other. It appears that both have drawn independently from common sources like Dhvanyāloka, Locana, the verses quoted in Viveka etc.

Probably, both the works the Kāvyānuśāsana with Alaṃkāra-cūdāmaṇi and Viveka and the Saṃketa of Someśvara were too near in time to each other to be known and utilized by the one or the other. But if some borrowing has to be assumed, the probability is that the Brahmanical writer would not condescend to take his material from a Jain, while Hemacandra had never any hesitation in utilizing non-jain works. If this turns out to be true, the date of Someśvara's Saṃketa will have to be placed before 1150 A. D.

But for the present we may place the composition of Kāvyādarśa-Kāvyaprakāśa-saṃketa between 1150 A. D. and 1160 A. D.

Thus within fifty to sixty years of the publication of Kāvyaprakāśa (c. 1100 A. D.), we find Rucaka writing a real Saṃketa (1135-50 A. D.), Someśavara, a very much enlarged Saṃketa called by him Kāvyādarśa (1140-50 A. D.) discussing topics not treated in K. P., and Māṇikyacandra also a similar Saṃketa (1160 A. D.). To his we may add Hemacandra basing his Kāvyānuśāsana on Mammaṭa's work, making his treatise much more comprehensive than Someśvara's commentary. This shows how soon the greatness of Mammaṭa's work was recognized, not only in his own region Kashmir but in Gujarat also. It speaks for the intellectual intercourse between different and distant parts of India in those old times.

Someśvara's native place:

Vāmanācārya Jhalkikar in his Sanskrit introduction p. 25 to the fourth edition of K. P. (1921) takes Someśvara to be a Kānyakubjadeśiya, a native of Kanouj on the strength of the following reference :

यथा कान्यकुब्जदेशे उद्धतो वेषो दारुणो व्यवहारो भयंकर आकारः परुषवचनमनुचितम्. This is, however, too general a remark to warrant any such guess. This passage occurs in the Viveka of K. S. of Hemacandra also. It is likely that

1 Udbhaṭa uses the words "यच्चेतोहारिसाधर्म्यम्" (पृ. १६ नि.सा.). Vāgbhaṭa in his Kāvyānuśāsana uses the words "चमत्कारिसाम्यमुपमा" (पृ. ३३ K. M. S.). Appayadīkṣhita says "हृद्यं साधर्म्यमुपमेत्युच्यते काव्यवेदिभिः (चित्रमीमांसा. पृ. ६) the very words of Hemacandra. Jagannātha says सादृश्यं सुन्दर etc. (पृ. १५, र. ग.).

it may have been taken by both the writers from the missing portion of the Kāvyamīmāṁsā of Rājaśekhara, who belonged to Kanouj.

If knowledge of obscene words of a particular language can be taken as proof of a writer's regional language and therefore native region, we may say that Someśvara belonged to Kashmir, because on p. 136 he says अत्र कश्मीरेषु etc. His Maṅgala indicates him to be a follower of Pratyabhijñādarśana- a school of thought which had developed in Kashmir and was prevalent at this time. This would be an additional argument to make Someśvara a Kashmirian. But it should be said that no definite conclusion can be based on such references.

Someśvara's other works:

We have no knowledge about the other works of Someśvara. Verses given at the end of Ullāsas VII & X[1] and quotations of verses under मैव (p. 131 & p. 224), however, show that Someśvara must have been a poet also. Both the latter verses are benedictory. The first describes the rising Sun in the following lines:

शश्वद्दर्शनलोपिसन्तततमस्तोमच्छिदा पण्डितः काषायं दधदम्बरं मुनिरिव क्षोणीं पुनानः परम् ।
कुर्वाणः करविभ्रमैस्त्रिजगतो बोधं समध्यासितः पौरस्त्याचलवेदिकां दिनकरः क्लिश्नातु वः कल्मषम् ॥

The second verse is as follows:

दूरागाधभवान्धकूपकुहरक्रामत्तमःकर्दमक्रोडान्तःपरिलीनदीनवपुषः पाठीनपोतानिव ।
जन्तून् यस्त्वरितं निजोद्धुरकरैरुद्धृत्य लोकंपृणैः प्रीणन्निर्मलशर्मवारिभिरभिप्रेयाय भूयात्स वः ॥

Here also the Sun is intended. From the benedictory nature of these two verses one may guess that they may be either verses from some of his dramas or more probably from a Sūrya stotra.

Kāvyādarśa Kāvyāprakāśa Saṃketa:

This Saṃketa of Someśvara is really the first adequate commentary of Kāvyaprakāśa on a big scale, that of Rucaka being mostly a short explanatory note. Not only the author has shown great knowledge of previous works on Sanskrit poetics, but his exposition is both clear and critical. His erudition not only of Kāvyaśastra and Kāvyas but also of allied subjects such as Mīmāṁsā, Vyākaraṇa etc. is evidenced by quotations given and the works and the authors mentioned by him as well as by references traced by the editor.

---

1 येषां ताण्डवमाधत्ते चित्ताध्वनि रसध्वनिः । त एवास्य सुवर्णस्य परीक्षाकषपट्टकाः उ. ७ पृ. १९५
स्वीकृत्य कल्पतरुतो मरुतः परागं दृष्टेः क्षतिं विदधते जगतोऽपि किं तैः ।
भृङ्गः कृती तु परितः सुमनोमुखेभ्यः पीतं मधूद्वमति येन मदं करोति ॥ उ. १० पृ. ३५२

It may he noted here that Rucaka does not give any such verses of critical import at the ends of Ullāsas in his Saṁketa. Māṇikya however gives verses at the end of each Ullāsa, in comparison with the two of Someśvara. It will be interesting to compare these verses also. So I quote them below.

It is hoped that this Saṃketa of Someśvara will be appreciated by scholars as an interesting and illuminating work on Sanskrit Poetics.

× × ×

It is a pleasant duty to acknowledge the help and assistance received from scholar-friends. First and foremost is the Generel Editor of the Series-Acharya Muni Shri Jinavijayaji, who asked me to prepare, for the Rājasthān Purātattva Granthamala, a critical edition of the Kāvyādarśa-Kāvyaprakāśa-Saṃketa which was carefully copied under his personal supervision by Pandit Keshavram Kashiram Shastri. Prof. Dr. Priyabālā Shah my former student and now colleague has rendered me assistance in a number of ways, particularly in the preparation of appendixes containing the various readings of K. P. and K. P. S. and helping me in tracing quotations in the K. P. S. to their original sources. For this labour of love my thanks are due to her.

I acknowledge with thanks the assistance received from Pandit K. K. Shastri, whose carefully prepared press-copy was of so much use to me. He also considerably helped me in indicating some paralleisms from the Saṃketa of Māṇikyacandra as well as proof-reading. I also thank Vyākaraṇa-Kāvya Tīrtha Mrs. Vasumati Shah, assistant to the Curator of the Manuscripts Department of Gujarat Vidya Sabha, who copied for me various indexes.

Ullāsa I.

सच्छब्दार्थशरीरस्य काऽलंकारव्यस्थितिः । यावत्कल्याणमाणिक्यप्रबन्धो न निरीक्ष्यते ॥ (p. 16).

Ullāsa II.

सम्यक्शब्दविभागश्रीस्तेषां न स्याद्द्वीयसी । परिच्युता न सङ्केताद्येषां मतिनितम्बिनी (p. 49).

Ullāsa III.

मनोवृत्ते ! भोक्तुं निबिडजडिमोढापि परितः परस्मै चेत् काव्याद्भुतपरिमलाय स्पृहयसि ।
समुद्यद्वैदग्ध्यध्वनिसुभगसर्वार्थजनने तदा सङ्केतेऽस्मिन्नवहितवतीं सूत्रय रतिम् ॥ (p, 58).

Ullāsa IV.

न वेत्ति यस्य गाम्भीर्यं गिरितुङ्गोऽपि लोलटः । तत्तस्य रसपाथोधेः कथं जानातु शङ्कुकः ॥ (१).
भोगे रत्यादिभावानां भोगं स्वस्योचितं ब्रुवन् । सर्वथा रससर्वस्वमर्मास्पार्क्षीन्न नायकः ॥ (२) (p. 147).

Ullāsa V.

सङ्केतगमने दत्तां मनस्सुमनसां जनः । ध्वनिर्यत्र गुणीभूतः श्रोत्रानन्दी निरूपितः ॥ (p. 187).

Ullāsa VI.

सङ्केतरीतिरेषैव ज्ञानश्रीभुक्तयेऽद्भुता । वर्णनाविषयीचक्रे यत्र वाणीगतध्वनिः ॥ (p. 190).

Ullāsa VII.

सङ्केतवर्त्मनाऽनेन सम्यग्घटनतत्पराः । मदयन्ति विदग्धानां मनांसि सुमनोगिरः ॥ (p. 285).

Ullāsa IX.

वाणी काव्यप्रकाशस्य गुणतत्त्वविवेचिनी । सङ्केतेनैव घटते यदि कस्यापि धीमतः ॥ (p. 305).

Ullāsa X.

गुणानपेक्षिणी यस्मिन् अर्थालङ्कारतत्परा । प्रौढापि जायते बुद्धिः सङ्केतस्सोऽयमद्भुतः ॥ (p. 469).

Prof. G. H. Bhatt, Director of the Oriental Instutite, Baroda, very kindly lent to me his copy of the Calcutta Oriental Journal containing Rucaka's Saṃketa.

I express my sense of gratitude to Dr. Lady Vidyagauri R. Nilkanth-Honorary Secretary of Gujaraṭ Vidya Sabha for allowing me the use of the press-copy of K. P. S. and the oldest paper ms. of K. P. in the possession of the Institution.

Muni Shri Punyavijayaji has put me under a deep debt of obligation by supplying references to Śabdāṅkas which have been of material help in settling the date of Māṇikyacandra. Prof. Harihar Bhatt not only found out equivalent dates of the Christian Era from Indian dates given in the mss., but very kindly also helped me in settling the date of the paper ms. of Kāvyaprakāśa.

Ahmedabad,
1-1-1957.

Rasiklal C. Parikh.

Appendix A

Parallelisms in the Saṃketas of Someśvara and Māṇikyacandra.

N.B.–For the first three Ullāsas of M's. Saṃketa, the references are to the pages of the edition of Anandāśrama Sanskrit Series, for the remaining seven, the edition of University of Mysore Sanskrit Series No. 60.

उल्लास १

पृ.	सोमेश्वर	पृ.	माणिक्यचन्द्र
१	(1) कवेरपेक्षया अन्यशब्दनिर्देशः ।	२	(1) कवेरपेक्षया अन्यशब्दनिर्देशात् ।
	(2) वक्तीति वाक्शब्दः । उच्यते इति वागर्थः । उच्यतेऽनयेति वागभिधा व्यापारः ।	३	(2) वक्तीति वाक्शब्दः । उच्यत इति वागर्थः । उच्यतेऽनयेति वागभिधाव्यापारः ।
	(3) यतः सुकविभिरनुबध्यमाना भावा अचेतना अपि चेतनवच्चेतना अप्यचेतनवद् विवर्तन्ते ।	२	(3) यतोऽस्यां चेतना अपि भावाः कविना निबध्यमाना अचेतनवद्, अचेतना अपि चेतनवत् प्रतिभासन्ते ।
२	(4) कविप्रजापतिवाचश्चास्या आधिक्ये नियतीत्यादेरुपमेयोत्कर्षहेतोरुक्तावाक्षिप्ते चौपम्ये व्यतिरेकालंकारो व्यङ्ग्यः ।	३	(4) कविब्राह्मब्राह्मीनिर्मिते ब्रह्मनिर्मितेः सकाशात् स्वरूपप्रयोजनकारणविशेषप्रतिपादकेन नियतीत्यादिविशेषणचतुष्टयेन आधिक्ये नियतीत्यादेरुपमेयोत्कर्षहेतोरुक्त्या समाक्षिप्ते चोपमानोपमेयभावे व्यतिरेकालंकारो व्यङ्ग्यः ।
	(5) कविभारतीप्रभावख्यापने वक्तुरतितरां रतिरित्यलक्ष्यक्रमः स्थायीभावोऽत्र वाक्ये व्यङ्ग्यः ।		(5) कविब्राह्मीप्रभावख्यापनेऽतीव ग्रन्थकृतो रत्यलक्ष्यक्रमस्थायिभावोऽत्र काव्ये व्यङ्ग्यः ।
	(6) दोषत्यागेन गुणालंकारसंस्कृतं काव्यमभिधेयं शास्त्रं चेदमभिधायकं तयोरभिधानाभिधेयलक्षणः संबन्धोऽर्थादुक्तः ।		(6) दोषपरिहारेण सगुणं सालंकारकाव्यमभिधेयम् । शास्त्रमभिधायकम् । तयोरभिधानाभिधेयलक्षणः संबन्धः ।
	(7) प्रयोजनं च सर्वत्र प्रवृत्त्यङ्गम् । यदुक्तम्-प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते । तदपि दृष्टमदृष्टं चाह-काव्यमिति ।	४	(7) प्रयोजनं सर्वत्रापि प्रवृत्त्यङ्गम् । यतो न प्रेक्षापूर्वकारिणो निष्प्रयोजनाः प्रवर्तन्ते । तदपि दृष्टादृष्टत्वाद् द्विधेत्याह-काव्यमिति ।
२-३	(8) अस्येदं वृत्तममुष्मात् कर्मण इत्येवं युक्तियुक्तकर्मफलसंबन्धप्रकटनकारिभ्योऽर्थे तात्पर्यं विद्यते येषामित्यर्थप्रधानेभ्यः ।		(8) अस्येदं वृत्तमस्मात् कर्मण इत्येवं युक्तियुक्तकर्मफलसंबन्धप्रकटनकारित्वादर्थप्रधानेभ्यः ।

सोमेश्वर

पृ.

३ (9) रसस्याङ्गिनो योऽङ्गभूतो व्यञ्जनात्मा व्यापारस्तन्निष्ठतया विसदृशम्

(10) यद् भट्टनायकः—
शब्दप्राधान्यं to काव्यगीर्भवेत् ।

९ (11) च्युतं चन्दनं, न तु क्षालितम् । निर्मृष्टो न तु किञ्चिन्मृष्टः । दूरमनञ्जने, निकटे तु साञ्जने । पुलकिता तन्वीति चोभयं विधेयम् ।

(12) व्यङ्ग्यपक्षे, अधमपदं च व्यञ्जकम् ।

अत्र शब्दशक्तिमूलो वस्तुध्वनिः ।

(13) तथात्रैव स इव त्वं त्वमिव सोऽप्यधम इत्युपमेयोपमालंकारो व्यङ्ग्यः ।

(14) कस्याश्चित् संकेतस्थानं जीवितसर्वस्वायमानं धार्मिकसंचरणान्तरायदोषात् तदवलुप्यमानपल्लवादिविच्छायीकरणाच्च त्रातुमियमुक्तिः ।

१० (15) नागतेति व्यङ्ग्यस्यार्थस्य मलिना मुखच्छायेत्यनयैवोक्तत्वैव विषयीकृतत्वमिति व्यङ्ग्याद्वाच्यमेव सातिशयम् ।

(16) यच्च रसभावादि व्यङ्ग्यार्थशून्यं केवलवाच्यवाचकवैचित्र्यमात्रं तच्चित्रं काव्यमित्याह । शब्दचित्रमिति । विस्मयकृद् वृत्तादिवशात्, न तु सहृदयचमत्कारकारिरसनिष्यन्दमयमित्यर्थः । काव्यानुकारित्वाद् वा चित्रं लेख्यमात्रत्वाद् वा कलामात्रत्वाद् वा ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४ (9) रसस्याङ्गिनोऽङ्गभूतो यो व्यापारस्तत्परतया विलक्षणम्

(10) यदाह भट्टनायकः—
शब्दप्राधान्यं to काव्यगीर्भवेत् ।

८ (11) च्युतं न तु क्षालितम् । क्षालितमित्युक्ते व्यङ्ग्यार्थप्रतीतिरेव न स्यात् । वाप्यामेव क्षालनभावात् । निर्मृष्टो न तु किञ्चिन्मृष्टः । दूरमनञ्जने निकटे तु साञ्जने । पुलकितेति तन्वीति चोभयं विधेयम् ।

९ (12) व्यङ्ग्यपक्षेऽधमपदस्याधमपदसहायानां चन्दनच्यवनादीनां व्यञ्जकत्वमित्येषो **अर्थशक्तिमूलो वाक्यप्रकाश्यो ध्वनिः ।**

(13) तथात्रैव स इव त्वं त्वमिव सोऽप्यधम इत्युपमेयोपमालंकारो व्यङ्ग्यः ।

(14) कस्याश्चित् संकेतस्थानं धार्मिकसंचरणान्तरायदोषात् तदवलुप्यमानपल्लवादिविच्छायीकरणाच्च त्रातुमियमुक्तिः ।

(15) नागतेति व्यङ्ग्यस्यार्थस्य मलिना मुखच्छायेत्यनयैवोक्त्या विषयीकृतत्वमिति वाच्यमेव चमत्कारीति ।

९ (16) यच्च काव्यं केवलवाच्यवाचकवैचित्र्यभाक् तच्चित्रम् । रसादिव्यङ्ग्यार्थ† रहितत्वेन काव्यानुकारित्वाद् विस्मयकारिवृत्तादियोगाद् वा लेख्यसादृश्याद् वा कलामात्रत्वादिना वा ।

---

† A. S. °र्थत्वेन । °रहितत्वेन in Shamhastry's edition, Mysore 1922

उल्लास २

सोमेश्वर

पृ.

११ (1) उक्तस्वरूपाकाङ्क्षादिवशाद् अन्योन्यमन्विताः पदार्थास्तात्पर्यापरनामधेयं वाक्यार्थमवबोधयन्ति।

१२-१३ (2) यद्येकस्मिन् गोपिण्डे संकेतः क्रियते तदान्येषु कर्तुं न शक्यते।

१३-१४ (3) न खलु ‘डि’शब्दोच्चारणकाले ‘त्थ’शब्दोऽस्ति, [त्थ] शब्दोच्चारणकाले वा ‘डि’शब्द इति। अत एव संहृतक्रमं स्वरूपम्। तत् खलु तां तामभिधाशक्तिमभिव्यञ्जयता वक्त्रा यदृच्छया संज्ञिनि निवेश्यते। तस्माच्छब्दप्रवृत्तिनिमित्तानां चतुष्ट्वाद् मुख्यः शब्दश्चतुर्विधः।

१४-१५ (4) यदृच्छाशब्देषु शुकसारिकामनुष्याद्युदीरितेषु भिन्नेषु समवेतं डित्थशब्दत्वादिकं सामान्यमेव यथायोगं संज्ञिषु अध्यस्तमभिधेयम्। यदि वा उपचयापचययोगितया डित्थादौ संज्ञिनि प्रतिकलं भिद्यमानेष्वभिद्यमानो यन्महिम्ना डित्थो डित्थ इत्येवमादिरूपत्वेन अभिन्नाकारः प्रत्ययो जायते। तत् तथाभूतं डित्थादिशब्दावसेयवस्तुसमवेतमेव डित्थत्वादिसामान्यं, तच्च डित्थादिशब्दैरभिधीयत इति गुणक्रिया यदृच्छाशब्दानामपि जातिशब्दाद् जातिरेवैकः शब्दार्थ इति भट्टाः।

(5) जातेरर्थक्रियायामनुपयोगाद् विफलः संकेतः यदाह ‘न हि जातिर्दाहपाकादौ उपयुज्यते’ इति। व्यक्तेस्त्वर्थक्रियाकारित्वेऽपि आनन्त्यव्यभिचाराभ्यां

माणिक्यचन्द्र

पृ.

११ (1) आकाङ्क्षादिवशादनन्योन्यमन्विताः पदार्थास्तात्पर्यान्यनामधेयं वाक्यार्थं प्रतिपादयन्ति।

१३ (2) यद्येकस्मिन् गोपिण्डे संकेतः क्रियते तदान्येषु कर्तुं न शक्यते।

१३-१४ (3) न खलु डिशब्दोच्चारे त्थशब्दः। त्थशब्दोच्चारे वा डिशब्दः। अत एव संहृतक्रमं स्वरूपम्। तत् खलु तां तामभिधाशक्तिमभिव्यञ्जयता वक्त्रा यदृच्छयोपाधितया संज्ञिनि तस्मिंस्तस्मिन्निवेश्यते। तस्माच्छब्दप्रवृत्तिनिमित्तानां चतुष्ट्वान्मुख्यशब्दश्चतुर्विधः।

१५ (4) यदृच्छाशब्देषु शुकसारिकाद्युदीरितेषु भिन्नेषु डित्थत्वादिकं सामान्यमेव यथायोगं संज्ञिष्वध्यस्तमभिधेयम्। यदि वोपचयापचययोगितया डित्थादौ संज्ञिनि प्रतिक्षणं भिद्यमानेऽप्यभिद्यमानो यन्महिम्ना डित्थडित्थ इत्येवमभिन्नाकारः स्यात्तथाभूतं डित्थादिशब्दावसेयवस्तुसमवेतमेव डित्थत्वादिसामान्यम्। तच्च डित्थादिशब्दैरभिधीयत इति गुणक्रिया यदृच्छाशब्दानामपि जातिरेवैकः शब्दार्थ इति।

(5) जातेरर्थक्रियाकारित्वाभावाद् विफलः संकेतः। व्यक्तेस्त्वर्थक्रियाकारित्वेऽप्यानन्त्यव्यभिचाराभ्यां न संकेतः कर्तुं शक्यत इति जातिमती व्यक्तिः शब्दार्थ

सोमेश्वर

पृ.

१४-१५ (5) न संकेतः कर्तुं शक्यत इति जात्युपहिता व्यक्तिः शब्दार्थः इति वैशेषिकाः ॥ अपोह इति। जातिव्यक्तितद्योगजातिमद्बुद्ध्याकाराणां शब्दार्थत्वस्य अनुपपद्यमानत्वाद् गवादिशब्दानामगोव्यावृत्त्यादिरूपः शब्दार्थः इति बौद्धाः।

(6) शब्दस्य मुख्येन लाक्षणिकेन वा व्यापारेण अर्थावगतिहेतुत्वमिति मुख्यं तावद् अर्थमाह-स मुख्योऽर्थ इति। साक्षात् संकेतितो मुखमिव हस्ताद्यवयवेभ्योऽर्थान्तरेभ्यः प्रथमं प्रतीयमानत्वात् । यदुक्तम्-शब्दव्यापारतो to इष्यते ॥ मुख्यार्थविषयः शब्दोऽपि मुख्यः॥ तत्रेति। अर्थविषये। समयापेक्षा वाच्या अवगमनशक्तिरभिधाशक्तिः ॥

१५-१६ (7) वाचकस्य शक्तिमुक्त्वा लाक्षणिकस्य लक्ष्यार्थदर्शनद्वारेण व्यापारमाह-मुख्यार्थेति। मुख्यस्यार्थस्य अनुपपत्तेरनुपयोगाच्च प्रत्यक्षादिप्रमाणेन बाधे तेन मुख्येनार्थेन सह लक्ष्यस्यार्थस्य योगे संबन्धे सादृश्यादौ सति रूढेः प्रयोजनाद् वातिपवित्रत्वशी[त]लत्वादेरशब्दान्तरवाच्यात् ताद्रूप्यप्रतिपत्त्यादिरूपाद् अमुख्यः शब्दव्यापारो लक्ष्यार्थविषयो लक्षणाशक्तिः। कारिकामेव उदाहरणद्वारेण व्याकुर्वन्नाह-कर्मणीति। कुशान् लातीति-दर्भग्रहणायोगाद् मुख्यार्थबाधे विवेचकत्वादौ संबन्धे प्रसिद्धे प्रसिद्धिवशात् प्रवीणलक्षणो लक्ष्योऽर्थो लक्षणाव्यापारेणावगम्यते । आदिशब्दाद्

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१५ इति वैशेषिकादयः। अपोह इति। जातिव्यक्तितद्योगजातिमद्बुद्ध्याकाराणां शब्दार्थत्वस्यानुपपाद्यमानत्वाद् गवयादिशब्दानामगोव्यावृत्त्यादिरूपोऽपोहः शब्दार्थ इति बौद्धाः।

१६ (6) शब्दस्य मुख्येन लाक्षणिकेन व्यञ्जनात्मकेन वा व्यापारेणार्थावगतिहेतुत्वमिति मुख्यं तावदर्थमाह-स मुख्योऽर्थ इति। स साक्षात् संकेतितो मुखमिव हस्ताद्यवयवेभ्योऽर्थान्तरेभ्यः प्राग् ज्ञायमानत्वात् । मुख्यार्थविषयः शब्दोऽपि मुख्यः। तत्रेति। अर्थविषये। समयापेक्षया वाच्यावगमनशक्तिरभिधाशक्तिः।

(7) अथेदानीं लाक्षणिकस्य लक्ष्यार्थदर्शनद्वारेण व्यापारमाह-मुख्यार्थेति । मुख्यार्थस्यानुपपत्तेरनुपयोगाच्च प्रत्यक्षादिप्रमाणेन बाधे तेन मुख्यार्थेन सह लक्ष्यार्थस्य योगे संबन्धे सादृश्यादौ सति रूढेः प्रयोजनात् पावित्र्यशैत्यादेरशब्दान्तरवाच्यात् ताद्रूप्यप्रतीत्यादिरूपादन्योऽर्थो यल्लक्ष्यते प्रतिपाद्यते,यत्साम्याद्मुख्यः शब्दव्यापारो लक्ष्यार्थनिष्ठो लक्षणाशक्तिः । यदिति । वाक्यार्थनिर्देशः । सेति । विधीयमाना लक्षणा । सर्वनामपदं हि कदाचिदनूद्यमानलिङ्गमादत्ते कदाचिद्विधीयमानलिङ्गमिति । उदाहरणद्वारेण व्याकरोति-कर्मणीति। कुशाँ लातीति दर्भग्रहणायोगान्मुख्यार्थबाधे विवेचकत्वादौ संबन्धे रूढेः प्रवीणोऽर्थो लक्षणाव्या-

सोमेश्वर

पृ.

१५-१६ (7) द्विरेफादयः । द्विरेफशब्देन हि रेफद्वितययोगिभ्रमरशब्दे लक्षणाद्वारेण रूढ्यनुवृत्तिरेव क्रियते यथा वा लावण्यादयो लवणरसयुक्तत्वादेः स्वार्थाद् अन्यत्र हृद्यत्वादौ लक्ष्ये रूढाः ॥ तुरङ्गकान्ताननहव्यवाहज्वालेव भित्वा जलमुल्लास ।

१६ इत्यादौ तु तुरंगकान्ताननहव्यवाहशब्दो वडवामुखाग्नौ लक्षणया प्रयुक्तः । न चासौ तत्र रूढो, वृद्धव्यवहारेष्वननुज्ञातत्वादिति दुष्टत्वम् । सति तु गुप्तार्थप्रतिपादनादिप्रयोजनसद्भावे एवंविधानामपि लक्षणानामदुष्टत्वम् । यद् भट्टकुमारिलः—

निरूढा to त्वशक्तितः ।

'निरूढा' इति भ्रष्टोपचारप्रतीतयः । 'लक्षणा' इति लक्षणाशब्दाः । 'अभिधानवद्' इति वृक्षादिनामशब्दवत् ॥

१६-१७ (8) सान्तरः सव्य[व]धानस्तटादिलक्षणोऽर्थस्तदाश्रया क्रिया शब्दव्यापारो लक्षणा । तथा हि गङ्गाशब्दोऽभिधेयस्य स्रोतोविशेषस्य घोषाधिकरणतानुपपत्त्या मुख्यशब्दार्थबाधे योऽसौ समीप-समीपिभावात्मकः संबन्धस्तदाश्रयेण तटं लक्षयति । लक्षणायाश्च प्रयोजनं तटस्य गङ्गात्वैकार्थसमवेतासंविज्ञातपदपुण्यत्वादिप्रतिपादनं व्यङ्ग्यम् । न हि तत्पुण्यत्वादिशब्दान्तरैः स्प्रष्टुं शक्यते । तद्योगश्च मुख्यार्थासन्नत्वम् । तत् पञ्चधा आचार्यभर्तृमित्रेण उक्तम्—

अभिधेयेन संबन्धात् सादृश्यात् समवायतः ।
वैपरीत्यात् क्रियायोगाल्लक्षणा पञ्चधा मता ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१६-१७ (7) पारेण लक्ष्यते । आदिशब्दाद् द्विरेफद्विकानुलोम्यप्रातिलोम्यलावण्यादयः । द्विरेफशब्देन रेफद्वितययोगिभ्रमरपदलक्षणार्थलक्षणाद्वारेण रूढ्यनुवृत्तिरेव षट्पदादौ क्रियते । तुरङ्गकान्ताननहव्यवाहज्वालेव भित्वा जलमुल्लास । इत्यादौ तुरङ्गकान्ताननहव्यवाहशब्दो वडवामुखाग्नौ लक्षणया प्रवृत्तः । न च तत्र रूढः । व्यवहारेऽनभ्यनुज्ञातत्वादिति द्रष्टव्यम् । सति तु गुप्तार्थप्रतिपादनादिप्रयोजने एवंविधलक्षणा अप्यदुष्टाः । यद्भट्टकुमारिलः—

निरूढा to त्वशक्तितः । 'निरूढा' इति भ्रष्टोपचारप्रतीतयः । 'लक्षणा' इति लक्षणाशब्दाः । 'अभिधानवद्' वृक्षादि नामवत् ।

१७ (8) सव्यवधानस्तटादिलक्षणोऽर्थस्तदाश्रया क्रिया शब्दव्यापारो लक्षणा । तथाहि । गङ्गाशब्दाभिधेयस्य स्रोतसो घोषाधारतानुपपत्तेर्मुख्यार्थबाधे योऽयं समीपसमीपिभावात्मा संबन्धस्तदाश्रयेण तटं लक्षयति । लक्षणायाश्च प्रयोजनं तटस्य गङ्गात्वैकार्थसमवेतपुण्यत्वमनोरमत्वशैत्यादिप्रतिपादनं व्यङ्ग्यम् । न हि तत् पुण्यत्वादिशब्दान्तरैः स्प्रष्टुं शक्यते । तद्योगश्च तत्रासन्नत्वम् । तत्पञ्चधोक्तं अभिधेयेन up to पञ्चधा मता । संबन्धाद्यथा-गङ्गायां घोषः । सादृश्याद्यथा-गौर्वाहीको गौरेवायमित्यादौ मुख्यार्थस्य साक्षादिमत्त्वेन प्रत्यक्षादिना प्रमाणेन बाधेऽभिधे-

सोमेश्वर

पृ.

१७-१८ (8) अभिधेयेन संबन्धाद् । यथा 'गङ्गायां घोषः'। सादृश्याद्, यथा 'गौर्वाहीको गौरेवायम्' इत्यादौ मुख्यस्यार्थस्य साक्षादिमत्त्वादेः प्रत्यक्षादिना प्रमाणेन बाधेऽभिधेयसादृश्यात् तद्गतगुणसदृशगुणयुक्तमर्थान्तरं वाहीकलक्षणं लक्षयति । प्रयोजनं च ताद्रूप्य प्रतिपत्त्यादि । एते च सारोपायाः साध्यवसानायाश्च गौणलक्षणाया उदाहरणे । समवायः साहचर्यम्, यथा 'कुन्ताः प्रविशन्ती'त्यादौ कुन्तानां प्रवेशस्य असंभवान्मुख्यार्थबाधे साहचर्यात् पुरुषा लक्ष्यन्ते । कुन्तवन्त इति च प्रयोगाद् येषां रौद्रत्वादीनां धर्माणां न तथा प्रतिपत्तिस्तेषां सातिशयानां प्रतिपत्तिश्च प्रयोजनम् । वैपरीत्याद्, भद्रमुख इति । अत्र भद्रमुखशब्दस्य अभद्रमुखे प्रयोगात् स्वार्थबाधः । अतोऽसौ स्ववाच्यभूतभद्रमुखवैपरीत्याद् अभद्रमुखत्वं लक्षणयावगमयति । प्रयोजनं चात्रापि गुप्तासभ्यार्थप्रतीतिः । क्रियायोगात् कार्यकारणयोगाद्, यथा— पृथुरसि गुणैर्मूर्त्या to त्रिलोकविजय्यपि ॥

अत्र शत्रुघ्ने शत्रुघ्नशब्दप्रयोगाद् मुख्यार्थबाधः । शत्रुघ्नशब्दश्च अशत्रुघ्ने शत्रुहननक्रियाकर्तृत्वयोगाल्लक्षणया प्रयुक्तः । प्रयोजनं च वर्ण्यमानस्य शत्रुघ्नशब्दाभिधेयनृपतिरूपताप्रतिपादनम् । एवं निरन्तरार्थविषयः शब्दस्य व्यापारोऽभिधा । सान्तरार्थनिष्ठश्च निबन्धनत्रयसमुद्भवो लक्षणा । तेन अभिधैव मुख्येऽर्थप्रविवृत्तसुबाधकेन निरुध्यमाना सती अचरितार्थत्वाद् अन्यत्र प्रसरतीत्यभिधापुच्छभूतैव लक्षणा ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१७ (8) येन सादृश्यात् तद्गतजाड्यमान्द्यादिगुणयुक्तो वाहीको लक्ष्यते । प्रयोजनं ताद्रूप्यप्रतिपत्त्यादि । एते च सारोपासाध्यवसानालक्षणागौणलक्षणाया उदाहरणे । समवायः साहचर्यम् । यथा कुन्ताः प्रविशन्तीत्यादौ कुन्तादीनां प्रवेशानुपपत्त्या मुख्यार्थबाधे साहचर्यात् पुरुषा लक्ष्यन्ते । प्रयोजनं च रौद्रत्वादीनां सातिशयानां प्रतिपादनम् । वैपरीत्याद्भद्रमुखः । अत्र भद्रमुखशब्दस्याभद्रमुखे प्रयोगात् स्वार्थबाधः । अतोऽसौ स्ववाच्यभूतभद्रमुखत्ववैपरीत्यादभद्रमुखत्वं लक्षणयाऽवगमयति । प्रयोजनं तु गुप्तासभ्यार्थप्रतीतिः । क्रियायोगाद्यथा महति समरे शत्रुघ्नस्त्वमिति । अत्राशत्रुघ्ने शत्रुघ्नप्रयोगात्स्वार्थबाधः । शत्रुघ्नशब्दश्चाशत्रुघ्ने हननक्रियायाः कर्तृत्वायोगाल्लक्षणया प्रयुक्तः । प्रयोजनं च वर्ण्यमानशत्रुघ्नशब्दाभिधेयनृपरूपताप्रतिपादनम् । एवं निरन्तरार्थनिष्ठशब्दव्यापारोऽभिधा । सान्तरार्थनिष्ठस्तु लक्षणा । तेनाभिधैव मुख्यार्थे बाधिता सत्यचरितार्थत्वादन्यत्र प्रसरतीति तत्पुच्छभूतैव लक्षणा ।

सोमेश्वर

पृ.

१८ (9) यथान्यैर्भट्टमुकुलादिभिरुदाहृता न च क्रमेण द्वयोर्वाच्यता विरम्य व्यापारद्वयाभावादित्यन्योक्तेनाह।

१९ (10) अयमभिप्रायः। यत्र शब्दः स्वमर्थं सर्वथा त्यजन्नन्यं लक्षयति तत्र लक्षणेन लक्षणा। यत्र तु स्वार्थमपि वदन्नन्यमर्थमुपादत्ते तत्रोपादानेनेति।

(11) एतदेव द्रढयन्नाह-अनयोरिति। तटादीनां लक्ष्याणां प्रतिपादने
१९ भेदात्मकं न तटस्थत्वम्। किंतु कुन्तपुरुषयोर्गङ्गातटयोश्च अभेद एवेति यदन्यैस्तटस्थे लक्षणा शुद्धेत्युक्तं तदयुक्तमित्याह-तत्त्वप्रतिपत्तौहीति। तस्य भावस्तत्त्वमभेदः, तस्य प्रतिपत्तौ हि प्रतिपिपादयिषितमशब्दान्तरवाच्यं यदपरिमितं रौद्रत्वादिपावनत्वादिप्रयोजनं तस्य प्रतीतिः। भेदे तु गङ्गासंबन्धमात्रप्रतीतिर्न लक्षणाया विशेषः॥

२०-२१ (12) यत्रोपमानगतगुणसदृशगुणयोगलक्षणां पुरःसरीकृत्य उपमेये उपमानशब्द आरोप्यते तौ गौणौ, गुणेभ्य आगतत्वाद् गौणशब्दवाच्यौ।

२१ (13) स्वार्थो गोशब्दस्य गोपिण्डः, परार्थो वाहीकादिः। गोशब्दो वाहीकशब्देन अनुपपद्यमानसमानाधिकरणत्वाद् बाधितमुख्यार्थः सन् स्वाभिधानपुरःसरं स्वसहचारिजाड्यादिगुणाँल्लक्षयित्वा तत्सदृशवाहीकगतजाड्यादिगुणलक्षणाद्वारेण गोगुणसदृशगुणोपेते वाहीके उपचरितः, तेनेयमुपचारमिश्रा। लक्षणाद्वयगर्भीकारेण चतुर्थकक्षायां लक्षणेति लक्ष्यमाणगुणमुखेन गोशब्दो वाहीके लक्षणया प्रवर्तत इत्यर्थः।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१८ (9) यथान्यैर्मुकुलादिभिरुक्ता। न च क्रमेण द्वयोर्वाच्यता। शब्दबुद्धिकर्मणां विरम्य व्यापाराभावात्।

१९ (10) अयमभिप्रायः—यत्र शब्दः सर्वथा स्वमर्थं त्यजन्नन्यं लक्षयति तत्र लक्षणेन तटादिज्ञापनेन लक्षणा। यत्र तु स्वार्थमपि वदन्नन्यमुपादत्ते तत्रोपादानेनेति।

(11) एतदेव द्रढयति-अनयोरिति। तटादीनां लक्ष्याणां प्रतिपादने भेदात्मकं न ताटस्थ्यम्। कुन्तपुरुषयोर्गङ्गातटयोश्चाभेद एवेति यदन्यैस्तटस्थे लक्षणा शुद्धेत्युक्तं तद्दूषितमित्याह-तत्त्वप्रतिपत्तौ हीति। भेदे तु गङ्गासंबन्धमात्रप्रतीतेर्न लक्षणाविशेषः।

२१ (12) यत्रोपमानगतगुणतुल्यगुणयोगलक्षणां पुरःसरीकृत्योपमेय उपमानशब्द आरोप्यते तौ गौणौ। गुणेभ्य आगतत्वाद् गौणशब्दवाच्यौ।

(13) स्वार्थो गोशब्दस्य गोत्वं पिण्डाकृतिर्वा। व्यक्त्याकृतिजातयस्तु पदार्थ इति वचनात्। परार्थो वाहीकः। तथा च गोशब्दो वाहीकशब्देऽनुपपद्यमानसामानाधिकरण्याद् बाधितस्वार्थः सन् स्वाभिमानपूर्वं स्वार्थसहचारिजाड्यादिगुणाँल्लक्षयित्वा तत्तुल्यवा-
२१ हीकस्थजाड्यादिगुणलक्षणाद्वारेण गोगतगुणतुल्यगुणोपेते वाहीक उपचरितः। शब्दोपचारस्यार्थोपचारादिना भावित्वात् तदर्थोऽपि। केचिच्छब्दोपचारमेव-

सोमेश्वर

पृ.

२१ (13) न तु परार्थोऽभिधीयत इति । गोशब्देन स्वार्थसहचारिगुणलक्षणापूर्वं तदभेदेन वाहीकगताः स्वसदृशा गुणा एव लक्ष्यन्ते, सव्यवधानशब्दव्यापारात् । न तु वाहीकार्थोभिधीयत इत्येकलक्षणागर्भेयं तृतीयकक्षायां लक्षणेत्याहुः । 'अभिधीयत' इति । लक्ष्यते ।

(14) साधारणेति । गोर्वाहीकस्य साधारणाः सदृशा ये गुणास्तदाश्रयेण वाहीकार्थ एव लक्ष्यः । अभिधेयेति । मुख्यादर्थाद् अविनाभूता तत्संबद्धैव यार्थान्तरप्रतीतिः सा लक्षणा शुद्धेत्यर्थः । लक्ष्यमाणैश्च जाड्यादिभिः संबन्धाद् या वृत्तिः सव्यवधानार्थनिष्ठः शब्दव्यापारः सा गौणी । नान्तरीयकत्वमिति । न अन्तरं नान्तरम् । अविनातत्रभवं नान्तरीयं, तदेव नान्तरीयकमविनाभावि, येन विना यन्न भवति तन्नान्तरीयकं, तादात्म्यतदुत्पत्तिलक्षणं जातिव्यक्त्यादिवत् । तत्त्वे हीति । नान्तरीयकत्वेन हि मञ्चपुरुषयोरविनाभावोऽस्ति । अविनाभावे चेति । नान्तरीयकत्वे गौरनुबन्ध्य इत्यादौ ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२१ (13) मन्यन्ते । एवमन्यत्रापि । तेनेयमुपचारमिश्रा । लक्षणाद्वयगर्भीकारेण चतुर्थकक्षायां लक्षणेति । चतुर्थकक्षात्वं लक्षणाया अभिधापेक्षया ज्ञेयम् । लक्ष्यमाणगुणयोगेन गोशब्दो वाहीकलक्षणया प्रवर्तत इत्यर्थः । गर्भलक्षणयोरन्त्यलक्षणार्थं प्रवृत्तत्वात् तत्प्रयोजनेन प्रयोजनवत्त्वं न तु तयोर्भिन्नं प्रयोजनम् । न तु परार्थो– गोशब्देन स्वार्थसहचारिगुणलक्षणापूर्वं तदभेदेन वाहीकस्थाः स्वतुल्या गुणा एव लक्ष्यन्ते । सव्यवधानव्यापारात् । न तु वाहीकार्थोऽभिधीयत इत्येकलक्षणागर्भेयं तृतीयकक्षायां लक्षणेत्याहुः । 'अभिधीयत' इति लक्ष्यते ।

(14) साधारणेति । गोर्वाहीकस्य च साधारणास्तुल्या ये गुणास्तदाश्रयेण वाहीक एव लक्ष्यः । अभिधेयेति । मुख्येनार्थेनाविनाभूतस्य केनापि संबन्धेन संबद्धस्यान्यवस्तुनो या प्रतीतिः सा लक्षणा शुद्धेत्यर्थः । लक्ष्यमाणैर्गुणैर्जाड्यादिभिः संबन्धाद् या तु वृत्तिः सान्तरार्थनिष्ठः शब्दव्यापारः सा गौणी । 'नान्तरीयकत्वमिति' नान्तरमविनाभावः । तत्र भवं नान्तरीयम् । गहादित्वादीयः । तदेव नान्तरीयकमिति । अविनाभावि येन विना यन्न भवति तन्नान्तरीयकं तादात्म्यतदुत्पत्तिलक्षणं कृतकत्वानित्यत्वादिवत् । तथात्वे हीति । नान्तरीयं हीत्यर्थः । न हि मञ्चापुरुषयोरविनाभावोऽस्ति । इत्युक्तमिति । गौरनुबन्ध्यइत्यत्र ।

सोमेश्वर

पृ.

२५ (14a) यदि च सिंहो बटुरिति शौर्यातिशयेऽवगमयित्वे स्खलद्गतित्वं शब्दस्य, तत् तर्हि प्रतीतिं नैव कुर्यादिति किमर्थं तस्य प्रयोगः। 'गम्य' इति ण्यन्तो निर्देशः कर्तव्य इति। 'अन्यत इति' अभिधालक्षणाव्यापारात्। शब्दादिति। गङ्गादेः।

२६ (15) यथा तटस्य प्रयोजनप्रतिपादनेऽसामर्थ्यं, न तथा गङ्गाशब्दस्य। तस्मादभिधालक्षणातिरिक्तस्तच्छक्तिद्वयोपजनितार्थावगमपवित्रितप्रतिपत्तृप्रतिभासहायार्थद्योतनशक्तिर्ध्वननात्मा व्यापारः, तेन यत्केनचिल्लक्षितलक्षणेति नाम कृतं तद् व्यसनमात्रम्। तथाभावे च प्रयोजने लक्ष्ये प्रयोजनान्तरान्वेषणेन अनवस्थानाद् अतिव्याप्तिः स्यात्।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२६ (14a) यदि च सिंहो माणवक इति शौर्यातिशयेऽवगमयितव्ये स्खलद्गतित्वं शब्दस्य किमर्थं तस्य प्रयोगः। गम्य इति ण्यन्तो निर्देशः। शब्दावगमयितव्य इत्यर्थः। नान्यत इति। अभिधालक्षणाव्यापारात्। 'शब्दादिति'। गङ्गादेः।

२७ (15) यथा तटस्य प्रयोजने प्रतिपाद्येऽसामर्थ्यं न तथा गङ्गाशब्दस्य। तस्मादभिधालक्षणाभ्यामन्यस्तच्छक्तिद्वयोपजनितार्थावगमपवित्रितप्रतिपत्तृप्रतिभासहायार्थद्योतनशक्तिर्ध्वननात्मा व्यापारः। तेन यत्केनचिल्लक्षितलक्षणेति नामकृतं तद्व्यसनमात्रं तथाभावे च प्रयोजने लक्ष्ये प्रयोजनान्तरान्वेषणेनानवस्थानादतिप्रसक्तिः।

उल्लास २

सोमेश्वर

पृ.

३१ (1) अर्थो व्यञ्जको यदि निरपेक्षस्तत्सर्वदा तमर्थमवगमयेत् । अथ सापेक्षः किं तस्यापेक्षणीयमित्याह-वक्तृबोद्धव्येति ।

(2) काचिद् अविनीतवधूः कृतपरपुरुषसंभोगा गात्रगतविकारविशेषापह्नवेनाभिधत्ते । तस्याश्च असाध्वीत्वे अवगते तृतीयस्य तटस्थस्य प्रतिभाजुषो व्यङ्ग्यप्रतीतिः ।

(3) 'ककि लौल्ये' इत्यस्य धातोः 'काकु' शब्दः प्रकृतार्थातिरिक्तमपि वाञ्छति-इति लौल्यमस्याभिधीयते। यद्वा ईषदर्थे कुशब्दस्य कादेशः। तेन हृदयस्थवस्तुप्रतीतेरीषद्भूमिः काकुः।

३२ (4) ननु 'तथाभूतां दृष्ट्वा' इत्यादिवाच्यस्य सिद्धौ काकुः स्वरविशेषोऽङ्गकारणमिति-वाच्यसिद्ध्यङ्गलक्षणो गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदः कथं न भवतीत्याशङ्क्याह-न च वाच्येति । 'हे सहदेव कुरुषु किं न खेदो गुरोः यन्मयि खेदः' इत्येवंरूपेण प्रश्नमात्रेणापि काकोर्विश्रान्तत्वात् । काकोस्तु यद् वैशिष्ट्यं तत्पर्यालोचनया सहृदयस्य व्यङ्ग्यार्थप्रतीतिः ।

३४ (5) मिथः संयोग इति । तत्र वक्तृबोद्धव्ययोर्यथा-अत्ता इत्थ नु मज्जइ ति । अत्तेति श्वश्रूरसहिष्णुः, न तु माता । तेन गुप्तमभिलाषः पोषणीयः । न च सर्वदा भयदेत्याह । अत्रेति । दूरे सा च शेते न जागर्ति । अत्र त्वन्मार्गनिकटेऽहमुपभोगयोग्या । सांप्रतं विघ्नकारीति कुत्सितं दिवसम् । प्राकृते पुंनपुंसकयोरनियमः । तस्मात् संप्रति विलोकय । अन्योन्य-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३१ (1) अर्थो व्यञ्जको यदि निरपेक्षस्तत्सदा तमर्थमवगमयेत् । अथ सापेक्षः किं तस्यापेक्षणीयमित्याह-वक्तृबोद्धव्येति ।

(2) अत्र काचिद् असती कृतान्यपुरुषसङ्गा कायगतविकारविशेषापह्नवेनाभिधत्ते । तस्याश्च असाध्वीत्वेऽवगते तृतीयस्य तटस्थस्य प्रतिभाजुषो व्यङ्ग्यप्रतीतिः ।

३२ (3) यद्वा ककि लौल्य इत्यस्य धातोः काकुशब्दः । प्रकृतार्थातिरिक्तमपि वाञ्छतीति लौल्यमस्याभिधीयते । यद्वा ईषदर्थे कुशब्दस्य कादेशः । तेन हृदयस्थवस्तुप्रतीतेरीषद्भूमिः काकुः ।

(4) ननु तथाभूतामित्यादिवाच्यसिद्धौ काकुरयं स्वरविशेषः कारणमिति गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदः कथं न स्यादित्याशङ्क्याह-न च वाच्येति । हे सहदेव कुरुषु न खेदो गुरोर्यन्मयि खेद इत्येवंरूपप्रश्नमात्रेणापि काकोर्विश्रान्तेः । काकोस्तु यद् वैशिष्ट्यं तत्पर्यालोचनया सहदेवस्य व्यङ्ग्यप्रतीतिरिति नैष काकाक्षिप्तो गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदः ।

३५ (5) मिथः संयोग इति । तत्र वक्तृबोद्धव्ययोर्यथा—अत्ता एत्थ इति । अत्तेति श्वश्रूरसहना । न तु माता । तेन गुप्तमभिलाषः पोष्यः । अत्र दूरे सा शेते । अत्र त्वन्मार्गनिकटेऽहमुपभोगयोग्या । सांप्रतं विघ्नकारित्वात् कुत्सितं दिवसं दिवसकम् । प्राकृते पुंनपुंसकयोरनियमः । तस्मात् संप्रति विलोकय । मिथो वक्त्रावलोकनेन दिनातिवाहनं कुर्वंस्तावदि-

सोमेश्वर

पृ.

३४ (5) वदनविलोकनविनोदेन दिनं ताव-
द्तिवाहयाव इत्यर्थः । रात्राव-
धिकमदनोद्रेकादन्ध शय्याविभा-
गानभिज्ञ शय्यायां मा शयिष्ठा
अपि तु प्रहरचतुष्टयमपि निधुव-
नेन क्रीडा [व इत्यर्थः]

(6) विवक्षितान्यपरवाच्येऽर्थशक्ति-
मूले शब्दस्यापि सहकारित्वं भव-
त्येव, विशिष्टशब्दाभिधेयतया
विना तस्यार्थस्य अव्यञ्जकत्वात्।
ततः शब्दार्थयोरुभयोरपि व्यञ्ज-
कत्वं, केवलमर्थस्यात्र मुख्यत्वम्।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३५ (5) त्यर्थः । पथिकेति चेतितेऽपि तव
न दोषकारीति न भेतव्यम् । रात्रौ
रात्र्या वा स्मरोद्रेकादन्ध
शय्याविभागानभिज्ञ शय्यां मा
शयिष्ठा अपि तु प्रहरचतुष्टयम-
पि क्रीड ।

३६ (6) विवक्षितवाच्येऽर्थशक्तिमूले
शब्दस्यापि सहकारित्वमस्ति यतो
विशिष्टशब्दाभिधेयतया विनाऽ-
र्थस्याव्यञ्जकत्वात् । ततो द्वयोरपि
व्यञ्जकत्वम् । केवलमर्थस्य मुख्यं
व्यञ्जकत्वं शब्दस्य तु सहकारिभा-
वेन ।

उल्लास ४

सोमेश्वर

पृ.

४२ (1) रसनाव्यापारगोचरत्वेन कषायफलचर्वणपरपुरुषदर्शनप्रभवमुखप्रसेककलनारूपेण हेतुना अन्यानुमेयविसदृशः।

(2) सामाजिकजनास्वाद्यमानो मुख्यरामादिगतस्थाय्यनुकरणरूपत्वादेव च नामान्तरेण व्यपदिष्टो रस्यमानत्वाद् रसः।

(3) स्थायी तु काव्यबलादपि नानुसंधातुं शक्यः। रतिः शोक इत्यादयो हि शब्दा रत्यादिकमभिधेयीकुर्वन्ति अभिधानत्वेन, न तु वाचिकाभिनयरूपतयावगमयन्ति। न हि वागेव वाचिकम्, अपि तु तया निर्वृत्तमङ्गैरिवाङ्गिकम्। तेन

विवृद्धात्माप्यगाधोऽपि दुरन्तोऽपि महानपि। वाडवेनेव जलधिः शोकः क्रोधेन पीयते॥

इत्यादौ न शोकोऽभिनेयः, अपि तु अभिधेयः॥

४३ (4) तथा हि, अनुकरणरूपो रस इत्युक्तं न च तद् युक्तम्, यतः किंचिद्धि प्रमाणेनोपलब्धं तदनुकरणमित्युच्यते, यथैव 'असौ सुरां पिबति' इति सुरापानानुकरणत्वेन पयःपानं प्रत्यक्षावलोकितं प्रतिभाति। इह च नरगतं किं तदुपलब्धं सद् रत्यनुकरणतया भातीति चिन्त्यम्। तच्छरीरं तन्निष्ठं प्रतिशीर्षकादि रोमाञ्चगद्गदिकादि भुजाक्षेपवलनप्रभृति भ्रूक्षेपकटाक्षादिकं च न रतेश्चित्तवृत्तिरूपाया अनुकारत्वेन कस्यचित् प्रतिभाति जडत्वेन भिन्नेन्द्रियग्राह्यत्वेन भिन्नाधिकरणत्वेन च ततो वैलक्षण्यात्।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

६८ (1) कषायफलचर्वणपरपुरुषदर्शनप्रभवमुखप्रसेककलनाकल्पनया रसनीयस्वरूपतयाऽन्येभ्योऽनुमीयमानेभ्यो विलक्षणः।

६९ (2) सभ्यानां मुख्यरामाद्यनुगतस्थाय्यनुकरणरूपः अनुकरणरूपत्वादेव च नामान्तरेण व्यपदिष्टो रत्यादी रसः।

६८ (3) स्थायी तु काव्यबलादपि नानुसंधेयः। रतिश्शोक इत्यादयो हि शब्दा रत्यादिकमभिधेयीकुर्वन्त्यभिधानत्वेन न तु वाचिकाभिनयरूपतयाऽवगमयन्ति। न हि वागेव वाचिकम्, अपि तु तया निर्वृत्तं, अङ्गैरिवाङ्गिकम्। तेन—

विवृद्धात्माऽप्यगाधोऽपि दुरन्तोऽपि महानपि। वाडवेनेव जलधिः शोकः क्रोधेन पीयते॥

इत्येवमादौ न शोकोऽभिनेयः, अपि त्वभिधेयः।

६९ (4) तथा हि-अनुकरणरूपो रस इति वदेत् तन्न किञ्चिद्धि प्रमाणेनोपलब्धं तदनुकरणमिति शक्यं वक्तुम्। यथा एवमसौ सुरां पिबतीति सुरापानानुकरणत्वे न जलपानं प्रत्यक्षेक्षितं भाति। इह च नटगतं किञ्चिदुपलब्धं स इत्यनुकरणतया भातीति चिन्त्यम्। तद्वपुस्तन्निष्ठं प्रतिशीर्षकादि रोमाञ्चगद्गदिकादि भुजाक्षेपवलनादि भ्रूक्षेपकटाक्षादि च न चित्तवृत्तिरूपरतेरनुकारत्वेन कस्यचिद्भाति, जडत्वभिन्नैन्द्रियग्राह्यत्वभिन्नाधिकरणत्वैस्ततोऽतिवैलक्षण्यात्।

सोमेश्वर	माणिक्यचन्द्र
पृ.	पृ.
४५ (5) काव्येऽपि च लोकनाट्यधर्मिस्थानीयेन स्वभावोक्तिवक्रोक्त्यादिप्रकारद्वयेनालौकिकप्रसन्नमधुरौजस्विशब्दसमर्प्यमाणविभावादियोगादियमेव रसना वार्ता।	७५ (5) काव्ये च लोकनाट्यधर्मिस्थानीयेन स्वभावोक्तिवक्रोक्तिप्रकारद्वयेन लोकोत्तरप्रसन्नमधुरौजस्विशब्दसमर्प्यमाणविभावादियोगादियमेव रसवार्ता ।
(6) यन्मुनिः काव्यार्थान् भावयतीति भावः। अस्यार्थः। पदार्थवाक्यार्थौ रसेष्वेव पर्यवस्यत इत्यसाधारण्यात् प्राधान्याच्च काव्यस्यार्था रसाः। अर्थ्यन्ते प्राधान्येनेत्यर्थाः। न तु अर्थशब्दोऽभिधेयवाची रसादीनां स्वशब्दानभिधेयत्वात् ।	७७ (6) यन्मुनिः 'काव्यार्थान् भावयन्तीति भावाः' इति । असाधारण्यप्राधान्याभ्यां काव्यार्था रसाः, पदार्थवाक्यार्थौ तु रसेषु पर्यवस्यतः । अर्थ्यन्ते प्राधान्येनेत्यर्थाः, न त्वर्थशब्दोऽभिधेयवाची। रसादेः स्वशब्देनानभिधेयत्वात् ।
(7) सर्वप्रमातॄणां यो रसनीयः सर्वप्रमातृतावलम्बनेनैव रस्यते, अत एव नाटकमण्डपान्तःप्रविष्टाः सर्वे हृदयसंवादभाजो भवन्तीत्युच्यते।	७८ (7) सर्वप्रमातृतावलम्बनेनैव स रस्यते। अत एव रङ्गमण्डपान्तःप्रविष्टानां सर्वेषां हृदयसंवादभागित्वमुच्यते।
(8) साधारण्यमहिम्ना सकलयोग्यत्वसहिष्णुभिः शब्दादिविषयमयैरातोद्यगानविचित्रमण्डपविदग्धगणिकादिभिरुपरञ्जनं श्रितम् ।	(8) साधारण्यमहिम्ना सकलभोग्यत्वसहिष्णुभिः शब्दादिविषयमयैरातोद्यगानविचित्रमण्डपविदग्धगणिकादिभिरुपरञ्जनमाश्रितम् ।
४६ (9) संक्षेपश्चायं मुकुटप्रतिशीर्षकादिना तावन्नटबुद्धिराच्छाद्यते, गाढप्राक्तनसंवित्संस्काराच्च काव्यबलानीयमानापि न तत्र रामधीर्विश्राम्यति। तत एवोभयदेशकालत्यागः । रोमाञ्चादयश्च भूयसा रतिप्रतीतिकारितया दृष्टा नटे देशकालनियमेन रतिं गमयन्ति, यस्यां स्वात्मापि तद्वासनावत्त्वादनुप्रविष्टोऽत एव न तटस्थतया रत्यवगमः। न च नियतकारणतया येनार्जनाभिष्वङ्गादिसंभावना न च नियतपरात्मैकगततया येन दुःखद्वेषाद्युदयः, तेन साधारणीभूता संतानवृत्तेरेकस्या एव वा संविदो गोचरीभूता रतिः	८१-८२ (9) तदयमत्र संक्षेपः— मुकुटप्रतिशीर्षकादिना तावन्नटधीराच्छाद्यते । गाढप्राक्तनसंवित्संस्काराच्च काव्यबलोपढौक्यमानाऽपि न तत्र रामधीर्विश्राम्यति । अत एवोभयदेशकालत्यागः । रोमाञ्चादयश्च भूयसा रतिप्रतीतिकारितया दृष्टास्तत्रावलोकिता देशकालानियमेन रतिं गमयन्ति। यस्यां स्वात्माऽपि तद्वासनावत्त्वादनुप्रविष्टः । अत एव न ताटस्थ्येन रत्यवगमः न च निर्हेतुतया, येनार्जनाभिष्वङ्गादिभावना । न च नियतपरात्मैकगततया, येन दुःखद्वेषकामित्वाद्युदयः । तेन साधार-

सोमेश्वर

पृ.

४६ (9) शृङ्गारः । साधारणीभावना च विभा वादिभिः ।

४८ (10) अत्रौत्सुक्यादेर्व्यभिचारिणोऽनुगतत्वेन 'दूराद्', इत्यादिपदार्पितः सहसाप्रसरणादिरूपोऽनुभावः 'प्रेयसि' इति विभावश्च प्रकाशते ।

४८-४९ (11) सकलजातिसुलभत्वेन हृद्यतया च पूर्वं शृङ्गारस्तदनुगामी च ततो हास्यस्तद्विपरीतः करुणः । ततस्तन्निमित्तमर्थप्रधानो रौद्रः । कामार्थयोर्धर्ममूलत्वाद् धर्मप्रधानो वीरः । तस्य भीताभयदानसारत्वात् ततो भयानकः । तद्विभावसाधारण्यसंभावनात् ततो बीभत्स इतीयद् वीरेणाक्षिप्तम् । वीरस्यान्तेऽद्भुतः फलमिति ततोऽद्भुतः ।

५९ (12) अन्ये तु 'अर्थसामर्थ्येन सादृश्यात्मकेन द्वितीयाऽभिधैव प्रतिप्रस्तूयते, ततश्च द्वितीयोऽर्थोऽभिधीयत एव, न ध्वन्यते । तदनन्तरं तु तस्य द्वितीयस्यार्थस्य प्रतिपन्नस्य प्रथमार्थेन प्राकरणिकेन साकं या रूपणा सा तावद् भात्येव । न चान्यतः ॥ शब्दादिति सा ध्वननव्यापारात् । तत्राभिधाशक्तेः कस्याश्चिदप्यनाशङ्कनीयत्वादिति प्रकृताप्रकृतयोर्वाक्यार्थयोः साम्यं ध्वन्यत इत्यलंकारध्वनिरित्याह—

६६ (13) काव्यविशेषो हि विशिष्टार्थप्रतिपत्तिहेतुः संदर्भविशेषः, काव्यविशेषत्वं च न पदप्रकाशत्वे उपपद्यते, पदानां स्मारकत्वेनावाचकत्वाद्, —— ।

(14) यथा श्रुतिदुष्टानां पेलवादिपदा-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

८१-८२(9) णीभूता संतानवृत्तेरेकस्या एव वा संविदो गोचरीभूता रतिः शृङ्गारः साधारणीभावनादिभिरिति ।

८३-८४ (10) अत्रौत्सुक्यादिव्यभिचार्यनुगतत्वेन दूरादित्यादिपदेभ्यः सहसा प्रसारणादिरूपोऽनुभावः, प्रेयसीति पदाच्च विभावो लभ्यते ।

८४-८५ (11) अत्र कामस्य सकलजातिसुलभतया अत्यन्तपरिचितत्वेन सर्वान् प्रति हृद्यतेति पूर्वं शृङ्गारः, तदनुगामित्वाद् हास्यः, तद्वैपरीत्यान्निरपेक्षभावाच्च ततः करुणः, ततस्तत्कारणमर्थसारो रौद्रः, ततो रौद्रस्य कामार्थप्राधान्येन कामार्थयोश्च धर्ममूलत्वादिति धर्मप्रधानो वीरः, तस्य भीतत्राणसारत्वात्ततो भयानकः, ततस्तद्विभावसाध्यसम्भावनाद्बीभत्सः, इतीयद्वीरेणाक्षिप्ते वीरस्य फलभूतोऽद्भुतः ।

१०८ (12) अयं भावः—सादृश्यरूपेणार्थसामर्थ्येन द्वितीयाभिधैव प्रतिप्रसूयते । ततश्च द्वितीयोऽर्थ उच्यत एव न ध्वन्यते । तदनन्तरं तु तस्य द्वितीयार्थस्य प्रतिपन्नस्य प्रथमार्थेन प्रकृतेन साकं या रूपणा सा तावद्विभात्येव । न चान्यतः सा शब्दादिति ध्वननव्यापारात्तत्राभिधाशक्तेः कस्याश्चिदनाशङ्क्यत्वादिति प्रकृताप्रकृतवाक्यार्थयोः साम्यं देवो देव एवेति रूपं ध्वन्यते ।

१२१ (13) काव्यविशेषो विशिष्टार्थप्रतीतिहेतुः सन्दर्भविशेषः, काव्यविशेषता च न पदप्रकाश्यत्वे घटेत, पदानां स्मृतिहेतुत्वेनावाचकत्वादिति—— ।

(14) यथा (श्रुति)दुष्टपेलवादिपदाना-

सोमेश्वर

पृ.

६६ (14) नामसभ्यार्थं प्रति न वाचकत्वं, तद्वशाच्च आचाररूपं काव्यं श्रुतिदुष्टम् । तच्च श्रुतिदुष्टत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्यां भागेषु व्यवस्थाप्यते, तथा प्रकृतेऽपि पदानां व्यञ्जकत्वमुखेन ध्वनिव्यवहारः ॥ न च ध्वनिव्यवहारे वाचकत्वं प्रयोजकं, व्यञ्जकत्वेन तस्य व्यवस्थानात् ॥

७३ (15) प्रबन्धप्रतिपाद्येन ह्यर्थेन गृध्रगोमाय्वोर्भक्षणाभिप्रायो व्यज्यते । स चाभिप्रायः शान्तरसनिष्ठ एव।

७४ (16) पदत्रयमेव यावन्न याति तावद् धृत इति प्रेमातिशयो ध्वन्यते ।

७५ (17) सर्वत्र सुबादीनामभिप्रायविशेषाभिव्यञ्जकत्वम् । स तु अभिव्यक्तोऽभिप्रायो यथास्वं विभावादिरूपताद्वारेण रसादीन् व्यनक्ति ॥

८१ (18) एवमुद्दीपनविभावोद्बोधितविप्रलंभः परस्पराधिष्ठानत्वाद् रतेर्विभावानां साधारण्यमभिमन्यमान इत एव प्रभृति हृदये प्रियां निधायैव स्वात्मवृत्तान्तं तावदाह ।

८२ (19) रामशब्दार्थध्वनिविशेषावकाशदानाय कठोरहृदय-पदम् । यथा 'तद् गेहम्' इत्युक्तेऽपि 'नतभित्ति' इति । अन्यथा राम-पदं दशरथकुलोद्भवत्वकौशल्यास्नेहपात्रत्वबाल्यचरितादिधर्मान्तरपरिणतमर्थं कथं न ध्वनेत् । 'अस्मि' इति स एवाहं भवामीत्यर्थः ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१२१ (14) मसभ्यार्थं प्रति न वाचकत्वं किन्तु स्मारकत्वं, तद्वशाच्च चारुरूपं काव्यं (श्रुति)दुष्टमन्वयव्यतिरेकाभ्यां भागेषु व्यवस्थाप्यते, तथा प्रकृतेऽपि पदानां व्यञ्जकत्वमुखेन ध्वनिव्यवहारः । न च ध्वनिव्यवहारे वाचकत्वं प्रयोजकं, व्यञ्जकत्वेन व्यवस्थानादिति...।

१३३ (15) भारतोक्तगृध्रगोमायुसंवादनामप्रबन्धप्रतिपाद्येनार्थेन गृध्रगोमाय्वोर्भक्षणाभिप्रायो व्यज्यते । स चाभिप्रायः शान्तरसनिष्ठः ।

१३५ (16) यावत्पदत्रयमपि न याति तावत् धृत इति स्नेहातिशयो व्यङ्ग्यः ।

१३६ (17) सर्वत्र सुबादीनामाकूतविशेषव्यञ्जकत्वम् । स त्वाकूतो व्यक्तः सन् यथायोगं विभावादिरूपताद्वारेण रसादिकं व्यनक्ति ।

१४४-१४५ (18) एवमुद्दीपनविभावबोधितविप्रलम्भोऽन्योन्याश्रयत्वाद्रतेर्विभावानां साम्यं मत्वा इत एव प्रभृति प्रियां हृदि न्यस्यैव स्वं वृत्तान्तं रामस्तावदाह...।

१४५ (19) रामशब्दार्थव्यङ्ग्यविशेषावकाशदानाय कठोरहृदयपदम् । अन्यथा रामपदं दशरथकुलोत्पत्तिकौसल्यास्नेहपात्रत्वबाल्यचरित्रताटकावधादिधर्मान्तरपरिणमितमर्थं कथं नु ध्वनयेत् । अस्मि स एवाहं भवामीति ।

उल्लास ५

सोमेश्वर

पृ.

८६ (1) 'पश्यताम्' इत्यनादरे षष्ठी। पश्यतः प्रियाननानादृत्येत्यर्थः। भावस्येति। शत्रुस्त्रीणां रत्यभावे सैनिकानामनौचित्यप्रवृत्तत्वाद् रसाभासः। शत्रूणां चानुचितं दैन्यादीति द्वितीयेऽर्धे भावाभासः, तौ च राजविषयस्य रतिभावस्याङ्गम्। अत्र अलंकार ऊर्जस्वि।

८७ (2) 'पश्येत् कश्चिद्' इत्याशङ्का। 'चपल रे चल गच्छ' इत्यसूया। 'का त्वरा' इति धृतिः। 'अहं कुमारी' इति स्मृतिः। 'हस्तालम्बं वितर' इत्यौत्सुक्यम्। 'हह' इति श्रमः। 'ह' इति दैन्यम्। 'व्युत्क्रमः' इति विबोधः। 'क्वासि यासि' इत्यौत्सुक्यम्। एषां पूर्वपूर्वोपमर्देनोपनिबन्धः। शबलता राजविषयरतेरङ्गम्।

९१ (3) न चात्र विपरीतलक्षणा, यत् उच्चारणकाल एव न कोपादिति दीप्ततारगद्गदसाकाङ्क्षकाकुबलाद् निषेध्यमानतयैव युधिष्ठिराभिमतसंधिमार्गाक्षमारूपत्वाभिप्रायेण प्रतीतिरिति मुख्यार्थबाधाद्यभावात्॥

(4) तथा हि गृहकर्मव्यापृताया इत्यन्यपराया अपि वध्वा इति सातिशयलज्जापारतन्त्र्यबद्धाया अपि। अङ्गानीति। एकमपि न तादृग् अङ्गं यद् गाम्भीर्यावहित्थवशेन संवरीतुं पारितम्॥ सीदन्तीति। आस्तां गृहकर्मसंपादनं, स्वात्मानमपि धर्तुं न प्रभवन्ति गृहकर्मयोगे च स्फुटं तथा अलक्ष्यमाणानीति। अस्माद् वाच्यादेव स्मरपारवश्यप्रतीतेश्चमत्कार इत्यर्थः॥

९४ (5) मात्रग्रहणेनैतदाह 'यथा विधिनिषे-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१५२ (1) अत्र पश्यतामित्यनादरे षष्ठी, पश्यतः प्रियाननानादृत्येत्यर्थः। भावस्येति। रिपुस्त्रीणां रत्यभावे सैनिकानां हठात् प्रवृत्त्या रसाभासः शत्रूणां च रत्यभावे दैन्याद्यनुचितमित्युत्तरार्धे भावाभासः। तौ च राजविषयरतेरङ्गम्। अत्रोर्जस्व्यलङ्कारः।

१५३ (2) पश्येत्कश्चिदित्याशङ्का। चञ्चल चल गच्छेत्यसूया। का त्वरेति धृतिः कुमार्यस्मीति स्मृतिः। हस्तालम्बं वितरेत्यौत्सुक्यम्। हहेति श्रमः। हेति दैन्यम्। व्युत्क्रम इति बाधः। क्वासि यासीत्यौत्सुक्यम्। एषां पूर्वपूर्वोपमर्देन बन्धः शबलता नृपविषयरतेरङ्गम्।

१५९ (3) न चात्र विपरीतलक्षणा, यत उच्चारणकाल एव न कोपादिति दीप्ततारगद्गदसाकाङ्क्षकाकुबलान्निषेधस्य निषेध्यमानतयैव युधिष्ठिरेष्टसन्धेरक्षमणरूपत्वाभिप्रायेण प्रतीतिरिति मुख्यार्थबाधाद्यभावात्।

१५९-६० (4) गृहकर्मव्यापृतायाः अन्यकर्मरताया अपि। वध्वाः सातिशयलज्जापरवशाया अपि। अङ्गानीति बहुवचनेनैकमपि न तादृशमङ्गं यदात्मानं संवरीतुं शक्नोति। सीदन्ति आस्तां गृहकर्म, स्वमपि नालं धर्तुं, गृहकर्मयोगे च तथा स्फुटमलक्ष्यमाणानीत्यस्माद्वाच्यादेव स्मरपारवश्यप्रतीतेश्चमत्कारः।

१६२-१६३ (5) मात्रशब्दादेतदुच्यते यद्वि-

सोमेश्वर

पृ.

९४ (5) धतदुभयात्मतारूपेण वस्तुध्वनिः संक्षेपेण सुवचस्तथा न अलंकारध्वनिरलंकाराणां भूयस्त्वात् ॥

९६ (6) साक्षाच्छक्तिविषयत्वेन हि व्यापाराद् अर्थापत्तेः कारणता पूर्वयोस्त्वितिकर्तव्यतारूपतेत्यभिप्रायः ॥

(7) पदानां संकेतो गृह्यत इति योगः ॥ प्रवृत्ति [निवृत्ति] कारीति। वृद्धव्यवहाराच्छब्दार्थसंबन्धावसायः। स च वृद्धव्यवहारः प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपः। प्रवृत्तिनिवृत्ती च विशिष्टार्थनिष्ठे, अतो विशिष्ट एवार्थे पदानां संबन्धावसायः ॥

९७ (8) विशिष्टा एवेति। अन्वितानां विशिष्टानामेव पदार्थानामभिधेयत्वम्। वाक्यार्थो हि क्रियाकारकसंसर्गरूपः। कारकाणां च क्रियासंबन्धोन्मुखतया क्रियाणामपि कारकविरहासहिष्णुत्वेन अन्वितानामेव स्वशब्दैरभिधानं भवतीत्यर्थः ॥ न तु पदार्थानामिति। सामान्यभूतत्वेन अभिहितानां पदार्थानां पश्चान्न वैशिष्ट्यमित्यर्थः ॥ यद्यपीति। संकेतगोचर इति योगः।

(9) यानि वाक्यान्तरे दृष्टप्रयोगाणि ॥ व्यतिषिक्तानामिति। वाक्यस्यैव प्रयोगार्हत्वात् पदार्थान्तरैरन्वितानाम्। तथाभूतत्वादिति। सामान्यावच्छादितविशेषरूपत्वात् ॥ सामान्यविशेषरूप इति। सामान्यानि अन्तःकृताशेषविशेषाणि भवन्तीति तत्प्रतीतिनान्तरीयकतयैव विशेषसद्भावः। यदाहुः– निर्विशेषं न सामान्यं भवेच्छशविषाणवत् ॥ ततः सामान्यावच्छादितो विशेष एव संकेतस्य विषयः। तत-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१६३ (5) धिनिषेधतदुभयात्मतारूपेण वस्तुनो ध्वनिः संक्षिप्तः, न त्वलङ्काराणां, बहुत्वात्।

१६५ (6) साक्षाच्छक्तिविषयतया हि व्यापारादर्थापत्तेः कारणता, पूर्वयोस्त्वितिकर्तव्यतारूपतेति भावः।

१६६ (7) पदानां सङ्केतो गृह्यत इति योगः। निवृत्तिकारीति। प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपो वृद्धव्यवहारः, प्रवृत्तिनिवृत्ती च विशिष्टार्थनिष्ठे, अतो विशिष्ट एवार्थे पदानां सम्बन्धावगतिः।

(8) विशिष्टा एवेति। विशिष्टा एवान्विताः पदार्थाः पदानामभिधेयाः, न तु पदार्था एव केवलाः। अयमाशयः— वाक्यार्थस्तावत् क्रियाकारकयोगात्मा। कारकक्रियाश्च सम्बन्धाभिमुख्येन मिथो विरहासहिष्णुत्वेनान्विता एव स्वशब्दैरुच्यन्त इत्यर्थः। न त्विति। सामान्यत्वेनोक्तानां पदार्थानां पश्चाद्वैशिष्ट्यं स्यादिति। यद्यपीति। सङ्केतगोचर इति योगः।

१६७-१६८ (9) यानि वाक्यान्तरे प्रयुक्तदृष्टानि। सामान्यावच्छादित इति। न्यग्भूतसामान्यः। असाविति। पदार्थः। व्यतिषक्तानामिति। 'वाक्यमेव प्रयोगार्हम्' इति न्यायात् पदार्थान्तरैर्युक्तानाम्। तथाभूतत्वादिति। सामान्यावच्छादितविशेषरूपत्वात्। विशेषरूप इति। सामान्यप्रतीतिनान्तरीयका विशेषाः, 'निर्विशेषं न सामान्यं भवेच्छशविषाणवत्' इति न्यायात्।

सोमेश्वर

पृ.

९७ (9) श्च सामान्यभूतः पदार्थोऽसमितत्वाद् अनभिधेय इत्याह अतिविशेषभूत इति । विशेषमतिक्रान्तोऽतिविशेषः, तं भूतः प्राप्तोऽतिविशेषभूतः सामान्यः पदार्थः । यत्र तु सामान्यरूपोऽपि पदार्थो न वाच्यस्तत्र कैव कथा व्यङ्ग्यस्य विध्यादेरर्थान्तरस्य वाच्यतायाम् ॥

९८ (10) वाक्यार्थस्तु अपदार्थ एवेति योगः । कीदृशो वाक्यार्थोऽन्वितविशेषः । अन्वितविशेषो यत्र स तथा, समग्राङ्गसंपूर्ण इत्यर्थः । यतोऽवाच्यस्ततः पक्षद्वयेऽप्यपदार्थ एव वाक्यार्थः ॥

(11) यदपीति । अन्विताभिधानवादिभिरेव प्राभाकरैः ॥ नैमित्तिकार्थेति । वाक्यार्थतात्पर्यानुसारेण निमित्तानि पदार्थाः कल्प्यन्ते, ततो नैमित्तिक एवायं न व्यङ्ग्य इति भावस्तेषाम् ॥ अन्वितमात्र इति, सामान्यावच्छादितविशेषरूपे । एवं चेति । निमित्तेषु संकेत इति, नैमित्तिकेऽर्थे संकेताकरणात् कथं तस्य साक्षात्प्रतिपत्तिः, तस्मिंश्चाप्रतिपन्ने कथं पदार्थावगमानां नियतनिमित्तभावः ।

(12) यथा 'देवदत्तः काष्ठैः स्थाल्यामोदनं पचति' इत्यादौ ओदनपाकश्चेदन्यतः सिद्धस्तदा स्थाल्यधिकरणत्वमात्रं विधेयं, तस्यैव साध्यत्वात् ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१६७-१६८ (9) ततः सामान्यावच्छादितो विशेष एव सङ्केतस्य विषयभूतः, सामान्यं त्वनुक्तमपि ज्ञायत इत्याह-अतीति । विशेषमतिक्रान्तो यः स्वभावः सोऽतिविशेषः तं भूतः प्राप्तोऽतिविशेषभूतः सामान्योऽर्थः । केवलपदार्थरूप इति यावत् । यदि वा विशेषमतिक्रान्तः अतिविशेषः, स चासौ भूतश्च स तथा सामान्योऽर्थः । यत्रेति । वाक्ये । यदाऽन्विताभिधानवादे सामान्योऽप्यर्थो न वाच्यस्तदा का वार्ता व्यङ्ग्यस्य वाच्यतायाम् ।

१६८ (10) वाक्यार्थस्त्वपदार्थ एवेति योगः । अन्वितविशेषः- सर्वाङ्गसम्पूर्णः केवलविशेषरूपः । एतत् वाक्यार्थविशेषणम्, इति पक्षद्वयेऽप्यपदार्थ एव वाक्यार्थः ।

१६८-१६९ (11) यदपीति । अन्विताभिधानवादिभिः प्राभाकरैः । नैमित्तिकार्थेति । वाक्यार्थतात्पर्यनैमित्तिकोऽर्थः । निमित्तानीति । प्रस्तावाच्छब्दाः, ततस्तात्पर्यानुसारेण यदा शब्दाः कल्प्यन्ते तदा व्यङ्ग्यं वाच्यमेवेति भावस्तेषाम् । अन्वितमात्र इति । सामान्यावच्छादितविशेषरूपे ॥ निश्चितमिति । निमित्तेषु सङ्केतो न नैमित्तिकेऽर्थे, तत्कथं नैमित्तिकस्य साक्षात्प्रतीतिः, तदप्रतीतौ कथं पदार्थावगतिर्नियतनिमित्ता स्यादिति ।

१६९ (12) यथा चैत्रः काष्ठैः स्थाल्यामन्नं पचतीत्यादावन्नपाकश्चेदन्यतस्सिद्धः, तदा स्थाल्याधारत्वमेव विधेयम्, तस्यैव साध्यत्वात् ।

सोमेश्वर

पृ.

९९ (13) उक्तस्यैव शब्दस्य संबन्धिन्यर्थेऽभिधेये तात्पर्यं न तु निमित्तान्तरेण प्रतीतमात्रे व्यङ्ग्येऽप्यर्थे तात्पर्यावकाशः ।

१०० (14) यस्य ह्यभिधेयेनार्थेन सह नैकट्यं, स बलीयान् । यस्य च व्यवहितत्वं स दुर्बलः । यदाहुः— 'श्रुतिलिङ्गवाक्यप्रकरणस्थानसमाख्यानां पददौर्बल्यमर्थविप्रकर्षात् ।' न च व्यवहितत्वमव्यवहितत्वं वाभिधाव्यापारगम्यं, किं तु निमित्तत्ववैविध्याद् व्यङ्ग्यमेव तच्च यदि नाभ्युपगम्यते तत् कथमेकस्य बलीयस्त्वं, सर्वेषां श्रुत्यादीनामभिधाव्यापारस्य समानत्वात् प्रधाने चाङ्गत्वापादनं श्रुत्यादीनामर्थः । श्रवणं श्रुतिः । यदर्थस्याभिधानं शब्दश्रवणमात्रादेवावगम्यते ।

१००-१०१ (15) 'बर्हिर्देवसदनं दामि' इति । देवाश्रयदर्भच्छेदनेऽयं मन्त्र इति । 'दामि' इति लवनलिङ्गाद् अनेन मन्त्रेण बर्हींषि लुनीयादिति प्रतीयते ॥ वाक्यतो यथा-'श्वेतं छागमालभेत ।' अत्रैकवाक्योपादानाच्छ्वेतगुणस्य च्छागावच्छेदकत्वेन क्रियाङ्गभावो गम्यते। यथा वा 'अरुणया एकहायन्या पिङ्गाक्ष्या सोमं क्रीणाति' इत्यत्र अरुणादीनां क्रमेण संबन्धः श्रौतः । अरुणैकहायन्यादीनां परस्परं पुनर्वाक्यीयम् ॥ दर्शपौर्णमासप्रकरणे 'समिधो यजति तनूनपातं यजति इडो यजति बर्हिर्यजति स्वाहाकारं यजति' इति पञ्च प्रयाजा उक्ताः, ते च दर्शपौर्णमासयो-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१७० (13) उपात्तस्यैव शब्दस्य सम्बन्धिन्यर्थेऽभिधेये तात्पर्यं, न तु हेत्वन्तरेण ज्ञातमात्रे व्यङ्ग्येऽप्यर्थे तात्पर्यप्रसङ्गः ।

१७२-१७३ (14) यस्याभिधेयेनार्थेन सह नैकट्यं स बलीयान् । यस्य च व्यवहितत्वं स दुर्बलः । व्यवहिताव्यवहितत्वे च नाभिधागम्ये, किन्तु व्यङ्ग्ये । एतच्च त्वया नेष्यते । तत्कथमेकस्य बलीयस्त्वं, श्रुत्यादीनामभिधाव्यापारस्य समानत्वात् । प्रकृतिप्रत्ययश्रुत्योः स्वार्थाभिधायकत्वेन पदस्य कारकविभक्तीनां च विनियोजकत्वेन लिङ्गादीनां विधिसामर्थ्येन वेति क्रमेणाभिधात्रीविनियोक्त्रीविधात्रीसंसंज्ञाः तिस्रः श्रुतयः । यदर्थस्याभिधानं शब्दश्रवणमात्रादेवावगम्यते सा श्रुतिः ।

१७३-१७४ (15) 'बर्हिर्देवसदनं दामि' अत्र दामीति लवनलिङ्गाद्देवाश्रयो दर्भोऽनेन मन्त्रेणोत्पाद्य इति प्रतीयते । 'श्वेतं छागमालभते' अत्रैकवाक्योपादानात् श्वेतगुणस्य छागावच्छेदकत्वेन क्रियाङ्गभावो गम्यते । यथा वा– अरुणयैकहायन्या पिङ्गाक्ष्या सोमं क्रीणाति' इत्यत्र अरुणादीनां क्रयेण सम्बन्धः श्रौतः, अरुणैकहायन्यादीनां मिथः पुनर्वाक्यीयः । दर्शपूर्णमासप्रकरणे, 'समिधो यजति' 'तनूनपातं यजति' 'इडो यजति' 'बर्हिर्यजति', 'स्वाहाकारं यजति' इति पञ्च प्रयाजा उक्ताः । ते च दर्शपूर्णमासयोरेव क्रियन्ते, तदङ्गत्वमवगम्यत इत्यर्थः । 'अग्नेरहं देवयज्यया-

सोमेश्वर

पृ.

१००-१०१ (15) रेव क्रियन्ते। तदङ्गत्वमवगम्यत इत्यर्थः ॥ 'अग्निरन्नस्यान्नपतिस्तस्याहं देवयज्ययान्नस्यान्नपतिर्भूयासम् १' 'दधिरस्यदर्थौ भूयासं तदमुं दभेयम् २' 'अग्नीषोमौ वृत्रहणौ तयोर्देवयज्यया बृत्रहा भूयासम् ३' इति मन्त्रत्रयात् आग्नेयो याग उपांशुयाज अग्नीषोमीयो यागश्चेति यागत्रयं क्रमेण स्थितम् । तत्र प्रथमतृतीयमन्त्राभ्यां देवयज्यालक्षणाल्लिङ्गाद् आद्यन्तौ यागौ आक्षिप्येते, द्वितीयेन मन्त्रेण द्वितीयो यागस्तु । आग्नीषोमीयलक्षण उपांशुयाजः स्फुरदोष्ठमुद्रस्वरः स्थानवशात् ॥ 'उद्गाताऽध्वर्युर्होता' इति । उद्गायतीत्यादिसमाख्ययाऽन्वर्थं संज्ञाबलात् सामयजुरृग्वेदेष्वधिकृत इति निश्चीयते तेष्वङ्गभाव इत्यर्थः । श्रुतिलिङ्गादिविकल्पसंभवे तु श्रुत्यर्थ एव क्रियते, न लिङ्गाद्यर्थोऽर्थविप्रकर्षात्, यथा ऐन्द्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते' इत्यत्रैवैन्द्या ऋच इन्द्रप्रकाशनसामर्थ्यलक्षणाल्लिङ्गाद् इन्द्रोपस्थापनविनियोगो गार्हपत्यमिति द्वितीयया श्रुत्या बाध्यते, तेन ऐन्द्याप्येतया गार्हपत्यस्यैवोपस्थानं भवति ॥

१०२ (16) पुनर्वाच्यव्यङ्ग्ययोर्भेदं दर्शयन्नन्विताभिधानवादिनां दोषमाह-अपि चेति ॥ निषेधविध्यात्मनेति, स्वरूपस्याभेदेऽपीति योगः । निषेधो वाच्यो विधिश्च व्यङ्ग्यः । संशयश्च शान्तशृङ्गार्यन्यतरनिश्चयश्च, तत्र संशयो वाच्योऽन्यतरनिश्चयश्च व्यङ्ग्य इति स्वरूपस्य भेदः ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१७३-१७४ (15) ऽन्नादो भूयासम्' दब्धिरस्यमध्वो भूयासं तदमुं दभेयम्' 'अग्नीषोमयोरहं देवयज्यया वृत्रहा भूयासम्' । इति मन्त्रत्रयादाग्नेयो यागः उपांशुयागः अग्नीषोमीयो यागश्चेति यागत्रयं क्रमेण स्थितम् । तत्र प्रथमतृतीयमन्त्राभ्यां देवयज्यालक्षणाल्लिङ्गादाद्यन्तौ यागावाक्षिप्येते । द्वितीयेन मन्त्रेण द्वितीयो यागः । यागस्तु उपांशुयागः स्फुरदोष्ठमुद्रस्वरस्थानवशात् ॥ उद्गाता अध्वर्युः होतेति उद्गायतीत्यादि समाख्यया अन्वर्थसंज्ञाबलात् सामयजुऋग्वेदेष्वधिकृत इति निश्चीयते । तेष्वङ्गभाव इत्यर्थः । ऐन्द्रेत्यत्र ऐन्द्रया ऋच इन्द्रप्रकाशन सामर्थ्यलक्षणाल्लिङ्गादिन्द्रोपस्थापनविनियोगो गार्हपत्यमिति द्वितीयाश्रुत्या बाध्यते तेनैन्द्रयाऽप्येतया गार्हपत्यस्यैवोपस्थापनं भवति ।

१७६ (16) पुनरप्यन्विताभिधायिनं दूषयति-अपि चेति । तत्र तत्रेति । प्रस्ताववक्तृप्रभृतिविशेषे । विध्यात्मनेति । स्वरूपस्य भेदेऽपि यद्येकत्वमिति योगः । निषेधो वाच्यो विधिश्च व्यङ्ग्यः । तथा संशयो वाच्यः, शान्तशृङ्गारिणोरेकतरनिश्चयश्च व्यङ्ग्यः ।

सोमेश्वर

पृ.

१०३ (17) बोद्धमात्रेति। वाच्यबोद्धा बोद्धैवोच्यते, व्यङ्ग्यबोद्धा तु विदग्ध इति। तथा वाच्योऽर्थः प्रतीतिमात्रकारी, व्यङ्ग्यश्च चमत्कारकारीति वाच्यव्यङ्ग्ययोः कार्यस्य भेदेऽपि ॥

१०५ (18) अत्र वनवासादिरनवधिर्लक्ष्योऽर्थः।

(19) अत्र राम-पदं साहसैकरसत्वादिलक्ष्यार्थसंक्रमितवाच्यं व्यञ्जकम् ॥ विशेषव्यपदेशेति। यथा व्यङ्ग्यबोद्धुर्विदग्ध इति व्यपदेशः, तथा लक्ष्यार्थबोद्धुरपि लक्षक इति विशेषव्यपदेश इत्यपि समानम् ॥

(20) न खल्विति। यथा 'गङ्गायां घोषः' इत्यादौ मुख्येन गङ्गाशब्दार्थेन तटादिर्लक्ष्यते, न तथा वनादिरपि लक्षयितुं शक्यते। व्यङ्ग्यस्तु विचित्रः प्रकाशते, प्रकरणादिसामग्रीवैचित्र्यात्।

१०६ (21) न हि लक्षणैकरूपमेव ध्वननं लक्षणानुगमेन ध्वननस्य दर्शनात्। यथा 'गङ्गायां घोषः' इत्यादौ ॥ न च लक्षणानुगतमेव ध्वननं, विवक्षितान्यपरवाच्येऽभिधामूलत्वेन ध्वननस्य भावात्। न हि व्यङ्ग्ये प्रतीयमाने वाच्ये बुद्धिर्दूरीभवति। न चोभयेति ॥ अभिधालक्षणानुसारेणैव ध्वननमित्यपि नेत्याह-अवाचकेति। ललितपरुषादिवर्णानुप्रासस्यार्थाभिधानानुपयोगिनोऽपि रसं प्रति व्यञ्जकत्वस्य दर्शनात् ॥ न च वर्णमात्रानुसारेणैव ध्वननमित्याह-अशब्दात्मकेति, अभिधाव्यापारेणास्पृष्ट

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१७८ (17) बोद्धमात्रेति। वाच्यवेदी बोद्धा, व्यङ्ग्यवेदी तु विदग्धः। तथा वाच्योऽर्थः प्रतीतिमात्रं, व्यङ्ग्यस्तु चमत्कारं करोतीति कार्यभेदः।

१८० (18) अत्र वनवासादिरनन्तो लक्ष्योऽर्थः।

१८०-१८१ (19) अत्र रामपदं साहसैकरसत्वाद्यनन्तलक्ष्यार्थसङ्क्रमितवाच्यम्। विशेषेति। यथा व्यङ्ग्यवेदी विदग्ध इति व्यपदिश्यते तथा लक्ष्यवेदी लक्षक इत्यपि तुल्यम्...।

१८१ (20) न खल्विति। अनेन तद्योगादिकं नियतत्वमुक्तं, यथा गङ्गाशब्दो मुख्येन स्वार्थेन सम्बद्धं तटादि लक्षयति न तथा वनादि लक्षयितुं शक्नोति। ध्वनिस्तु प्रस्तावादिसामग्रीवशाद्विचित्रो भाति।

१८२ (21) लक्षणानुगमेन ध्वननस्य दर्शनात्। तदनुगतमेवेति। लक्षणानुगतमेव। तस्येति ध्वननस्य। भावादिति। न हि व्यङ्ग्ये प्रतीयमाने वाच्याद्बुद्धिर्दूरीभवति। न चोभयेति। अभिधालक्षणारूपमुभयम्। अवाचकेति। अर्थानुपयोगेऽपि कोमलादिवर्णानां रसव्यञ्जकत्वदर्शनात्। अशब्देति। अभिधाव्यापारास्पृष्ट इत्यर्थः। अवलोकनादीत्यादिशब्दात् बाष्पावेशकुचकम्पादि। तस्येति। ध्वननस्य।

सोमेश्वर

पृ.

१०६ (21) इत्यर्थः । यथा-मय्यासक्तश्चकितहरिणीहारिनेत्रत्रिभागः'। अत्र गुरुजनमवधीर्यापि यथा तथा साभिलाषगर्वमन्थरं विलोकितवतीति स्मरणे विप्रलम्भोद्दीपनम्। 'अवलोकनादि' इत्यादिशब्दात्तच्छब्दव्यतिरिक्ताधोवक्रत्वकुचकम्पनबाष्पावेशादि ॥ तस्येति ध्वननस्य ।

१०७ (22) 'व्यञ्जकत्वं शब्दानां गमकत्वं, तच्च लिङ्गत्वम्, अतो व्यङ्ग्यप्रतीतिर्लिङ्गिप्रतीतिरेवेति व्यङ्ग्यव्यञ्जकभावो लिङ्गिलिङ्गभाव एव ।'

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१८४ (22) व्यञ्जकत्वं शब्दानां गमकत्वम्, तच्च लिङ्गत्वमेव। अतो व्यङ्ग्यप्रतीतिर्लिङ्गिप्रतीतिरेवेति, तथा सति लिङ्गिलिङ्गतैव व्यङ्ग्यव्यञ्जकतेत्यर्थः ।

उल्लास ६

सोमेश्वर

पृ.

१११ (1) अत्र 'अलकाः खला इव' इति शब्दश्लेषप्रतिभोत्पत्तिहेतुरुपमा ॥ उद्भटस्तु 'उपमाप्रतिभोत्पत्तिहेतुरर्थश्लेष एवायं "स्वयं च पल्लवाताम्रा" इत्यादाविव' इत्याह...॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

१९० (1) अत्रालका इव खला इत्युपमालङ्कारः शब्दश्लेषप्रतिभोत्पत्तिहेतुरिति मम्मटः । उपमाप्रतिभोत्पत्तिहेतुरर्थश्लेषः, 'स्वयं च पल्लवाताम्रभास्वत्करविराजिनी' इतिवदिति तूद्भटः ।

उल्लास ७

सोमेश्वर पृ.		माणिक्यचन्द्र पृ.	
११२ (1)	अनङ्गमङ्गलगृहं चासौ अपाङ्गश्च तस्य भङ्ग्या विच्छित्त्या तरङ्गितैरुपलक्षितया ॥	१९२ (1)	अनङ्गमङ्गलगृहस्यापाङ्गस्य भङ्ग्या विच्छित्त्या तरङ्गितैर्युतया ॥
११८ (2)	अत्रैकपदप्रत्याय्योऽप्यर्थः कुमुदलक्षणोऽत्रीत्याद्यनेकपदार्थपर्यालोचना व्यवहितत्वेन क्लिश्यमानो वाचकस्य क्लिष्टतामावहति ॥	१९९ (2)	अत्रैकपदप्रत्याय्योऽप्यर्थः कैरवात्मा अत्रीत्यादिनानापदार्थालोचनाव्यवधानेन क्लिश्यमानो वाचकस्य क्लिष्टतावहः ।
१२०-१२१ (3)	तस्माद् अस्य नञो विधेयतया प्रधानस्यानूद्यतयाऽप्रधानेन मुक्ताशब्देन सह न समास इष्ट इति स्थितम् । यदाह—नञर्थस्य विधेयत्वे निषेधस्य विपर्यये । समासो नेष्यतेऽर्थस्य विपर्यासप्रसङ्गतः ॥	२०१ (3)	तस्मादस्य नञो विधेयार्थनिष्ठतया प्रधानस्य तथाऽनूद्यमानार्थपरतया तद्व्यस्तवृत्तिना मुक्ताशब्देन समं वृत्तिर्नैवेष्टा । यदाह— नञर्थस्य विधेयत्वे निषेध्यस्य विपर्यये । समासो नेष्यतेऽर्थस्य विपर्यासप्रसङ्गतः ॥
१२१ (4)	भवस्य भार्या 'भवानी'। ततो 'भवान्याः पतिः' इत्युक्ते भवं विहाय अन्यस्यापि पत्युः प्रतीतिः । यथा 'चैत्रभार्यायाः पतिः' इत्युक्ते उपपतौ प्रतीतिः ॥	२०२ (4)	भवस्य पत्नी भवानी, तस्याः पतिरित्युक्ते हरत्यागादन्योऽपि भवेत्, तथा चैत्रपत्नीपतिरित्युक्ते उपपतिर्लभ्यते ।
१२७ (4a)	नामशब्दोऽक्षमायाम् । 'ये केचिदिह प्रबन्धे देशे काले वा अस्माकमवज्ञां कुर्वन्ति ते किमपि स्वल्पं न किंचिल्लोकोत्तरं वा जानन्ति, तान् प्रति नैष प्रकरणनिर्माणविषयो यत्नः, तेषां स्तोकदर्शित्वात् ।' लोकोत्तरं यज्जानन्तीति व्याख्यातं तत् तेषामुपहासाय । कान् प्रति तर्हीत्याह-'उत्पत्स्यते तु' इति । 'सारेतरविभागज्ञ उत्पत्स्यते कश्चिद्' इति संभाव्यते ॥	२११ (4a)	नामेत्यसूयायाम् । इहेति । प्रबन्धे देशे काले वा । किमपि स्वल्पं, उपहासे तु लोकोत्तरम् । एष शास्त्रनिर्माणविषयो यत्नः, कान् प्रति हीत्याह उत्पत्स्यते त्विति । सदसद्व्यक्तिज्ञो भावी कश्चिदिति सम्भाव्यते ।
१३८ (5)	दलत्कन्दलभाग्भूमिः सलवाम्बुदमम्बरम् । वाप्यः फुल्लाम्बुजयुजो जाता दृष्टिविषं मम ॥	२२६ (5)	दलत्कन्दलभाग्भूमिः सनवाम्बुदमम्बरम् । वाप्यः फुल्लाम्बुजयुजो याता दृष्टिविषं मम ॥

सोमेश्वर

पृ.

१३८ (5) अत्र भजिः सहशब्दो युजिश्चाधिकाः ।

१३९ (6) 'घुरी' वाद्यभाण्डविशेषः । घुर्घुरायिता चासौ घुरी च तद्वद् घोरः ।

१४३ (7) 'एषोऽहम्' इति । उषानाम्नी शिवायाः सुता । सा च पुराणवृत्तान्तेन बाणासुरसुतेति लोके रूढा । सा चानिरुद्धेन कामसुतेन सह 'स्वप्नलब्धं वरं प्राप्स्यसि' इति गौर्या दत्तेन प्रसादेन परिणायिता । स च गौरीमुखविनिर्गतो वरः साधिष्ठायकत्वाद् देवतारूपोऽन्येषां पुर आत्मानं प्रशंसन्निदमाह । अनिरुद्धेन सह या घटना तयाधिगतं आभिरूप्य—लक्ष्म्याः सुरूपतायाः फलं यया ।

१४७ (8) स हि यथाप्रक्रममेकरसप्रसृतायाः प्रतिपत्तृप्रतीतेरुद्धात इव परिस्खलनखेददायी रसभङ्गाय पर्यवस्यति ।

१५० (9) 'संप्रति द्वयं च' इति अतिरम्यम् । यत् किल पूर्वमेका सैव दुर्व्यसनदूषितत्वेन शोच्या जाता संप्रति पुनस्त्वया तस्याः सहायकमिव आरब्धमित्युपहस्यते । प्रार्थना-शब्दोऽपि न रम्यः, यतः काकतालीयन्यायेन तत्समागमः कदाचिन्न वाच्यतावहः । प्रार्थना पुनरत्यन्तं कलङ्ककारिणी । सा च त्वं चेति द्वयोरप्यनुभूयमानपरस्परस्पर्द्धिलावण्यातिशयप्रतिपादनपरत्वेन उपात्तम् । 'कलावतः कान्तिमती इति च मतुप्प्रत्ययेन द्वयोरपि प्रशस्यता प्रतीयते ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२२६ (5) अत्र भजिस्सह शब्दो युजिश्चाधिकः ।

२२८ (6) घुरी भाण्डवाद्यविशेषः । घुर्घुरायिता चासौ सा च, तद्वद्घोरः ।

२३२-३३ (7) हरगौर्योरुषाख्या सुता केनापि वृत्तान्तेन बाणासुरपुत्रीति ख्याता । तां च स्मरसुतेन अनिरुद्धाख्येन स्वप्ने परिणाय्य कोऽपि स्वं प्रशंसन्निदमाह—घटनेति । घटनयाऽधिगतमभिरूपलक्ष्म्याः फलं ययेति वृत्तिः । अप्यर्थ इति । अपिशब्दभावाभावयोरुत्कर्षापकर्षाभ्यां दूरवर्तित्वं स्यादित्यर्थः ।

२३६ (8) एष हि यथाप्रक्रममेकरसप्रसृताया बोद्धृप्रतीतेः रोधेनैव स्खलनखेददायी रसभङ्गाय जायते ।

२४१ (9) 'सम्प्रति द्वयं च' इत्यतीव चारु, यत्किल प्रागेका सैवास्थानपातेन शोच्याऽभूत्, इदानीं तु त्वया तस्यास्तथाविधदुरध्यवसायसाहाय्यमिवारब्धम्, इत्युपहस्यते । काकतालीयन्यायेन कपाल्यपि यदि स्यादस्तु न पुनः केनापि प्रकर्षेणार्थ्यत इति प्रार्थनाऽप्ययुक्ता । कपाल्यर्थे तपस्यादिव्याजेनाचेम (?) नादिकमपि मण्डितमित्यर्थः । 'सा च त्वं' चेति द्वयोरपि लावण्यादिसाम्यप्रतीतये प्रयुक्तम् । 'कलावतः कान्तिमती'ति च मतुः प्रशंसाप्रतीतिकृत् ।

सोमेश्वर

पृ.

१५० (10) 'त्वं शब्दादिति। समुच्चयद्योतको हि चकारः समुच्चीयमानार्थाद् अनन्तरमेव प्रयोज्य इति क्रमः।

१५० (11) पुनः शब्दो हि व्यतिरिच्यमानार्थान्तर्येणैव प्रयोगमर्हतीति क्रमः।

१५१ (12) श्रीनियोगादिति। तदुक्तम्—
उक्तिस्वरूपावच्छेदकरो यत्रेतिरिष्यते।
न तत्र तस्मात् प्राक् किंचिदुक्तेरन्यत्पदं वदेत्॥
इतिना नेवेतरेषामप्यव्ययानां गतिः समा।
ज्ञेयेत्थमेवमादीनां तज्जातीयार्थयोगिनाम्॥
यतस्ते चादय इव श्रूयन्ते यदनन्तरम्।
तदर्थमेवावच्छिन्द्युरासमञ्जस्यमन्यथा॥

१५६ (13) क्रमानुष्ठानाभावो वा दुष्क्रमत्वं यथा–कराविऊण खउरं गामउडो मज्जिऊण जिमिऊण।
नक्खत्तं तिहिवारे जोअसिअं पुच्छिउं लग्गो॥

१६० (14) अनभिव्यक्ताकारं जगतोऽपीन्द्रियाणि यत्स्वरूपं न निर्णेतुं समर्थानीति भावः। आभासेनैव मणीकृता अन्येऽश्मानो येन स चासौ सुमणिश्च। छायामात्रेत्युक्ते हि च्छाययैवेति सनियमत्वं सावधारणत्वं गम्यते, तच्चात्र नोक्तमिति नियमे वाच्ये 'तस्याभासे'त्यनियम उक्तः।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२४० (10) त्वंशब्दादिति। समुच्चयद्योती हि चकारः समुच्चीयमानार्थादनन्तरमेव वाच्य इति क्रमः।

(11) एवं पुनश्शब्दोऽपि व्यतिरिच्यमानार्थानन्तर्येणैव प्रयोज्योऽन्यथा त्वक्रमत्वं वाच्यम्।

२४२ (12) श्रीनियोगादितीति। तदुक्तम्–
"उक्तिस्वरूपावच्छेदफलो यत्रेतिरिष्यते।
न तत्र तस्मात्प्राक्किञ्चिदुक्तेरन्यत्पदं वदेत्॥ १॥
उपाधिभावात्स्वां शक्तिं स पूर्वत्रादधाति हि।
न च स्वरूपावच्छेदः पदस्यान्यस्य सम्मतः॥ २॥
इतिनेवेतरेषामप्यव्ययानां गतिस्समा।
ज्ञेयेत्थमेवमादीनां तज्जातीयार्थयोगिनाम्॥ ३॥
यतस्ते चादय इव श्रूयन्ते यदनन्तरम्।
तदर्थमेवावच्छिन्द्युरासमञ्जस्यमन्यथा" ॥ ४॥ इति।

२४७ (13) क्रमानुष्ठानाभावो वा दुष्क्रमत्वं, यथा-क्षौरं विधाप्य स्नानादि भोजनादि विधाय च॥
कश्चिच्चचाल दैवज्ञं प्रष्टुं तिथिवारकान्।

२५१-२५२ (14) यद्वा-अनुल्लिखितान्ययमीदृगित्यनिर्णयपराण्यक्षाणि यस्येति तत्तथा। उत्कर्षाय प्रतियोगिनः कल्पनं चिन्ता। आभासेनैव मणिकृता अन्याश्मानो येन स चासौ सुमणिश्च स तथा। अत्र एव शब्दाभावे सनियमत्वं परिवृत्तम्। छायामात्रेत्युक्तौ तु मात्रशब्दान्नियमो लभ्यते।

सोमेश्वर

पृ.

१६१-६२ (15) तथा हि 'रावणः' इति जगदाक्रन्दकारित्वाद्यर्थान्तरसंक्रमितवाच्यो जनकस्य धर्मवीरं प्रत्यनुभावतां प्रतिपद्यते । ऐश्वर्यं पाण्डित्यं परमेशभक्तिर्देशविशेषोऽभिजन इत्येतत्सर्वं लोकमवबाधमानस्याधर्मपरस्य नार्थक्रियाकारकमिति तावतोऽर्थस्य तिरस्कारकत्वेनैव रावणचेष्टितं निर्वाहणीयम् । यत्तु अन्यदुपात्तं 'क्व नु पुनर्' इति तद् यदि ससंदेहत्वेन योज्यतेऽथाक्षेपत्वेनाथापि 'नेदृग्वरो लभ्यते' इति अर्थान्तरन्यासत्वेन तथापि प्रकृतस्य धर्मवीरस्य न कथंचिद् निर्वाहः ॥

१६२-१६३ (16) न हि वाताहारत्वाद् अधिको दम्भस्तोयकणव्रतम् । नापि ततोऽधिकं दम्भवत्त्वं मृगाजिनवसनमिति । व्युत्क्रमेण चोक्तं दम्भप्रकर्षं विधत्ते, न च तथोक्तमिति विध्ययुक्तत्वम् ॥

१६३ (17) किमसत्प्राणान् दमयसीति विधौ वाच्ये विरहिप्राणदमनेत्यनुवादोऽयुक्तः ।

(18) इहान्वयव्यतिरेकाभ्यामर्थस्यैव अश्लीलत्वं, पूर्वत्र तु पदवाक्ययोरिति विवेकः ।

१६४ (19) विदग्धजनमनोविलोभनक्षमकान्तारत्नोपमानभावेन मालाया उपादानाद् उत्कृष्टपुष्पग्रथितत्वावगमाय प्रयुक्तः ।

(20) 'त्यज करि-कलभप्रेमबन्धं करिण्याः'। अत्र करि-शब्दात् ताद्रूप्यावगतिः ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२५३-२५४ (15) अयं भावः-रावण इत्येतत् जगदाक्रन्दकारित्वाद्यर्थान्तरं वदज्जनकस्य धर्मवीरं प्रत्यनुभावतामेति । ऐश्वर्यं पाण्डित्यं परमेशभक्तिर्देशविशेषोऽभिजन इत्येतत्सर्वं लोकवाक्यबाधेनाधर्मपरस्य निष्फलमिति तावतोऽर्थस्य तिरस्कारकत्वेनैव रावणचेष्टितं निर्वाहणीयम् । यत्त्वन्यदुपात्तं क्व नु पुनरिति तद्यदि ससन्देहत्वेन योज्येत अथाक्षेपत्वेनाद्यापि नेदृग्वरो लभ्यते इत्यत्रार्थान्तरन्यासत्वेन तथाप्यप्रकृतस्य धर्मवीरस्य न कथंचिन्निर्वाहः ततोऽस्थानमुक्तः ।

२५५ (16) न हि वाताहारत्वादधिको दम्भोऽम्भःकणव्रतं, नापि ततोधिकं दम्भनत्वं मृगाजिनवसनमिति । व्युत्क्रमोक्तिस्तु प्रकृतस्य दम्भप्रकर्षप्रभावतिरस्कृतगुणानुशोचनमयनिर्वेदस्याङ्गं स्यादेवेति विध्ययुक्तत्वम् ।

२५६ (17) अत्र किमित्यसत्प्राणान् दमयसीति विधौ वाच्ये प्राणदमनेत्यनुवादोऽयुक्तः ।

(18) इहान्वयव्यतिरेकाभ्यामर्थ एवाश्लीलः, पश्चात्तु पदवाक्ये अश्लीले इति भावः ।

२५८ (19) विदग्धविलोभनक्षमकामिन्युपमानभावेन मालाया उपादानादद्भुतपुष्पग्रथितत्वमवगमयतीत्यर्थः ।

(20) 'त्यज करिकलभ ! प्रेमबन्धं करिण्याः' । अत्र करिशब्दात्ताद्रूप्यावगतिः ।

सोमेश्वर

पृ.

१७३ (21) भवत्वशिथिलः इत्यादिना समाप्तेऽपि वाक्ये ख्याप्यते इति वाक्यार्थान्तरमेव उपात्तं, न पुनः प्राच्यस्यैव वाक्यार्थस्य विशेषणतया । यथा 'नववयोलास्याय वेणुस्वनः' इति ॥

१७५ (22) न च केवलशृङ्गारादिशब्दमात्रभाजि विभावादिप्रतिपादनरहिते काव्ये मनागपि रसवत्त्वप्रतीतिरस्ति यथा 'शृङ्गारहास्यकरुणाः' इत्यादौ, तस्माद् अन्वयव्यतिरेकाभ्यां अभिधेयसामर्थ्याक्षिप्तत्वमेव रसादीनां, न त्वभिधेयत्वं कथंचिदित्युक्तम् । ततो व्यभिचारिरसस्थायिभावानां स्वशब्दोक्तिर्दोष इत्यर्थः । एतेन च 'रसवद्दर्शितस्पष्टशृङ्गारादिरसोदयम् । स्वशब्दस्थायिसंचारिविभावाभिनेयास्पदम्' इत्यस्य व्याख्यायां 'पञ्चरूपा रसाः' इत्युपक्रम्य 'तत्र स्वशब्दाः शृङ्गारादयः शृङ्गारादेर्वाचका' इति भट्टोद्भटोक्तं निरस्तम् ॥

(23) व्रीडादीनामिति, स्वशब्दोपादानमिति योगः ।

१७६ (24) यत्रापि स्वशब्देन निवेदितत्वमस्ति तत्रापि स्वशब्दप्रयुक्तया विभावादिप्रतिपत्त्यैव रसादीनां प्रतीतिः । स्वशब्देन सा केवलमनूद्यते ।

१७८ (25) तथा कादम्बर्यां विप्रलम्भबीजेऽप्युपक्रान्ते तदनुपयुक्ताटवीशबरादेरतिवर्णनम् ॥

(26) विस्मृतिरिति । अनुसंधिर्हि सहृदयसर्वस्वम् ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२६७ (21) भवत्वशिथिल इत्यादिना समाप्तेऽपि परशुवर्णने येनानेनेति वाक्यान्तरेण पुनस्तस्यैव वर्णनमारब्धं न दुष्टं, वाक्यानन्तर्गतत्वेनोक्तत्वात् । विशेषणत्वेनोक्तो तु दुष्टत्वमेव । यथा-नववयो लास्याय वेणुस्वन इत्यादौ ।

२६९ (22) न च केवलशृङ्गारादिशब्दान्विते विभावादिप्रतिपादनरहिते काव्ये मनागपि रसवत्त्वप्रतीतिः, यथा–'शृङ्गारहास्यकरुणाः' इत्यादौ । तस्मादन्वयव्यतिरेकाभ्यामभिधेयसामर्थ्याक्षिप्तत्वमेव रसादेर्न त्वभिधेयत्वं कथञ्चिदिति स्वशब्दवाच्यता दोष इत्यर्थः । एवं द्वितीय एव पक्षो न्याय्यः । एतेन शृङ्गाराद्याः शब्दाः शृङ्गारादेर्वाचकाः इत्युद्भटोक्तं निरस्तम् ।

२६८ (23) व्रीडादीनामिति । स्वशब्दोपादानमिति योगः ।

२७० (24) यत्रापि स्वशब्दनिवेदितत्वं विभावादिप्रतिपादितत्वमप्यस्ति तत्रापि विभावादिमुखेनैव रसादिप्रतीतिः, स्वशब्देन सा केवलमनूद्यते ।

२७२ (25) तथा हि कादम्बर्यां 'रूपविलासे'त्यादिना महाविप्रलम्भबीजमुपक्षिप्य तदनुपयोगिनामटवीशबरेशाश्रममुनिपुरीनृपादीनाम् ।

२७३ (26) विस्मृतिरिति । अनुसन्धानं हि सहृदयतायाः सर्वस्वम् ।

सोमेश्वर

पृ.

१८२ (27) अवदातमिति सातिशयं कर्म । अधिकं त्विति । अयं भावः । केवलमनुष्यस्य सप्तार्णवलङ्घनमसंभाव्यमानतयानृतमिति हृदये स्फुरदुपदेश्यस्य चतुर्वर्गोपायस्याप्यलीकतां बुद्धौ निवेशयति ।..... असंबद्धतैवैतेषु शास्त्रेषूच्यते इति प्रतीतिः स्यादिति ।

१८३ (28) जगद् जगदंशाश्च देशः । तत्र सामान्यविवक्षायां जगदेकं, यथा 'जगति सकले न्यासादीनाम्' इति ॥ भूर्भुवः स्वरित्यादिविशेषविवक्षया त्वनेकं, यथा—

नमस्त्रिभुवनाभोगवृत्तिखेदभरादिव ॥ महर्जनस्तपःसत्यमित्येतैः सह सप्तेत्यन्ये । यथा-हर्षस्य सप्तभुवनप्रथितोरुकीर्तेः ॥

तानि सप्तभिर्वायुस्कन्धैः सह चतुर्दशेत्यपरे । यथा–जयति चतुर्दशलोकवल्लिकन्दः ॥

तानि सप्तभिः पातालैः सहैकविंशतिरित्येके । यथा–कीर्तयस्तव लिम्पन्तु भुवनान्येकविंशतिम् ॥

तत्र भूर्लोके सप्त जम्बूद्वीपादयो द्वीपाः ॥

१८४ (29) ते च समुद्रास्त्रयश्चत्वारः सप्त वेति कविसमयः ॥

(30) कालः काष्ठादिभेदभिन्नः ।

१८६-१८७ (31) वयः शैशवादि । जातिर्ब्राह्मणत्वादिका स्त्रीपुंसादिका वा । आदिग्रहणाद् विद्यावित्तकुलपात्रादयो लभ्यन्ते । वेषः कृत्रिमं रूपम् । व्यवहारश्चेष्टा ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२७४-७५ (27) अवदानमिति । सातिशयं कर्म । अधिकमिति । अयं भावः । स्वःपातालगमनाब्धिलङ्घनादिकमदिव्यस्य वर्ण्यमानमसम्भाव्यतयाऽलीकमिति चिन्तयन्तो विनेया उपदेशस्य चतुर्वर्गोपायस्याप्यलीकतां कल्पयन्ति सर्वमिदं शास्त्रोक्तमसम्बद्धमितीति ।

२७५ (28) विश्वं, विश्वैकदेशाश्च देशः । एकं द्वे त्रीणि सप्त चतुर्दशैकविंशतिर्वा विश्वानि स्युः । स्वर्गमर्त्यपातालमहर्जनस्तपःसत्यैः सप्तभिश्च वायुस्कन्धैः सप्तभिश्च पातालैः । विशेषविवक्षायामनेकत्वं, सामान्यविवक्षायां त्वैक्यम् तत्र भूमध्ये जम्बूद्वीपप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्चशाकपुष्कराद्याः सप्त द्वीपाः ।

२७५ (29) एकस्त्रयः चत्वारः सप्ताब्धयो वाच्या इत्यादिकविप्रसिद्ध्या सर्वं घटते ।

२७५ (30) कालः– काष्ठाकलामुहूर्तरात्रिदिनपक्षमासर्तुवर्षादिभेदभिन्नः

२७५-७६ (31) वयः शैशवादिकम् । जातिः स्त्रीपुंसादिका, ब्राह्मणत्वादिका वा आदिशब्दाद्विद्यावित्तकुलादयः । व्यवहारादीत्यादिशब्दादाकारवचनादयः । व्यवहारा-

सोमेश्वर

पृ.

१८६-१८७ (13) आदि-शब्दाद् आकारवचनादयो गृह्यन्ते ॥ वेषव्यवहारादीति । देशादिभिः प्रत्येकं संबध्यते, तेन देशे वेषव्यवहाराकारवचनानामौचित्याद् निबन्धः कार्य इत्यर्थः। यथा कन्यकुब्जीयदेशे उद्धतो वेषो दारुणो व्यवहारो भयंकर आकारः परुषवचनमनुचितम्। म्लेच्छेषु तदेवोचितम्। तथा नागरेषु यदुचितं तदेव कनककुण्डलादि ग्राम्येष्वनुचितम्। एवं कालादावप्यूह्यम् ॥

१८७ (32) यथौत्सुक्यनामा व्यभिचारी साक्षान्निबद्धश्चमत्कारी न तथा तस्यानुभावश्चिन्तादिरूपं कार्यं प्रतीतिकृदिति स्वशब्देनोक्तौ न दोषः।

१९१ (33) 'वीराः स्वदेहान्' इत्यादिना तदीयोत्साहाद्यवगत्या कर्तृकर्मणोः समस्तवाक्यार्थानुयायितया प्रतीतिरिति शृङ्गारबीभत्सयोरन्तरेऽनिवेशितस्यापि सुतरां वीरस्य व्यवधायकता प्रतीयत इति भावः।

(34) बोधिसत्त्वस्य सिंहीं स्वकिशोरभक्षणप्रवृत्तां प्रति निजं शारीरं वितीर्णवतः केनचिच्चाटुकं क्रियते । 'प्रोद्भूतः सान्द्रपुलकः' परार्थसंपत्तिजेनानन्दभरेण यत्र। रक्ते रुधिरे मनोभिलाषो यस्याः । अनुरक्तं च मनो यस्याः । मुनयश्चोद्बोधितमदनावेशाश्चेति विरोधः ॥ 'जातस्पृहैः' इति च 'वयमपि यदि कदाचिदेवं कारुणिका भविष्यामस्तदा सत्यतो मुनयः' इति मनोराज्ययुक्तैः ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२७५-७६ (31) दीति देशादिभिः प्रत्येकं योज्यम्। तेन देशवेषादेरौचित्येन निबन्धः कार्य इत्यर्थः। एवं कालादौ योज्यम्।

२७६ (32) यथौत्सुक्यनामा सञ्चारी साक्षात् स्वपदेनोक्तश्चमत्कारी न तथा तदनुभावश्चिन्तादिरूपश्चमत्कारीति स्वशब्देनौत्सुक्यनामा संचारी सम्प्रोक्तः।

२८० (33) 'वीराः स्वदेहान्' इत्यादिनोत्साहाद्यवगत्या कर्तृकर्मणोः समस्तवाक्यार्थानुयायितया प्रतीतिरिति मध्यपाठाभावेऽपि सुतरां वीरस्य व्यवधायकता।

२८१ (34) स्वडिम्भभक्षणप्रवृत्तसिंहिकायाः स्वाङ्गं ददतो बुद्धस्य केनापि चाटुः क्रियते। पुलकोद्भेदः परार्थसम्पादनसुखाभ्याम्। रक्तमसृगनुरक्तं च। मुनयश्चोद्बोधितस्मरावेशाश्चेति विरोधः जातस्पृहैरिति च वयमप्येवं कदा कृपालवो भविष्याम इति भावः।

उल्लास ८

सोमेश्वर

पृ.

१९६ (1) रसस्यैव माधुर्यादयो धर्माः । तर्हि कथं 'मधुरा वर्णाः' इति व्यवहार इत्याह-कचित्त्विति । आकार एवास्य शूर इति । यथा शौर्यमुपचारात् तदभिव्यञ्जके शरीरे लोका व्यवहरन्ति तथा वर्णेषु माधुर्यादयः । मधुररसाभिव्यञ्जकेषु वर्णेषूपचरितं माधुर्यमित्यर्थः ।

२०१ (2) 'चित्ते' इति । 'चहुट्टदि' निखाता भवति । 'न खुट्टदि' न न्यूनीभवति । 'विसट्टदि' विकसति । 'तरट्टी' प्रगल्भा ।

२०१ (3) 'अलंकारा अपि गुणवत्समवेता एवेति' केचित्, तन्नेत्याह-अनुप्रासेति । 'उभयेषामपि समवायेन स्थितिः' इत्यभिधाय 'तस्माद् गड्डरिकाप्रवाहेण गुणालंकारभेदः' इति भामहविवरणे यद् भट्टोद्भटोऽभ्यधात् तद् असत् ।

२०५ (4) यद् वामनः 'यस्मिन् सति बहून्यपि पदानि एकपदवद् भासन्ते ॥' स श्लिष्यत्यनेन पदं पदान्तरेण मसृणतयेति श्लेषः, यथा 'अस्त्युत्तरस्याम्'—।

२०५ (5) आरोहपूर्वोऽवरोहः समाधिः, यथा 'निरानन्दः कौन्दे मधुनि परिभुक्तोज्झितरसे' ॥

(6) यस्मिन् सति नृत्यन्तीव पदानीति वर्णना स्यात् ।

२०६ (7) पदार्थे वाक्यवचनं, यथा-'अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः' । अत्र चन्द्रपदवाच्येऽर्थे 'नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेः' इति वाक्यं प्रयुक्तम् ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२८६ (1) रसस्यैव यन्माधुर्यादि तत्कथं मधुरौजस्विप्रसन्ना वर्णा इति प्रतीतिरित्याह- कचित्त्विति । शौर्यादीति । शौर्यादिसंयुक्तस्य । आकार एवेति । यथा शौर्यमुपचारात् तद्व्यञ्जके काये व्यवह्रियते, तथा वर्णानां मधुरादिरसव्यञ्जकानां माधुर्यादीति भावः ।

२८८ (2) चित्त इति । चहुट्टदि निखाता भवति । खुट्टदि न न्यूनतामेति । विसट्टदि विकसति । तरट्टी प्रौढा ।

२८९ (3) शब्दार्थालङ्काराणां गुणवत्समवायेन स्थितिरिति भामहवृत्तौ भट्टोद्भटेन भणनमसत् ।

२९४ (4) 'मसृणत्वश्लेषः यस्मिन् सति बहून्यपि पदान्येकपदवद्भान्ती' ति वामनः, यथा— "अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा" ।

२९५ (5) तस्मात् "आरोहावरोहक्रमः समाधिः" इति वामनः ।

(6) यस्मिन् सति नृत्यन्तीव पदानि इति प्रतीतिरिति वामनः ।

२९८ (7) पदार्थे वाच्ये वाक्योक्तिर्यथा-चन्द्रपदे वाच्येऽत्रिनयनसमुत्थं ज्योतिरित्युच्यते ।

सोमेश्वर	माणिक्यचन्द्र
पृ.	पृ.
२०६ (8) वाक्यार्थे पदाभिधा यथा— ‘दिव्येयं न भवति किं तर्हि मानुषी’ इति वाच्ये ‘निमिषति’ इत्युक्तम् ।	२९८ (8) वाक्यार्थे पदोक्तिर्यथा-दिव्यैषा न स्यात् किन्तु मानुषीतिवाच्ये निमिषतीत्युक्तिः ।
२०७ (9) घटनारूपः श्लेषः । क्रमकौटिल्यानुल्बणत्वोपपत्तियोगश्च घटना । नेत्रनिमीलनादीनां क्रमः परिपाटी । कौटिल्यं वैदग्ध्यम् । तयोरनुल्बणत्वेनाग्राम्यत्वेनोपपत्त्या युक्ततया योजनं श्लेषः । यथा–‘दृष्ट्वैकासनसंगते प्रियतमे पश्चादुपेत्याद्राद्’ इति ।	२९९ (9) नेत्रपिधानादेर्यः क्रमो यच्च कौटिल्यं तयोरनुल्बणत्वेनाग्राम्यत्वेनोपपत्त्या युक्ततया यद्योजनं योगस्तद्रूपा घटना या तदात्मा श्लेषः । यथा— दृष्ट्वैकासनसङ्गते प्रियतमे पश्चादुपेत्यादरात् । एकस्या नयने पिधाय विहितक्रीडानुबन्धच्छलः । ईषद्वक्रितकन्धरः सपुलकस्वेदोल्लसन्मानसामन्तर्हासलसत्कपोलपुलको धूर्तोऽपरां चुम्बति ।
२०८ (10) छन्दोविशेषविशेष्या गुणसंपत्तिरिति केचित् । तथा हि स्रग्धरादिष्वोजः, इन्द्रवज्रादिषु समता, विषमवृत्तेष्वौदार्यं, तच्च सव्यभिचारम् ॥	३०१ (10) स्रग्धरादावोजः इन्द्रवज्रादौ प्रसादः मन्दाक्रान्तादौ माधुर्यम्, शार्दूलादौ साम्यम्, विषमवृत्तेष्वौदार्यमिति छन्दोविशेषसाध्या गुणाः इत्येके । तदप्यसत् ।
२११ (11) एकं धर्मादिपुरुषमुद्दिश्यानन्तवृत्तान्तवर्णनप्रधाना शूद्रकादिवत् परिकथा ॥ मध्याद् उपान्ततो ग्रन्थान्तरतः सिद्धमितिवृत्तं यस्यां वर्ण्यते सा खण्डकथा ।	३०५ (11) एकं पुमर्थमुद्दिश्य प्रकारभङ्ग्या भूरिवृत्तान्तवर्णनारूपायां परिकथायां त्वितिवृत्तस्य न्यासे भरः कार्यो न रसानाम् । मध्यादुपान्ततो वा ग्रन्थान्तरप्रसिद्धमितिवृत्तं यस्यां वर्ण्यते सा खण्डकथा । पूर्णकथा तु प्रसिद्धा ।
२१२ (12) तत्र मुक्तकेषु रसबन्धाश्रयेण दीर्घसमासा रचना, अन्यथा तु कामचारः । सन्दानितकादिषु विकटबन्धौचित्याद् मध्यमसमासादीर्घसमासे एव रचने । प्रबन्धाश्रितेषु तु मुक्तकादिषु ‘त्वामालिख्य’ इत्यादिषु यथो-	(12) तत्रैषां मध्ये मुक्तकेषु रसबन्धाश्रयेण न दीर्घा वृत्तिः कार्या । अन्यथा तु स्वेच्छा । सन्दानितकादौ विकटबन्धत्वेन वृत्त्यभावस्त्याज्यः । प्रबन्धाश्रिते तु मुक्तकादौ यथोक्तप्रबन्धविशेषा आराध्याः । पर्यायबन्धेषु

सोमेश्वर

पृ.

२१२ (12) क्तप्रबन्धविशेषौचित्यम्। पर्याबन्धे तु असमासा-मध्यमसमासे एव, कदाचिद् रौद्रादिविषये दीर्घसमासायामपि घटनायां परुषा ग्राम्या च वृत्तिस्त्याज्या । परुषोपनागरिकाग्राम्याणां वृत्तीनां चौचित्यं यथाप्रबन्धं यथारसं चानुसर्तव्यम्।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३०५ (12) तु दीर्घा वृत्तिस्त्याज्या। कदाचिद्रौद्रादिविषये दीर्घायामपि वृत्तौ परुषाग्राम्ये वृत्ती त्याज्ये।

उल्लास ९

सोमेश्वर

पृ.

२२३ (1) 'नारीणां स्त्रीणां, न अरीणाम्' इत्यन्यथा प्रयुक्तम्। 'जानासि' इत्येकस्योक्तिः। 'कश्चेतनः' इत्यन्यस्य। 'वामानाम्' प्रतिकूलानां स्त्रीणां च। 'हितकृद्' इत्यादि पुनराद्यस्योक्तिः। हितं करोति कृन्तति च। 'अबलानाम्' स्त्रीणां दुर्बलानां च। 'बलाभावेन प्रसिद्धात्मनो' दुर्बलस्य दैत्यस्य विनाशेन प्रसिद्धात्मन इन्द्रस्य।

२२४ (2) यायावरीयस्तु 'अभिप्रायवान् पाठधर्मः काकुः स कथमलंकारी स्याद्' इति न काकुवक्रोक्तिमाह।

२२६ (3) अत्र यत् पूर्वार्धे दवदहनत्वं विधेयं तुहिनदीधि[ति]त्वं चानुवाद्यं, तद् द्वयमप्युत्तरार्धे विपरीतं ज्ञेयम्।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३०६ (1) नारीणां स्त्रीणाम्। भङ्गे तु न अरीणाम्। वामाः स्त्रियः प्रतिकूलाश्च। हितकृदिति। हितं करोति कृन्तति च। बलं शक्तिर्बलो दैत्यश्च तदभावेनाप्रसिद्धात्मा दुर्बलो बिडौजाश्च।

३०८ (2) "अभिप्रायवान् पाठधर्मः काकुः स नालङ्कारी स्यादिति" तु यायावरीयः।

३१२ (3) अत्र पूर्वार्धे दवदहनो विधेयः। तुहिनदीधितिरनुवाद्यः। एतदेवोत्तरार्धे विपरीततया ज्ञेयम्।

सोमेश्वर	माणिकेचन्द्र
पृ.	पृ.
२२८ (4) 'उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च' इत्यादौ च पौनरुक्त्यदोषाभावेऽपि न यमकत्वम्।	३१५ (4) "उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एव" इत्यादौ तत्र पौनरुक्त्यदोषाभावाद्यमकत्वं प्रसज्येतेत्यर्थ......।
२४० (5) प्राकृतेऽन्योऽर्थः । 'मम देहि रसं धर्मे तमोवशां तमःपरिभूतामाशां गमागमात् संसाराद् हर । ण इति नः । तथा हे हरवधु शम्भुपत्नि शरणं त्वम् । चित्तमोहोऽपसरतु मे सहसा' । 'चित्तमोह'मिति 'गुणाद्याः क्लीबे' इति प्राकृते नपुंसकत्वम् । एवं संस्कृतमागध्योः संस्कृतपैशाच्योः संस्कृतशौरसेन्योः संस्कृतापभ्रंशयोः श्लेषो ज्ञेयः ।	३२२-२३ (5) प्राकृतपक्षे तु हे हरवधु । शम्भुपत्नि मम देहि रसं धर्मे तमोवशामाशां गमागमात् भवात् हर स्फुटय । तथा नोऽस्माकं शरणं त्वं । चित्तमोहोऽपसरतु मे सहसा बलेन । प्राकृतत्वाच्चित्तमोहमित्यत्र क्लीबत्वम् । एवं संस्कृतस्यापभ्रंशादिभाषाश्लेषोऽपि ज्ञेयः ।
(5a) संस्कृतप्राकृतयोर्योगः, यथा— सरले सहास-रागं परिहर रम्भोरु मुञ्च संरम्भम् । विरसं विरहायासं वोढुं तव चित्तमसहं मे ।	३३१ (5a) तत्र संस्कृतस्य प्राकृतभाषया श्लेषो यथा–सरले सहासरागं परिहर रम्भोरु ! मुञ्च संरम्म् । विरसं विरहायासं वोढुं तव चित्तमसहं मे ।
२४१ (6) 'सहस्रम्' इति क्रियाविशेषणम् । 'स्यां स्याद्' इति च । नन्दतीति 'नन्दिता' नन्दिनो गणविशेषस्य च भाव इति तृच्-त-प्रत्यययोः श्लेषः ।	३२३ (6) क्रियाविशेषणं सहस्रशब्दो बाहुल्यार्थः । स्यां स्यादिति च । नन्दतीति नन्दिता । नन्दिनो गणविशेषस्य भावो नन्दितेति चाख्यातकृत्तद्धितप्रत्ययानां भेदः ।
(7) 'हे हर सर्वस्य त्वं सर्वस्वम् । भवः संसारः, तच्छेदनिष्ठः । नयोपकारयोः सांमुख्यं शरीरवर्तनम् । आयासि [आ] गच्छसि' ॥ अपरोऽर्थः । 'हर अपहर, भव संपद्यस्व, नय निवारय । आयासि खेदकारि । वर्तनं वृत्तिं विस्तारय' । अत्र स्यादि-त्याद्योर्विभक्त्योः । वचनश्लेषे तूदाहृतम् ॥	(7) हे शम्भो त्वं सर्वस्य सर्वस्वं । त्वमेव संसारोच्छेदतत्परस्सन् नयोपकारयोः साम्मुख्यं शरीरवर्तनमायासि आगच्छसि । अन्यच्च हर स्फोटय । भव सम्पद्यस्व । नय निवारय । आयासि खेदकारि वर्तनं तनु प्रथयेति । सुप्तिङ्विभक्त्योर्भेदः ।

सोमेश्वर

पृ.

२४१ (8) प्रकरणादिना चाभिधाया अनियन्त्रितत्वात् श्लेष एव, न तु ध्वनिः।

२४३ (9) किसलयवद् दीपमानाभ्यां कराभ्यां शोभते। सुखेनाप्तुं यत्र शक्यं फलं तत्र तु लुब्धानामीहितं प्रददाति।

(10) अभङ्गत्वमात्रेण अर्थश्लेषत्वं नोपपन्नमित्यर्थः तर्हि अर्थश्लेषस्य निर्विषयत्वमित्याह–अर्थश्लेषस्येति। अर्थश्लेषः, यथा–'स्तोकेने'ति।

(11) सह कलकलेन वर्तन्ते, सकलाः कला यस्य च।

२४४ (12) 'इहापि' इति शब्दालंकारमध्ये। न च साधारणधर्मप्रयोगशून्ये उपमा भविष्यति, मनोज्ञत्वादिसाधारणधर्मसहिते तु श्लेष इति वाच्यम्, यतः पूर्णोपमाया निर्विषयत्वं स्यात्॥ तर्हि यदाऽस्माकं मते पूर्णोपमाया निर्विषयत्वं तथा भवतां श्लेषस्य निर्विषयत्वमित्याशङ्क्याह–'देव त्वम्' इति।

२४५ (13) न चेति। यथा विरोधाभासो विरोधः, न तथा श्लेषाभासः श्लेषः। उभयार्थप्ररोहे हि श्लेष इत्यर्थः॥

२४५ (14) एवमत्रापि वर्ण्यमानस्य मुक्तामणित्वरूपणान्यथानुपपत्त्या वंशस्य कुलस्य वेणुत्वरूपणमनुक्तमपि गम्यते, एकदेशविवर्त्तित्वं च पूर्ववद् उद्भावनीयमेकस्मिन् देशे विशेषेण वर्तनात्। एकदेशविवर्तिरूपकस्य चास्य परंपरितरूपकत्वं काव्यप्रकाशकारमते।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३२३ (8) अत्र प्रकरणादिना नियमाभावे श्लेषो न तु ध्वनिः।

(9) पल्लववदाताम्रभास्वद्भ्यां कराभ्यां शोभते। सुखेनाप्तुं यत्र शक्यं फलं तत्र लुब्धानामीहितं प्रदत्ते।

(10) अभङ्ग इति। अर्थश्लेषतयोद्भटस्य यस्सम्मतः। न त्विति। न ह्यभङ्गत्वमात्रमर्थालङ्कारताहेतुः किन्त्वन्वयव्यतिरेकौ। अर्थश्लेषस्य तर्हि को विषय इत्याह—स्तोकेनेति।

३२६ (11) सह कलकलेन वर्तते यत्, सकलाः कला विद्यन्ते यत्र।

३२७ (12) इहापीति। शब्दालङ्कारप्रकरणे। एतेन शब्दमात्रसाम्येऽप्युपमात्वं सिद्धम्। शून्य इति। चारुत्वादिधर्माप्रयोगे उपमा तत्प्रयोगे श्लेष इति परस्याशयः। ननु यदि पूर्णोपमायाः निर्विषयत्वभिया भवद्भिः शब्दसाम्येऽप्युपमात्वं स्मृतं तर्हि श्लेषस्य निर्विषयतेत्याह–देवेति।

३२८ (13) न चेति। यथा विरोधाभासो विरोधो न तथा श्लेषाभासः श्लेष इत्यर्थः।

३२९ (14) भामहोक्तैकदेशविवर्तिरूपकस्य मम्मटमते परंपरितसंज्ञा॥ अत्र वर्णनीयस्य राज्ञो मुक्तामणित्वरूपणान्यथानुपपत्त्या वंशस्य गोत्रस्य वेणुत्वरूपणं साक्षादनुक्तमपि श्लेषबलादवगम्यत इत्येकदेशविवर्तित्वम्। सद्वंशेत्यत्रैकदेशविवर्तिरूपकम्।

सोमेश्वर

पृ.

२४६ (15) शब्दश्लेष इति । य एवेति, शब्दोऽर्थो वा । तत्रैवेति शब्देऽर्थे वा । 'वैचित्र्यम्' इत्यत्र 'स्वयं च पल्लवाताम्रा' इत्यादावपि शब्द एव कविप्रतिभासंरम्भगोचर इति शब्दालंकारतैव । न चार्थमुखप्रेक्षित्वमेव शब्दानामर्थालंकारनिबन्धनमित्याह-।

(16) यद्यपि लिप्यक्षराणां खड्गादिसंनिविष्टत्वं, तथापि श्रोत्राकाशसमवेतवर्णात्मकशब्दाभेदेन तेषां लोके प्रतीतेर्वाचकशब्दालंकारत्वम् ।

२४७ (17) तथा हि द्राढिकान्तरे साधारणो मा-शब्दः । तस्य दक्षिणतोऽधः क्रमेण वर्णाश्चतुर्दश न्यस्येत् । ततः शिखायां साधारणः सा-शब्दः । ऊर्ध्वक्रमेण वामतश्चतुर्दशैव यावन्मा-शब्दः साधारणः । एतत् फलम् ॥ तस्यैव मा-शब्दस्य दक्षिणपार्श्वे निःसरणक्रमेण वामतश्च प्रवेशक्रमेण वर्णाः सप्त सप्त । एषा द्राढिका । ततो मा-शब्दाद् ऊर्ध्वक्रमेण गण्डिकायां कार्या वर्णत्रयी । उपरि मा-शब्दः साधारणः । तस्य दक्षिणतो वामतश्च तथैव चत्वारो वर्णाः । एतच्च कुलकम् । ततस्तस्य मा-शब्दस्य उपरि वर्णद्वयम् । एतद् मस्तकम् । सा-मा-मा-शब्दा द्विपञ्चकृत्वो द्विरावृत्ताः ॥

२४७ (18) एष मुरजबन्धः । तथा हि पादचतुष्टयेन पङ्क्तिचतुष्टये कृते प्रथमादिपादेभ्यः प्रथमपादाद्यक्षराणि चत्वारि, चतुर्थादि-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३३० (15) शब्दश्लेष इति । य एवेति शब्दोऽर्थो वा । सैवेति । विचित्रता । एतेन स्वयं चेत्यादौ शब्द एव कविप्रतिभासंरम्भगोचर इति परमतेऽपि शब्दश्लेषता न त्वर्थश्लेषतेत्युक्तम् ।

३३१ (16) लिपयः । तासामेव खड्गाद्याकारोल्लासनासम्भवात्; लिपीनां च श्रोत्राकाशसमवेतवर्णात्मकशब्दाभेदेन प्रतीतेरत्र वाचकशब्दालङ्कारता न लिप्यलङ्कारता ।

३३१-३३२ (17) स्थापना यथा— द्राढिकान्तरे साधारणो माशब्दः, तस्य दक्षिणतोऽधःक्रमेण वर्णाश्चतुर्दश । शिखायां साधारणः साशब्दः । ऊर्ध्वक्रमेण वामतस्तावन्त एव यावन्माशब्दः साधारण एव तत्फलम् । तस्यैव माशब्दस्य दक्षिणतो निस्सरणक्रमेण वामतश्च प्रवेशक्रमेण वर्णास्सप्त सप्त । एषा द्राढिका । ततो माशब्दादूर्ध्वक्रमेण गण्डिकायां वर्णत्रयमुपरि माशब्दः साधारणः । तस्य दक्षिणतो वामतश्च तथैव चत्वारश्चत्वारो वर्णाः । एतच्च कुलकम् । ततस्तस्य माशब्दस्योपरि वर्णद्वयमेतन्मस्तकम् । सामामाशब्दाः द्विः पञ्चकृत्वो द्विरावृत्ताः ॥

३३२-३३३ (18) स्थापना यथा—पादचतुष्टयेन पङ्क्तिचतुष्टये कृते प्रथमादिपादेभ्यः प्रथमाद्यक्षराणि चत्वारि चतुर्थादिपादेभ्यः पञ्च-

सोमेश्वर

पृ.

२४७ (18) पादेभ्यः पञ्चमादीनि चत्वारि गृहीत्वा प्रथमपादः । द्वितीयपादाद् आद्याक्षरं, द्वितीयतृतीयपादाभ्यां चतुर्थपञ्चमाक्षरे, चतुर्थपादात् तृतीयद्वितीये, तृतीयात् पादात् प्रथमं चाक्षरं गृहीत्वा द्वितीयपादः। द्वितीयाद् अष्टमं, प्रथमात् सप्तमषष्ठे, द्वितीयतृतीयाभ्यां पञ्चमे, चतुर्थात् षष्ठसप्तमे, तृतीयाद् अष्टमं गृहीत्वा तृतीयपादः। चतुर्थात् प्रथमं, तृतीयाद् द्वितीयं, द्वितीयात् तृतीयं, प्रथमात् चतुर्थपञ्चमे, पुनर्द्वितीयात् षष्ठं, तृतीयात् सप्तमं चतुर्थाद् अष्टमं च गृहीत्वा चतुर्थः पादः ॥

२४८ (19) एषोऽष्टदलपद्मः । तथा भाशब्दः कर्णिकास्थाने, ततोऽक्षरद्वयेनैकं दिग्दलं निर्गमप्रवेशाभ्यां भा-शब्दं यावत् । ततो, ऽक्षरद्वयेन विदिग्दलं निर्गमेण तावतैव दिग्दलं प्रवेशेन भाशब्दं यावत् । पुनर्भा-शब्दो निर्गमेण च तदेवाक्षरद्वयमित्यादिना क्रमेण दलाष्टकमुत्पाद्यम् । एवं दिग्दलानि निर्गमप्रवेशाभ्यां उत्पाद्यानि, विदिग्दलानि तु प्रवेशेनैवेति दिग्दलवर्णानां द्वि-भाशब्दस्य चाष्टकृत्व आवृत्तिः प्रस्तारे ॥

२४८ (20) तत्र हि प्रथमादिपादाद्यक्षराणि चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमपदाष्टमाक्षराणि च प्रथमाः प्रथमपादः। प्रथमादिपादद्वितीयाक्षराणि च चतुर्थादिपादसप्तमाक्षराणि च द्वितीयपादः। एवं तृतीयषष्ठाक्षरैस्तृतीयः पादः चतुर्थपञ्चमैश्चतुर्थः

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३३२-३३३ (18) मादीनि च चत्वारि गृहीत्वा प्रथमः पादः । द्वितीयात्प्रथमं प्रथमाद् द्वितीयतृतीये द्वितीयतृतीयाभ्यां चतुर्थे चतुर्थाच्तृतीयद्वितीये तृतीयात्पादात् प्रथममक्षरं गृहीत्वा द्वितीयः पादः। द्वितीयादष्टमं प्रथमात्सप्तमषष्ठे द्वितीयतृतीयाभ्यां पञ्चमे चतुर्थात् षष्ठसप्तमे तृतीयादष्टमं च गृहीत्वा तृतीयः पादः। चतुर्थादिभ्यः प्रथमादीनि प्रथमादिभ्यः पञ्चमादीनि पादेभ्योऽक्षराणि गृहीत्वा चतुर्थः पादः।

३३३ (19) स्थापना यथा—भाशब्दः कर्णिकास्थाने । ततोऽक्षरद्वयेनैकं दिग्दलं निस्सरणक्रमेण विदिग्दलं चाक्षरद्वयेन प्रवेशक्रमेण। ततः स एव भाशब्दस्ततोऽक्षरद्वयेन दिग्दलं निर्गमप्रवेशाभ्यां भाशब्दं यावत् । ततोऽक्षरद्वयेन विदिग्दलं निर्गमेण तावतैव दिग्दलं प्रवेशेन भाशब्दं यावत् । पुनर्भाशब्दो निर्गमेण च तावदक्षरद्वयमित्यादिना क्रमेण दलाष्टकमुत्पाद्यमिति दिग्दलवर्णानां द्विः भाशब्दस्य चाष्टकृत्व आवृत्तिः।

३३४ (20) तत्र हि प्रथमादिपादानां प्रथमैः चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमपादानां अष्टमैश्चाक्षरैः प्रथमपादः। एवं द्वितीयसप्तमैः तृतीयषष्ठैश्चतुर्थपञ्चमैश्च द्वितीयतृतीयचतुर्थपादाः। इह च सर्वत्र तदेवोपलभ्यत इत्यर्थभ्रमस्याप्यवस्थानात् सर्वतोभद्रम्।

सोमेश्वर		माणिक्यचन्द्र	
पृ.		पृ.	
२४८ (20)	पादः। इह च सर्वे [त] दैव उपलभ्यत इति अर्धभ्रमस्याप्यवस्थानात् सर्वतोभद्रम्।		
२४९ (21)	अन्ये इति, मुशलधनुर्बाणशक्तिहलशूलस्वस्तिकनागपाशचक्रादयः। स्वरव्यञ्जनस्थानगतिनियमेऽन्येऽपि चित्रप्रकाराः संभवन्ति।	३३३-३३४(21)	खड्गादित्यादिशब्दान्मुसलधनुर्बाणचक्रशक्तिशूलहलस्वस्तिकादयः। तथैकद्वित्र्यादिव्यञ्जनस्थानपादार्धश्लोकगतप्रत्यागतादयश्चित्रभेदा ज्ञेयाः।
२५० (22)	वर्णच्युतं यथा— सितनृशिरःस्रजा [च] रविमौलिशिरोमणिभूषणैस्तया शिखिरुचिरार्धदृक् पृथुललाटतटे तिलकक्रिया च सा। स्फुटविकटाट्टहासललितं वदनं स्मितपेशलं च तद् अभिनवमीश्वरो वहति वेषमहो तुहिनाद्रिजार्धयुक्॥ अत्र गौरीश्वरवर्णने सिद्धिच्छन्दसि प्रतिपादमाद्याक्षरद्वयपातेऽन्त्याक्षरसप्तकच्युतौ चेश्वररूपवर्णनमेव प्रमिताक्षरावृत्तेन, यदि वा आद्याक्षरसप्तकच्युतौ अन्त्याक्षरद्वयपाते च गौरीवर्णनं द्रुतविलम्बितवृत्तेन॥	३३४-३५ (22)	स्वं वर्णच्युतं यथा— नृपदितिजामरप्रभुनताङ्घ्रियुगो जलदद्युतिर्विभुः, पृथुभुजगाधिपस्फुटफटासुभगः कमठारिजित्तथा। शिवसुखसंपदेव्ययविलासगृहं निखिलैनसां हरो, घनविधुता वनीं हरतु सकलः कलिलावनीं जिनः॥ अत्र श्रीपार्श्ववर्णने सिद्धिच्छन्दसि प्रतिपादमाद्याक्षरद्वयस्यान्त्याक्षरसप्तकस्य च च्युतौ प्रमिताक्षरावृत्तेन, तथाऽऽद्याक्षरसप्तकस्यान्त्याक्षरद्वयस्य च्युतौ द्रुतविलम्बितवृत्तेन तस्यैव वर्णनम्।
२५१ (23)	आमुखे इति, न पुनः परमार्थतः पर्यवसानेऽन्यार्थत्वमित्यर्थः॥	३३५	आमुख इति। न तु परमार्थतः। एतेन पर्यवसानान्यथात्वं लब्धम्॥

उल्लास १०

सोमेश्वर

पृ.

२५३ (1) उपमैव प्रकारवैचित्र्येण अनेकालंकारबीजभूतेति प्रथमनिर्दिष्टः [ष्टा] ॥

२५३-५४ (2) उप समीपे मीयते क्षिप्यते स्वसादृश्यप्रापणाद् उपमेयं येन तत् प्रसिद्धम् उपमानम् । यत्तु तेन समीपे क्षिप्यते सौन्दर्यादिगुणयोगित्वेन तत्र प्रकरणेऽप्रसिद्धं वदनादि तद् उपमेयम् । 'इन्दुमुखी' इत्यादौ प्रसिद्धं चन्द्रादि उपमानं, अप्रसिद्धं तु मुखादि उपमेयम् ॥ ननु च—

ततः कुमुदनाथेन कामिनीगण्डपाण्डुना ।
नेत्रानन्देन चन्द्रेण माहेन्द्री दिगलंकृता ॥

इत्यादौ कामिनीगण्डादेरप्रसिद्धस्याप्युपमानत्वं, चन्द्रादेश्च उपमेयत्वं दृश्यते । सत्यम्, अत्रापि कामयते प्रियमिति यौगिकत्वाश्रयेण कामिनीशब्दात् प्रतीयमानहृदयस्थितदुर्लभमनोहारिप्रियतमाया गण्डश्चन्द्रादपि अधिकचमत्कारितया प्राधान्येन प्रसिद्ध इति कविविवक्षावशादेव प्रसिद्ध्यप्रसिद्धी अङ्गीक्रियेते । येऽपि प्राकरणिकमुपमेयं, अप्राकरणिकमुपमानमिति आद्रियन्ते तैरपि कविप्रसिद्धिरङ्गीकार्यैव । तेन सत्त्वज्ञेयत्वप्रमेयत्वादिसाधर्म्ये नोपमा । तथा 'कुम्भ इव मुखम्' इत्यादि शृङ्गारादौ च । हास्यादौ तु न दोषः । कार्यकारणादिकयोः साधर्म्यस्य असंभवाद् उपमानोपमेययोरेव साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानधर्मेण संबन्धे उपमा ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३३८ (1) तत्रापि प्रकारवैचित्र्येणानेकालङ्कारबीजमिति पूर्वमुपमोच्यते ।

(2) उप समीपे मीयते क्षिप्यते सर्वसादृश्यप्रापणादुपमेयं येन तदुपमानं, तथा तेन यत्तु समीपे क्षिप्यते गुणद्वारेण तदुपमेयं, हृद्यतया कविना यदुत्कृष्यते तदुपमानम्, अन्यदुपमेयं, न तु प्रसिद्धमप्रकृतं चोपमानमन्यदुपमेयम् । एवं हि—
"ततः कुमुदनाथेन कामिनीगण्डपाण्डुना" इत्यादौ चन्द्रादेः प्रसिद्धस्योपमेयत्वं गण्डादेरप्रसिद्धस्योपमानत्वं न स्यात् । प्रकृताप्रकृतत्वेपि कविविवक्षैवाङ्गीकार्या । चन्द्रगण्डयोरुपमानोपमेयत्वप्रसिद्धौ सत्यामपि प्रसिद्धिविपर्यासेनौपम्यस्य कल्पितत्वाद्विपर्यासोपमा ।

सोमेश्वर

पृ.

२५५ (3) उपमानादिचतुष्टयं यत्र प्रयुज्यते सा पूर्णोपमा ।

२५५-५६ (4) तथैव अयं यथा-इवादि रुपमानोपमेययोरेकतरस्मिन्नपि अविश्रान्तः श्रौतेन रूपेणोभयाधारमुपमानोपमेयभावं द्योतयतीति श्रौती । तत्सद्भावे, यथा-इव-वा-सद्भावे । तथैवेति, 'श्रौती'त्यर्थः । इवार्थे वतेर्विहितत्वाद् इव-शब्दवच्छ्रौतेन रूपेणोभयानुयायितयोपमानोपमेयत्वावगतिः । 'तेन' इति चन्द्रेण तुल्यं मुखम् । 'तद्' इति चन्द्रबिम्बं तुल्यं मुखस्य ॥ 'इदं च' इति चन्द्रबिम्बं च मुखं च तुल्यम् । साम्यपर्यालोचनयेति । सममेव साम्यं साधारणो धर्मः । तुल्यता द्विष्ठरूपं सादृश्यम् । न तु तुल्यादिशब्दादेव साम्यप्रतीतिः, अपि तु अर्थात्, तुल्यादीनां पदानामुपमानोपमेययोरेकतरत्रैव विश्रान्तेः, अन्यत्र तु तद्गतसादृश्यपर्यालोचनया तत्संबन्धित्वावगतिः ।

२५७ (5) 'सुरतरुणा सदृश' इति सदृश-शब्देनोपमेये विश्रान्तेन उपमेयगतं सादृश्यं स्वकण्ठेनाभिहितम् । उपमाने च तस्यार्थात् प्रतिपत्तिः, उपमेयवर्तिसादृश्यविचारेण उपमानोपमेयत्वावगतेः । बहुव्रीहौ तु उपमाने विश्रान्तेरुपमानगतसादृश्यपर्यालोचनया उपमेयस्य उपमेयत्वावगतिः ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३३९ (3) उपमानमुपमेयं साधारणधर्म उपमाप्रतिपादकश्च यत्र स्युः सा पूर्णा ।

३४०-४१ (4) तथैवायमिवादिरुपमानोपमेययोरेकत्राप्यविश्रान्तः श्रुत्या द्विष्ठं उपमानोपमेयभावं वक्तीति । तत्सद्भावे यथेवादिभावे । श्रौती । तथैवेति । श्रौतीत्यर्थः । इवार्थे विहितो वतिरिववत् ज्ञेयः । तेनेति । चन्द्रेण । तत्तुल्यमिति । चन्द्रबिम्बं तुल्यं मुखस्य । इदं चेति । मुखं च चन्द्रबिम्बं च तुल्यम् । उभयत्रापीति । क्रमेणेति शेषः । पूर्वस्योस्त्वेकत्रैवेति भावः तुल्यादिति । तुल्यप्रकारशब्दानाम् । साम्येति । सममेव साम्यम् । समानो धर्मः । द्विष्ठरूपं सादृश्यं तुल्यता । अयं भावः— उपमानोपमेययोः साम्यप्रतीतिर्न तुल्यादिशब्दादेव, किन्त्वर्थात्, तुल्यादिपदानामेकतरत्रैव विश्रान्तेः । अन्यत्र तु साम्यालोचनया सादृश्यप्रतीतिः ॥

३४३ (5) अत्र सुरतरुणा सदृश इति सदृशशब्द उपमेयविश्रान्तस्तद्गतं सादृश्यं साक्षाद्ब्रूते । अन्यत्र तु सादृश्यं अर्थात्प्रतीयते, बहुव्रीहौ तूपमाने सदृशशब्दो विश्राम्यति । ततस्तत्र सादृश्यं साक्षादपरत्र तु अर्थात् । इयं समासे आर्थी पूर्णोपमा ॥

सोमेश्वर

पृ.

२५७ (6) तद्धिते श्रौती पूर्णा, यथा-'गाम्भीर्येति । भुजंगवद् 'इत्यत्र' तत्र तस्यैव इत्यनेन वतेस्तद्धितस्य विहितत्वात् श्रौती । भुजंगः कामुकः, स चात्र अब्धिः । अम्बररत्नं सूर्यः । तथा 'सूर्य' उपमानं, 'स' इति उपमेयः, 'दुरालोकत्वं' साधारणो धर्मः। अम्बररत्नेन तुल्यः। 'तेन तुल्यं क्रिया चेत् वतिः' इत्यनेन क्रियातुल्यत्वे विहितो वतिरुपमेये शाब्देन वृत्तेन विश्रान्तस्तुल्यत्वपर्यालोचनया उपमानस्य उपमानत्वं गमयतीति ।

२५८ (7) स्फुटं चेत्' प्रतीयमानं तदा ध्वनिव्यवहारः, अथ अस्फुटं तदा गुणीभूतव्यङ्ग्यव्यवहार इत्याशयेनाह-स्वाधीनेति । अलंकारान्तरं चेति । तद्धि अनुप्रासादिश्लिष्टतरमपि काव्ये यदि अव्यभिचारितयैव गण्यते, तदा तेन सहोपमादीनां संकरसंसृष्टी स्याताभिति केवलतयैव एषां विनावकल्पेत ॥ तदिति । स चास्फुटतरो रसादिरर्थस्तथा 'अलंकारान्तरम्' इति नपुंसकैकशेषः । अस्फुटश्च रसादिर्गुणीभूतविषय इति अस्फुटतरोऽत्र गृह्यते, इति 'संस्पर्श-पदेनात्र ध्वनितम् । तद्रहितत्वेनेति रसाद्यलंकारान्तराभ्यां विना वैरस्यं वहन्तीति न विरोधः ॥ लुप्तामाह-तद्वदिति । पूर्णोपमावद् लुप्तोपमापि वाक्यसमासयोः श्रौत्यार्थी चेति द्विद्विभेदाः तद्धिते तु आर्थ्येव, न श्रौती ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३४३ (6) गाम्भीर्येति। तद्धिते श्रौती पूर्णेयमिति योगः भुजङ्गवदित्यत्र इवार्थे वतिः, ततः। श्रौतीत्वं। भुजङ्गः कामी। स चार्थात्समुद्रः । अम्बररत्नं रविस्तेन तुल्यः, तुल्यार्थे वतिः। स चोपमेये साक्षात् विश्रान्तः, उपमाने तु साम्यपर्यालोचनयोपमानताप्रतीतिरितीयं तद्धिते पूर्णाऽऽर्थी ॥

३४३-३४४ (7) स्वाधीनेति। अयं भावः-प्रतीयमानं चेद्व्यक्तं तदा ध्वनिव्यवहारः, अथास्फुटं तदा गुणीभूत-व्यङ्ग्यव्यवहारः ॥ अलङ्कारान्तरं चेति। तद्ध्यनुप्रासादि श्लिष्टतरमपि काव्ये यद्यव्यभिचारितयैव गण्येत, तदा तेन सहोपमादीनां सङ्करसंसृष्टी स्यातामिति केवलतयैवैषां विषयो नावकल्पेत। तदिति। स चास्फुटतरो रसादिरर्थः। तच्चालङ्कारान्तरमिति नपुंसकैकशेषः। संस्पर्शपदादत्र रसादिरस्फुटतरो ग्राह्यः। अस्फुटातिस्फुटस्य तु गुणीभूतव्यङ्ग्यता ॥ तद्रहितत्वेनेति। रसाद्यलङ्कारान्तररहितत्वेन।

सोमेश्वर

पृ.

२४९ (8) समासे आर्थी यथा- 'अमृतोपमा' इति। अत्र 'माधुर्यादि'-धर्मलोपः ॥ तद्धिते आर्थी, यथा— 'विषकल्पम्' इति। 'यदि वेत्सि तद् जीवसि' इति संबन्धः। अत्र दारुणधर्मलोप इवार्थश्च कल्पप्प्रत्ययेन साक्षाद् अभिहितः। 'ईषद् अपरिसमाप्तं विषम्' इति वचनवृत्त्या सामानाधिकरण्यरूपया यद्यपि रूपकच्छायां भजते, तथापि प्रातीतिकेन रूपेण उपमैव। तथा हि अत्र 'विषसदृशं मनः' इत्ययमर्थः प्रतीयते, न तु 'ईषद् अपरिसमाप्तं विषमेव' इति ईषदपरिसमाप्तिविशिष्टे प्रकृत्यर्थसदृशेऽर्थे कल्पबादीनां स्मरणात्।

२६० (9) अत्र यद्यपि सदृशशब्दाभिधेयस्य उत्कृष्टतरगुणत्वेन अप्राप्यताप्रतिपादनाद् उपमानत्वं बलाद् आयातं, तथापि तस्य साक्षाद् अनिर्देशाद् उपमानस्य लोपः।

२६१ (10) सदृक्षशब्दाभिधेयस्य उत्कृष्टतरगुणत्वप्रतिपादनाद् बलाद् आगतस्य उपमानस्य साक्षाद् अनिर्देशाद् उपमानस्यैव लोपः।

२६२ (11) विलासाय विलब्धो दत्तो विग्रहो यया। विशरारितं विभिन्नम्। 'स्मरशरविशरांचित' इति पाठान्तरम्। 'मृगस्य नयने' इति प्रथमं तत्पुरुषः, ततो 'मृगनयने इव नयने यस्याः' इति सप्तम्युपमानोपमानपूर्वस्य समास उत्तरपदलोपश्चेत्यत्र गुणद्योतकोपमानानां त्रयाणां लोपः। यदा तु मृगशब्द एव लक्षणया मृगनयन-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३४५-४६ (8) समासे आर्थी यथा—अमृतोपमेति। अत्र माधुर्यादिलोपः। तद्धिते आर्थी यथा—विषेति। यदि वेत्सि तज्जीवसीत्यन्वयः। अत्र दारुणधर्मलोपः। ईषदपरिसमाप्तं विषं मन इत्युक्त्या आमुखे रूपकावभासः। निर्वाहे तु विषसदृशं मन इति प्रतीत्या प्रातीतिकेन रूपेणोपमैव। ईषदपरिसमाप्तिविशिष्टे प्रकृत्यर्थसदृशेऽर्थे कल्पबादीनां स्मरणात्। ईषदपरिसमाप्तं विषं विषकल्पशब्देनोच्यते।

३४७ (9) अत्र सदृशशब्दवाच्यस्योत्कृष्टत्वेन बलादुपमानत्वं तच्च सरिसमिति विशेषणेनाक्षिप्यते, नात्र साक्षात्प्रतीयते इत्युपमानानुपादानं…।

३४९ (10) सदृक्षशब्दवाच्यस्योत्कृष्टगुणत्वेन बलादुपमानत्वं इत्युपमानस्यैव लोपः।

३५० (11) विलासाय विलब्धो दत्तो विग्रहो यया सा। तथा मृगनयने इव नयने यस्या इति 'सप्तम्युपमान' इत्यादिनोपमानपूर्वस्य समासः उत्तरपदलोपश्च। अत्र धर्मस्येवादेरुपमानस्य च लोपः। यदा मृगशब्द एव लक्षणया मृगनयनवृत्तिः। तदा मृग एव नयने यस्या इति रूपकसमासस्यैव विषयः। न तूपमासमासस्य।

सोमेश्वर

पृ.

२६२ (11) वृत्तिः, तदा मृग एव नयने यस्या इति रूपकसमासस्यैष विषयः, न त्वस्य उपमासमास्येति।

२६४ (12) 'विलासायुधः कामः, लासः क्रीडनम्।' अत्र 'सैव नितम्बिनीव' इति 'तद्विलासा इव' इत्येतच्च भेदाभावाद् उपमानतया विश्रान्तिमलभमानमन्यव्यावृत्तौ लक्षणयावतिष्ठते।

(13) अत एवान्यधर्माणां स्वधर्मिभूताद् वस्तुन उत्कलितानां रसभावाद्यनुगुणतया वस्त्वन्तराध्यस्तत्वेन लब्धप्रकर्षाणामीक्षणम् उत्प्रेक्षा। सा च मन्ये-प्रभृतिभिर्द्योत्यते।

२६६ (14) अकालसंध्यामिव धातुमत्ताम्। आवर्जिता किंचिदिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्। सुजातपुष्पस्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव॥ अचिराभामिव [च]घनां ज्योत्स्नामिव कुमुदबन्धुना विकलाम्। रतिमिव मन्मथरहितां श्रियमिव हरिवक्षसः पतिताम्॥ स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः। हिरण्मयी साऽऽस लतेव जंगमा॥ च्युता दिवः स्थाणुरिवाचिरप्रभा॥ बालेन्दुवक्राण्यविकाशभावाद् बभुः पलाशान्यतिलोहितानि। सद्यो वसन्तेन समागतानां नखक्षतानीव वनस्थलीनाम्॥ इत्यादि उत्प्रेक्षैव। धातुमत्ता-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३५३ (12) विलासायुधः कामः, लासः क्रीडा, अत्र नितम्बिनी नितम्बिनी वेति, विलासा विलासा इवेति भेदाभावादुपमानतयाऽनुपपद्यमानमन्यव्यावृत्तौ लक्षणयाऽवतिष्ठते।

३५४ (13) अन्यधर्माणां स्वधर्मिभूताद्वस्तुन उत्कलितानां रसभावाद्यभिव्यक्त्यनुगुणतया वस्त्वन्तराध्यस्तत्वेन लब्धप्रकर्षाणामीक्षणमुत्प्रेक्षा। तस्याश्च मन्ये शङ्के ध्रुवमिवाद्या व्यञ्जकाः।

२५५ (14) "अकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम्" स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः" "भूगतामिव कौमुदीम्" "रम्भामिव भुवं गताम्" इत्यादि तूत्प्रेक्षैव। धातुमत्तादेर्हि प्रत्यक्षेणैवाकालसन्ध्यादिसादृश्यमुपलभ्याकाले सन्ध्या न स्यादित्यसम्भाव्यवस्त्वध्यवसायस्य सम्भावना क्रियते अकालसन्ध्यामिवेति। प्रत्यक्षोपलम्भे च न युक्त्यन्तराकाङ्क्षा। उपमानस्यासम्भवान्न तूपमा।

सोमेश्वर

पृ.

२६६ (14) दीनां हि प्रत्यक्षत एव अकालसंध्यादिसादृश्यमुपलभ्य अकाले संध्या न भवतीति असंभाव्यमानवस्त्वध्यवसायस्य संभावना क्रियते। 'अकालसंध्यामिव' इति प्रत्यक्षोपलब्धौ च न युक्त्यन्तरं मार्गणीयम्, न तु उपमा, उपमानस्य असंभवात्।

२६६-६७ (15) न हि भवति 'भारं वहतीव पुंगवः', 'पयो ददातीव स्त्रीगवी' इत्युत्प्रेक्षा।

२६८ (16) अत्र 'स खलु तुरगैः' इत्यादिवद्भेदकं किमपि नोक्तं, 'चन्द्रो ह्येवंविधः' इत्यादेरभणनात्। 'नामितं नु गगनं स्थगितं नु' अत्र उत्प्रेक्षाश्रयेण संदेहः, तथा हि तिमिरकर्तृकायां शैलगगनादिव्याप्तौ रञ्जितत्वमुत्प्रेक्षितं, गगनानमितत्वाद्युत्प्रेक्षान्तरसंभवात् संदेहमागतम्। अन्ये तु 'नुशब्दः संभावनाद्योतक इत्युत्प्रेक्षैवे'त्याहुः॥

(17) अभेदप्राधान्ये त्वाह-तद्रूपकमिति। रूपयति एकतां नयतीति रूपकम्।

२६८ (18) तथा मुखं चन्द्र इत्यादिरूपके चन्द्रेण स्वगुणा लक्ष्यन्ते। तैर्मुखगुणाः तैरपि मुखम्। ततश्च सामानाधिकरण्यं मुखचन्द्रयोर्गुणद्वारेण ताद्रूप्यादिप्रतीत्योपपद्यते। अत एव च भेदेऽप्यभेदप्रतीतिः॥

२६९ (19) 'चन्द्र एव मुद्राकपालम्'॥ अत्र पादत्रयमिति। समस्त-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३५६ (15) "भारं वहतीव पुंगवः" "पयो ददातीव स्त्रीगवी" इत्यादौ तु हृद्यत्वाभावान्नोत्प्रेक्षा।

३५८ (16) अत्र च स खलु तुरगैरित्यादिवन्न भेदोक्तिः। चन्द्रादयो ह्येवंविधा इत्यनुक्तेः। उत्तरार्धेन सन्देहनिर्वाहाच्च शुद्धत्वम्। तथा—
"रञ्जिता नु विविधास्तरुशैला नामितं तु (? नु) गगनं स्थगितं नु" अत्र ध्वान्ताद्यैः तर्वादि न व्याप्तं। किन्तु रञ्जितमित्याद्युत्प्रेक्षितं सन्देहद्वारेणेत्युत्प्रेक्षाश्रयेण सन्देहद्योती तु (? नु) शब्दः। अन्ये तु तु (? नु) शब्दः संभावनाद्योतकत्वादुत्प्रेक्षामेवाहेत्याहुः।

(17) रूपयत्येकतां नयतीति रूपकम्। अभेद इति भणनादभेदप्राधान्ये रूपकं स्यादिति लब्धम्।

३५८ (18) तथा मुखं चन्द्र इत्यादि रूपके चन्द्रेण स्वगुणा लक्ष्यन्ते। तैर्मुखगुणाः तैरपि मुखम्। ततश्च सामानाधिकरण्यं मुखचन्द्रयोर्गुणद्वारेण ताद्रूप्यादिप्रतीत्योपपद्यते। अत एव च भेदेऽप्यभेदप्रतीतिः।

३५९ (19) ज्योत्स्नेति। चन्द्र एव मुद्राकपालम्। अत्र पादत्रये समस्त-

सोमेश्वर

पृ.

२६९ (19) वस्तुविषयस्य उदाहरणमित्यर्थः । चतुर्थपादे तु आरोपपूर्विकापह्नुति[ः]

२७० (20) साङ्गमेतदिति सूत्रम् । न केवलं यत्र तस्यैव रूपणं, अपि तु तदङ्गस्यापि ।

२७०-२७१ (21) 'प्रेमलतिका'मिति । अत्र केवलोऽङ्ग्येव लतालक्षणो रूपितः, न पुनस्तदवयवाः पत्रादय इति शुद्धत्वम् । 'प्रेमैव लतिका' इति मयूरव्यंसकादित्वादेव शब्दलोपी समासः । ननु, व्याघ्रादिद्वारेण इव-शब्दलोपी समासो दृश्यते, लुप्तोपमायां सोऽपि स्यादिति संदेहसंकरः प्राप्नोति । सत्यम् । यत्रान्यतरपरिग्रहे साधकप्रमाणाभावस्तदितरस्य वा परिहारे न स्याद्बाधकं प्रमाणं, तत्रैव उभयप्रसङ्गः, स एव च संदेहसंकरः, इह तु लतायाः सेचनमानुकूल्याद् आरोपितधर्म एवेति रूपकपरिग्रहे साधकमिति न संकरः ।

२७२ (22) ननु, मानसशब्दपरिवृत्तौ पर्यायान्तरे सति नालंकार इति शब्दालंकारत्वं, अवरस्मिंस्तु परिवर्तितेऽपि सति न स हीयत इत्यर्थालंकारता । ततश्च शब्दालंकारः परंपरितरूपकं, न तु अर्थालंकार, इत्याशङ्क्याह-यद्यपीति ॥ उक्तमिति शब्दश्लेषे पुनरुक्तवदाभासे च । वक्ष्यत इति संकरालंकारे ॥ एकदेशेति । परंपरितमेव उद्भटादिभिरेकदेशवृत्तीत्युच्यते ।

२७६-७७ (23) द्वयोरप्यर्थयोः प्राकरणिकतया विवक्षितत्वादिति

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३५९. (19) वस्तुविषयं रूपकम् । चतुर्थे पादे त्वपह्नुतिः ।

३६१ (20) साङ्गमेतदिति । न केवलं यत्र तस्यैव रूपणं अपि तु तदङ्गस्यापि ।

(21) प्रेमेति । अत्र लताङ्गिनी (ङ्गी) रूपिता न तु तदङ्गं पत्रादीति शुद्धम् । प्रेमैव लतिकेत्यत्रान्यत्रापि रूपकसमासे मयूरव्यंसकादित्वादेव शब्दलोपः । उपमासमासे तु सर्वत्र व्याघ्रादित्वादिवशब्दलोपः । अत्र तु लतायाः सेचनमानुकूल्यादारोपितधर्म एवेति रूपकस्य साधकं प्रमाणमिति न सन्देहसङ्करः ।

३६३ (22) यद्यपीति । अयं भावः-मानसादीनामन्वयव्यतिरेकाभ्यां अपरावृत्तिसहत्वे हंसादीनां तत्सहत्वे उभयालङ्कारः परम्परितरूपकम् । उक्तमिति । पूर्वं शब्दश्लेषपुनरुक्ताभासयोः । वक्ष्यत इति । सङ्करालङ्कारे ।
अन्यैरिति । उद्भटाद्यैः परम्परितमेकदेशविवर्तिनाम्नोचे । तथा 'त्वमेव हंस' इत्याद्यारोपणपूर्वको मानसमेव मानसमित्याद्यारोप इत्यन्ये ।

३६८ (23) वक्ष्यमाणार्थसूचाभिप्रायेणोक्तौ न श्लेषः द्वयोरर्थयोः प्रकृतत्वे

सोमेश्वर

पृ.

२७६-७७ (23) भावः । यत्र तु वक्ष्यमाणोपक्षेप्यर्थनिष्ठमुपक्षेपपराभिधासंस् चकत्वं यथा—यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम् । अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ॥ —इत्यादौ, तत्र न श्लेषोऽर्थद्वयस्य प्रकृतत्वेनाभिधेयतया वक्तुमनिष्टत्वात्, किं तु अर्थशक्तिमूलो वस्तुध्वनिरेव । तथा हि प्रकृते न्यायवतः पुंसस्तिर्यञ्चोऽपि सहायाः, सूचनीयार्थविषयत्वेन तु राम-सुग्रीवादिवृत्तत्वम् ॥

२७७-७८ (24) वामनोक्ता तु उपमेयस्यानुक्तौ समानवस्तुन्यासः समासोक्तिरप्रस्तुतप्रशंसैव ॥

२८३ (25) 'अकथनीयमेतत् श्रूयमाणं हि निर्वेदाय स्यात् तथापि तु यद्यनुबन्धस्तत् कथयामि । 'वैराग्याद्' इति काका 'दैवहतकम्' इत्यादिना च वैराग्यसूचा । 'साधु विदितम्' इत्युत्तरम् । 'कस्माद्' इति वैराग्ये हेतुप्रश्नः । 'इदं कथ्यते' इत्यादि सनिर्वेदस्मरणोपक्रम[ः] कथं कथमपि निरूप्यतयोत्तरम् । 'वामेन' इति अनुचितेन कुलादिना उपलक्षित इत्यर्थः । अत्र [? अ] चेतनेन वृक्षविशेषेण सहोक्तिप्रत्युक्ती न संभवत इति असंभवति वाच्ये समृद्धासत्पुरुषसहवासिनो निर्धनस्य कस्यचिन्मनस्विनः परिदेवितं प्रतीयमानमध्यारोपेण स्थितं चेतनवृत्तान्तमारोप्य इत्थं कविना वर्णितत्वात् ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

वक्तुमनिष्टत्वात् किन्तु वस्तुध्वनिरेव । यथा-"यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य इति" अत्र प्रकृतत्वेनार्थो न्यायनिष्ठपुंवृत्तिः, सूचाभिप्रायेण तु रामादिवृत्तिः ।

३६०. (24) "उपमेयस्यानुक्तौ समानवस्तुन्यासः समासोक्तिः" इति तु वामनः । तन्मतेऽप्रस्तुतप्रशंसाऽन्यथा ज्ञेया ।

३७७ (25) श्रूयमाणं निर्वेदकृदपि तवानुबन्धात्कथ्यते । कस्मादिति वैराग्यहेतुप्रश्नः । कथ्यत इत्यादि सनिर्वेदस्मरणोपक्रमं कथंकथमपि निरूप्यते । वामेनेति । कुकूलादिनोपलक्षितः । वट इति । फलदानशून्यश्छायामात्रकरणादेव गर्विष्ठः । छायाऽपीति । श्मशानाग्निदग्धपल्लवादिस्तरुविशेषो हि शाखोटकः । मार्गः सतां पन्था अपि । अत्र वृक्षेण सहाचेतनत्वादुक्तिप्रत्युक्त्यसम्भवे तु श्रीमत्पुरुषसेवया खेदवान् दरिद्रमनस्वी कश्चित्पुमान् प्रतीयमानतयाऽध्यारोप्यते ।

सोमेश्वर

पृ.

२८३-८४ (26) 'रसनाविपर्ययो गजानां शापहेतुतोऽसत्यभाषित्वमपि। चापलमश्रोतव्यश्रवणमपि । मदो गर्वोऽपि । शून्यकरत्वमदातृत्वमपि ।' अत्र वाच्येऽर्थे रसनाविपर्ययशून्यकरत्वयोरसेवने हेतुत्वं न संभवतीति अध्यारोपोऽवसेयः । कर्णचापलं तु असेवने हेतुः । मदश्च सेवने प्रतीयमानश्च कुस्वामिसेवकः । एवं च अप्रस्तुतस्य वाच्यत्वे प्रस्तुतस्य गम्यत्वेऽप्रस्तुतप्रशंसा । श्लिष्टविशेषणैः प्रस्तुतस्य वाच्यत्वेऽप्रस्तुतस्य गम्यत्वे तु समासोक्तिः । प्रस्तुताप्रस्तुतयोरपि वाच्यत्वे विशेष्यस्यापि श्लिष्टत्वेऽर्थश्लेषः । एषान्योक्तिरिति अन्ये ।

२८४ (27) बहिरविद्यमानस्यार्थस्य संभावनामात्रेण उपनिबन्धे संबन्धेऽप्यसंबन्धो असंबन्धेऽपि संबन्ध इत्यर्थः । संबन्धेऽप्यसंबन्धः, यथा-'राकायाम्' इति । अत्र पार्वणशशाङ्कस्य निष्कलङ्कत्वं बहिरसंभवदपि कविप्रजापतिना स्वप्रतिमानात् संभवद्रूपतया उक्तम् । इत्थं च प्रकृतस्य मुखस्य उपमानाभावो, नास्त्यन्यत्, किंचिदस्योपमानमिति । अत एव संभाव्यमानार्थनिराचिकीर्षया शङ्काद्योतकश्चेच्छब्दः । आशङ्का ह्यनिश्चितस्वभावे वस्तुनि स्यात् ॥ इयमुत्पाद्योपमेति रुद्रटः, अद्भुतोपमेति दण्डिप्रभृतयः ।

असंबन्धेऽपि संबन्धः, यथा–
पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यान्मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम् ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३७७-७८ (26) सोऽपूर्व इति। रसनाविपर्ययो गजानां शापजोऽलीकजोऽपि। चापलं खलवचश्श्रवणे साम्मुख्यमपि । शून्यकरत्वमदातृत्वमपि । हेतुरिति। तेन वाच्येऽर्थे प्रतीयमानस्य कस्यापि कुस्वामिसेवकस्याध्यारोपः कार्यः । चापलमसेवने मदश्च सेवने हेतुः। प्रस्तुताप्रस्तुतयोः वाच्यत्वे विशेष्यस्यापि श्लिष्टत्वे अर्थश्लेषः। विशेषणानां श्लिष्टत्वे प्रस्तुतस्य वाच्यत्वे अन्यस्य तु गम्यत्वे समासोक्तिः। अप्रस्तुतस्य वाच्यत्वे प्रस्तुतस्य गम्यत्वेऽप्रस्तुतप्रशंसेति विवेकः।

३७९-८० (27) राकेन्दोर्निर्लक्ष्मत्वस्य बहिरसम्भवेऽपि कविना सम्भवद्रूपतयोक्तावास्यं निरुपममित्यर्थः। एषोत्पाद्योपमेति रुद्रटः। अद्भुतोपमेति दण्डिमुख्याः। अयं सम्बन्धेऽप्यसम्बन्धरूपस्तृतीयः। क्वचिदसम्बन्धे सम्बन्धो यथा—
"पुष्पं प्रवालोपहितम्" इति
अत्रासम्बन्धे सम्भावनया सम्बन्धः।

सोमेश्वर

पृ.

२८४ (27) ततोऽनुकुर्याद्विशदस्य तस्यास्ताम्रौष्ठपर्यस्तरुचः स्मितस्य ॥ अत्र असंबन्धे संभावनया संबन्धः ।

२८५ (28) वस्तुप्रतिवस्तुभावेन तु सामान्य धर्मस्य सकृन्निर्देशो दीपकतुल्ययोगिते ॥ वस्तुशब्दस्य वाक्यार्थवाचित्वे प्रतिवस्तुप्रतिवाक्यार्थमुपमासाम्यं यस्यामिति अन्वर्थः ।

२८६ (29) पुनः–शब्दः पूर्वस्माद् व्यतिरेके । व्यतिरेकश्च बिम्बप्रतिबिम्बभाव एव ।

(30) निश्चयश्च विशेषादेव संभवतीति विशेषरूप एवासौ, तेन यत्र विशेषस्य विशेषेण समर्थनं बिम्बप्रतिबिम्बभावे सति स दृष्टान्तः । दृष्टान्तस्य हि विशेषरूपतयैव प्रतिबिम्बभावः संगच्छते । यत्र तु विशेषस्य सामान्येन समर्थ्यसमर्थकभावः सोऽर्थान्तरन्यास इति विवेकः ।

२८६-८७ (31) 'यथा चन्द्रालोके कुमुदिन्याश्चन्द्रगुणपक्षपातित्वेन कुमुदं विकसति तथा त्वद्दर्शने त्वद्गुणपक्षपातित्वेन तस्या मनः कामाग्निज्वलितमुपशाम्यति ।

२८७ (32) अत्र [वि]शरारुतागमनादे[ः] स्थिरताधानादिना वैधर्म्येण प्रतिबिम्बनम् ॥

ननु, साधारणधर्माणां प्रतिबिम्बितत्वेन नियतनिष्ठतया कथं साधारणधर्मतेति चेद्, न, वस्तुतो हि तेषां धर्माणामभेद इति साधारणता, शब्दान्तरेण प्रतिपादितत्वात्तु प्रतिबिम्बनमिति न कश्चिद् विरोधः ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३८० (28) वस्तुशब्दस्य वाक्यार्थवाचित्वे प्रतिवाक्यार्थमुपमा साम्यमित्यन्वर्थत्वाश्रयणात् केवलं काव्यसमयात्पर्यायान्तरेण पृथङ्निर्देशः । अयं भावः–सामान्यधर्मस्यैवाद्यनुक्तौ सकृन्निर्देशे दीपकतुल्ययोगिते ।

३८१-८२ (29) अत्र पुनश्शब्दः पूर्वस्माद्विशेषकः । विशेषश्च बिम्बप्रतिबिम्बभाव एव ।

३८२ (30) निश्चयो यत्रेति भणनाद्यत्र विशेषेण विशेषो बिम्बप्रतिबिम्बभावे सति समर्थ्यते स दृष्टान्तः । निश्चयस्य विशेषादेव सम्भवात् विशेषरूपतयैव दृष्टान्ते बिम्बप्रतिबिम्बभावयोगात् । विशेषस्य सामान्येन समर्थने त्वर्थान्तरन्यासः ।

(31) यथा कुमुदिन्याश्चन्द्रालोके तद्गुणपक्षपातित्वेन कुमुदं विकसति तथा त्वद्दर्शने गुणपक्षपातात्तस्या मन इति सर्वप्रतिबिम्बनम् ।

३८२-८३ (32) अत्र विशरारुतागमनादीनां स्थिरत्वाधानादिवैधर्म्येण प्रतिबिम्बनम् । दृष्टान्ते साधारणधर्माणां वस्तुवृत्त्या ह्यभेद एव । परं शब्दान्तरेणोक्तत्वात् प्रतिबिम्बने भेदाभास इति बिम्बने नियतनिष्ठतया तेषां साधारणता न स्यादिति नाशङ्क्यम् ।

सोमेश्वर

पृ.

२८७ (33) एकत्र स्थितः समानो धर्मः क्रियादिः प्रसङ्गेन अन्यत्रोपकाराद् दीपनाख्याद् दीपसादृश्येन दीपकालंकारः। प्राकरणिकाप्राकरणिकत्वाभ्यां च तेषामर्थानामुपमानोपमेयभावो गम्यमानो न श्रौत इत्युपमातोऽस्य भेदः।

२८८-२८९ (34) क्रियापदस्य हि दीपकत्वे सर्वं काव्यं सालंकारमिति नार्थोऽनेन ग्रन्थेन। सत्यम्। न क्रियापदमात्रं दीपकं, किं तु बहुभिः समानजातीयैः कारकविशेषैरभिसंबध्यमानम्। तस्य चानेकेष्वर्थेषु अभिसंबध्यमानस्यार्थवदन्वयि रूपं यत् तत्साम्यमुच्यते।

(35) एकावली तु पूर्वस्य पूर्वस्योत्तरोत्तरेण उत्कर्षहेतुत्वे स्यादिति भेदः।

२९१ (35a) तथा श्लेषेऽपि द्वादश भेदः। तत्तस्मात् त्रीन् वारान् अष्ट भेदाश्चतुर्विंशतिरित्यर्थः।

२९१-९२ (36) आर्थादौ चतुष्कपञ्चकेऽपि दर्शितदर्शिना उदाहरणैरन्यद् भेदत्रयं द्रष्टव्यमित्यर्थः॥ आर्थेन साम्ये, यथा—'असिमात्रे'ति। अत्रापि उत्कर्षापकर्षहेत्वोर्द्वयोरुक्तिः।

२९२ (37) अत्र उपमेयगतोत्कर्षोपमानगतनिकर्षकारणोपादाने आर्थौपम्ये श्लेषव्यतिरेकस्य प्रथमो भेदः।

२९३ (38) 'मधु कर्तृ तृष्णां जहार, न मुखम्।' अत्र तृष्णाया हरणेऽहरणे च नोपात्तौ हेतुरिति उभयानुपादानाच्चतुर्थोऽयं भेदः श्लेषव्यतिरेकान्त्य-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३८३ (33) एकत्र स्थितः क्रियादिः समानो धर्मः प्रसङ्गे नान्यत्रोपकाराद्दीपनाख्याद्दीपकम्। अत्र प्रकृताप्रकृतत्वयोर्वास्तवत्वादर्थानामौपम्यं सत्यं परं गम्यं न श्रौतम्। अतो नोपमा।

३८४ (34) तथा क्रियायाः सर्वत्र वाक्ये प्रयोगात्तद्दीपत्वे सर्वं वाक्यं सालङ्कारं स्यादतो न क्रियामात्रं दीपकं, किन्तु भूयोभिस्सजातीयैः कारकैस्सम्बध्यमानं, तस्य चानेकेष्वर्थेषु साधारणतया सम्बध्यमानस्य बलादौपम्यगर्भत्वम्।

(35) एकावली तु पूर्वस्योत्तरोत्तरेणोत्कर्षहेतुत्वे स्यादिति विवेकः।

३८७ (35a) श्लेषेऽपि द्वादशभेदा इत्यर्थः। त्रिरष्टेति। त्रीन् वारान् अष्ट चतुर्विंशतिः।

३८८ (36) आर्थादावपि चतुष्कपञ्चके दर्शितदृष्टान्तान्यत्रिभेदी स्वेनोह्या। आर्थसाम्ये यथा—असीति। अत्राप्युत्कर्षापकर्षहेत्वोर्द्वयोरुक्तिः।

३८९ (37) अयमुपमानगनिकर्षहेत्वनुक्तावार्थौपम्ये श्लेषव्यतिरेकस्य तृतीयभेदः।

३९०-९१ (38) मधु तृष्णां जहार न मुखमिति योगः। अत्र तृष्णाहरणाहरणयोः कारणे नोपात्ते इति द्वयानुक्तिरित्युभयानुक्तौ श्लेषव्यतिरेकान्त्यचतुष्कस्या-

सोमेश्वर

पृ.

२९३ (38) चतुष्कस्य ॥ शेषं द्वयमूह्यम् ॥ 'एवमन्येष्वपि द्रष्टव्यम्' इति वचनात् प्रतिचतुष्कमेकः कश्चिद् भेदो वक्तुं संमत इति 'हरवद्' इति 'स्वच्छात्मता' इति च उदाहरणद्वयं ग्रन्थकाराभिप्रायेण न भवति ।

२९३-९४ (39) यथा—या शैशिरी श्रीस्तपसा मासेनैकेन बिभ्रती । तपसा तां सुदीर्घेण दूराद् विदधतीमधः ॥ 'तपो माघमासः, अन्यत्र तु अभ्युदयहेतुः कृच्छ्राचरणम् ।' इवादय अनुपात्ता अपि सामर्थ्यगम्याः । अत्र 'तपसा' इति श्लिष्टोक्तियोग्यं पदं पृथगुपात्तम् ' ।

२९४ (40) अत्रापि श्लिष्टोक्तियोग्यस्य पदस्य पृथगुपादानम् ॥ एवमन्येऽपि एकादश भेदाः ॥ ननु श्लेषव्यतिरेकयोरन्यत्र लब्धसत्ताकत्वात् श्लेषोपकृतत्वे व्यतिरेकस्याङ्गाङ्गिभावे संकरत्वं स्यात् । सत्यम् । श्लेषगर्भीकारेण व्यतिरेकलक्षणमंशमाश्रित्य एवंविधे श्लेषव्यतिरेकापरनामत्वान्न संकरः । ततस्तदनुचरणार्थमेवैष प्रकारो व्यतिरेकप्रकारतया व्यवस्थाप्यते ॥

२९५-९६ (41) हेतुरूपेति । क्रिया हि कार्यं निष्पादयतीति सैव हेतुः । सर्वेषां फलभूतानां क्रियैव अव्यवहितं कारणं, क्रियामुखेन कारणेभ्यः कार्योत्पत्तेः । अन्यैश्च 'क्रियाफलमेव कार्यम्' इति वैयाकरणैरेव अभ्युपग-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३९०-९१ (38) न्त्यो भेदः । द्विभेदी स्वेनोह्या । एवमन्येष्वपि द्रष्टव्यमित्युक्त्या प्रातिचतुष्कमेकः कश्चिद्भेदो वाच्य इति स्थितेऽपि यद् ग्रन्थकृता हरवदिति स्वच्छात्मतेति दृष्टान्तद्वयमूचे तदेकत्र व्यतिरेकमालात्वमन्यत्रार्थाश्लिष्टत्वं विशेषं ज्ञापयितुम् ।

३९१ (39) यथोद्भटकुमारसम्भवे गौरीस्तुतौ ।
"या शैशिरी श्रीस्तपसा मासेनैकेन विश्रुता ।
तपसा तां सुदीर्घेण दूराद्विदधतीमधः" ॥
तपो माघमासोऽपि । एकेनेति सुदीर्घेणेति हेतुद्वयोक्तिः । अत्र तपसेति श्लिष्टोक्तियोग्यं पदं पृथगूचे ।

३९१-९२ (40) अत्रापि श्लिष्टोक्तियोग्यपदस्य पृथग्भावः । अन्येऽपीत्येकादश भेदाः । नन्वत्र श्लेषोपकाराच्चमत्कारी व्यतिरेक इति तयोरङ्गाङ्गिभावे संकरः स्यात्, न, द्वययोगे हि संकरो न चात्र द्वयमस्ति । एवंविधश्लेषस्यैव व्यतिरेकापरनामत्वात् । परं व्यतिरेकरूपमात्रमाश्रित्य व्यतिरेकप्रभेदतया श्लेषव्यतिरेकरूपयोक्तम् ।

३९४-९५ (41) हेतुरूपेति । हेतवोऽपि क्रियामुखेन कार्यं कुर्वन्तीति सैवाव्यवहितो हेतुः । कार्यं क्रियायाः फलमिति वैयाकरणा एव मन्यन्ते नान्ये । फलेति । कार्यस्य कविना प्रतिपादनं न तु भवनं, हेतुं

सोमेश्वर

पृ.

२९५-९६ (41) स्यते, न सर्वैरिति क्रियापदस्थाने कारणग्रहणं कृतम्, सामान्येन विशेषमनपेक्ष्य फलप्रकाशनमिति कार्यस्य कविना प्रतिपादनं, न तु भवनकारणमन्तरेण कार्योत्पत्तेरसंभवाद् ॥ इह कारणान्वयव्यतिरेकानुविधानात् कार्यस्य कारणमन्तरेण असंभवः। यदि तु कयाचिद् भङ्ग्या तथाभावोपनिबन्धः, तदा विभावना। सा च भङ्गिः प्रसिद्धतरकारणानुपलब्धिः अप्रसिद्धं तु कारणं वस्तुतोऽस्त्येव। अस्याश्च न विरोधरूपत्वं, विरोधे द्वयोरपि समानबलयोः परस्परबाधात्। अत्र तु कार्योत्पत्तिरेव कारणप्रतिषेधेन बाध्यमाना प्रतिभाति, न तु कारणप्रतिषेधस्य कार्योत्पत्त्यापि बाधः। कारणप्रतिषेधस्य हि बाधः प्रतिभासमानोऽपि ज्ञप्त्यपेक्षो, ज्ञप्तिश्च उत्पत्त्यपेक्षया दवीयसी न विभावनां प्रयोजयति ॥ 'ज्ञप्त्यपेक्ष' इति यथा हि कार्यमुत्पद्यमानमेव कारणप्रतिषेधेन बाध्यत इति भवत्युत्पत्त्यपेक्षस्तत्र बाधस्तथा नोत्पद्यमान एव कारणप्रतिषेधः कार्योत्पत्त्यापि बाध्यते, अपि तु उत्पन्नस्य तस्य बाधस्तया ज्ञाप्यत इति कारणप्रतिषेधबाधो ज्ञप्त्यपेक्ष एव ॥ 'ज्ञप्तिश्च' इति कारणप्रतिषेधबाधज्ञानं च। 'दवीयसी' इति पश्चाद्भावित्वेन ॥ भवतु वात्रापि सामान्येन परस्परं बाधस्तथापि न विरोधरूपत्वं हेतुफलभावं विशेषमाश्रित्य प्रवर्तनाद् अस्या-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

२९४-९५ (41) विना, कार्योत्पत्त्यसंभवात्। अत्र प्रसिद्धतरहेत्वनुपलब्धेर्हेत्वभावः, अप्रसिद्धस्तु हेतुर्वस्तुतोऽस्त्येव। अत एव विशिष्टतया प्रसिद्धतरहेत्वनुपलब्धिरूपया कार्यस्य भावना पर्यालोचना विभावना, हेतुनिषेधेन चेहोपाक्रान्तत्वाद्बलवता कार्यमेव बाध्यत्वेन प्रतीयते न तु तेन हेतुनिषेध इत्यन्योन्यबाधकत्वानुप्राणिताद्विरोधालंकाराद्भेदः। हेतुनिषेधबाधप्रतीतिस्तु ज्ञप्त्यपेक्षा ज्ञप्तिस्तूत्पत्त्यपेक्षया नासन्नेति न विभावनाप्रयोजिका। अयं भावः— यथा कार्यं भवदेव हेतुनिषेधेन बाध्यत इति भवति तत्र भवनापेक्षो बाधः। तथाभवन्नेव हेतुनिषेधः कार्योद्भवनेनापि न बाध्यते किन्तु भूतस्य तस्य बाधः तथा ज्ञाप्यते इति हेतुनिषेधबाधो ज्ञप्त्यपेक्ष एवेति ज्ञप्तिर्भवनापेक्षया पश्चाद्भावित्वेनानासन्नेति। यद्वा सामान्येन मिथो बाधे सत्यपि हेतुफलभावविशेषेणास्याविरोधाद्भेदः।

सोमेश्वर

पृ.

२९५-९६(41)–स्तदपवादत्वात् ॥ एवं विशेषोक्तौ कार्यभावेन कारणसत्ता एव बाध्यमानत्वमुन्नेयम् । येन सापि अन्योन्यबाधत्वानुप्राणितात् विरोधाद् भिद्यते ।

२९६ (42) अत्र कुसुमितलताहननादीनां कारणानामभावेऽपि रुग्धारणादीनि कार्याणि प्रकाशितानि । तत्र विरहित्वलक्षणं निमित्तं गम्यमानम् ॥ उक्तनिमित्ता यथा—असंभृतं मण्डनमङ्गयष्टेरनासवाख्यं करणं मदस्य । कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रं बाल्यात्परं साथ वयः प्रपेदे ॥ अत्र द्वितीयपादे मदस्य यद् आसवाख्यं करणं प्रसिद्धं तदभावेऽपि यौवनहेतुकत्वेन उपनिबन्ध उक्तः । 'मदो मत्तता हर्षश्चेति' । मदस्य द्वैविध्येऽपि अभेदाध्यवसायकत्वमिति अतिशयोक्त्यनुप्राणिता विभावना । 'असंभृतं मण्डनम्' इति 'कामस्य पुष्पव्यतिरिक्तमस्त्रम्' इत्यत्र च संभरणस्य पुष्पाणां च मण्डनमस्त्रं च प्रति कारणत्वात् तदभावे विभावना ॥ 'एकगुणहानौ विशेषोक्तिरियम्' इति वामनीयाः । 'रूपकमेव अधिरोपितवैशिष्ट्यम्' इति अन्ये । 'आरोप्यमाणस्य मण्डनादेः प्रकृते वयसि संभवात् परिणाम' इति तु अद्यतनाः ॥

२९७ (43) 'स एकः' इति । अत्र तनुहरणे कारणे सत्यपि बलहरणस्य कार्यस्य अनुक्तौ निमित्तमचिन्तनीयमेव । प्रतीत्यगोचरत्वात् । 'अतैलपूराः सुरतप्रदीपाः' इत्यादि तु रूपकम् ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३९५ (42) अत्र नलिन्यब्जिनी पद्मिन्याख्या स्त्री च । तथा घातादिहेत्वभावेऽपि रुगादिकार्यमुक्तं, तत्र वियोगित्वं कारणं गम्यमतोऽनुक्तनिमित्तेयम् । उक्तनिमित्ताऽप्येषा यथा— "अनासवाख्यं करणं मदस्य" अत्र यौवनं निमित्तम् । मत्तताहर्षवाचकत्वान्मदस्य द्वैविध्येऽप्यतिशयोक्त्या ह्यभेदः । अतिशयोक्त्यनुप्राणिता चैषा ज्ञेया । एकगुणहानौ विशेषोक्तिरित्येके । अरोपितवैशिष्ट्यं रूपकमेवान्ये इमां मन्यन्ते ।

३९६-९७(43) अत्र तनुहरणस्य हेतोः फलं बलहरणं परं नोक्तम् । निमित्तं वा प्रतीत्यगोचरत्वादचिन्त्यम् । "एकगुणहानिकल्पनायां साम्यदाढर्ये विशेषोक्तिः" इति यदन्यैरस्या लक्षणं कृतं साऽस-

सोमेश्वर

पृ.

(44) संख्योपलक्षितक्रमानतिक्रमेण पदार्थानामन्वयसमाश्रयात् । अन्ये तु इमं क्रमसंज्ञमाहुः ॥ क्रमिकाणामिति बहुवचनमतन्त्रम् । तेन द्वयोरपि अर्थयोर्यथासंख्यम् ।

३०० (45) रुद्रटस्तु 'नित्यमेव द्रव्याश्रितत्वाद् जातेर्न जातिद्रव्ययोर्विरोध' इति नव भेदानाह ।

३०१ (46) [य]न्मार्गणा एव अनर्गलः शातपातः । अम्भोजदलाभिजातः' इति अम्भोजदलप्रख्यो जातः । अत्र दृषद्दृढत्वलक्षणगुणस्य अम्भोजदलस्वरूपद्रव्येण विरोधः ॥ 'जडयति शीतलयति व्यामोहयति च । ताप उष्णत्वं खेदश्च' । अत्र जडीकरणतापकरणयोः क्रिययोर्विरोधो वस्तुसौन्दर्येण तदप्राप्तिपर्यवसानेन परिह्रियते ॥

३०१ (47) 'श्लेषगर्भत्वे विरोधप्रतिभोत्पत्तिहेतुः श्लेषः' इति उद्भटः । मतान्तरे तु संकरः, यथा- 'संनिहितबालान्धकारा भास्वन्मूर्तिश्च' इत्यादौ विरोधेन द्वयोरपि श्लिष्टत्वे । एकस्य च श्लिष्टत्वे' कुपितमपि कलत्रवल्लभम्, इत्यादौ विरोध एवेष्यते ।

३०२ (48) वस्तुनो हि सामान्यस्वभावो लौकिकोऽर्थोऽलंकार्यः कविप्रतिभासंरम्भविशेषस्तु लोकोत्तरोऽर्थोऽलंकरणमिति ।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

३९६-९७ (43) न्मते रूपकभेद एव । यथा- "अतैलपूराः सुरतप्रदीपाः" इति ।

(44) सङ्ख्योपलक्षितक्रमानतिक्रमेण पदार्थानामन्वये यथार्थं यथासङ्ख्यं क्रम इति यावत् । क्रमिकाः क्रमवन्तः । बहुवचनमतन्त्रम् । तेन द्वयोरप्यर्थयोः यथासङ्ख्यम् ।

४०० (45) नित्यमेव द्रव्याश्रितत्वाज्जातेर्न जातिद्रव्ययोर्विरोध इति ब्रुवन् रुद्रटो नवभेदं मन्यते ।

४०१-२ (46) यन्मार्गण एवानर्गळः शातः पविः । अत्र दृढत्वरूपगुणदलरूपद्रव्ययोर्विरोधः । परीति । जडयति शीतलयति मोहयति च । तापः खेदोऽपि । अत्र जडीकरणतापकरणरूपे क्रिये विरुद्धे वस्तुसौन्दर्येण तदप्राप्तिपर्यवसानेन परिह्रियेते ।

४०२ (47) "कुपितमपि कलत्रवल्लभम्, इत्यादौ श्लेषगर्भसङ्कर इति कश्चित् । उद्भटस्तु विरोधप्रतिभोत्पत्तिहेतुं श्लेषमाह । श्लेषवशादेव लब्धात्मलाभत्वाद्विरोधस्य न श्लेषेण सह संकरः ।

४०३ (48) कविप्रतिभागोचरस्य त्वत एव तन्निमित्तस्यैव वस्तुस्वभावस्योक्तिरलङ्कारः ।

सोमेश्वर

पृ.

३०६ (49) 'मृगे'ति। तया हि प्राग्मोहितः किमपि नाज्ञासीत्। 'सुहृदा' इति। अकल्याणमित्रं हि तस्यासीत्। अत्राशोभनावपि शोभनावुक्तौ। विना-शब्दमन्तरेणापि विनार्थविवक्षा दृश्यते यथा सहोक्तौ सहार्थविवक्षा। तेन–'निरर्थकं जन्मगता नलिन्या यया न दृष्टं तुहिनांशुबिम्बम्।
उत्पत्तिरिन्दोरपि निष्फलैव दृष्टा विनिद्रा नलिनी न येन॥
इत्यादौ विनोक्तिरेव तुहिनांशुदर्शनं विना नलिनीजन्मनोऽशोभनत्वप्रतीतिः।

३०७ (50) न चेयं सुन्दरवस्तुस्वभाववर्णनात् स्वभावोक्तिः, तस्या लौकिकवस्तुगतसूक्ष्मधर्मवर्णने सर्वसाधारण्येन हृदयसंवादसंभवात्; इह तु लोकोत्तराणां वस्तूनां स्फुटतया ताटस्थ्येन प्रतीतिः नापि अद्भुतपदार्थदर्शनाद् अतीतानागतप्रत्यक्षत्वप्रतीतेः काव्यलिङ्गमिदं लिङ्गलिङ्गिभावेनाप्रतीतेः॥

३०८ (51) अत्र पादत्रयार्थोऽनेकवाक्यार्थरूपश्चतुर्थपादार्थहेतुत्वेन उक्तः। अत्र चानुमानसद्भावेऽपि न तेन सह वाक्यार्थीभूतस्य हेतोः संसृष्टिव्यवहारः, उभयोरपि भिन्नदेशत्वाभावात्। अनुमानं तु हेतोरुत्थापकतया उपकारकमिति भवत्यङ्गाङ्गिसंकरः, किं तु हेतुलक्षणमत्रास्तीति एतदभिसंधाय हेतोरिदमुदाहृतम्। अनमनं ह्यपराधद्वयस्य जनकं, तदेव चापराधतया परिणतं, यथा घटकारणं मृद् घटरूपतया परिणमति।

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४०६ (49) मृगेति। तथा हि प्राङ्मोहितः किमपि नाज्ञासीत्। सुहृदेति कूटमित्रं, स तस्यासीत्। विनाशब्दं विनाऽपि विनार्थविवक्षा स्यात् यथा सहोक्तौ सहार्थविवक्षा। तेन—
"निरर्थकं जन्म गतं नलिन्या यया न दृष्टं तुहिनांशुबिम्बम्।
उत्पत्तिरिन्दोरपि निष्फलैव दृष्टा विनिद्रा नलिनी न येन"॥
इत्यादौ विनोक्तिरेव। तुहिनांशुदर्शनं विना नलिनी जन्मनोऽशोभनत्वप्रतीतेः।

४०८ (50) स्वभावोक्तौ कविप्रतिभाविशेषितलौकिकवस्तुस्वभाववर्णने सर्वसाधारण्येन चित्तसंवादसम्भवोऽत्र तु लोकोत्तरवस्तूनां स्फुटत्वेन तटस्थतया प्रतीतिरिति चारुवस्तुस्वभाववर्णनान्नैषा स्वभावोक्तिः। न चेदमद्भुतपदार्थदर्शनाद्भुतभाविप्रत्यक्षत्वप्रतीतौ काव्यलिङ्गम्, लिङ्गलिङ्गिभावेनाऽप्रतीतेः।

४०९ (51) अत्र पादत्रयार्थोऽनेकवाक्यार्थरूपोऽन्त्यपादार्थस्य हेतुः। तथा वपुःप्रादुर्भावादित्युक्त्याऽनुमानमप्यत्रास्ति, परं तेन सह भिन्नदेशत्वाभावाद्वाक्यार्थीभूतस्य हेतोर्न संसृष्टिः, किन्त्वनुमानस्योत्थापकतया वाक्यार्थीभूतहेतुं प्रत्यङ्गभावे सङ्करः। सम्प्रति त्वां नमन्मुक्तः सन् अग्रेऽपि भाविनि काले निस्तनुस्सन्ननतिमानित्यर्थः। यथा घटकारणं मृद्घटरूपेण परिणमति तथाऽपराधद्वयस्य जनकमनमनमपराधतयाऽत्र परिणतम्।

सोमेश्वर

पृ.

३०९ (52) व्यङ्ग्यमपीति योग्यतया निर्देशः ॥ शब्देनोच्यत इति। भङ्ग्यन्तररचितशब्दैरभिधानम्। तेनेति। यद् भङ्ग्यन्तरेणोच्यते तद् व्यङ्ग्यम् ॥ यथा त्वेकघनरूपतात्मकप्रकारेण व्यङ्ग्यं प्रतीयते, न तथा वक्तुं शक्यते, क्रमभाविविकल्पप्रभवानां शब्दानां तथाभिधानशक्तेरभावाद्।

३१० (53) स्वभावोक्तौ भाविके च यथास्थितवस्तुवर्णनमैश्वर्यलक्षितमुदात्तालंकारः। न चेयमतिशयोक्तिः अन्यस्यान्यतयाध्यवसायाभावात्।

(54) ननु, अङ्गिभूतरसादिविषये रसादिध्वनिरुक्त इत्याह-न चेति। तस्येति। वीररसस्याङ्गत्वाद् अप्रधानत्वात् ॥ तर्हि अङ्गभूतरसादिविषये रसवदाद्यलंकारा उक्ता इत्युदात्तालंकारविषयश्चिन्त्यः, तद्विषयस्य रसवदादिना व्याप्यत्वात्। सत्यम्, अङ्गत्वेऽपि न रसवदलंकारोऽस्योदात्तस्य तदपवादत्वात् ॥

(55) तुल्यकक्षतामपेक्ष्यैव समुच्चयनं समुच्चय इति व्युत्पत्तेर्नास्य समाध्यलंकारान्तर्भावः। यत्र ह्येकस्य कार्यं प्रति पूर्णं साधकत्वमन्यस्तु कार्याय काकतालीयेनापतति तत्र तुल्यकक्षताभावे समाधिर्वक्ष्यते। यत्र तु खले-पोतिकया बहूनामवतरस्तुल्यकक्षतया तत्र समुच्चय इत्यनयोर्भेदः।

३१२ (56) अत्रापि 'कामिनी' इति सत्, 'गलितयौवना' इत्यसत्। एव-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४११ (52) व्यङ्ग्यमपीति। योग्यतया निर्देशः। शब्देनोच्यत इति। मदेन मानेन निवासप्रीतिरुज्झितेतिरूपभङ्ग्यन्तरप्रोक्तेनेति (?)। तेनेति। भङ्ग्यन्तरेण। यथेति। येन प्रकारेण शब्दसंसर्गात् सहात्मनैकघनरूपतात्मना वा व्यङ्ग्यं प्रतीयते न तथा शब्देनोच्यते, क्रमभाविविकल्पप्रभावः शब्दस्तथाऽभिधातुं न शक्त इत्यर्थः।

४१२ (53) इदमैश्वर्यलक्षितस्य वस्तुनो वर्णनया स्वभावोक्तिभाविकाभ्यां भिद्यते।

४१३ (54) वीररसेऽङ्गीभूते रसध्वनिः स्यात् इत्याशङ्क्याह। न चेति। वीररसो नाङ्गीत्यर्थः। एतदेवाह तस्येति। वीररसाश्रयो रामस्तावदिहाङ्गं किं पुना रसः। ननु रसस्याङ्गत्वे रसवदलङ्कारः स्यात्? अस्योदात्तस्य तदपवादत्वात्। तदपवादत्वाऽकल्पने निर्विषयमुदात्तम्।

४१३-४ (55) अत्र तुल्यकक्षतया हेतवो मिलिताः कार्यं साधयन्ति। समाधौ त्वेकस्य हेतोः कार्यं प्रति पूर्णे साधकत्वेऽन्यस्तु कार्याय काकताळीयन्यायेन आपततीति न तत्र तुल्यकक्षतेत्यनयोर्भेदः समुच्चयनं हि तुल्यकक्षाणामेव स्यात्।

४१५ (56) नृपाङ्गणगतो राज्ञः प्रसादवित्तः? पुमान् स तद्रूपस्सन्।

सोमेश्वर

पृ.

३१२ (56) मुत्तरत्रापि । इह विशेष्यस्य शोभनत्वं प्रक्रान्तं, विशेषणस्य तु अशोभनत्वम् । 'नृपाङ्गनगतः खलः' इत्यत्र तु नृपाङ्गनगतत्वेन विशेषणस्य शोभनत्वं, विशेष्यस्य खलत्वेन अशोभनत्वमिति विपर्ययात् प्रक्रमभङ्गो दोषः । न त्वत्र कश्चित् समुच्चीयमानःशोभनः, अन्यस्तु अशोभन इति सदसद्योगो व्याख्येयः । तथा ह्यत्र शोभनस्य सतोऽशोभनत्वविवक्षा, 'दुर्वाराः स्मर' इत्यत्र तु अशोभनानामेवेति विवक्षितम् । अत एव 'कथं सोढव्यः' इति सर्वथा दुष्टत्वाभिप्रायेण उपन्यस्तमिति अस्त्यनयोः प्रकारयोर्भेदः ।

३१२ (57) रुद्रटेन तु—
व्यधिकरणे वा यस्मिन् गुणक्रिये चैककालमेकस्मिन् । उपजायेते देशे समुच्चयः स्यात् तदान्योऽसौ ॥ 'धुनोति' इति । तत्र एकाधिकरणक्रिययोः समुच्चयः ॥ 'कृपाणे'त्यादि कृपाणपाणित्वं साधुवादश्च गुणौ, तयोः क्षितिसुरालयौ भिन्नौ देशौ ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४१५ (56) खलतया चासन् । अत्र शशी स्वयं सन्, धूसरत्वेनासन् । कामिनीति सत् गलितयौवनत्वमसत् । एवमग्रेऽपि विशेष्यद्वारेण सत्ता विशेषणद्वारेणासत्तैकस्य वस्तुनः सर्वत्र ज्ञेया । इह विशेष्यस्य सत्त्वं विशेषणस्य चासत्त्वं प्रक्रान्तं, ततो नृपाङ्गणगत इतिविशेष्यतया सद्व्याख्येयं, खल इति विशेषणतया चासत् । अन्यमताभिप्रायेण विशेषणविशेष्ययोरत्र वैपरीत्ये प्रक्रमभङ्गः । तथा नृपाङ्गणगतः खल इत्यसत् अन्ये तु सन्त इति समुच्चीयमानस्य सतस्तादृशेन सता योग इति व्याख्यायां तु सहचरभिन्नोऽर्थो दुष्ट इतिरूपः प्रक्रमभङ्गः । तथाऽत्र सत (?) एव सतोऽसत्त्वमेकस्यैव वस्तुन इति विवक्षितम् । अत एव चारुत्वेनान्तःप्रविष्टान्यपि राश्यादीनि शल्यानीति प्रकारेण व्यथाहेतुत्वेनोक्तानि । 'दुर्वाराः स्मरे'त्यत्र तु कथं सोढव्य इति सर्वथा दुष्टत्वाभिप्रायेणोपन्यास इति विवेकः ।

४१६-१७ (57) धुनोतीत्यत्रैकाधिकरण्यं क्रिययोः । कृपाणपाणित्वसाधुत्वादौ सिद्धरूपत्वाद्गुणौ तयोः क्षितिस्स्वर्गश्च भिन्नो देशः । न वाच्यमिति यथोक्तं रुद्रटेन ।

सोमेश्वर

पृ.

३१४ (58) सकलरत्नसारतुल्यो बिम्बाधर इति तेषां बहुमानो वास्तव एवेति प्रतीयमानोपमापि ।

३१५ (59) धर्मिणि पर्वतादौ अयोगव्यवच्छेदोऽस्तित्वं व्यापकस्य वह्न्यादेः साध्यम् ।

३१७ (60) 'पुष्टार्थपदं न प्रयोज्यम्' इति पुष्टार्थानि विशेषणान्युपात्तानि अत्रेति दोषत्यागमात्रं, न त्वलंकार इत्याशङ्क्याह-यद्यपीति ।

३१७ (61) न चैषेति । क्वचित्प्रकृतनिष्ठं साम्यं, यथा— सदयं बुभुजे महाभुजः सहसोद्वेगमियं व्रजेदिति । अचिरोपनतां स मेदिनीं नवपाणिग्रहणां वधूमिव ॥ इति समुच्चितोपमायाम् ।

(62) उद्भटेन तु व्याजोक्त्यनभिधानाद् अत्रापि अपह्नुतिका ॥

३१८ (63) 'युवतिरेव कामास्त्रम् ।'

३१९-२० (64) अत्र तु रुद्रटोदाहृते 'काव्यत्वमनुप्रासादेव' इत्याह कोमलानुप्रासेति । यद्यपि अव्यभिचारितयैव विकासादीनां नैरन्तर्येण जननमिहोपचारप्रयोजने व्यङ्ग्यं तद् असुन्दरमपि गुणीभूतव्यङ्ग्यनिबन्धनं भवतीति प्राक्प्रतिपादितमेव, तथापि अलंकारचिन्तायाः प्रक्रान्तत्वात् तद् अपह्नुत्यैवाव-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४१८-१९ (58) बिम्बाधरस्सकलरत्नेभ्योऽधिक इति व्यङ्ग्यव्यतिरेकोऽपि । अन्ये तु सकलरत्नसारतुल्योऽधर इति तेषां तत्र प्रीतिर्वास्तवीति व्यङ्ग्योपमामाहुः ।

४२० (59) धर्मी शैलादिः, तत्रास्तित्वमयोगव्यवच्छेदः । व्यापकस्येति अग्न्यादेः ।

४२१ (60) ननु पुष्टार्थग्रहणाद्दोषत्यागमात्रमेतदित्याशङ्क्याह । यद्यपीति ।

४२२ (61) न चैषेति । अयं भावः- अपह्नुतौ किलोभयनिष्ठं साम्यं अत्र तु प्रकृतस्यैव सद्भावात्प्रकृतनिष्ठमेव साम्यं,
"ये कालतां कुटिलतामिव न त्यजन्ति" इति समुच्चितोपमावत् अत्रापि प्रकृतनिष्ठमेव साम्यम् ।

(62) उद्भटमते व्याजोक्त्यभावादत्रापह्नुतिः

४२४ (63) युवतिरूपं कामास्त्रमिति विग्रहः ।

४२५ (64) भामहोद्भटाद्याः । अव्यभिचारितया विकासादेर्नैरन्तर्येण करणमिहोपचारात्प्रयोजनं व्यङ्ग्यं तच्च गुणीभूततया महिम्नेत्यत्रैवकारेण प्रतिपाद्यते । अस्मन्मते काव्यलिङ्गमेव हेतुः । रुद्रटस्तु भिन्नमूचे ।

सोमेश्वर

पृ. पृ.

३१९-२०(64) धारणगर्भमिदमभिहितम् । अत एव तटस्थतयैव उक्तं 'समाम्नासिषुः' इति उद्भटादयः प्रत्यपादयन्निति ह्यत्रार्थः । काव्यलिङ्गमेवेति । काव्यलिङ्गस्यैव यदि परं हेतुरिति नाम, यद् भामहः
हेतुश्च सू [क्ष्मो] लेशोऽथ नालंकारतया यतः ॥

३२२ (65) उत्कर्षे सारस्य पुंसि स्मरन्ति कवयस्तु नपुंसकेऽपीति।

३२८ (66) अत्र दृक्तरलत्वादिना स्वाभाविकेन लक्ष्मणा मदोदयकृतं दृक्तारल्यादि तिरोहितम् ॥ तत्रापीति । मदोदयेऽपि दृक्तारल्यादिदर्शनात् ।

३२९ (67) दृष्ट इति । दृशिरत्र उपलब्धिमात्रवचनः । 'तद्भवैः प्लाविताम्भोभवैः कुहरुतैः कुहकुहशब्दैः नाभ्यादिनिम्नदेशोत्थैः । स्मारिता इति घटादिपाठे स्मरतेर्मानुबन्धत्वेऽपि 'न ह्रस्वो व्यवस्थितविभाषितस्य वा' इत्यस्यानुवृत्तेः । सादृश्यं विना तु स्मृतिर्न स्मरणमलंकारः ।

३३२ (68) अत्र मलयजरसविलेपादीनां चन्द्रप्रभयाऽविभाव्यतां गता इति भेदाप्रतीतिर्दर्शिता । अत्र अष्टाविंशतिभिर्मात्राभिर्द्विपदीच्छन्दः ।

३३३ (69) अत्र एकस्या योषित एकेनैव वसनस्वभावेन हृदयादौ युगपद् अवस्थानम् ॥

३३५ (70) अत्र दृष्टिलक्षणेन उपायेन स्मरस्य हरेण दाहविषयत्वं निष्पादितं मृगनयनाभिः पुनस्तेनैवोपायेन तस्य जीवनीयत्वं क्रियते । तच्च दाहविषयत्वस्य प्रतिपक्षभूतम्, तेन व्याघा-

माणिक्यचन्द्र

४२९ (65) न्याय्य एवार्थे सारशब्दः क्लीबोऽन्यत्र तु चिन्त्यः ।

४३६ (66) अत्र दृष्टितरलत्वादिकं सहजं मदोदयकृतस्य दृष्टितरलत्वादेस्तिरोधायकम् । तत्रापीति । मदोदयेऽपि । एतस्येति । दृष्टितरलत्वादेः ।

४३७-३८ (67) दृष्ट इति । उपलब्धिमात्रेऽत्र दृशिः । तद्भवैरिति । प्लाविताम्भोभवैः । कुहरुतानि । कुहशब्दाः निम्ननाभिदेशोत्थाः । स्मारिता (?) इति ह्रस्वप्राप्तिः । सादृश्यं विना स्मृतिर्नालङ्कारः।

४४१ (68) तथाऽत्र श्रीखण्डाङ्गरागादेश्चन्द्रांशुभिः सहाविभाव्यतां गता इत्यभेदेनोक्तिः । अष्टाविंशतिमात्रं द्विपदीच्छन्दः ।

४४३ (69) अत्रैकैव स्त्री एकेनैव वसनरूपेण युगपच्चित्तादौ वर्तते ।

४४६ (70) अत्र दृग्रूपोपायेन येन हरः स्मरम धाक्षीत् तेनैव कान्ताः तमजीजिवन् । दाहस्य च जीवनीयत्वं विपक्षः, तेन निष्पादितवस्तुव्याहतिहेतुत्वाद्व्याघातता । विरूपाक्षस्येति वामलो-

सोमेश्वर		माणिक्यचन्द्र	
पृ.		पृ.	
३३५ (70)	तोऽलंकारः । सोऽपि व्यतिरेकनिमित्तत्वेन अत्रोक्तः ॥ 'विरूपाक्षस्य' इति 'वामलोचनाः' इति च व्यतिरेकगर्भावेव वाचकौ, 'जयिनीः' इति व्यतिरेकोक्तिः । रसभावतदाभासतत्प्रशमानां गुणीभूतव्यङ्ग्यावसरे रसवत्प्रेयऊर्जस्विसमाहितानि तथा भावोदयभावसन्धिभावशबलताश्च पृथगलंकाराः प्राक् प्रतिपादिताः ॥ आशीश्च अप्राप्तप्राप्तीच्छारूपमाशंसनप्रियोक्तिमात्रं, अथवा स्नेहनिर्भरतया प्रतीयत इति भावध्वनिरेव नालंकारः ।	४४६ (70)	चना इति च व्यतिरेकगर्भौ शब्दौ । जय(यि)नीरिति व्यतिरेकोक्तिरिति अत्र व्यतिरेकनिमित्ततादरूपोपाययोः भेदेऽप्यभेदातिशयोक्तिरपि । रसवदाद्यलङ्काराः प्रागुक्ताः । आशीस्तु नालङ्कारः प्रियोक्तिमात्रत्वात् । स्नेहात्मरत्याख्यभावत्वे भावध्वनित्वाद्वा ।
३३६ (71)	तत्रैषा तिलतण्डुलन्यायेन मिश्रत्वे शब्दालंकारगतत्वेनार्थालंकारगतत्वेन उभयगतत्वेन च त्रेधेति त्रिविधां संसृष्टिमाह-सेष्टेति ॥ यथासंभवमिति न सर्वेषां लक्षितानां, अपि तु केषांचित्, तत्रापि तेषां मध्ये क्वचिद् द्वयोः क्वचित् त्रिचतुराणामिति यथायोगम्। संसृष्टेश्च विषयभेदेन त्रिरूपत्वेऽपि संसृष्ट्या चैकरूपयेति प्रागुक्तं न विरुध्यते, नैरपेक्ष्यलक्षणस्य रूपस्याभिन्नत्वात् । वक्ष्यमाणसंकरस्तु स्वरूपेणैव नानात्वेनावभासत इति युक्तस्तत्र त्रिरूपताव्यवहारः॥ सापि सजातीययोर्विजातीययोर्वालंकारयोः स्यात् ।	४४६ (71)	न सर्वेषामेवालङ्काराणां किन्तु केषांचित् । तत्रापि क्वचिद् द्वयोः क्वचित्त्रयाणामित्यादि । शब्दार्थोभयालङ्कारविषयत्वेन त्रिरूपत्वेऽपि संसृष्टेरेकरूपत्वमेव मिथो नैरपेक्ष्यरूपस्वरूपस्यैकत्वात् । निरपेक्षतया इत्युक्त्या तिलतण्डुलन्यायेनालंकाराणां योगे संसृष्टिः । सङ्करस्तु स्वरूपेणैव नानात्वेनोक्तत्वात् त्रिधैव । तत्र नैरपेक्ष्याभावात् क्षीरनीरन्यायेनालङ्काराणां योगः ।
३३६ (72)	यमकानुप्रासाविति विजातीयौ । अत्रैव 'लकलो-लकलो' इति तथा 'कलोल-कलोल' इति सजातीययोर्यमकयो[:] संसर्गः ॥ तथाविधे परस्पर-	४४९ (72)	अत्र यमकानुप्रासाविति विजातीयालङ्कारसंसृष्टिर्यथा तथा लकलो लकलो इति कलोल कलोल इति च सजातीययमकालङ्कारसंसृष्टिरपि । तथा

सोमेश्वर

पृ.

३३६ (72) निरपेक्षे ॥ उपमोत्प्रेक्षे इति विजातीये ॥ अत्रैव 'लिम्पतीव' इति 'वर्षतीव' इत्युत्प्रेक्षयोः सजातीययोः संसृष्टिः ॥

३३८ (72a) ननु, अत्र यमकचित्रयोः शब्दालंकारयोः शब्दवदुपकार्योपकारकत्वाभावेन अङ्गाङ्गिभावाभावात् संसृष्टिरेव परस्परनिरपेक्षेत्याह ।

३३९-३४०. (73) एतयोरिति मुखबिम्बयोः। 'बिम्बं प्रसीदति' इत्येतच्च 'मुखं प्रसीदति' इति ॥ एकक्रियायोगे एकस्य प्रकृतत्वेऽन्यस्य अप्रकृतत्वे दीपकं तुल्ययोगितेति यदि द्वयोरपि प्रकृतत्वमेव वा ॥

३४० (74) अत्र 'वक्त्रं शशीव' इत्युपमा । ननु, 'वक्त्रमेव शशी' इति रूपकम् इत्याह-मुख्यतयेति । हासद्युतेः प्रकृतत्वात् ज्योत्स्नापेक्षया मुख्यता । सा च वक्त्रस्यैव अनुगुणेति उपमायाः साधकं प्रमाणम् ॥ न तथेति । शशिन्यपि हासद्युतेः शुक्लतया मनागानुकूल्यमस्तीति भावः ॥ तस्या इति हासद्युतेः ॥

३४०-४१ (75) बाधत्वे यथा-'राजनारायणम्' इति । 'राजैव नारायणः' इति मयूरव्यंसकादित्वाद् रूपकसमासः, ततश्च उपमानस्य नारायणस्य प्राधान्यम् । तं प्रति लक्ष्मीप्रयुक्तमालिङ्गनं घटत इत्यालिङ्गनमुपमाया बाधकं प्रमाणम् । उपमायां हि उपमेयस्य राज्ञः प्राधान्यं, तत्रैव चित्तविश्रान्तेः । न च स्वभर्तृसदृशमन्यं प्रेयसी काचिद् आलिङ्गति ॥ सदृशमिति, राजानम् ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४४७ (72) विधे इति । मिथो निरपेक्षे । उपमोत्प्रेक्षे इति । उत्तरपूर्वार्धगे विजातीये । लिम्पतीवेति वर्षतीवेत्युत्प्रेक्षे सजातीये, तयोरत्र संसृष्टिः ॥

४५० (72a) शब्दवच्छब्दालङ्कारयोः अत्राङ्गाङ्गिभावाभावान्निरपेक्ष्ये संसृष्टिरेवेत्याह

४५१-५२ (73) एतयोरिति वक्त्रबिम्बयोः । समुच्चयेति । बिम्बं मुखं चैतत्प्रसीदति इति भङ्ग्या एकस्य प्रकृतत्वेऽन्यस्याप्रकृतत्वे दीपकम् । द्वयोरप्रकृतत्वे तुल्ययोगिता ।

४५२ (74) अत्र वक्त्रं शशीवेत्युपमा, न तु वक्त्रमेव शशीति रूपकमित्याह-मुख्यतयेति । हासद्युतिः प्रकृतत्वान्मुख्या । सा च वक्त्रानुगुणेत्युपमासाधिका । तस्या इति । हासद्युतेः । एतस्याश्च शुक्लतया चन्द्रेऽपि किञ्चिदानुकूल्यमस्तीत्यतो न बाधकत्वम् ।

४५३ (75) बाधकत्वेनाह । राजेति । राजैव नारायण इति रूपकसमासः । उपमानप्राधान्ये रूपकमुपमेयप्राधान्ये उपमेति सर्वत्र ज्ञेयम् । सदृशमिति । राजानम् । प्रेयसी लक्ष्मीः । निजपतितुल्यमन्यं कान्ता नालिङ्गतीत्यर्थः ।

सोमेश्वर

पृ.

३४१ (76) रूपकविधानच्छेदिनो बाधकस्य मञ्जीरशिञ्जितस्य यद्यपि साधकत्वं बाधकत्वं चोभयमपि अस्ति, तथापि 'बाधकत्वेनैव व्यपदेशा भवन्ति' इति न्यायात् बाधकत्वस्यैव प्राधान्यं, साधकत्वापेक्षया बलीयस्त्वेन उत्कटतया प्रतीतेः ॥

३४२ (77) यद्यपि सावयवमिदं रूपकमखिलवाक्यव्यापि तथापि प्रतिपदं रूपकसद्भावात् तथाव्यपदेश इत्येकपदानुप्रवेशो न विरुद्धः ॥ त्रिप्रकारतयैवेति । एतेन–

शब्दार्थवर्त्यलंकारा वाक्य एकप्रभाविनः ।
संकरो वैकवाक्यांशप्रवेशाद् वाभिधीयते ॥

इति भट्टोद्भटोक्तः संकरः संसृष्टावन्तर्भावित इति त्रैधैवायम् ।

३४२-४३ (78) ननु, पुनरुक्तवदाभासस्य तावच्छब्दस्य वैचित्र्यमुत्कटमिति उभयालंकारत्वमनपेक्ष्यैव शब्दालंकारत्वेनोक्तिः कृता, परंपरितरूपकादीनां तु किमर्थालंकारेषु पाठ इत्याह–अर्थस्य त्विति । वस्तुवृत्त्या तु भिन्नाः प्रतिपादयितुमुचिता इति भावः ।

३४४ (79) 'अकुण्ठे'ति । अत्र शृङ्गारप्रतिकूला वर्णाः । शृङ्गारे हि उपनागरिका वृत्तिरुचिता ॥

३४५ (80) अन्यरूपमिति । उपमानरूपमुपमेयरूपं वा ॥ तस्येति धर्मिणः ॥ प्रतीयमानेनापीति । शब्देन अनुपात्तेन उभयानुगमक्षमेण शब्दोपात्तच्युतत्वादि·

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४५४ (76) यद्यपि मञ्जीरशिञ्जितं रूपकविधिच्छेदेन बाधकं पादानुकूल्यादुपमां प्रति साधकं च स्यात्, तथाऽपि बाधकत्वेन व्यपदेशः । 'प्रधानेन व्यपदेशा भवन्ति' इति न्यायात् । साधकत्वापेक्षया बलिष्ठत्वेनोत्कटया प्रतीतेर्बाधकत्वं प्रधानम् ।

४५४ (77) शब्दार्थवृत्त्यलङ्कारस्तूद्भटोक्तः संसृष्टिरेवेति त्रिधैव ।

४५५-५६ (78) वस्तुतया परम्परितरूपकादेरुभयालङ्कारतया भिन्नत्वेन वक्तुं युक्तावर्थालङ्कारेषु तत्पाठोऽर्थस्योत्कटतया वैवश्यात् ॥

४५७ (79) अकुण्ठेति । शृङ्गारे ह्युपनागरिकी वृत्तिर्योग्या ।

४५९ (80) अन्यरूपमिति । उपमेयरूपमुपमानरूपं वा ॥ तस्येति । धर्मिणः । प्रतीयमानेन । शब्दानुक्तेनोभयानुगमक्षमेण शब्दोक्तसमानधर्मव्यतिरिक्तेन केनापीत्यर्थः ।

सोमेश्वर

पृ.

३४५ (80) धर्मव्यतिरिक्तेन केनचिदित्यर्थः ॥ अनिर्वाहादिति । सविशेषणत्वं निर्विशेषणत्वं वा यद् उपमेये प्रक्रान्तम् उपमाने तस्य अनिर्वाहादित्यर्थः ॥

३४५ (81) अत्र च्युतत्वमुपमानोपमेययोः साधारणो धर्मस्तस्यान्यरूपत्वं नपुंसकस्य उपमेयविशेषणत्वे पुंस्त्वं, तत उपमेयस्य साक्षाद्धर्मसमन्वयः, उपमानस्य तु प्रतीयमान इति शब्देन धर्मेण प्रक्रमे भग्नप्रक्रमत्वम् । यदि तु विपरिणामेन लिङ्गवचसोरपरस्यापि संबन्धस्तदा अभ्यासलक्षणो वाक्यभेदः स्यात् । द्वे वाक्ये स्यातामित्यर्थः । एवं च व्यवधानेन प्रकृतोऽर्थो न प्रतीयेत विपरिणामश्च शास्त्रीयकाव्येषु न युक्तः ॥

३४६ (82) तद्विदां प्रसिद्धेन प्रकारेण ॥

३४८ (83) केवलस्येति, असमासस्थस्य । समासे तु असौ योग्यताद्यपि प्रतिपादयति ॥ तस्य चेति, साधर्म्यस्य ॥ तत्रेति, संभावनवाचकत्वे ॥

३४८-४९ (84) व्यर्थ एवेति । उत्प्रेक्षामात्रमेवात्रोचितं, न त्वर्थान्तरोपन्यासस्तत्समर्थनार्थ इति तात्पर्यम् । समासोक्तिदोषानाह-साधारणेति । मानः परिमाणमभिमानश्च । चिरयायिदिनो दीर्घाहा निदाघः ॥ यथा सदृशविशेषणेति । रवेः करैः इति सदृशमनुकूलं विशेषणं, दिनश्रियास्तु 'विजृम्भिततापया' इत्यादि सदृशं विशेषणम् । व्यक्तेर्लिङ्गस्य विशेषः पुंस्त्वं

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४५९ (80) भग्नेति । उपमेयस्य विशेषणादिकमुपमाने चेन्न निर्व्यूढं तदा क्रमभङ्गः ।

४५९-६० (81) अत्र च्युतत्वादिको धर्म उपमानोपमेययोः प्रत्येकमन्यलिङ्गवचन इति प्रक्रमभङ्गः । लिङ्गवचनविपरिणामेन यद्यपरस्यापि सम्बन्धः तदा व्यासरूपवाक्यभेदे वाक्यद्वयी । तथा सति प्रतीतिः व्यवधीयते, विपरिणामश्च साहित्येन स्यात् ।

४६० (82) न तथेति कोविदप्रसिद्धप्रकारेण ।

४६३ (83) केवलस्येति । असमासस्थस्य, समासस्थस्तु योग्यताद्यर्थवादी स्यात् । तस्य चेति । साधर्म्यस्य । अस्यामिति । उत्प्रेक्षायाम् । तत्रेति । सम्भावनाभिधाने ।

४६४-६५ (84) व्यर्थ एवेति । उत्प्रेक्षामात्रमेवात्र युक्तं न तत्समर्थकोऽर्थान्तरन्यासः । दिवाभीतशब्दस्योलूकार्थत्वेन समुचितोपमाख्यायां नैतद्दोषावतारः । तस्येति उपमानविशेषस्य । स्पृशतीति । तापः खेदोऽपि । मानशब्दः परिमाणाभिमानयोः । चिरयायिदिनः दीर्घाहो निदाघः । सदृशेति । रवेः करैरिति सदृशमनुकूलं विशेषणम् । दिनश्रियास्तु तापयेति

सोमेश्वर

पृ.

३४८-४९ (84) स्त्रीत्वं च ॥ नायकतयेति । नायकश्च नायिका चेति एकशेषः ॥ ननु, यथा दयिते दयितां करैः स्पृशति सति दयितान्तरस्य तापो भवति तथा रवेः करैः ककुभः स्पृशति सति चिरयायिदिनश्रियोऽपि ताप इति श्लेषोपमेयमिति उपादेयमेव 'दयितया' इति पदमित्याह ।

३५० (85) अन्यैऽपीति । यथोपमायां हीनपदत्वे- क्वचित्काले प्रसरता क्वचिदापत्य निघ्नता । शुनेव सारंगकुलं त्वया भिन्नं द्विषां बलम् ॥ -अत्र शुनोपमानेन च कृतार्थकदर्थनेऽनुचितार्थत्वम् । 'क्वचित्काल' इत्यत्र क्वचिदर्थस्य सामान्येनोपक्रान्तस्य काललक्षणेन विशेषेण योगः ॥

(86) निन्दायां प्रोत्साहने चानुचितार्थत्वं गुणः । यथा-कुशलसखीजनवचनैरतियाहितवासरा विनोदेन । निशि चण्डाल इवायं मारयति वियोगिनीश्चन्द्रः ॥

(87) निर्मोकमुक्तिमिव गगनोरगस्य लीला ललाटिकामिव त्रिविष्टपविटस्य ॥ अत्र रूपकेणैव साम्यस्य प्रतिपादितत्वाद् 'इव' शब्दोऽधिकः ॥

३५१ (88) अत्र राजशब्द एवोभयार्थत्वाच्छशिनमाहेति श्लेषस्यायं विषयो युक्तः । यस्तु पृथक्त्वमुपादाय राजशशिनोरुपमानोपमेयभावनिबन्धः सोऽधिकः सह्यार्थ एव तद्विदां स्वदते न शाब्दः ॥ एवम्—

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४६४-६५ (84) विशेषणम् । व्यक्तिर्लिङ्गम् । तद्विशेषः पुंस्त्वं स्त्रीत्वं च । नायकतयेति । नायकश्च नायिका चेत्येकशेषः । ननु यथा प्रियां स्पृशन्तं प्रियं दृष्ट्वा अन्यस्यास्तापः स्यात्तथाऽर्के दिशः स्पृशति सति ग्रीष्मश्रियोऽपि ताप इति श्लेषोपमेयमिति दयितयेति युक्तमित्याह ।

४६६ (85) अन्येऽपीति । यथा-क्वचित्काले प्रसरता क्वचिदापत्य निघ्नता । शुनेव सारङ्गकुलं त्वया भिन्नं द्विषां बलम् ॥ अत्रोपमायां शुनोपमानेन प्रकृतार्थकथनेऽनुचितार्थता क्वचिदिति सामान्येन निष्पाद्य पश्चात्कालेन योगः ।

(86) प्रोत्साहनिन्दादाघनुचिताऽर्थताऽपि न दोषः, यथा-हनूमानिव प्रेषणे प्रेष्य एषः ।
"वियोगे मारकः स्त्रीणां चण्डाल इव चन्द्रमाः" इत्यादौ

४६७ (87) "निर्मोकमुक्तिमिव गगनोरगस्य" इत्यादौ रूपकेणैव साम्यस्योक्तत्वादिवप्रयोगेऽधिकपदत्वं दोषः ।

(88) इत्यादौ राजशब्दस्योभयार्थत्वेन श्लेषनिष्पत्त्या स्वार्थसिद्धौ गदौपम्यकल्पनं तदधिकम् । औपम्यं ह्यार्थमेव हृद्यं व्यङ्ग्यत्वान्न शाब्दम् । एवं ।
"दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव" इत्यत्र राजेति

सोमेश्वर

पृ.

३५१ (88) दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव । इत्यत्रापि श्लेषस्य विषये रूपकमासूत्रितमनादृत्य उपमानुरागिणा कविना सैवोपनिबद्धा । न चासौ ताभ्यां स्पर्धितुमुत्सहते तयोः । यथा पूर्वं प्रतीयमानार्थसंस्पर्शातिरेकात् तदनुविधायिनः सहृदयैकसंवेद्यस्य चमत्कारस्य संभवादिति उपमाधिक्यम् ।

३५१ (89) विरोधस्य असंभवः, यथा— या धर्मभासस्तनयापि शीतलैः स्वसा यमस्यापि जनस्य जीवनैः । कृष्णापि शुद्धेरधिकं विधातृभिर्विहन्तुमंहांसि जलैः पटीयसी ॥ अत्र विरोधस्यैकाधारतयैव उपपत्तिरित्युक्तम् । ततो धर्मभास्तनयात्वादीनां च धर्माणां भिन्नाधारतयोक्तौ विरोधस्य असंभवः ॥

३५१-५२ (90) तरंगय दृशोऽङ्गणे पततु चित्रमिन्दीवरं स्फुटीकुरु रदच्छदं व्रजतु विद्रुमः श्वेतताम् । क्षणं वपुरपावृणु स्पृशतु काञ्चनं कालिकामुदञ्चय मनाङ्मुखं भवतु च द्विचन्द्रं नभः ॥ अत्र उपमानानामिन्दीवरादीनां निन्दाद्वारेण नयनादीनामुपमेयानां यस्तेभ्योऽतिशयो वक्तुं प्रक्रान्तः स मुखचन्द्रयो'र्भवतु च द्विचन्द्रं नभः' इति सादृश्यमात्रप्रतिपादनाद् न निर्व्यूढम् । 'भवतु लक्ष्यलक्ष्मा शशी' इति तु युक्तम् ।

३५२ (91) इत्येष इति । एष मार्गोऽद्भुतं वर्त्म विद्वदादीनां ध्वनिकारादीनां नानाग्रन्थतया विभिन्नो-

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४६७ (88) श्लेषं हित्वेन्दुः क्षीरनिधाविवेत्युपमारागिणा राजेन्दुरिति रूपकमुक्तम् । न चोपमा व्यङ्ग्यार्थाधिक्यवतोः श्लेषरूपकयोः समा स्यात् व्यङ्ग्यार्थस्पर्शाभावात् । तस्मादत्रोपमाऽधिका ।

४६७ (89) तथा—
"या धर्मभासस्तनयाऽपि शीतलैः स्वसा यमस्यापि जनस्य जीवनैः । कृष्णाऽपि शुद्धेरधिकं विधातृभिः विहन्तुमंहांसि जलैः पटीयसी ॥"
अत्र नद्याः पयोभिः परमार्थैक्येऽपि शब्दार्पितनानात्वानुभवाद्विरोधस्य भिन्नाधारत्वं, तच्चासम्भवि, विरोधस्यैकाधारत्वेनोक्तत्वादित्यसम्भवो दोषः ।

४६८ (90) "तरङ्गय दृशोऽङ्गणे पततु चित्रमिन्दीवरं"
इत्यत्रोपमानभूतेन्दीवरादेरपकर्षणद्वारेण नेत्रादीनां व्यतिरेको वक्तुं प्रक्रान्तः । स च "भवतु च द्विचन्द्रं नभः" इत्युक्त्या साम्यमात्रप्रतीतौ न निर्व्यूढ इति व्यतिरेके भग्नप्रक्रमत्वम् । "भवतु तद् द्विचन्द्रं नभः" इति तु युक्तम् ।

४६८-६९ (91) इत्येष इति । एषोऽद्भुतोऽलङ्काराध्वा । विभिन्नोऽपीति । नानाग्रन्थगतत्वेन पार्थक्येन

सोमेश्वर

पृ.

३५२ (91) ऽप्यनेकरूपोऽपि एकरूपतया यद् भवति तत्र संघटना-विशं-स्थुलस्य सुखप्रतीत्यर्थमेकत्र सं-ग्रहः, सैव हेतुः, तद्वशाद् एका-त्मताप्रतीतेः । तत्तद्ग्रन्थाना-मत्र अन्तर्भाव इति भावः ॥ अथ च सुधियां विकासहेतु-र्ग्रन्थोऽयं कथंचिद्पूर्णत्वाद् अन्येन पूरितशेष इति द्विख-ण्डोऽपि अखण्ड इव यद् भाति तत्रापि संघटनैव संनिमित्तम् ॥

माणिक्यचन्द्र

पृ.

४६८-६९(91) स्थितोऽपि यदेकरूपो भाति तत्र संघटना विसंस्थुलस्य सुखबोधायैकत्र संग्रहणं हेतुः। ग्रन्थास्सर्वेऽप्यत्रान्तर्मग्ना इत्य-र्थः। अथ चायं ग्रन्थोऽन्येनार-ब्धोऽपरेण च समर्थितः इति द्विखण्डोऽपि संघटनावशाद-खण्डायते । सुघटं ह्यलक्ष्य-सन्धि स्यादित्यर्थः ।

Appendix B

Parallelisms in the Saṃketas of Rucaka and Someśvara.

N.B.-The references of the Saṃketa of Rucaka are to the pages of the text published in the Calcutta Oriental Journal Vol. II, nos. 6 & 12.

उल्लास १

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
१	(1) न चेति तिक्तादयो हि न हृद्याः।	१	(1) न चेति तिक्तादयो हि न हृद्याः।
	(2) रसाङ्गभूतव्यापारेति - उक्तं हि हृदयदर्पणे— शब्द to काव्यधीर्भवेदिति ॥	३	(2) रसाङ्गेति। रसस्याङ्गिनो योऽङ्गभूतो व्यञ्जनात्मा व्यापारस्तन्निष्ठतया विसदृशम्। यद्भट्टनायकः– शब्द to काव्यगीर्भवेत्।
४	(3) After refuting तुल्ययोगिता, दीपक and समुच्चय, R says तस्माद् रिक्तमेतत्। इह 'यः कौमारहर' इत्यादीन्यनुत्कण्ठाकारणानि, तेषु सत्स्वपि सा नोत्पन्ना तद्विरुद्धाया उत्कण्ठाया उत्पादात् अतश्च विशेषोक्तिरियम्। सा च कार्यस्य साक्षान्निषिध्यमानत्वेनाप्रतीतेरस्फुटा। etc.	७	(3) यः कौमारेति। अत्र वरादेः कारणस्य सामग्र्ये सत्यपि निधुवनविधेः कार्यस्यानुक्तेर्विशेषोक्तिरलङ्कारः केवलमस्पष्ट इत्याह।†
	(4) निःशेषेत्यादि- (च्यु) तं न तु क्षालितं, निर्मृष्टो न तु किञ्चिन्मृष्टः। दूरमनञ्जने निकटे तु साञ्जने, पुलकिता तन्वीत्युभयं व्यङ्ग्यपक्षे। अधमपदन्तु व्यञ्जकम्। एतच्चोदाहरणं वैदग्ध्येन युगपन्निषेधे विधौ च वाच्ये विधिनिषेधयोर्व्यङ्ग्ययोर्मतम्।	९	(4) निःशेषेति च्युतं चन्दनं न तु क्षालितम्। निर्मृष्टो न तु किञ्चिन्मृष्टः। दूरमनञ्जने निकटे तु साञ्जने। पुलकिता तन्वीति चोभयं विधेयं व्यङ्ग्यपक्षे, अधमपदं च व्यञ्जकम्।

---

† N. B. the point to be noted is that both R. & S. take this as अस्फुटविशेषोक्ति R's discussion, however, is more elaborate. He takes this as अस्फुटविभावना also.

उल्लास २

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
७	(1) व्यभिचाराच्चेति-यत्र व्यक्तौ संकेतः सा व्यवहारकाले व्यभिचरति ।	१३	(1) व्यभिचाराच्चेति । यदि व्यक्तौ संकेतः स व्यवहारकाले व्यभिचरति बाल्यादिविशेषात् ।
	(2) पारिभाषिकमिति-अन्यथा जातिशब्दत्वं स्यात् । न खलु स्वयं परमाणुर्नाप्यपरमाणुः, परमाणुत्वसम्बन्धात्तु परमाणुरिति ।	१४	(2) पारिभाषिकमिति । ततो न जातिशब्दत्वम् । अन्यथा न खलु स्वयं परमाणुर्नाप्यपरमाणुः परमाणुत्वसंबन्धात् तु परमाणुरिति ।
११	(3) भद्रेति-भद्रा कल्याणप्रकृतिः, भद्रा हस्तिनां विशिष्टा जातिश्च। वंशः पृष्ठनाडिश्च । शिलीमुखा याचका (सायकाः) भ्रमराश्च । परान् वारयतीति परवारणः, परः प्रकृष्टो वारणो हस्तीति । च दानं त्यागो मदश्च ।	२९	(3) भद्रेति भद्रः कल्याणप्रकृतिः । भद्रा हस्तिनां विशिष्टजातिश्च । वंशः पृष्ठनाडि[रन्वय]श्च । शिलीमुखाः शरा भ्रमराश्च । परान् वारयति । परः प्रकृष्टो वारणो हस्ती च । दानं त्यागो मदश्च ।

उल्लास ३

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
१२	(1) यद्यपि सन्ध्यायामवकाशो भवत्येवेति विवक्षितम्, तथापि तदुच्यमानं परस्य लक्षणीयं भवतीति तथा नोक्तम् । अत्र चान्यः तटस्थः परपुरुषः ।	३३	(1) यद्यपि संध्यायामवसरो भवत्येवेति विवक्षितं, तथापि तदुच्यमानं परस्य लक्षणीयं भवतीति तथा नोक्तम् ।
	(2) मिथः संयोग इति । तत्र वक्तृबोद्धव्ययोगे यथा अत्ता इति ।	३४	(2) मिथः संयोग इति । तत्र वक्तृबोद्धव्ययोगे यथा अत्ता इत्थ नु मज्ज इति ।
१३	(3) महमिति निपात आवयोरित्यर्थे । ममेति तु व्याख्यायमाने व्यङ्ग्यस्याभिधेयत्वमिव स्यात् । अत्र वक्तृबोद्धव्य (भोद्धव्य) पर्यालोचनया शेष्व (शेष्य) इति विधिरूपव्यङ्ग्यार्थप्रतीतिः । एवमन्येऽपि द्विकभेदास्त्रिकादिभेदाश्च स्वयमप्यूह्याः ।	३४	(3) मह इति निपात आवयोरित्यत्रार्थे न तु ममेति ॥ एवं हि विशेषवचनमेवाशङ्काकारि भवेदिति प्रच्छन्नोऽभ्युपगमो न स्यात् । ततश्च व्यङ्ग्यस्याभिधेयत्वमेव स्यात् । अत्र निषेधे वाच्ये वक्तृबोद्धव्यपर्यालाचनया शेष्वेति विधिरूपव्यङ्ग्यार्थप्रतीतिः । एवं द्विकयोगान्तरे त्रिकादियोगे च स्वयमूह्यम् ।

उल्लास ४

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
२०	(1) तस्मात् सर्वप्रमातृणां यो रसनीयः [स] सर्वप्रमातृतावलम्बनेन रस्यते। अत एव नाटकमण्डपान्तःप्रविष्टाः सर्वे हृदयसंवादभाजो भवन्तीत्युच्यन्ते।	४५	(1) सर्वप्रमातृणां यो रसनीयः सर्वप्रमातृतावलम्बनेनैव रस्यते, अत एव नाटकमण्डपान्तःप्रविष्टाः सर्वे हृदयसंवादभाजो भवन्तीत्युच्यते।
२१	(2) प्रेमार्द्रा इत्यनुवादेन परिचयादुद्गाढरागोदया भवेयुरिति विधेयम्। लयस्तन्मयत्वम्। निशान्तोऽन्तःपुरम्। सख्युर्भावः सख्यम्, तेनोपदेशः। जीवितप्रियेत्यामन्त्रणपदद्वयम्, प्रियेति तु सुहृद्विशेषणत्वे प्रियसखैरित्यश्र(स्र)विशेषणं न वाच्यम्।	५०-५१	(2) प्रेमार्द्रा इत्यनुवादेन परिचयाद् उद्गाढरागोदया भवेयुरिति विधयेम्। लयस्तन्मयत्वम्। निशान्तोऽन्तःपुरम्। सख्युर्भावः सख्यम्, तेनोपदेशः। जीवितप्रिय इत्यामन्त्रणपदद्वयं प्रियेति सुहृद्विशेषणे। प्रियसखैरिति अस्रविशेषणं न वाच्यम्।
२२	(3) मरणम[? मा]दीर्घकालप्रत्यापत्तिरितिकेचित्। मृङ् प्राणत्यागे इति धात्वर्थविचारा विषभक्षणपाशकरणादीनीत्यन्ये।	५४	(3) मरणमिति आदीर्घकालप्रत्यापत्तिरिति केचित्। मृङ्प्राणत्याग इति धात्वर्थविचाराद् विषभक्षणपाशबन्धादीत्यन्ये।
२२	(4) सुप्त इवेति प्रार्थनापराङ्मुखः।	५९	(4) सुप्त इवेति प्रार्थनापराङ्मुखः।
३१	(5) संस्तरस्तृणादिशय्या। प्रस्तरः पाषाणः। एवमपि चेन्मेघभयं तद्वस। व्यङ्ग्यं तु प्रहरचतुष्टयमप्युपभोगेन नात्र निद्रां कर्तुमुपलभ्यते, सर्वत्र ह्यत्राविदग्धाः, तदुन्नतपयोधरां मामुपभोक्तुं यदि वससि तदास्स्वेति वस्तु। अत्र वाच्यबाधनेन व्यङ्ग्यस्य स्थितित्वात् तयोर्नोपमानोपमेयभावः।	६०-६१	(5) संस्तरस्तृणादिशय्या। मणं मनागपि। प्रस्तराः पाषाणाः। एवमपि चेन्मेघभयं तद् वस। उन्नयेति, उन्नतं मेघं प्रेक्ष्येत्यर्थः। व्यङ्ग्यं तु प्रहरचतुष्टयमप्युपभोगेन नात्र निद्रां कर्तुं लभ्यते। सर्वे ह्यत्राविदग्धाः, तदुन्नतपयोधरां मां दृष्ट्वा उपभोक्तुं यदि वससि तदास्स्वेति वाक्ये वस्तुमात्रम्। अत्र वाच्यबाधेन व्यङ्ग्यस्य स्थितत्वात् तयोर्नोपमानोपमेयभाव इति नालङ्कारो व्यङ्ग्यः।

उल्लास ५

रुचक

पृ.

४० (1) पश्यतामिति पश्यतः अनादृत्ये-त्यनादरे षष्ठी ।

(2) अद्याप्यहमुपेक्षित इत्यसहनत्वं तपसः । अभियुक्त उद्योगेनाक्षिप्तः ।

(3) जनस्थानं दण्डकारण्यञ्च । कनके मृगतृष्णा [कनकमृगे] भ्रान्तिश्च । वैदेही सीता, वै देहीति पदद्वयम् । लङ्काभर्तू रावणस्य, अलम् (अल) ईषद्रूपत्वात्? कुत्सितरूपस्य च भर्तुः । वदनेषु दशसु इषुघटनाशरयोजनादि, चित्रोक्तिपरम्परासु च [घटना] । कुशलवौ सुतौ यस्याः सा सीता, शुभघनता च ।

४०–४१ (4) अध्यारोपेणैव स्थित इति । नह्यत्र वाच्य इव प्रतीयमानोऽर्थो वाक्यार्थतां लभते, विशेषार्थाभिधायिनो (°धानयो) रुभयार्थप्रतिपादकत्वाभावात् ।

४१ (5) एकान्तस्थितोऽप्युदासीन इत्यच्युतपदद्योत्यम् । दर्शनेन किं तृप्तिरुत्पद्यते उपभोगेनैवोत्पद्यते । हतजन इति लोकस्तावदन्यथा मन्यते । तत्र किमात्मानं वञ्चयावः? आमन्त्रणं ज्योत्करणम् ।

(6) हर्षशोकादीनामिति ते हि वाक्यार्थप्रतिपत्त्या क्रियन्ते, न च ज्ञापकस्य शब्दस्य कारकत्वं भवति ।

सोमेश्वर

पृ.

८६ (1) पश्यताम् इत्यनादरे षष्ठी । पश्यतः प्रियाननादृत्येत्यर्थः ।

८७ (2) तपो मुञ्चत्वेषा इति भगवतोपेक्षितमित्यसहनत्वं तपसः । विश्रब्धजल्पितमस्याः । शृणोमीति च रसिकः अभियुक्त उद्योगेनाक्षिप्तः ।

८८ (3) जनस्थाने इति जनानां स्थानं दण्डकारण्यं च । कनकमृगे तृष्णा भ्रान्तिश्च । वैदेही सीता, 'वै देहि' इति च पदद्वयम् । लंकाभर्तुः रावणस्य, अलं ईषद्रूपत्वात्, कुत्सितस्य भर्तुश्च । वदनेषु दशसु, इषुघटना शरयोजना विचित्रोक्तिपरंपरासु च । कुशलवौ सुतौ यस्याः सा सीता, शुभघनता च ।

८९ (4) अध्यारोपेणैवेति । न ह्यत्र वाच्य इव प्रतीयमानोऽर्थो वाक्यर्थतां लभते विशेष्याभिधायिनोरुभयार्थप्रतिपादकत्वाभावात् ।

९० (5) अच्युतः विष्णुः अक्षरणश्च ॥ 'दर्शनेन' इति सुरतसेवाविकलेन । जनस्तावदेकान्तस्थयोरन्यथा मन्यते भवांस्तु अच्युत उदासीनः, तत् किमात्मानं वदयावः (? वञ्चयावः) । आमन्त्रणं ज्योत्करणम् ।

१०० (6) हर्षशोकादीनामिति । ते हि वाक्यार्थप्रतिपत्त्या क्रियन्ते, न च ज्ञापकस्य शब्दस्य कारकत्वं भवति । 'पुत्रस्ते जात' इत्यतो वाक्यार्थसामर्थ्याद् हर्षो जायत इति जननव्यतिरिक्तं ध्वननम् ॥

रुचक

पृ.

४१ (7) श्रुतीति। "ऐन्द्र्या गार्हपत्यमुपतिष्ठत" इत्यत्र गार्हपत्योपस्थाने ऐन्द्र्या विनियोगस्तृतीयया प्रतिपादित इति श्रौतः।

(8) "बर्हिर्देवसदनं दामी" ति देवाश्रयदर्भच्छेदनेऽयं मन्त्रो दामीति लिङ्गादङ्गात् प्रतिपाद्यते।

४२ (9) आश्रयाश्रयिणोर्वाक्यान्नियमस्त्ववतिष्ठते (?) इति अरुणयैकहायन्या पिङ्गाक्ष्या सोमं क्रीणाती"त्यत्रारुणादीनां परस्परं पुनर्वाक्यीयः।

(10) दर्शपूर्णमासप्रकरणे प्रयाजा उक्ता इति प्रकरणाद् दर्शपूर्णमासयोरेव क्रियन्ते। "अग्निरन्नस्यान्नपतिस्तस्याहं देवयज्ययाऽन्नस्यान्नपतिर्भूयासमि" ति मन्त्रत्रयादाग्नेयो याग उपांशुयागोऽग्नीषोमीययागश्चेति यागत्रयं क्रमेण स्थितम्। तत्र प्रथमतृतीयाभ्यां मन्त्राभ्यां लिङ्गाद्यदाद्यन्तौ यागावाक्षिप्येते द्वितीयेन मन्त्रेण द्वितीयो यागस्तत्स्थानवशात्। उद्गाता ऋत्विगध्वर्युरित्यादेरुद्गातेत्यादिसमाख्यावशात् सामवेदादावधिकृत इति निश्चीयते। 'ता' इति। उद्गायतीत्यादिसमाख्ययाऽन्वर्थं संज्ञाबलात् सामयजुरृग्वेदेष्वधिकृत इति निश्चीयते तेष्वङ्गभाव इत्यर्थः।

सोमेश्वर

पृ.

१०० (7) 'ऐन्द्र्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते।' अत्र गार्हपत्योपस्थाने ऐन्द्र्या ऋचो विनियोगस्तृतीयाप्रतिपादित इति श्रौतः। ऐन्द्र्या अङ्गभावः प्रतिपाद्यत इत्यर्थः॥

(8) 'बर्हिर्देवसदनं दामि' इति। देवाश्रयदर्भच्छेदनेऽयं मन्त्र इति। 'दामि' इति लवनलिङ्गाद् अनेन मन्त्रेण बर्हींषि लुनीयादिति प्रतीयते॥

१००-१०१ (9) वाक्यतो यथा–'श्वेतं छागमालभेत' अत्रैकवाक्योपादानाच्छ्वेतगुणस्य च्छागावच्छेदकत्वेन क्रियाङ्गभावो गम्यते। यथा वा 'अरुणया एकहायन्या पिङ्गाक्ष्या सोमं क्रीणाति' इत्यत्र अरुणादीनां क्रमेण संबन्धः श्रौतः। अरुणैकहायन्यादीनां परस्परं पुनर्वाक्यीयम्॥

१०१ (10) दर्शपौर्णमासप्रकरणे 'समिधो यजति तनूनपातं यजति इडो यजति बर्हिर्यजति स्वाहाकारं यजति' इति पञ्चप्रयाजा उक्ताः, ते च दर्शपौर्णमासयोरेव क्रियन्ते तदङ्गत्वमवगम्यत इत्यर्थः॥
'अग्निरन्नस्य' etc.
'दधिरस्यदब्धो'
'अग्नीषोमौ' etc.
इति मन्त्रत्रयात् आग्नेयो याग उपांशुयाज (? ग) आग्नीषोमीयो यागश्चेति यागत्रयं क्रमेण स्थितम्। तत्र प्रथमतृतीयमन्त्राभ्यां देवयज्यालक्षणाल्लिङ्गाद् आद्यन्तौ यागौ आक्षिप्येते, द्वितीयेन मन्त्रेण द्वितीयो यागस्तु, आग्नीषोमीयलक्षण उपांशुयाजः स्फुरदोष्ठमुद्रस्वरः स्थानवशात्॥ उद्गाताऽध्वर्युर्होता।

रुचक

पृ.

४२ (11) अत्र सखीविषयं वाच्यम्। अस्या भ्रमरेण दष्टाधरेयं न परपुरुषेणेति सखीकृतसमर्थनरूपं व्यङ्ग्यं पतिविषयम्। अद्य मया समर्थितं पुनः प्रकटेऽङ्के त्वया खण्डनादि न कर्तव्यमित्युपपतिविषयम्। प्रियायाः सव्रणमधरं दृष्ट्वा रोषो भवति, अप्रियायास्तु दृष्ट्वा परिहासहेतुरानन्दो भवति, तद्धर्षो मा युष्माकं भूदिति (°भूयादिति) सपत्नीविषयम्। अत्रार्थ इदानीमेष किञ्चिद् वदति त्वं कुप्यसि ततः पादपतनादिना यदि प्रार्थ्यसे तत् सहस्व शोभस्वेत्यर्थ इति सखीविषयम्। नान्यथाऽस्याः संभावनीयमिति प्रातिवेश्मिकविषयम्। युक्तया मया संवृतोऽपराधः सख्या इति स्ववैदग्ध्यख्यापनं विदग्धविषयम्। अद्य मया समर्थितं, पुनस्त्वया सावधानया भवितव्यमिति सखीविषयमेव, अनया विना त्वं न भवसि, तव हीयं प्रिया, तदर्थापराधोद्घटनं न कार्यमिति पत्यु वैदग्ध्ये सति तद्विषयम्।

सोमेश्वर

पृ.

१०४ (11) 'सहस्वेदानीं' इति वाच्यमविनयवतीविषयं, भर्तृविषयं तु अपराधो नास्तीत्यावेद्यमानं व्यङ्ग्यम्। तत्सपत्न्यां च तदुपालम्भतदविनयप्रहृष्टायां सौभाग्यातिशयख्यापनम्। 'प्रियाया' इति शब्दबलादिति सपत्नीविषयं व्यङ्ग्यम्। सखीमध्ये इयता खलीकृतास्मीति लाघवमात्मनो न ग्राह्यं, प्रत्युतायं बहुमानः। सहस्व शोभस्वेदानीमिति सखीविषयं सौभाग्यख्यापनं व्यङ्ग्यम्। अद्येयं तव प्रच्छन्नानुरागिणी मयेत्थं रक्षिता, पुनः प्रकटदशनरदनविधिर्न कार्य इत्युपपतिविषयं व्यङ्ग्यम्। नान्यथास्यां संभावनीयमिति प्रातिवेश्मिकविषयं व्यङ्ग्यम्। युक्त्या मया संवृतोऽपराधः सख्या इति स्ववैदग्ध्यख्यापनं विदग्धविषयं व्यङ्ग्यमित्याह।

उल्लास ६

There is no Saṁketa of Rucaka on this Ullāsa.

उल्लास ७

रुचक

पृ.

४५ (1) उपहतेति-तथा चोक्तम्—"अत्रालुप्तविसर्गान्तैः पदैः प्रोतैः परस्परम्। ह्रस्वैः संयागपूर्वैश्च लावण्यमतिरिच्यते ॥

(2) संहितामिति (संहितेति) 'संहतैकपदवत् पादेष्वधान्तवर्जम्' इति काव्यसमयः

४६ (3) रावण इति जगदाक्रन्दकारित्वाद्यर्थान्तरसंक्रमितवाच्यः।

(4) रक्ता सानुरागा प्रसाधिता (प्रसादिता) अर्जिता भूर्यैः, रक्तेन मण्डिता भूश्च यैः। विग्रहो वैरं शरीरञ्च। स्वस्थाः कुशलिनः स्वर्गस्थाश्च। पृथुकानां बालानां ये आर्ताः स्वरास्तेषां पात्रं, पृथूनि कार्तस्वरस्य सुवर्णस्य पात्राणि भाजनानि च यत्र। भुवि उषितो भूषितोऽलङ्कृतश्च। विलसत्कैः गर्तसम्बन्धिभिः पांशुभिर्गहनं विलसन्तीभिः करेणुभिर्व्याप्तम् (व्याप्तश्च).

४७ (4a) [आत्मारामा इति]. देहबुद्धिप्राणशून्यरूपमितप्रमातृतानिमज्जनेनापरिमितबोधरूपे आत्मनि ये रमन्ते। भेदसंसर्गाभ्यां ज्ञानविकल्पस्तस्मान्निष्क्रान्तः* "योगमेकत्वमिच्छन्ति वस्तुनोऽन्येन वस्तुना" इत्युपपादितदिशा ध्येयेन सह समापत्तिः समाधिः। तमः अशुद्धोऽध्वा, ज्योतिः शुद्धोऽध्वा। पुराणो घटादिसिद्धेः पूर्वसिद्धेः, आनन्दरूपतया प्रकाशमानश्च।

सोमेश्वर

पृ.

१३५ (1) उपहतेति ॥ यदाह कुतुकः-अत्रालुप्त to रिच्यते ॥

(2) 'संहितैकपदवत् पादे स्वर्धान्तवर्जम्' इति काव्यसमय इत्याह संहितामिति ॥

१६१ (3) तथा हि रावण इति जगदाक्रन्दकारित्वाद्यर्थान्तरसंक्रमितवाच्यो .....

१६९ (4) रक्ता सानुरागा प्रसाधिता अर्जिता भूः यैः, रक्तेन मण्डिता भूश्च यैः। विग्रहः वैरं 'शरीरं' च। स्वस्थाः कुशलिनः स्वर्गस्थाश्च। पृथुकानां बालानां ये आर्ताः स्वरास्तेषां पात्रम्। पृथूनि कार्तस्वरस्य स्वर्णस्य पात्राणि भाजनानि यत्र। भुवि उषितो भूषितोऽलंकृतश्च। विलसत्कैर्गर्तसंबन्धिभिः। पांसुभिर्गहनम्। विलसन्तीभिः करेणुभिर्व्याप्तं च।

१६९ (4a) 'आत्मारामे'ति। देहबुद्धिप्राणशून्यरूपमितप्रमातृतानिमज्जनेन अपरिमितबोधरूपे आत्मनि ये रमन्ते। भेदसंसर्गाभ्यां ज्ञानं विकल्पः तस्माद् निष्क्रान्तः। *भेदज्ञानमिदं ध्येयमेतत्तद्गुणमेतत्क्रियमिति, यथा 'गौः शुक्लः श्चलः' इति। प्रत्यक्षमेवैकं तत्र व्याप्रियत इत्यर्थः-'योगमेकत्वमिच्छन्ति वस्तुनोऽन्येन वस्तुना' इत्युपपादितदृशा ध्येयेन सह समापत्तिः समाधिः। तमः अशुद्धोऽध्वा, ज्योतिः शुद्धोऽध्वा। पुराणः घटादिसिद्धेः पूर्वं सिद्धः। अनिदं प्रथमतया प्रकाशमानश्च ॥

---

* This passage in S. is to be noted for its elaboration from भेदज्ञानं to इत्यर्थः.

रुचक

पृ.

४७ (4b) षडधिकेत्यादि-शक्तीनामिच्छाज्ञानक्रियाणां ब्राह्म्यादीनां वामादीनां भूचर्यादीनां करणेश्वरीणा(?) मकारादिरूपामृतादीनामेवंविधानामन्यासामपि फलभेदादारोपितभेदपदार्थवपुषां नाथः प्रभुर्न्यग्भावनोद्भावनात्। आक्षिप्तनमस्कारो जयत्यर्थ इति। देहादिमितप्रमातृतानिमज्जनात् प्रबोधप्रमातृभावोन्मज्जनेन समाधि(वि)गामी(शामी)त्यर्थः। न च शक्तयः परस्परपरिहृतवपुषोऽपि त्वेकैकस्याः शक्तेः सर्वशक्त्यात्मतेत्याह— शक्तिभिः परिणद्ध इति—परितः समन्ताद् बद्धः, तेनेशित्रादिदशायामपि ज्ञात्रादिवपुः। न चासौ दूर भवतीत्याह-षडधिकेति। षड्भिरधिका दश षोडश या नाड्यस्तासां यत् चक्रं हृत्स्थानचक्रवन्नाड्यादिरूपेण स्वरूपं तन्मध्ये स्थितः स्थितिमान् विश्रान्त आत्मा अ(म-)विकलं चिदात्मरूपं यस्य। उक्तं नन्दशिखायाम्। "हृद्योगं देवि वक्ष्यामि विस्तरेण शृणुष्व तम्। बिन्दुर्नादः शिवश्चैव तत्रैव निवसन्ति ते" त्यादि अथवा हृदये (?) (ततः) लक्षयेच्चक्रं (चक्र ?) "राजानमेकं तत् षोडदारक" मित्यादि। इडा to वायुसमाश्रिता इत्यादि

५० (4c) ... हृदि हृच्चक्रे विशिष्टं निहितं स्वातन्त्र्येणोल्लासितं रूपं ज्योतिरादिरूप आकारो येन। एवस्वरूपोऽसावित्येतत् प्रतिपादनञ्च न विफलमित्याह–सिद्धिद इति। तं विदन्ति यथावज्जानते तथाभूतप्रकाशात्मना प्रकाशन्ते ये तेषाम्। सिद्धीः परापरमुक्ति-

सोमेश्वर

पृ.

१६९ (4b) 'षडधिके'त्यादि। 'शक्तीनां' इच्छाज्ञानक्रियाणां ब्रह्मण्यादीनां वामा-(पृ. १७०)-ज्येष्ठादीनां परादीनां भूचर्यादीनां करणेश्वरीणां अकारादिरूपामृतादीनां, एवंविधानामन्यासामपि फलभेदाद् आरोपितभेदपदार्थवपुषां 'नाथो' न्यग्भावनोद्भावनप्रभुः। जयति आक्षिप्तनमस्कारार्थौ जयत्यर्थः। देहबुद्धिप्राणपुर्यष्टादिमितप्रमातृतानिमज्जनात्मबोधप्रमातृभावोन्मज्जनेन समाविशामीत्यर्थः॥ न च शक्तयः परस्परपरिहृतवपुषः, अपि तु एकैकस्याः शक्तेः सर्वशक्त्यात्मतेत्याह – 'शक्तिभिः'॥ परिणद्धः परितः समन्ताद् बद्धः। तेनेशित्रादिदशायामपि ज्ञात्रादिवपुः। न चासौ दूरे भवतीत्याह 'षडधिके'ति। षड्भिरधिका दश षोडश या नाड्यः, तासां यच्चक्रं हृत्स्थाने। चक्रं च नाभ्यारादिरूपेण स्वरूपं तन्मध्ये स्थितः स्थितिमान् विश्रान्त आत्माऽविकलं शिवात्मकं रूपं यस्य। यदुक्तम् इडा to वायुसमाश्रिताः॥ इत्यादि*

१७० (4c) हृदि हृच्चक्रे विशिष्टं निहितं स्वातन्त्र्येणोल्लासितं रूपं ज्योतिरादि [त्य] रूप आकारो येन॥ एतत्प्रतिपादनं च न निष्फलमित्याह-सिद्धिद इति।

१७० (4c) सिद्धीः परापरभुक्तिमुक्तिरूपा ददाति यः। तं विदन्ती यथावज्ज्ञानते तेषाम्॥ न चासावाग

* In R. the explantion is further elaborated by quotations etc. pp. 48, 49, 50. This means that S. has taken only as much as is necessary for explanation, and not put in the whole Tantra lore, as R. does.

रुचक		सोमेश्वर	
पृ.		पृ.	
५०	(4c) भुक्तिरूपा ददाति यः। न चासावागमोपपत्तिभ्यामेव सिद्धो यावत् स्वप्रकाशप्रत्यभिज्ञातोऽपीत्याह – अविचलितेति (अविचलित इति) Quotations about चत्वारो योगिनः पृ. ५०। तेनाविचलितमनन्यध्येयं मनश्चित्तं येषां तैः साधकैः सिद्धतमं पदं साधयितुमुद्यतैर्मृग्यमाणः साक्षात्क्रियमाणः यद्यपि प्रमात्रैकवपुषः स्वप्रकाशस्यानुपपद्यमानमिवानुपयुज्यमानं प्रमाणं यस्य तस्यास्य दर्शनक्रियाकर्मभावो न भवति तथापि दृश्यमानघटादिपदार्थवदपरोक्षता प्रतिपादनार्थमुपचारेणोक्तम्।	१७०	(4c) मोपपत्तिभ्यामेव सिद्धो, यावत्स्वप्रकाशः प्रत्यभिज्ञातोऽपीत्याह अविचलितेति। अविचलितमनन्यध्येयं मनश्चित्तं येषां तैः साधकैः सिद्धतमपदसाधयितुमुद्यतैर्दृश्यमानः साक्षात् क्रियमाणः ॥

उल्लास ८

रुचक		सोमेश्वर	
पृ.		पृ.	
५३	(1) (श्रव्यत्वमिति) श्रव्यमिति भासते-तदुक्तं "श्रव्यं नातिसमस्तार्थशब्दं मधुरमिष्यते।" *	२०३	(1) श्रव्यत्वमिति 'श्रव्यं नातिसमस्तार्थशब्दं मधुरमिष्यते' इति भामहोक्तं माधुर्यलक्षणमोजःप्रसादयोरप्यस्तीति सजातीयव्यावृत्त्यभावाद् न तल्लक्षणं माधुर्यस्य।
५४	(2) आख्यायिकायामिति-विकटबन्धप्रधाना आख्यायिका सुकुमाररचनाप्राया तु कथेत्यनयोर्भेदः।	२११	(2) आख्यायिकायामिति। विकटबन्धप्रधानाऽनागतार्थशंसि वक्त्रापरवक्त्रादिनोच्छ्वासादिना संस्कृतगद्येन च युक्ता आख्यायिका, ... सुकुमाररचनाप्राया गद्येन पद्येन वा सर्वभाषा धीरशान्तनायका कथा।

---

* Note 5. "Bhāmaha's Kāvyālaṅkāra II. 3. The printed editions read श्रव्यं नातिसमस्तार्थं काव्यं मधुरमिष्यते। This line, it appears, is differently read by different commentators and annotators..."

The point to be noted is that here both R. & S. agree in the reading.

उल्लास १

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
५५	(1) सन्नारीति—सती[ः] साध्वीर्नारीर्बिभर्ति पोषयति या उमा तां याति सम्बध्नाति यः, सन्ना अरीभा शत्रूणां गजा यत्र तथाभूतो रणो यस्य, तथा अमायो मायाशून्यः, ततः सार्वभौमो भवति ।	२३६	(1) सन्नारीति । सतीः साध्वीर्नारीर्बिभर्ति पोषयति या उमा तां याति संबध्नाति यः शिवः । तथा सन्ना अरीभाः शत्रुगजा यत्र तथाभूतो रणो यस्य । अमायो निर्दम्भः । संदंशः ।
	(2) विना अयं etc.		(2) विना अयमिति । कश्चित् कंचिदाह यमेन etc.
५६	(3) सत्वारम्भेति (सम्बन्धतेति) स तु महापुरुषः आरं etc.		(3) सत्वेति etc.
	(4) यस्यानतः etc.		(4) यदानतः यस्या आनतः etc.
	(5) सरस्वती वागीश्वरी etc.		(5) सरस्वतीति वागीश्वरि etc.
	(6) ससार जगाम सा कंदर्पेण etc.	२३८	(6) ससारेति ससार प्रवृत्ते etc.
	(7) भ्रमराणां राज्य । [पराजित]-परिभूतं etc.*		(7) भ्रमरपङ्क्त्यापराभूतं etc.*
५७	(8) अन्यदिति यथा-विविधधवना† etc.	२३९	(8) अन्यदिति यथा-विविधधव[व]
	(9) विधाविति—विधुर्विधिश्चेत्युकारेकारयोः श्लेषः ।		(9) नानानागर्द्धनानेत्यादौ च ।§ अत्र स्थाणुपक्षे विधुश्चन्द्रो विधिश्च दैवमित्युकारैकारयोरक्षरयोर्भङ्गेन श्लेषः ।
	(10) पृथुकानां बालानां etc.		(10) पृथुकानां बालानां etc.
	(11) भक्तीति-नीते हितप्राप्तये etc.		(11) भक्तीति । अत्र 'नीता' इति ईहितप्राप्तये etc.
	(12) महदे उत्सवदे, सुरैः सन्धानं यत्र, [मे मम] तम् अव रक्ष, समासङ्गम्, आगमाहरणे आम्नायस्वीकारे, हर निवारय, बहु प्रभूतं [सरणं] प्रसरणं यत्र तम्, चित्तस्य मोहमज्ञानम्, अवसरे काले उमे	२४०	(12) तत्र संस्कृतप्राकृतयोः, यथा—महेति । कश्चिद् ध्यानानीतां गौरीं प्रत्याह । महदे उत्सवप्रदे सुरे सन्धा प्रतिज्ञा यत्र, देवविषयमित्यर्थः । मम तमुत्कृष्टम् । अव रक्ष । समासङ्गं अभिप्रेतं आगमाहरणे आगमस्वीकारे । तथा हर निवारय । बहु प्रभूतं सरणं प्रसरणं यत्र तं चित्तस्य मोहमज्ञानं अवसरे

---

* Similarities in 1-7 are usual and to be expected, and therefore not very useful as evidence.

† Here the whole verse and its explanation.

§ Only a part quoted; no further explanation.

रुचक

पृ.

५७ (12) गौरि सहसा झगित्येव । अस्यार्थः मम देहि रसं धर्मे तमोवशाम् (उमेवशाम्) आशां, गमागमात् संसारात्, हरणः, हरवधु शम्भुपत्नि, शरणं त्वं चित्तमोहः अपसरतु मे, सहसा बलेन ।

(13) वक्ष्यतीति धारयिष्यति कथयिष्यतीति चेति वहिवच्यो रूपम् । कृदिति कृन्तति करोति च ।

(14) ....सहस्रमिति क्रियाविशेषणम् । स्यां स्यादिति च नन्दयपी[? ती]ति नन्दितानन्दिनो गणविशेषस्य भावः इति तद्धितकृत्प्रत्यययोः ।

५८ (15) हे हर त्वं etc.

(16) गोत्रशब्दः कुलपर्वतयोः etc.

(17) सहकलकलेन etc.

(18) इहापीति शब्दालङ्कारमध्ये ।

(19) पाता रक्षिता etc.

(20) मारारिर्हरः etc. अनेन श्लोकद्वयेन खड्गबन्धः प्रस्तारो यथा ...*

(21) सरलेति etc. । एष मुरजः । तथा हि पादचतुष्टयेन पंक्तिचतुष्टये कृते etc.

६० (22) अत्र न केवलमधोऽधःक्रमेण स्थितानां पादानां प्रातिलोम्येन व्यवस्थितिर्यावदर्धभ्रमस्यापि । तत्र हि प्रथमादिपादाद्याक्षराणि चत्वारि चतुर्थादिपादान्त्याक्षराणि चेति प्रथमः पादः । प्रथमादि यावद्

सोमेश्वर

पृ.

२४० (12) काले उमे गौरि सहसा झगित्येव ॥ प्राकृतेऽन्योऽर्थः । मम देहि रसं धर्मे तमोवशां तमः परिभूतामाशां गमागमात् संसाराद् हर । ण इति नः । तथा हे हरवधु शम्भुपत्नि शरणं त्वम् । चित्तमोहोऽपसरतु मे सहसा ।

(13) वक्ष्यतीति । धारयिष्यति कथयिष्यति च । अत्र वहिवच्योः । कृन्तति-करोत्योश्च प्रकृत्योर्भङ्गः ।

२४१ (14) 'सहस्रम्' इति क्रियाविशेषणम् । 'स्यां स्याद्' इति च । नन्दतीति । नन्दिता नन्दिनो गणविशेषस्य च भाव इति तृच्-त-प्रत्यययोः श्लेषः ।

(15) हे हर etc.

(16) गोत्रशब्दः कुलपर्वतयो etc.

२४३ (17) सहकलकलेन etc.

२४४ (18) 'इहापि' इति शब्दालंकारमध्ये ।

(19) पाता अलं पर्याप्तं etc.

२४६-४७ (20) मारारिः शिवः etc. एतेन श्लोकद्वयेन खड्गः । तथा हि द्राढिकान्तरे etc.

(21) सरलेति etc. । एष मुरजबंधः । तथा हि पादचतुष्टयेन पङ्क्तिचतुष्टये कृते etc.

२४८ (22) अत्र न केवलमधोऽधःक्रमेण स्थितानां पदानां प्रातिलोम्येनापि स्थितिर्यावद् अर्धभ्रमस्यापि । तत्र हि प्रथमादिपादाद्यक्षराणि । चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमपदाष्टमाक्षराणि च प्रथमाः प्रथमपादः । प्रथ-

---

* F. N. 18 "A blank covering six lines of 26 to 28 syllabes each is shown here in the Ms. Māṇikyacandra and Śrīdhara who have in this place reproduced verbatim the remarks of Rucaka help us in restoring the blank portion which would be like this :— द्राढिकान्तरे etc."

रुचक

पृ.

६० (22) द्वितीयाक्षराणि चत्वारि चतुर्थादिपादसप्तमा(सप्ता)क्षराणि चेति द्वितीयः पादः। प्रथमादि यावत्तृतीयाक्षराणि एवं चतुर्थादि यावत् षष्ठाक्षराणि तृतीयः पादः। चतुर्थपञ्चमौ चतुर्थः पादः। इह च तदेवोपलभ्यते इत्यर्धभ्रमस्याप्यवस्थानात् सर्वतोभद्रम्।

(23) अरीणां वधं ददती ईहा येषां तादृशाः शरिणो धानुष्कास्तानीरयन्ति ये, सूता बन्दिनः, सतामानत्येत्युक्ततया स्थिरतायामगः पर्वततुल्यः। अङ्गनेष्वारामा उपवनानि। अत्रैकार्थतया प्रतिभातौ देहशरीरशब्दौ सार्थकौ सभङ्गौ सारथिसूतशब्दौ सार्थकावभङ्गौ' दानत्यागशब्दावनर्थकौ सभङ्गौ अङ्गना रामा इत्येतावनर्थकावभङ्गौ, देहशरीरवदिह शब्दयोर्भङ्गाभावात् (भङ्गभावात्)।

(24) उपलभ्यमानसुपामपि शब्दानामुपरि पौनरुक्त्यं प्रतिभासते इत्यभिसन्धायोदाहृतं तथेति। सुमनसः शोभनचित्तस्य राज्ञः, सुमनसो देवा विबुधाश्च। तत एवात्रैकार्थताभ्रमः।

(25) तनु स्वल्पं, करिकुञ्जरा वारणश्रेष्ठाः "वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानमिति समासः। रक्ताश्छुरिताः। बहुलमपि पुनरुक्तवदाभासे (क्तावभासे) लक्ष्यत इत्युक्तं तेज इत्यादि-तेजसो धामाश्रयस्तेजस्विनस्तेषां मह उत्सवः, इन्द्रः स्वामी, हरिः सिंहः, जिष्णुर्जयनशीलः।

सोमेश्वर

पृ.

२४८ (22) मादिपादद्वितीयाक्षराणि च चतुर्थादिपादसप्तमाक्षराणि च द्वितीयपादः। एवं तृतीयषष्ठाक्षरैस्तृतीयः पादः, चतुर्थपञ्चमैश्चतुर्थः पादः। इह च सर्वं [त] देव उपलभ्यत इति अर्धभ्रमस्याप्यवस्थानात् सर्वतोभद्रम्। यदुक्तम्–तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः॥

२५१ (23) अरिवधदा ईहा चेष्टा येषाम्, एवंभूतान् शरिणो धानुष्कान् ईरयति यः। सूतो बन्दी। सतामानत्या हेतुभूतया स्थिरतायां सत्यामगः पर्वततुल्यः। अङ्गनेषु आरामा उपवनानि॥ अत्रैकार्थतया प्रतिभातौ देह–शरीरशब्दौ अनर्थकौ सभङ्गौ, सारथि–सूतशब्दौ तु सार्थकौ अभङ्गौ। तथा दानत्यागशब्दौ अनर्थकौ सभङ्गौ, अङ्गना रामा इत्येतौ त्वनर्थकौ अभङ्गौ, देहशरीरादिशब्दवन्निजेनैव रूपेणावस्थिततयोरनयोर्भङ्गाभावात्।

(24) उपलभ्यमानसुपामपि शब्दानामामुखे पौनरुक्त्यं प्रतिभासत इत्यभिसंधाय 'तस्य' इत्युदाहृतम्॥ सुमनसः शोभनचित्तस्य। सुमनसो देवा विबुधाश्च। त एवेत्येकार्थताभ्रमः।

२५२ (25) तनु स्वल्पम्। करिकुञ्जरा गजश्रेष्ठाः। 'वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्' इति समासः। बहूनामपि पुनरुक्तवदाभासो लक्ष्यते 'तेज' इति। तेजसो धामानि आश्रयाः तेजस्विनः, तेषां मह उत्सवः। इन्द्रः स्वामी हरिः सिंहः जिष्णुर्जयनशीलः।

उल्लास १०

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
६०	(1) यथा षष्ठीवत् उत्तरा तदेव विशिनष्टि। श्रुत्यैव च सम्बन्धमुभयाधारमभिधत्ते। तयैवायं यथेवादिः। सममेव साम्यं साधारणो धर्मः। तुल्यता द्विष्ठरूपसादृश्यम्।	२५५	(1) यथा षष्ठी यत उत्तरा तदेव विशिनष्टि श्रुत्यैव संबन्धमुभयाधारमभिधत्ते, तथैव अयं यथा इवादिः.... ..। .... सममेव साम्यं साधारणो धर्मः। तुल्यता द्विष्ठरूपं सादृश्यम्।
६१	(2) अलङ्कारान्तरश्चेति। तद्ध्यनुप्रासादि(°द) श्लिष्टतरमपि, काव्ये यद्यव्यभिचारितयैव तद्व्यवहारो गण्यते तदा तेन सहोपमाऽऽदीनां संकरसंसृष्टी स्यातामिति केवलतयैषां विषयो नावकल्प्येत।	२५८	(2) अलंकारान्तरं चेति। तद्धि अनुप्रासादि श्लिष्टतरमपि काव्ये यदि अव्यभिचारितयैव गण्यते, तदा तेन सहोपमादीनां संकरसंसृष्टी स्यातामिति केवलतयैव एषां विनावकल्पेत।
	(3) तदिति (तदेति) स चास्फुटतरो रसादिरर्थः, तथालङ्कारान्तरमिति-"नपुंसकमनपुंसकेने"त्यनेन नपुंसकैकशेषः। अस्फुटश्च रसादिर्गुणीभूतव्यङ्ग्यगृहीत इत्यस्फुटतरोवगृह्यते इति संस्पर्शपदेन ध्वनितम्।		(3) तदिति। स चास्फुटतरो रसादिरर्थस्तथा 'अलंकारान्तरम्' इति नपुंसकैकशेषः। अस्फुटश्च रसादिर्गुणीभूतविषय इति अस्फुटतरोऽत्र गृह्यते, इति 'संस्पर्श'पदेनात्र ध्वनितम्।
६१	(4) मनो विषकल्पं विषसदृशमित्यर्थः। न तु विषमेव प्रकृत्यर्थसदृशेऽर्थे कल्पबादीनां स्मरणात्। उपमाया एव हीदमुदाहरणं, न तु रूपकस्य, प्रत्ययादमुतो समारोपाप्रतिपत्तेः।*	२५९	(4) 'विषकल्पम्' इति। ... ... 'ईषद् अपरिसमाप्तं विषम्' इति वचनवृत्त्या सामानाधिकरण्यरूपतया यद्यपि रूपकच्छायां भजते, तथापि प्रातीतिकेन रूपेण उपमैव। तथाहि अत्र विषसदृशं मनः इत्ययमर्थः प्रतीयते, न तु ईषद् अपरिसमाप्तं विषमेव इति ईषदपरिसमाप्तिविशिष्टे प्रकृत्यर्थसदृशेऽर्थे कल्पबादीनां स्मरणात्।

* Here the change in order as well as wording is more significant than similarity in words and order. The same is true as between S. & M.

रुचक

पृ.

६२ (5) असितेति - अत्रोपमानोपमेययोरेकपदानुप्रवेशः। पूर्वत्र वर्तते पृथङ्निर्दिष्ट इति विशेषात् पुनरुदाहरणम्।

(6) ... कुसुमेन सदृक्षमिति सदृक्षशब्दाभिधेयस्योत्कृष्टतरगुणत्वेनाप्राप्यताप्रतिपादनादुपमानत्वं बलादायातं, तस्य च साक्षादनिर्देशादुपमानस्यैव लोपः।

(7) मृगनयनेति-मृगनयने इव नयने यस्याः। अत्र गुणद्योतकोपमानशब्दानां त्रयाणां लोपः।

....

यदा तु मृगशब्द एव लक्षणया मृगनयनवृत्तिस्तदा मृग एव नयने यस्या इत्युष्ट्रमुखवद्रूपकसमासस्यैव विषयो न त्वस्योपमासमासस्येति नास्ति स्थानमुपमायास्त्रिलोपिन्याः। अत एवोक्तं यदेति।

(8) उपमेयेनोपमानधुराऽधिरूढेन करणात्मना उपमा, उपमानस्योपमेयतापादन उपमेयोपमा।

६३ (9) सांगमिति—न [केवल] मत्र तस्यैव रूपणमपि तु तदङ्गस्यापि-अङ्गमत्रोपकरणमात्रं न त्वारम्भकमेव, लक्ष्याव्याप्तिप्रसङ्गात्।

(10) एवमिति—
विलसदमर to श्रियं वः।
तथा चोक्तम् - इदन्ते केनोक्तमित्यादि।

(11) श्लिष्टैः समानैः।†

सोमेश्वर

पृ.

२६० (5) असितेति। अत्रोपमानोपमेययोरेकपदानुप्रवेशः, पूर्वत्र तु ते पृथग् निर्दिष्टे इति विशेषात् पुनरुदाहृतम्।

(6) 'मालतीकुसुमसदृशम्' इति सदृक्षशब्दाभिधेयस्य उत्कृष्टगुणत्वप्रतिपादनाद् बलाद् आगतस्य उपमानस्य साक्षाद् अनिर्देशाद् उपमानस्यैव लोपः।

२६२ (7) मृगस्य नयने इति प्रथमं तत्पुरुषः, ततो 'मृगनयने इव नयने यस्याः' इति सप्तम्युपमानोपमानपूर्वस्य समास उत्तरपदलोपश्चेत्यत्र गुणद्योतकोपमानानां त्रयाणां लोपः। यदा तु मृगशब्द एव लक्षणया मृगनयनवृत्तिः, तदा मृग एव नयने यस्या इति रूपकसमासस्यैष विषयः, न त्वस्य उपमासमासस्येति नास्ति स्थानमुपमायास्त्रिलोपिन्याः। अत एवोक्तं 'यदा समासलोपौ' इति। cf. मा. (11). p. 350.

२६४ (8) उपमेयनोपमानधुराधिरूढेन करणात्मना उपमा, उपमानस्योपमेयतापादनं उपमेयोपमा।

२७० (9) साङ्गमेतदिति सूत्रम्। न केवलं यत्र तस्यैव रूपणं, अपि तु तदङ्गस्यापि अङ्गमत्रोपकरणमात्रं, न तु आरम्भकमेव लक्ष्याव्याप्तिप्रसङ्गात्।

२७६ (10) एवमिति। आरोपपूर्वकोऽपह्नवोऽपह्नवपूर्वको वा आरोपः। क्रमाद् यथा—
विलसदमर to श्रियं वः।
इदं ते केनोक्तम् इत्यादि।

२७७ (11) श्लिष्टैः श्लेषवद्भिः समानैः ...।†

† M. & J. have not given समानैः।

रुचक

पृ.

६३ (12) राजशुकः कश्चिदुत्कृष्टजातिशाली शुकः ।

(13) मुखादिति-लोकप्रसिद्ध्यात्र मुखमाकृतिः अपेक्षितक्रियश्चैतदपादानम् । जात्यावेदकमेतच्छरीरादेतदल्पतरं जातमित्यर्थः ।

(14) प्रतियातनं संशोधनम् ।

६४ (15) श्लेष इति-विशेष्यपदस्यापि श्लिष्टता । समासोक्तिरिति समानविशेषणत्वम् । सादृश्यमात्रमिति-प्रतीयमानेनापि केनचिद्धर्मेणानुगुण्यम् ।

(16) पुंस्त्वं पुरुषस्य धर्मः, तस्यैव चारुत्वश्च । अधः [पातालं, निकृष्टा गतिश्च] प्रणयनं यात्रानिमित्तम् । न महानपि स्वल्पोऽपि पुरुषोत्तमो विष्णुः, सत्पुरुषश्च । एष न शब्दश्लेषः, अभिधाया एकत्रनियमान्नियन्त्रितत्वात् । नापि विशेष्यपदस्य । श्लिष्टत्वे शब्दशक्तिमूलो ध्वनिः । भगवद्वृत्तान्तस्यात्र वाच्यत्वात्, तस्य चाप्रक्रान्तत्वात् । प्रस्तुतार्थमुखेन यत्राप्रस्तुतोऽर्थो विशेष्यद्वारेणावगम्यते स तस्य ध्वनेर्विषय इत्युक्तम् । सत्पुरुषचरितमेवात्र वाच्यं प्रस्तुतश्च, तन्मुखेन चेतरार्थप्रतिपत्तिः । ततः शब्दशक्त्युद्भव एवायमिति चेत्, न; तस्य वाच्यत्वासंभवात् । न ह्युत्कृष्टतमस्यापि पुरुषस्य सत्यत एवास्ति शक्तिर्विश्वमुद्धर्तुम्, आक्षिप्यमाणस्य तु तस्य गुणस्य गुणवृत्त्या तद्वर्णनमविरुद्धं गुणभूतत्वादित्यप्रस्तुतप्रशंसैवेषा ।

सोमेश्वर

पृ.

२८० (12) राजशुकः कश्चिदेव उत्कृष्टजातिशाली शुकः । M. different राजशुको वरशुकः । (p. 373)

२८१ (13) मुखाद् इति । लोकसिद्ध्यात्र मुखमाकृतिः । अपेक्षितक्रियं चैतदपादानम् । एतत् तच्छरीरादल्पतरं जातमित्यर्थः ।

(14) प्रतियातनं शोधनम् ।

(15) श्लेष इति । विशेष्यपदस्यापि श्लिष्टता । समासोक्तिरिति । समानविशेषणत्वम् । सादृश्यमात्रमिति । प्रतीयमानेनापि केनचिद् धर्मेणानुगुण्यम् ।

२८१-८२(16) पुंस्त्वं पुंसो भावस्तस्यैव चारुत्वं च । अधः पातालं निकृष्टा गतिश्च । प्रणयनं to एकत्र नियन्त्रितत्वाद् । to श्लिष्टत्वेऽपिशब्द° to इति ह्युक्तम् । सत्पुरुष° to पुरुषस्य विष्णोरिव विश्वोद्धरणशक्तिः सत्यत एवास्ति । आक्षिप्यमाणस्य तु तस्य गुणवृत्त्या to °सैवेयम् । पुरुषोत्तमस्य विशेष्यस्य विशेषणानां च श्लिष्टत्वात् श्लेषगर्भत्वम् ।

रुचक			सोमेश्वर		
पृ.			पृ.		
६४	(17)	पादा रश्मयः, पादौ चरणौ जडधामता शीतलतेजस्त्वं, मूर्खास्पदता च ।	२८२	(17)	पादा रश्मयश्चरणौ च । जडधामता शीतलतेजस्त्वं मूर्खास्पदत्वं च ।
	(18)	आहो इति यद्यर्थे । कल्पः प्रौढिः ।		(18)	आहो इति यद्यर्थे । कल्पः प्रौढः।
	(19)	रसनाविपर्ययः असत्यभाषित्वमपि । चापलं शब्दोऽश्रोतव्यश्रवणमपि । मदो गर्वोऽपि । शून्यकरत्वमदातृत्वमपि ।	२८३	(19)	रसनाविपर्ययो गजानां शापहेतुतोऽसत्यभाषित्वमपि । चापलमश्रोतव्यश्रवणमपि । मदो गर्वोऽपि । शून्यकरत्वमदातृत्वमपि ।
	(20)	एवमिति यथा व्यतिरेके । तत्र ह्येकस्य बहुभ्यो व्यतिरेकमाला । व्यतिरेकतो यथा —हरवन्न to कदाचिदसि ॥ इति ॥*	२८६	(20)	एवमिति । यथा व्यतिरेके । तत्र ह्येकस्य बहुभ्यो व्यतिरेके मालाव्यतिरेकता, यथा 'हरवन्न विषमदृष्टिः' इति ॥
६५	(21)	तस्य च श्लिष्टत्वं भास्वरत्वस्य समारोपात् रवित्वस्य प्रतिपादनात् ।		(21)	'भास्वता' इत्यस्य श्लिष्टत्वं, भास्वतेव भास्वतेति भासुरत्वस्यारोपगत्या रवित्वस्य च प्रतिपादनात् ।
	(22)	निषेध इवेति । न तु निषेध एव, प्रधानस्य निषेधमुखेन विशेष एव तात्पर्यात् । अन्यत्र चोक्तम्–'प्रतिषेध इवेष्टस्य यो विशेषविधित्सयेति ।'†	२९४	(22)	निषेध इवेति । न तु निषेध एव, किंतु प्राकरणिकस्यार्थस्य प्रस्तुत्वादेव प्रधानस्य वक्तुमिष्टस्य विशेषप्रतिपत्तये निषेधाभासः ।' विधानार्हस्य निषेधः कर्तुं न युज्यत इति निषेधमुखेन विशेष एव तात्पर्यमित्यर्थः ।§
६६	(23)	तस्याः फलस्य प्रकाशनं कविना प्रतिपादनं न तु भावनम् to ज्ञप्तिश्चोत्पत्त्यपेक्षया दवीयसी न विभावनां प्रयोजयति । भवतु वाऽत्रापि सामान्येन परस्परं बाधः, तथापि न विरोधरूपत्वं, हेतुफलभावविशेषमाश्रित्य प्रवर्तनात्, अस्यास्तदपवादत्वात् ।	२९५-९६	(23)	सामान्येन विशेषमनपेक्ष्य फलप्रकाशनमिति कार्यस्य कविना प्रतिपादनं, न तु भवनकारणमन्तरेण कार्योत्पत्तेरसंभवात् to ज्ञप्तिश्चोत्पत्त्यपेक्षया दवीयसी न विभावनां प्रयोजयति. In (23) many phrases are identical, but the whole is a sort of expa-

* P. 65. See note 15. In the text R. discusses the order of verses. S. follows the later version.

† F. N. Bhāmaha's Kāvyālaṃkāra II. 68.

§ Paraphrase of the verse of Bhāmaha.

रुचक		सोमेश्वर	
पृ.		पृ.	nded paraphrase. Then in what follows 'ज्ञप्त्यपेक्षः, ज्ञप्तिः and दवीयसी are explained in the style of a commentary as 'ज्ञप्त्यपेक्ष इति,' 'ज्ञप्तिश्चेति,' 'दवीयसी' इति । This is interesting because it suggests that S. after taking the passage from R. comments upon the difficult words (p. 296). भवतु वात्रापि सामान्येन परस्परं बाधस्तथापि न विरोधरूपत्वं हेतुफलभावं विशेषमाश्रित्य प्रवर्तनाद् अस्यास्तदपवादत्वात् । (cf. मा. 41 p. 394–5)
६६	(24) गलिः कर्मण्यकुशलोऽत्यन्तमलीमसः (°मलसः)।	२९९	(24) गली (? लिः) कर्मण्यकुशलोऽत्यन्तमलसः ।
	(25) धाराधरः खड्गः। अनुरज्यत इत्यनुरागः शोणितकृतं शोणत्वमपि। स्नेहो रुधिरार्द्रत्वमपि।	३००	(25) धाराधरः खड्गः। अनुरज्यत इत्यनुरागः । शोणितकृतं शोणत्वं च। स्नेहो रुधिरार्द्रत्वमपि।
	(26) जडयति शीतलयति व्यामोहयति च।	३०१	(26) जडयति शीतलयति व्यामोहयति च।
	(27) कश्चिदिह प्रभेदः श्लेषवशादेव समासादितस्वभाव इति विरोधप्रतिभोत्पत्तिहेतुः श्लेषात्मक एव। ततः श्लेषेण सहास्य सङ्करत्वशङ्का न कार्य्या, भेदाभावात्। एवमन्यत्रापि परीक्ष्यम्।	३०२	(27) श्लेषवशादेव हि समासादितस्वभावः श्लेषात्मक एव विरोधस्ततः श्लेषेण सहास्य संकरत्वाशङ्का न कार्या, भेदाभावात्। एवमन्यत्रापि परीक्ष्यम्। This is preceded by a discussion with a quotation from उद्भट (p. 309). This is in fact an elucidation of रु' s remarks adopted by सो.
६७	(28) द्राघयित्वा दीर्घीकृत्य "प्रियस्थिरे"त्यादिना द्राघादेशः ।		(28) द्राघयित्वा दीर्घीकृत्य। प्रोथोऽश्वस्य मुखाग्रम्। तुण्डं मुख-

रुचक

पृ.

६७ (28) प्रोथोऽश्वस्य मुखाग्रम्। तुण्डं मुखम्।

(29) विप्रलम्भो भ्रान्तिरपायो वा।

(30) अत्रानुमानसद्भावेऽपि न तेन सह वाक्यार्थीभूतस्य हेतोः संसृष्टिव्यवहारः, उभयोरपि भिन्नदेशत्वात्। अनुमानन्तु हेतोरुत्थापकतयोपकारकमिति भवत्यङ्गाङ्गिसङ्करः, किन्तु हेतुलक्षणमत्रास्तीत्येतावदभिसन्धाय हेतोरिदमुदाहृतम्।

(31) तदेवेति-पटीयस्त्वादनुभावस्य तदाकारतयैव तस्योत्पत्तेः।

(32) निरंशस्य वस्तुनो भेदसंसर्गयोरभावात्। तौ हि विकल्पस्यैव व्यापारः। स हि अभिन्नमपि वस्तु गौः शुक्लश्चल इत्येवं भिनत्ति, भिन्नमपि पदार्थजातमयं गौरयमपि गौरित्येवं संसृजति।

(33) तस्येहाङ्गत्वादिति। अङ्गत्वेऽपि न रसवदलङ्कारः, अस्योदात्तस्य तदपवादत्वात्।

(34) न पृथगिति - रुद्रटो हि—
यत्रैकत्रानेकं वस्तु परं स्यात् सुखावहाद्येव। ज्ञेयः समुच्चयोऽसौ त्रेधान्यः सदसतोर्योगः॥
इति सद्योगादिना रूपान्तरेणामुं पृथगलक्षयत्।

६७ (35) असतामिति तत्र नववयःप्रभृतेः सत्यपि सत्त्वे सर्व्वेषामपि सत्त्वाकथनमसत्त्वेनैव विरहिण्या भावितत्वात्।

सोमेश्वर

पृ.

३०२ (28) म्। The point here is that S. takes only as many words for explanation as are taken by रु.

३०६ (29) विप्रलम्भो भ्रान्तिरपायो वा।

३०८ (30) अत्र चानुमानसद्भावेऽपि to हेतोरिदमुदाहृतम्।
(cf. मा. (51) p. 409.)

३०९ (31) एतदीयत्वाद् अनुभवस्य तदाकारतयैव तस्योत्पत्तेः।

(32) निरंश to संसृजति।

३१० (33) तस्येति after पूर्वपक्ष-सत्यम्, अङ्गत्वेऽपि न रसवदलंकारोऽस्योदात्तस्य तदपवादात्।
(cf. मा. (54) p. 413.)

३११ (34) न पृथगिति। रुद्रटो हि 'त्रेधान्यः सदसतोर्योग इति सद्योगादिना रूपान्तरेण पृथगलक्षयन्न तथात्रेति भावः।

(35) नववयःप्रभृतेश्च सत्यपि शोभनत्वे सर्वेषामपि अशोभनत्वकथनं, अशोभनत्वेनैव विरहिण्या भावितत्वात्।

पृ.	रुचक	पृ.	सोमेश्वर
६७	(36) तत्रेति-[तत्र] शशिनः शोभनत्वं प्रकृतिसौन्दर्यात् । अशोभनत्वं धूसरत्वोपादानात् । एवञ्चास्य सदसद्रूपस्य तादृशेनैव व्यापारेण योगादिह सदसद्योगः । शशिनि धूसर इति शोभनाशोभनत्वमुपदर्शितम् ।	३११	(36) तथा हि-शशिनः शोभनत्वं प्रकृतिसौन्दर्यात् । अशोभनत्वं तु दिवसधूसरत्वादिति 'शशी दिवसधूसरः' इत्यस्य सदसद्रूपस्य तादृशेरेव 'गलितयौवना कामिनी' इत्यादिभिः सदसद्रूपैः समुच्चयः ।
६८	(37) न वाच्यमिति । रुद्रटेन ह्युक्तम् व्यधिकरणे वा यस्मिन् to साविति ।	३१२	(37) रुद्रटेन तु– व्यधिकरणे to सौ इति यदुक्तं तन्न वाच्यमित्याह ।
	(38) क्रमेणेति प्रतीकानन्तरं– "श्रोणीबन्ध to यौवनेने"ति* पाठः । आद्यार्धमेव श्लोकस्योदाहरणम् ।	३१३	(38) क्रमेण उदेति (उदा इति) अनन्तरम् । श्रोणीबन्धः to यौवनेन ॥* इत्ययं पाठः । 'तनुतामेव मध्यभागः सेवते' अत्र एकस्य तनुतादेर्द्वये वृत्तिर्दर्शिता । आद्यार्धमेव च श्लोकस्योदाहरणम् ।
६९	(39) निवेशितं चुम्बनैकसक्तं कृतम् ।	३१४	(39) बिम्बाधरे निवेशितम् । चुम्बनादिसक्तं कृतम् ।
	(40) अञ्चित-आकृष्टः ।	३१५	(40) 'अञ्चित-आकृष्टः' ।
	(41) प्रकृतेति-क्वचित् प्रकृतनिष्ठं साम्यं यथा सद्यं बुभुजे to वधूमिव ॥ इति समुच्चितोपमायाम् । क्वचित् [अ]प्रकृतनिष्ठं यथा कस्याञ्चित् तुल्ययोगितायां, क्वचिच्च तदुभयनिष्ठं यथाऽपह्नुत्यां, तच्चेह नास्ति, प्रकृतस्यैव सद्भावात् ।	३१७	(41) न चैषेति । क्वचित्प्रकृतनिष्ठं साम्यं, यथा— सद्यं बुभुजे to वधूमिव ॥ इति समुचि(? च्चि)तोपमायाम् । क्वचिद् अप्रकृतनिष्ठं यथा कस्यांचित् तुल्ययोगितायाम् । अपह्नुतौ तु प्रकृताप्रकृतनिष्ठं सादृश्यम् । न च तथेहास्ति, प्रकृतस्यैव सद्भावात् ।
	(42) व्यासङ्गो विरोधस्तस्माद् भङ्गो भयम् ।		(42) व्यासङ्गो निरोधः, तस्माद् भङ्गो भयम् ।
	(43) अवगतं प्रतिपाद्येन ज्ञातम् ।	३१७-८	(43) °प्रमाणान्तरावगतं प्रतिपाद्येन ज्ञातं° ।
	(44) आर्यचरितं-शिष्टैरनुष्ठितम् ।	३१८	(44) 'आर्यचरितम्' इति शिष्टैरनुष्ठितम् ।
६९	(45) युवतिरेव कामस्यास्त्रमायुधम् ।	३१८-९	(45) युवतिरेव कामास्त्रम् ।†

* It seems, acc to R & S. the verse 'श्रोणीबन्ध' etc. should precede नन्वाश्रय° in K, P. See note 28 in R's Samketa, p. 68.

† Cf. M. (63) 424.

रुचक

पृ.

६९ (46) गौणे ह्युपचारे सादृश्यसम्प्रत्ययाद्वैचित्र्यम्। न तु शुद्धे, तद्विपर्ययात्।

(47) कोमलेति। यद्यप्यव्यभिचारितयैव च विकाशादीनां नैरन्तर्येण जननमिहोपमानप्रयोजनं व्यङ्ग्यं तदसुन्दरमपि गुणीभूतव्यङ्ग्यनिबन्धनं भवतीति च प्राक् प्रतिपादितमेव, तथाप्यलंकारचिन्तायाः प्रक्रान्तत्वादपह्नुत्यैवावधारणगर्भमिदमभिहितम्, अत एव तटस्थतयेवोक्तम्। समाम्नासिषुरिति– उद्भटादयः प्रत्यपादयन्निति ह्यत्रार्थः।

७० (48) अतिशयेनेति-अतिशयः कारणस्य कारणान्तरतो विलक्षणता।

(49) सिंहिकासुतः सिंहो राहुश्च। अत्र न परं शशेनात्मरक्षा समासादिता यावदेष स्वयमेवाधिगतमहाबाधः, स्वाश्रयबाधेनाश्रयणक्रियाध्वंसात्।

(50) विपुलेनेति-अत्र हीनेन गुरुकार्यं कृतमिति विषमत्वम्। एवमधिकोऽपि यः स्वल्पमपि प्रयोजनं न विदधाति तदपि विषमं यथा—

किं ददातु to त्रितयमात्रके॥ इति।

(51) माति वर्तते – अनेनाश्रयस्य महीयस्त्वमुक्तमन्यथा मानस्यासम्भवात्।

सोमेश्वर

पृ.

३१९ (46) ततो गौणलक्षणायां सादृश्यसंप्रत्ययाद्वैचित्र्यं, यथा इयं गेहे लक्ष्मीः etc. इत्यादौ अतिशयोक्तौ। यत्र तु आयुर्घृतं to पूजनम्। इत्यादौ कार्यकारणसंबन्धोपचारे शुद्धलक्षणासद्भावः। तत्र सादृश्याभावेन हेतुमात्रस्य वैचित्र्याभावान्न हेतुरलंकारः।*

(47) कोमलानुप्रासेति। यद्यपि अव्यभिचारितयैव विकासादीनां नैरन्तर्येण जननमिहोपचारप्रयोजने व्यङ्ग्यं तद् असुन्दरमपि गुणीभूतव्यङ्ग्यनिबन्धनं भवतीति प्राक् प्रतिपादितमेव, तथापि अलंकारचिन्तायाः प्रक्रान्तत्वात् तद् अपह्नुत्यैवावधारणगर्भमिदमभिहितम्। अत एव तटस्थतयैव उक्तम् 'समाम्नासिषुः' इति उद्भटादयः प्रत्यपादयन्निति ह्यत्रार्थः।

३२३ (48) अतिशयेनेति। अतिशयश्च कारणस्य कारणान्तरतो वैलक्षण्यम्।

३२५ (49) सिंहिकासुतः सिंहो राहुश्च, न परम्। शशेनात्मरक्षा न समासादिता यावदेष स्वाश्रयबाधेन आश्रयणक्रियाध्वंसात् स्वयमेवाधिगतमहानर्थश्च।

३२६ (50) विपुलेनेति। अत्र हीनेन गुरुकार्यकरणाद्, विषमत्वम्। इत्यादावपीति, अपिशब्दाद्, यथा—

किं ददातु to त्रितयमात्रके॥

अत्र अधिकेनापि स्वल्पकार्यकरणाद् विषमत्वं ज्ञेयम्।

(51) 'माति' इति वर्तते अनेनाश्रयस्य महीयस्त्वमुक्तमन्यथा मानस्यासंभवात्।

---

* This passage is an elaboration of रु.

रुचक		सोमेश्वर	
पृ.		पृ.	
७०	(52) सम्बन्धीति सम्बन्धि वक्त्रं, तेनेन्दोः सम्बन्धः समत्वात् ।	३२७	(52) संबन्धि वक्त्रं तेन हीन्दोः संबन्धः समत्वात् ।
	(53) अपाङ्गेति । अत्राङ्गकेन etc.	३२८	(53) अपाङ्गेति। अत्र दृक्तरलत्वादिना etc.†
७०-७१	(54) दृष्ट इति–दृशिरत्रोपलब्धिमात्रवचनः । स्मारिता इति-घटादिष्वपठितस्य स्मरतेर्मित्त्वेऽपि "मितां ह्रस्वः" इति [ह्रस्वः] तद्विधौ "वे"त्यस्यानुवृत्तस्य व्यवस्थितविभाषात्वात् ।	३२९	(54) दृष्ट इति । दृशिरत्र उपलब्धिमात्रवचनः । तद्भवैः प्लाविताम्भोभवैः कुहरुतैः कुहकुहशब्दैः नाभ्यादिनिम्नदेशोत्थैः। स्मारिता इति घटादिपाठे स्मरतेर्मानुबन्धत्वेऽपि 'न ह्रस्वो व्यवस्थितविभाषितस्य वा' इत्यस्यानुवृत्तेः ।
७३	(55) अनयैव रीत्येति-अनेन बहुप्रकारं वैचित्र्यमस्य दर्शितम् । तेनोपमानस्योपमेयतोऽनुकम्प्यतामात्रंप्रतिपादनमपि प्रतीपम् । यथा – वदनमिदं to कज्जलवादति ॥	३३१	(55) अनयैवेति । अनेन अस्य बहुप्रकारं वैचित्र्यं दर्शितम् । तेन उपमानस्य उपमेयताधानं विनानुकम्पनामात्रे प्रतिपादनमपि प्रतीपम् । यथा– वदनमिदं to कज्जलवत् ॥
	(56) धवलः कामुकोऽपि, रञ्जितं जनिताभिषङ्गं रागप्रसक्तिरपि । अत्र पूर्वार्धे विरोधः न तूत्तरत्र, भिन्नाधारतयैव रक्तारक्तत्वयोः प्रतीतेः ।	३३४	(56) 'धवलोऽसि' इति । रञ्जितं जनिताभिष्वङ्गमपि । रागः प्रसक्तिरपि । अत्र पूर्वार्धे विरोधोऽनन्तरं भिन्नाधारतयैव रक्तारक्तत्वयोः प्रतीतिः ।
७२	(57) अङ्गेत्यभीष्टामन्त्रणे, सैव नान्यादृशीया न चीयत इत्यध्याहृतेन यदा समन्वयः ।	३३५	(57) अङ्ग इतीष्टामन्त्रणे। सैव नान्यादृशी या न चीयते ।
	(58) यथासम्भवमिति – न सर्वेषामेव लक्षितानामपि तु केषाञ्चित् । तत्रापि तेषां मध्ये क्वचिद् द्वयोः क्वचित् त्रिचतुर्णामिति यथायोगम् । संसृष्टेश्च विषयभेदेन त्रिरूपाया अपि संसृष्ट्या चैकरूपयेति प्रागुक्तमभिधानं न विरुध्यते, नैरपेक्ष्यलक्षणस्य रूपस्याभिन्नत्वात् । सङ्करस्तु स्वरूपेणैव नानागतत्वेनावभासत इति युक्तस्तत्र त्रिरूपतया व्यवहारः ।	३३६	(58) यथासंभवमिति न सर्वेषां लक्षितानां, अपि तु केषांचित्, तत्रापि तेषां मध्ये क्वचिद् द्वयोः क्वचित् त्रिचतुराणामिति यथायोगम् । संसृष्टेश्च विषयभेदेन त्रिरूपत्वेऽपि संसृष्ट्या चैकरूपयेति प्रागुक्तं न विरुध्यते, नैरपेक्ष्यलक्षणस्य रूपस्याभिन्नत्वात् । वक्ष्यमाणसंकरस्तु स्वरूपेणैव नानात्वेनावभासत इति युक्तस्तत्र त्रिरूपताव्यवहारः ।

† Here the passage is different in wording but is taken by M. (66) p. 436. This shows that M. also borrows from S.

रुचक

पृ.

७२ (59) पूर्ववदिति – तथा ह्यत्र उपमाश्लेषस्योत्थापकतयोपकारिणी, श्लेषोऽपि तथैव, रूपकोत्प्रेक्षयोस्तैस्तु समस्तैः साक्षात् पारम्पर्येण च यथासम्भवमुपमोपकृता, तत्समकक्षतया, एवं तस्याः सचेतसां प्रचुरचमत्कृतिहेतुत्वात् ।

७२-७३(60) मुख्येऽपीति – उपमापक्षे कलङ्क उपचार एवेति । न तदाश्रयणं युक्तं, तस्यागतिकत्वात् । अतिपातिनो जवेन व्रजन्तः सारावाः सशब्दा नदा यत्र तादृशीयं तटी भासते । अभिहतो दानवानां रासः सिंहनादो येनेति शम्भोः सम्बोधनम् । सा चेयं गजसंहतिः यूथमतिपाति विशेषेण परित्रायते । अविरतेन सन्ततेन दानेन मदेन वरा श्रेष्ठा, सारा स्थिरा, वनं दयते रक्षति या [दा] देङ् रक्षणे अवनं रक्षणं ददाति या ।

७३ (61) अभिधीयत इति – यद्यपि साधकत्वं बाधकत्वं चोभयमस्यास्ति तथापि प्रधानेन व्यपदेशा भवन्तीति न्यायाद् बाधकत्वेनैवास्य तु व्यपदेशो न्याय्यः, बाधकत्वस्य बलीयस्त्वेनोत्कटतया प्रतीतेः ।

(62) स्पष्टेति । यद्यपि साङ्गमिदं रूपकमखिलवाक्यव्यापि तथापि प्रत्यवयवं रूपकस्य सद्भावात्तु तथा व्यपदेश इत्येकपदानुप्रवेशोऽस्य न विरुध्यते ।

सोमेश्वर

पृ.

३३८ (59) पूर्ववदिति । तथा ह्यत्र उपमाश्लेषस्य उत्थापकतया उपकारिणी । श्लेषोऽपि तथैव रूपकोत्प्रेक्षायाः (क्षयोः) । तैस्तु समस्तैः साक्षात् पारंपर्येण च यथासंभवमुपमा उपकृता । तदुपकृतैव सा सचेतसां चमत्कृतिं करोति ।

(60) मुख्येऽपीति । उपमापक्षे कलङ्कः । उपचार एवेति । न च तदाश्रयणं युक्तं, तस्य अगतिकगतित्वात् । अतिपातिनो जवेन व्रजन्तः सारावा नदा यत्र । तादृशीयं तटी भ्राजते । अभिहतो दानवानां रासः सिंहनादो येनेति शम्भोः संबोधनम् । सा चेयं गजता यूथं गजसमूहम् । अतिपाति परित्रायते अविरतिना संततेन दानेन । वरा श्रेष्ठा । सारा स्थिरा । वनं दयते रक्षति या, अवनं रक्षणं वा ददाति ।

३४१ (61) ......यद्यपि साधकत्वं बाधकत्वं चोभयमपि अस्ति, तथापि 'बाधकत्वेनैव व्यपदेशा भवन्ति' इति न्यायात् बाधकत्वस्यैव प्राधान्यं, साधकत्वापेक्षया बलीयस्त्वेन उत्कटतया प्रतीतेः ।

३४२ (62) यद्यपि सावयवमिदं रूपकमखिलवाक्यव्यापि तथापि प्रतिपदं रूपकसद्भावात् तथा व्यपदेश इत्येकपदानुप्रवेशो न विरुद्धः ।*

* Cf. M. (77) p. 454.

रुचक

पृ.

७३ (63) तत्प्रभेदानामिति (प्रभेदेति) तस्य प्रभेदास्त्रयः प्रकारास्तेषां भेदास्तत्तदलङ्कारयोगेनावान्तरविशेषा उत्प्रेक्षा‍वयवादयः ।

(64) विशिष्टस्येति-यत्राश्रयस्य नित्यता नास्ति नित्यत्वेऽपि हि [तस्य] न तस्यान्वयव्यतिरेकौ निबन्धनम्, नित्यस्य व्यतिरेकाभावात् ।

७४ (65) रमणमन्दिरं रतिवेश्म, रमणस्य प्रेयसो मन्दिरमिति तु व्याख्यायाम् अकारणमित्यसङ्गतं स्यात् ।

(66) एकतरस्येति । यदि तु विपरिणमने लिङ्गवचसोऽपरस्याभिसम्बन्धस्तदाऽऽभ्यासलक्षणो वाक्यभेदः स्यात् । एवञ्चाव्यवधानेन प्रकृतार्थो न प्रतीयते ।

७४ (67) असदृश इति-कञन्तत्वादेकवचनत्वं क्विबन्तत्वाद् बहुवचनान्तश्च । मधुरत्वतया भृतो धृतः, मधुरताश्च बिभ्रति । दधत इति दध धारणे इत्यस्य दधातेश्च यथाक्रममात्मनेपदैकवचनबहुवचनया रूपम् ।

(68) मज्जनं स्नानं ब्रुडनञ्च । स्फुरन्नंशुकस्यान्तो यस्याः, स्फुरद्भिरंशुभिः कान्ता (च)। मकरकेतनः कामः समुद्रश्च ।

(69) उच्चारितमिति-शब्दतः प्रादुर्भूतं यथा प्रत्यग्रेत्यत्र विविक्तकान्तत्वादि ।

(70) केवलस्येति असमासस्थस्य, समासत्वेऽसौ योग्यताद्यपि प्रतिपादयति ।

(71) व्यक्तेर्लिङ्गस्य विशेषः पुंस्त्वं स्त्रीत्वञ्च । नायकतयेति (नायकनायिकातयेति) नायकश्च नायिका चेत्येकशेषः ।

*

सोमेश्वर

पृ.

३४२ (63) तत्प्रभेदेति । तस्य संकरस्य प्रभेदास्त्रयः प्रकाराः, तेषां भेदास्तदलंकारयोगेन अवान्तरविशेषाः ।

३४३ (64) विशिष्टस्येति । यत्र आश्रयनित्यता नास्ति नित्यत्वं हि यस्य न तस्य अन्वयव्यतिरेकौ निबन्धनमित्यस्य व्यतिरेकाभावात् ।

(65) 'रमणमन्दिरं रतिवेश्म' । 'रमणस्य प्रेयसो मन्दिरम्' इति व्याख्यायां तु 'अकारणं' इति असंगतं स्यात् ।

३४५ (66) यदि तु विपरिणामेन लिङ्गवचसोरपरस्यापि संबन्धस्तदा अभ्यासलक्षणो वाक्यभेदः स्यात् । द्वे वाक्ये स्यातामित्यर्थः । एवं च व्यवधानेन प्रकृतोऽर्थो न प्रतीयेत ।

३४६ (67) 'असदृश' इति टगन्तत्वाद् एकवचनान्तं, क्विबन्तत्वाद् बहुवचनान्तं च । 'मधुरतया भृतो धृतः मधुरतां बिभ्रती च' । 'दधते' इति एकवचनबहुवचनाभ्याम् । Elaboration of the point

(68) मज्जनं स्नानं ब्रुडनं च । स्फुरन्नंशुकस्य अन्तो यस्याः, स्फुरद्भिरंशुभिश्च कान्ता । मकरकेतनः कामः समुद्रश्च ।

(69) उच्चारितमिति शब्दतः प्रादुर्भूतं, यथा 'प्रत्यग्रे'त्यत्र विविक्तमूर्तित्वादिति ।

३४८ (70) केवलस्येति, असमासस्थस्य । समासे तु असौ योग्यताद्यपि प्रतिपादयति ।

३४९ (71) व्यक्तेर्लिङ्गस्य विशेषः पुंस्त्वं स्त्रीत्वं च । नायकतयेति । नायकश्च नायिका चेति एकशेषः ॥

रुय्यक

पृ.
७४ (72) अन्येऽपीति - तद्यथा विरोधस्यासम्भवो यथा।
या घर्मभानोः to पटीयसी॥
इत्यत्र घर्मभानोस्तनयात्वादीनां शीतलत्वादीनाञ्च धर्माणां भिन्नाधारतया विरोध उक्तः। स च न सम्भवत्येकाश्रयतयैव तस्योत्पत्तेः, अन्यथाऽतिप्रसङ्गः स्यात्। यद्यपि यमुनायास्तज्जलादानाञ्च तात्त्विकमेकत्वं तथापि शब्दसमर्पितमेतेषां नानात्वमन्वभिभूयते। अयं च विरोधः शाब्द एवेष्यते। तथा च तेषां भिन्नाश्रयतया तदवस्थ एव तस्यासम्भवात्; स चाभिहितवाच्यत्व एव पर्यवस्यति, एकाश्रयतया विवक्षितानां तेषाममुना वाक्येनाभिधानादिति।†

सोमेश्वर

पृ.
३५०-५१ (72) अन्येऽपीति।
N. B. after giving eight illustrations of other अलंकारदोषs S. gives the one given by रु. पृ. ३५१ विरोधस्य असंभवः यथा— या घर्मभासस्तनया to पटीयसी॥
अत्र विरोधस्यैकाधारतयैव उपपत्तिरित्युक्तम्। ततो घर्मभास्तनयात्वादीनां शीतलत्वादीनां च धर्माणां भिन्नाधारतयोक्तौ विरोधस्य असंभवः॥ ननु तस्या नद्या जलानां च तत्त्वत एकत्वमिति न दोषः। सत्यम्, शब्दसमर्पितं नानात्वमनुभूयतेऽयं च विरोधः शाब्द एवेष्यते॥†

---

† These parts of the Samketas of R. S. and M. are interesting as showing a progressively intelligent way of finding new illustrations.

काव्यप्रकाशवाचनायाः पाठान्तराणि

A = Palm-leaf ms. of Jesalmer.

B = Paper ms. of Gujarat Vidyasabha, Ahmedabad.

C = Kāvyaprakāśā with the Saṁketa of Maṇikyacandra, A. S. S. 1920, Poona.

D = Kāvyaprakāśa ed. by Jhalkikar 4th edition 1921, B. O. R. I. Poona.

उल्लासः १

A in the middle of the board काव्यप्रकाशालङ्कारः

B काव्यप्रकाशः

A ॐ० ॥ ॐ नमो गणपतये ।

B श्रीगणाधिपतये नमः ।

1 B °नुचिरां

2 B धर्मादि

3 C. D. insert तादृशी between तैः and ब्रह्मणो

4 C. D. एव···माह

5 B भूतः

6 C. D. विशेषः कश्चित्

B separates the sandhi °वा उप°

7 B °मात्मनोवृत्त

C. D. °मात्मकलो

Read no. 7 on वृत्त°

8 B °खड्गादेर्ले°

9 C °दीनां च विम°

B विमर्शाद्युत्पत्तिः

10 B प्रवृत्तिः । इति त्रयः

11 B व्यत्यस्ताः

12 C च

13 A also might have in the beginning °अधमशब्देन like B

C अत्र तदङ्गितकमेव

14 C प्राधान्येनाधमपदेन व्य°

15 B भिद्या°

Read no. 15 on भिद्यादु

16 C adds वाच्यचित्रं यथा । विनिर्गतं ·········

17 A. B. drop इति श्री

D drops श्री

उल्लासः २

1 A रूपं

2 C नां परस्परसमन्व°

3 C घरोवअरं

4 B. C. तुमए

5 B. C. सुहअं

6 B मज्जु

7 B. C. कए

8 C विरइअं

9 B. C. तुमए

10 B मम

11 B उव

12 C णिप्पन्दा

B णिप्फंदा

13 B बिसिणी

14 C बलाआ

15 B. C. णिम्मल

16 B. C. मरगअ

17 B परिट्ठिआ

C परिट्ठआ

18	B. C.	सुत्तिव्व
19	A	निःस्पंद
20	B	omits च
21	C	कयाचित्
22	B. C.	स्वरूपमाह
23	B	adds पुरुषस्य after संकेतस्य
24	B	शब्दार्थविशेषप्रतिपत्तेर°
25	A. B.	°श्चलतीत्यादीनां for चलो डित्थ इत्यादीनां
26	B	स्तु
27	C	द्विविधः
28	A	°पि द्विविधः सिद्धः
29	C	द्विविधः
30	C	पदार्थप्राणदो
31	C	तत्र
32	B	drops नहि
33	A. B.	°पेण न गौ°
34	A	र्नागौ –
35	B	drops तु
36	B	drops सोयं
37	B. C.	°ज्ञारूपो यद°
38	B. C.	परमाण्वादीनां
39	B	drops तु
40	B	इत्यभिन्ना
	C	इत्याद्यभिन्ना
41	B	तंडुलपाकादि
42	C	पाकत्वादि
43	B	drops च
44	A. B.	°द्यमाने डित्थाद्यर्थे वा –
		Read no. 44 on डित्थाद्यर्थेषु
	B	has the same reading as A except च instead of वा
45	B	प्रदर्शितं
46	C	घोषाद्याधारत्वा°
	B	घोषाधिकरणत्वा°
47	A	drops घोष
48	C	न तथा
49	C	श्रुतिसंचोदितम°
50	B	drops तु
51	C	°करणत्वसि°
52	C	मिश्रितत्वात्
53	B	प्रतिपत्तौ
54	B	साध्यवसानिका
55	A. C.	°थोऽभि°
56	B.	adds the following as the first line–मानांतरविरोधे तु मुख्यार्थस्य परिग्रहे
57	C	तथात्वे
58	B. C.	सिद्धेर्लक्ष°
59	B	drops च
60	C	°ण पूर्वे आरोपा°
	B	°क्षण पूर्वमारोपा°
61	B	°योश्चान्य°
62	C	प्रयोजनम्
63	B. C.	°न्द्रार्था स्थूणेन्द्रः
64	B	क्वचित्तु स्व°
65	C	adds from अनायासेन to प्रतीयते ।
66	B. C.	अव्यङ्ग्या, गूढव्यङ्ग्या, अगूढव्यङ्ग्या च ।
67	B	चेति
68	C	°क्षणयाशब्द°
69	C	°प्रतीतिरपि
70	B	बाधा°
71	B	तदा°
72	B	बाधा°
73	C	एवमपि
	B	प्रतिपत्ति
75	C	व्यंजनयेत्याह
	B	व्यंजनेनेत्यत आह
76	C	°निगदेन
77	B	drops ये
78	B. C.	°ध्वनन द्योतनादि°
79	B	°दशा
80	B	drops इत्युच्यते
81	B	°रथी
82	B	°पुरारेरिति°
83	C	चित्रभानुर्विभातीति
	B	चित्रभानुर्विभातुर्विभातीतिदि°
84	B	दिवा

85	A	इव न
86	B	°मेत्तत्थणिया
	C	°त्थणिआ
87	A. C.	°वस्था
88	B	हिं दिअ हेंहिं
	C	हि दिअ एहिं
89	B	adds आदिशब्दात् after नयादयः
90	B	°रर्थांतरेमिधाय
91	B	°निर्यत्रिते
92	B	यत्किञ्चिद्°
93	C	च

उल्लासः ३

1	B. C.	अइपिहुलं°
2	C	तुरिअं
3	B. C.	अस°
4	B	°दूसहा°
5	C	ओण्णिई
6		no variant
7	C. D.	°सिअं
8	B	°भायणीए
	C	°भाइणीअे
9	B. C.	णिमिअं
10	B. C.	एण्हि°
11	B. C.	स च्चेअ
12	B. C.	कबोला
13	A	कदलि
14	B	रत्यर्थं
15	C	अणइमणा
	B	अणोल्लमणा
16	C	सअलम्मि
17	B	संझाए
18	C	°झाइ होइण वहोइ
19	B. C.	एमेअ
20	C	°ति कयाचिन्नि°
21	B	प्रदेश
22	C	°स्त्वयाऽभिसार्यतामि°
23	B	°विद्योत्यते (for निवेद्यते)
24	B. C.	°भाइणी
25	C	अहर्क
26	C	जेव्व
27	B	मुणसि
28	C	तदाहं
29	B. C.	समासादितं
30	B	°स्तब
31	A	drops one पुनः
32	C	भेदेनानेन
33	A	drops from द्विकमेदे to अहिसि ।
	B	drops from द्विकमेदे to यथा and retains the verse.
34	B	एत्त
35	B	दिवसअं
36	B	पुलोएहि
37	B	अंधअ
38	B	महणु°
39	B	drops हि
40	B	drops अर्थो

उल्लासः ४

1	A. C.	सत्येवाविवक्षितं
2	B	drops च
3	B	समुदायो
4	B	क्वचित्पुनरनुपद्यमानत्वादत्यंतं
5	B	यत्र
6	B	°मेव सखे सदा
7	C	लाघवान्
8	B	°प्रेयस्विदूर्जस्वित्समा°
	C	°प्रेयऊर्जस्वित्समा°
9	B. C.	रसस्वरूपमाह
10	C	°भावाश्च कथ्यन्ते
11	C	°द्रसस्य निष्पत्ति°
12	C	कृतो
13	B	drops अपि
14	B. C.	बाधे
15	B	drops च
16	B	समूढकर्पूर°
17	C	गता
18	B	°मद्य
19	B	तरलायत°

20 B वासनया
21 C °दादिभिः स्थाय्यनुमाने°
22 B कारकत्वादि°
23 B ममैवै न
C ममैवैते न
24 B. C. शत्रोरेवैते
25 B. C. °स्यैवैत
26 B. C. संबंधि
27 C नियमानध्यवसायात्सा°
28 B प्रमातृता
29 B ब्रह्मास्वाद
30 B °पितत्संभव°
31 C तस्यासंभवात्
32 C लौकिकसिद्ध°
33 A अवबाधशालि°
C °शालिपरिमित°
34 C वेद्यान्तरसंस्पर्श°
35 C प्रत्येयोऽभिधी°
36 B. C. च प्रमाणं न
37 C सविकल्पकम्
38 B °भावरूपस्य
39 B °तामवगमयति
40 B. C. करुणभयानकयोः
41 C °लिता एव
42 C कान्तः instead of पाण्डुः
43 B प्रचलितं
44 B विभावानुभावानामौत्सु°
45 B drops च
46 B °णां च
C केवलानामत्र
47 B करुणा
48 A omits °लिङ्गनाधर°
B °स्वरालोकनालिंगनपान°
instead no. 47 read no. 48.
49 B °स्थली
50 A omits °हरणानि–
A seems to write उदाहरणानि in an abbreviated form like उदा°
51 B सहसा
52 C प्रथमापराधसमये
53 B °पोलपालिगलितैः
54 C °ह्लोलोदकैर°
55 no variant.
56 B सर्वैः
57 B प्रस्थितं
58 A omits °हरणानि
59 B प्रहित
60 B. C. देवताः
61 A विजहति
C विजहित
62 B सायकाः संपतंतः
63 B. C. किंचिद्भ्रूभङ्गलीला°
64 B बद्धदृष्टिः
65 B. C. दर्भै°
66 B °क्षुतित्वा
67 A पृथूच्छोपभूयांसि
C पृथूत्सेधभूयांसि
68 A भ्रान्तश्चार्ज्यंत्रनेत्रात्
C भार्तः पर्यस्तनेत्रः
69 A बताधिकारः
B बतावरातः
70 C प्रबोधो°
71 A निर्वेदः स्थायिभावः शान्तोऽपि नवमोऽस्ति रसः
B निर्वेदस्थायिभावः शान्तोऽपि नवमोऽस्ति रसः
Read no. 71 on निर्वेद
72 B क्षेणे
73 C यान्ति
74 A in the margin कदारण्ये पुण्ये
B. C. °त्पुण्येरण्ये
75 B drops one शिव
76 B व्यक्तः
77 A उदा० B उदाहरणे
78 B. C. यदि मे न रोचते
79 C अक्षित व्य०
80 A. B. ततः instead of पुरः
81 B. C. चाटुशतकै°
82 C दरिद्रीकृतः

83 A. B. omit च
84 A स्मेर. B स्मेरयौवन. C सस्मेर°
85 B °दाहर्तव्याः
86 B. C. युग instead of तट
87 C संश्लिष्टा
88 C –शान्तव्या च
89 C सद्यो मानपरिग्रहग्लपि°
90 C °स्तत्क्षणं
91 B ऐष
92 C संधिः
93 B दोषाणामुपशांतये श्रुत°
C दोषाणां प्रशमाय नः
94 B omits शबलता
A gives शबलत्वं in the margin
95 B °क्ता चोदाहृता च
96 B omits from जान to °दिना।
97 B. C. भावशां°
98 A omits from अर्थशक्ति to व्यंग्य
99 A कृष्णकरवालनवाम्बु°
100 A °त्कर्षैर्हर्षदः
101 A पांथियण
102 B. C. एत्थ
103 B उण्णय
C उण्णअ
104 B °पयोहरेपे°
105 B तदास्वेति
106 B व्यज्यते
107 B °द्रवे°
108 B after °त्मकः B writes अर्थो द्विविधः स्वतः संभवी इदं प्रथमकल्पितश्चेति। तत्र स्वतः।…
109 B प्रतिभासमात्रेण
110 A. B. °रमणी° Read no. 110 on °रोमणि°
111 B अग्गिमो
112 B मऊ
113 A. B. इअ
114 B ममैव भोग्य
115 C प्रणिहिते तु करे
116 C °रेकालंकारः
117 A °कवाट°
118 B संक्रान्ति°
119 B ऊष्ठविद्रुम°
120 B °र्निवर्त्यतामिति
121 B °क्ष्यत इत्युत्प्रेक्षा वा। एषू°
C °त इत्युत्प्रेक्षा चेति।
122 B °शङ्काः
123 A मोडिए तेण समरम्मि
B तेण समरम्मि
124 A. C. जअ
125 B कंदरांहि
C कंदरा हि°
126 B तस्सदिठं कण्ठअम्मि
127 B °यः पलाय्य
128 C हेतुरलंकारो
129 A. B. पलाय्य
130 B सुज्ज अम्मि
131 C माणं सिणीण
132 B °पीलणभीऊव्व
C पीलणभीरुव्व
133 B तत्र जृंभत इति
134 B. C. ठेरं
135 A कयिव
136 B भुवण
137 A चिअ
138 C adds व्यञ्जकः
139 B संभोअसिण्णोरई
C मेखलासु खलिआ संभोअखिण्णोरयी
140 B कबलणे पत्ता
C कवलणे पत्ता
141 B दरित्तणं
142 B एण्हिं मलयाणिला
C एण्हिं मलआणिला
143 B °संवग्गिक्किणो
C °णीणांसाससंम्पक्किणो
144 B चिय C चिअ
145 A. B. omit वायवः
146 C कुर्वन्तीति
147 B पिय°

148	B	खणखणम्मि
149	B	ऊसरिअं
150	B	drops अपि
151	B. C.	°दर्शनस्य
152	C	वा
153	B	उल्लोल्ल C ओल्लोल्ल
154	B	एहि तुह एहिं तुह
155	B	लोअणेसु महदिणं
	C	लोअणेसु मह दिण्णम्
156	B	पसाऊ. C पसाओ
157	B	मिया।
158	B	गोपायसि
159	B	°भरितए
160	B	अमायंती
161	B	अणु
162	B	कम्मा
163	B	°पि°
164	B	drops वक्तृ
165	B	drops यथा
166	A. B.	drop अत्रोपमा व्यङ्ग्या
167	B	अस्य ध्वनेः
168	C	भेदत्वेन
169	C	°दर्शेत्यत आह
170	B	°म्भश्चेति
171	A	दर्शन instead of अवलोकन
	B	drops अवलोकन
172	A	°दय ऋतुषड्वर्ण
	B	°दयर्तुषङ्क्वर्ण
173	B	°भेद इत्येकस्यै
	C	°भेदा
174	B	°णनान्येषां
175		no variant
176	A. B.	drop अपि
177	A	°प्रकाशत्वे
178	B	°यंत्रणात्व Read no. 178 on निर्यंत्रणी
179	C	°दिमिरर्थान्तरसं
180	C	जहवि तहवि धीराणम्
181	C	हिअअवअस्स
182	B	वयसा
183	A. C.	ज्वरोपमम्

184	A	°प्रकाशत्वे
185	C	नृपभीम
186	B	°निष्यंदं
187	C	समालेपितं
188	B	°विसब्ध°
189	B	परिचयात्
190	B. C.	क्रान्तासीति
191	A	परं
192	B. C.	°रूपभोक्तव्यानि Read no. 192 on °रूपभोग्यानि
	C	दुष्कृत
193	B	विनियोग
194	A	°चिंतानाह्लादा. C चिन्ताह्लादा°
195	B	भव
196	A	सर्वपदाद्योत्यं
197	B. C.	इअ
198	B. C.	वअणं. C कुणह
199	B	रूपकेण तथा त्वयास्य
200	B	drops तथा
201	C	च
202	B. C.	राईसु···ललिअ
203	A	चिअ
204	A	विअभंतं
	B	विअंभंतो
205		No variant
206	B	अपि भवन्ती
207	B	°कअत्थिएण. C कदत्थिएण
208	B	°वअंसएणं विरुद्धजाई चलसे···
209	A. C.	लक्षणहेत्व°
210	C	इति ण चलइपदद्योत्यं वस्तु
211	B	खंधाहु. C खंधाहि
212	C	सुरअसंगरे
213	B	ण मुहुराकर्षणे तथा
214	C	खन्धपद°
215	C	मिअङ्कस्स सुहअ
216	B	को तुं
217	B	पउसर°
218	B. C.	ण वेत्यादि
219	B	पऊसे
220	A. C.	व्यज्यत
221	B. C.	णिहुवण

222 B अङ्कपाली
223 A. B. सहीए
224 B णिवारिऊच्चिअ. C णिवारिओव्विअ
225 B उच्चेरंतो. C उच्छेरन्तो
226 B तदा कहिं
227 B हारच्छेदानंतर°
228 A. C. कहंपदगम्यः
229 A पलोइऊण. B पुलोविऊण
230 C खन्धे
231 B णत्थोत्ति C णट्ठोत्ति
232 B किंत्ति
233 A. B. तदपरं
234 B किंत्तिपदव्यंग्यं
C द्योत्यम् instead of व्यंग्यम्
235 C तुमं
236 B कुडेन
237 B °दिट्ठी
238 C °मिसेणअ
239 A गरुओत्ति. B गरुऊत्ति
240 C पाडिअ
241 A. B. विभिण्णो
242 B नदीतीरे
243 A. B. द्वारोपघात
244 C पूर्वकं
245 C °स्पर्शन°
246 C जोह्णाइ
247 B. C. विइण्ण
248 C ण्णउसुअ
249 B बुद्धयु वि···बहुअहइहरइतवहिअयं
C णवोढव्विअ
250 B चास्मानु°
251 A. C. परबहु°
252 A. B. वाक्यप्रकाशे
253 A °प्रकाशो
254 B Between 94 aad 95 sūtras B. adds कंकालबहले घोरे सर्वप्राणिभयङ्करे ।
255 B After sūtra 95 B. adds प्रियो वा यदि वा द्वेष्यः
256 A °स्त्यज्यध्व°
B °त्कथं मूढास्त्यजध्व°
C °ला अत्यक्ष्यध्वमशङ्किताः
The reading of A has been accepted in the text after emending i. e. changing त्यज्यध्वम° into त्यजध्वम°
257 B चेकादश
258 B. C ग्रंथविस्तरभया°
259 C लक्षणतो°
260 B °अणिअं
C रइकेलिहिअणिअ
261 A. C. °लअरुद्धण°
262 A. C. °चुंबिअं
A °पव्वयि परिउं विअं
263 C °रणैव व्यापारेणास्य
264 B gives तथा instead of यथा वा
B प्रेयान्सा°
265 C द्वाराणीति
266 C पुरि पुरि विनिवृत्ता
267 A instead of अत्र लिख··· इति, भूमिमिति A writes अत्र न लिखतीत्यपि तु प्रसादपर्यंतमास्त इति । तथा आस्त इति नत्वासित इति, भूमिमिति। B. writes अत्र न लिखतीत्यपि तु प्रसादपर्यंतमास्त इति । तथा तिष्ठा आस्त इति नत्वासित इति भूमिमिति ।
268 C पूर्वकमपरं किं°
269 A drops संबन्धस्य यथा
270 C रुहम्मि
B गामानुअम्मि
271 C °महे°
272 B. C. ताणं···कंठाणं°
273 B. C. ताण भणिआणं
274 B एरिसिअं
275 A. B. निपातस्य
276 B प्राधान्यं गम्यते
277 B अत्र हि दिवसेनेति तृतीया

278	B	ललितलुलितै°
	C	ललितललितै°
279	B	°द्योत्यस्य च
280	A	हत
281	C	सर्वनामप्रातिपदिक°
282	B	drops व्यञ्जकत्वं
283	B	°मौलिमयं
284	B	drops इति
285	B	धनुः
286	C	वसतीति त्वादि
287	A	एषां. B °प्येषां
288	A	drops प्राप्नोति
289	B	निरूपणे
290	A	°भेदाः ॥ ४२ ॥
291	C	योजने
292	C	निरूपेण
293	A	दिग्मात्र
294	B	खण पा°
295	B	देअर जायाए सुहअ
	C	देअर जाआए सुहअ
296	B. C.	भणिआ
297	C	वलहीधरम्मि
298	B	अनुणिज°
299	B. C.	वराई
300	B. C.	लक्षणेर्था°
301	B	omits तथा
302	B	कठोरहृयो
303	B	सहे
304	B	°ध्वन्यो । संकरः ॥
305	A	°दाहार्यं ४३

उल्लासः ५

1	A. C.	°रेत्य
2	B	सूचीर्व्यध°. C सूचीव्यध°
3	B	छटाभ°
4	B	instead वाच्यस्य, there is स्वार्थस्य °तिरस्कृतस्वार्थस्य
5	B	instead प्रापितः there is लंमितः – °लोकान्तरं लंभितः।
6	A	मूलानुष्ठान रूपस्य – अनुष्ठान seems to be a clerical mistake for अनुस्वान
7	B	युक्तः पाठः
8	C	in the bracket वाक्यार्थी-भूतस्य
9	B	रसादिरनुरण°
10	B	adds यथा after वा
11	C	रसनो°
12	B	समिद्धये
13	A. B.	drop भावस्य
14	A. B.	स्मृत्यौत्सुक्यसमदैन्यविबोधौत्सु-क्यानां
15	B. C.	°दयभावसंधिभावशबल°
16	B	प्रधानेन
17	A	व्यपदेशो भवतीति
18	B	तृष्णाकुलभिया
19	A	°भूलोनुरणनोपमो रामेण
20	B	भुजगारूपणस्य वाच्यसिद्धिकृत्
21	B	खेदांहसन्नाश्लिष्य°
22	B	मंत्रणेति वाच्यस्य
23	B	विश्लेषभीरुता
		Read no. 23 on विच्छेद्
24	A	कुर्यादिति श्लिष्टं. B कुर्या इति श्लिष्टं
25	C	अत्राधरं
26	C	किं वा विलो°
27	C	°णं वाच्यं
28	A	drops काकाक्षिप्तं यथा
29	B	संधि
30	C	adds असुन्दरं यथा
31	B	°रकुडुंगु°
32	A	उण
33	A. C.	घट
34	B. C.	बहुए
35	B	अंगाइ
36	B	omits दत्त
37	A. B.	°श्रयादिति
38	A	°कदशा° B °कदशा°
39	B	°र्ध्वनैस्तै° Read no. 39 on °र्ध्वने°

40	A	स च प्रभेदैः
41	B	पुनरप्युद्योतते बहुधेति ।
42	A. B.	भेदप्रभेदगणने
43	A. B.	drop तु
44	B. C.	°विचित्रं विचित्रं चेति । अविचित्रं वस्तुमात्रम् ।
45	B	drops तस्य
46	B. C.	वाच्ययोर्वस्तु°
47	B	°ले तु नियंत्रणे (i. e. drops अभिधाया)
48	B	drops च
49	B	°मूले तु विशेषे°
50	B	°योग्यतासंनिधिवशात्परस्परं संसर्ग । Read no. 50 on °निधियोग्यता
51	B	यत्रापदार्थो विशेषरूपो
52	A	बुद्धेः शक्तिं B बुद्धे छक्तिं
53	B	°पत्या संबुध्यन्ते
	C	°पत्त्यावबुध्यन्ते
54	A	°दशा देवदत
	B	दशा देवदत्त
55	B	°नयेत्युत्तमवृद्ध°
56	A. C.	प्रयोगादेशा°
57	B	नयत्यनेनास्माद्वाक्या
58	B	°लक्षणं°
59	B	drops देवदत्त गां°
60	B	°प्रत्ययेन तान्वे°
61	B	इत्यविशेषभूतो
62	A. C.	प्रकाशत्वान्न°
63	B	°त्वं ज्ञातस्य कथं
64	A. C.	°कानुसारेण
65	A. B.	दीर्घदीर्घो व्यापार
66	B	तदतात्पर्ये ज्ञास्तात्पर्य
67	B	°क्रियाभिर्निर्वर्तक°
68	B	क्रियासंबंधात्सा०
69	B	प्राप्नुवन्तीति
70	A. C.	णांतरात्सिद्धे°
71	A. C.	कारणत्व०
72	B	°परार्थेपि
73	C	भुङ्क्ष्व

74	B	इत्यत्रतद्गृहे
75	B	drops अत्र तात्पर्य °र्यमिति स एव
76	A. B.	°स्य कुद्वाक्यत्वे०
77	B	यावानर्थोवगम्यते तावति
78	B	शब्दस्यैवाभिधैव
79	C	°स्ततः कथं
80	C	कस्माल्लक्षणा
81	A. B.	दीर्घदीर्घाभिधा–
82	C	कस्माच्च
83	B	विधेरेव सिद्धं
84	B	°त्येकंतवर्तिनी
85	B	तदसाधु°
86	B. C.	°वाचकभावव्यति°
87	B	°व्यंजकाश्रयणे
88	B	सपत्नः
89	B	°वर्तामाह
90	B	°तोद्य प्रेयानि°
91	B. C.	°णामुत स्मरस्मेरविलासिनीनाम्
92	A. C.	°न्यतर
93	A	निहितो
94	C	शब्दतदेकदेश
95	C	°स्य शब्दानुशासन
96	C	°पदेश्ययोः
97	C	ण···पिआइ
	B	ण होइ रोसो पियाए दट्ठूण सव्वणं
98	B	°पउपमधारिणि वारिअवामे सहसु एण्हि
	C	°पडमग्गधाइणि वारिअवामे सहसु एण्हिं–
99	A	नीलानीलादौ
100	B. C.	तु न तदपेक्षत्वमिति Read no. 100 on तु
101	C	कुडङ्गित्यादौ
102	C	तामिति
103	A	नियतसंबंध अनियत°
104	B	drops संबद्ध° °बन्धः संबन्धश्च
105	B. C.	एत्थ
106	B	णुमज्जइ

107 B दिअसर्अ पुलोएहि
C दिअसअ पंलोएहि
108 B. C. पहिअ
109 B रत्तिअंधअ
C रतिअंधअ
110 A णुमज्जिहि
B महणुमज्जिसि C मह
111 B वाच्य
112 B drops न
113 A. C. °वलम्बनेनापि
114 B प्रसिद्धेः अभिधा°
115 B. C. बह्यं
116 C कमलटुम्
117 A. C. अणं
118 B. C. सूर्यात्मकता
119 B सूर्यास्तमयेन पद्मस्य°
C सूर्यास्तमयः । तेन पद्मस्य°
120 B °स्यदर्श°
121 B °दर्शनेन निर्यंत्रणं
C दर्शनेनानिर्यं-
122 C °मिति
123 A. B. drop ननु
Read no. 123 on ननु
124 B drops च
Read no. 124 on च
125 B °बंधाव्यंग्य
Read no. 125 on संबद्धाद्
126 B °भावोभवत्यप्रतिबंधे°
127 B. C. °ज्ञिज्ञान°
128 B. C. वीसद्धो
129 B सुणऊ···मारिऊदेण
130 B निर्देशेन
131 B °गेणान्येनैवं भूतेन
132 B धीरत्वेन
133 B प्रमाणमस्ति
134 B अर्थेनातिप्रबंधा°
135 B °सिद्धिश्च
136 B अत्रश्चात्रैव
137 B °हायानामेव व्यंजक°
138 B चाधमत्वं
139 B इति वादिनो व्यक्तिवादिनः

उल्लासः ६

1 B °तिश्चित्रार्थशब्दयोः
Read no. 1 on स्थितिः
2 B न इति ।
3 A. C. °तामिव न त्यजन्ति
4 B omits रस
5 B °व्यंग्यमेव तत् काव्य-

उल्लासः ७

1 A. B. कष्ट instead of दुष्ट
2 B भङ्ग
3 C has bracket for व्या··· हीनं
4 B पांडुर°
5 A अत्र नाथत इति
6 C पदं विहितम्
7 B अत्र याचनार्थः
C अत्र तु याचनमर्थः । तस्मात् 'अनुनाथति स्तनयुगम्' इति पठनीयम्
8 No variant.
9 C इति पुंस्याम्नातोऽपि
10 No variant.
11 B °लीकरणरूपो
12 B omits पाद°
13 B न instead of च
14 C °मित्यर्थे
15 C °दित्यर्थे
16 B. C. °थवा नति°
17 A तदा instead of भवान्
18 C किं वा नम°
19 C यत्केवले in the bracket
20 B °न्धनम्
21 B प्रयुक्तः
22 B omits यत्
23 B मुखम् । क तपनीय
24 A. B. नेयार्थं काश्चित्नैव त्वशक्तित इति । यन्निषिद्धं···
C नेयार्थं ("निरूढा लक्षणाः काश्चित्सामर्थ्यादभिधानवत् । क्रियन्ते सांप्रतं काश्चित्काश्चिन्नैव त्वशक्तितः ।")

25	C	चपेटापातनेन
26	C	यतः in the bracket
27	B	omits चन्द्रस्य
28	B	°द्रुमभासि°
29	B	°गलगलद्र°
30	B. C.	°ङ्घ्रि°
31	B. C.	यथा वा
32	C	°म्बादवरोपयन्ती पुनः
33	B	°रपुष्पकाञ्चीम्
34	C	अत्र द्वितीयत्वामात्रमुत्प्रेक्ष्यम् । मौर्वीं द्वितीयामिति युक्तः पाठः ।
35	C	यथा वा
		Read no. 35 on च
36	C	यथा वा
37	B	न नाम शरासनम्
38	B	°वादेनात्र किञ्चि°
39	B	°त्रस्ततानुवादेना°
	C	त्रस्तत्वाद्यनु°
40	B	°त्म गोपनादि
41	C	प्राप्त
42	C	यथा वा
43	B	°संतानशून्यात्मन°
		Read no. 43 on संतान
44	C	has इन्द्रवरुणभवेत्यादिना पुंयोगान्ङीप्प्रत्ययेन भवस्य पत्नी भवानी ।
45	A	°णोदा ॥
46	B	°ध्येष्ट
		Read no. 46 on °ध्यैष्ट
47	A	अनेल मूकबधिरो
48	C	इन्द्रः । अनेडमूको मूकबधिरः
49	B	°यकादि शब्दाः
50	C	चन्द्रयशः पर्यायाः
51	B	वनप्रास्त°
52	B	शरत् ज्योत्स्ना°
53	B	°तार्थे
		Read no. 53 on °चितार्थः
54	B	धामापि
55	A. B.	omit आङ्
56	B	च पत्राणामवाचकाः
57	B. C.	तत्तत्प्रहरणोत्साह°
58	B. C.	प्रहरण
59	A	प्रबन्धनं
60	B	°मिति विव°
61	B	omits किं
62	C	सुरकम्पनामार्गणभूतिशब्दा°
63	B	किं वा मदिरा
64	B	मात्रप्रतीतत्वादप्रतीताः ।
65	A	भल्लादयः
66	B	रजस्तमा
67	A	वेदय
68	A	हततमाः
69	B	वीक्ष्य
70	B	उच्छूनतामात्रं
	C	उच्छूनत्वमात्रे
71	B	विलासवेल्लनम्
72	A. B.	क्रमेणोदा° ।
73	B. C.	श्वापदचेष्टितं
74	C	वाक्यानुगत
75	C	वाक्यानुगत
76	B	यथा
77	B	°पदयो°
78	B	°नेपि द्वयमपि सामर्थ्यात्
79	C	°त्क्वचिद् द्वयमपि गम्यते
80	C	°तेऽस्ति
81	B. C.	°स्यात्
82	B	स्वात्ममात्रपरिपूरिते
83	B	drops च
84	B	drops हि
85	B. C.	°स्तच्छब्दः
86	B	महसा
	C	महसां भाजनं विश्वमूर्ते
87	C	धुर्यां
88	C	भृशं धेहि
89	B	इत्यत्र
90	C	यथा वा
91	C	विरुद्धामतिकृद्यथा
92	B. C.	विरुद्धार्थप्रतीतिः
93	A. B.	°णोदा°
94	B. C.	°त्संगमेनाङ्गनायाः
95	B	अथवा
96	A. C.	°मर्थोत्तर°

97 A भव्य instead of लभ्य
98 B कष्टं
99 C क्षीबार्थे
100 B भल्लाना°
101 B drops दशामिति
102 B अनर्थकम्
103 C न च । अलसवलितैः and gives the whole verse (202).
B न चालसवलितैरित्यादि°
A. B. drop verse (202).
104 B पदमनर्थकं
105 B फलस्याभावात्
106 A. C. शण्ठः
107 C °दावुत्तरपदमेव
108 C °दौ पूर्वपद-
109 B दर्शिता
110 B. C. °मममतपरार्थं
111 B तद्विपरीतत्वं
112 C प्रतिकूलवर्णम्
113 B. C. रौद्रे यथा
114 B. C. मे instead of नो
115 B द्रोणाय निःक्रोधनः
116 B omits हि
117 C विसंधि संधे°
118 C तत्राद्यं
119 B आद्यो
120 B. C. दधाति
Read no. 120 on °र्द्युतिं°
121 B उचितार्थवृत्ती
122 C पदमेत्य
123 B उदात्त
124 B ° नर्घ्यः
125a B. C. स्वेच्छया
Read no. 124 a on स्वेच्छा
125 A हेतुकत्वेन
126 B अत्र द्वयोरश्लीलता
127 B °त्रवीली
128 B पर्वते
129 B No variant.
130 B omits तद्वत्तवृत्तम्
131 A. B. क्रमेणोदा ।
132 C मधुरमधिकं
Read no. 132 on मधुरमथ
133 C स्यादित्यश्रव्यम्
134 C अत्र हारिशब्दः
135 B. C. मनसामस्त्राणि
136 B गुरुत्वं
Read no. 136 on गुरुतां
137 B °सदसि°
138 C अविरुद्ध
Read no. 138 on अनिरुद्धं
139 B °युक्तिः
140 B. C. जरास्वपि
141 B omits कृतं
142 C कथितपदं
143 B परिमलन
144 B कथय सुतनु कस्य
Read no. 144 on सुतनु
145 B शेषं
146 B °श्रुगर्भैः
147 C °धूमिर्वीक्षिता शिक्षिता च
148, 149 C has brackets
150 B omits तत्
151 B. C. किं तैस्त्व°
152 C °न्वयेन यै°
153 B. C. omit तु
154 B. C. omit तु
155 C णमागतेन
156 B. C. कीर्तिरतुला
157 C gives the whole verse no 231
158 C हतो दुंदुभिः
159 B omits अत्र
Read no. 159 on अत्राध्वर°
160 C यथा वा
Read no. 160 on तथा
161 B omits from भर्तृ… भवान्याः । and after भृङ्गः adds इत्यादि

162 C भवान्याः
163 A. B. °भुतैर्मेमहतस्य
164 B. C. वीर शिशु
165 B वाक्यत्वेनै°
Read no. 165 on °वाक्यगत°
166 B °रूप्य°
Read no. 166 on °भिरूप°
167 C यथा वा
168 B. C. °निधावुपाहितां
169 C वस्तुषु
170 B. C. प्रोद्यद्
171 B. C. 'क्षणात्
172 C वाक्यान्तरस्य पदानि
173 B. C. वाक्यान्तरमनुप्रवि°
174 C मुञ्च इति
175 B. C. गतेत्यम्बुधिं
Read no. 175 on गतेवाम्बुधिं
176 A. C. भणितादि
177 C अत्र
178 C विशेषे
179 B °मिति चेहोक्तेः कथमे°
C °मिति चेहैवोक्तं तत्कथ°
180 C एकपदद्विःप्रयोग°
181 B यथा हि
182 B क्रियते
183 B ततः पदान्तर
C तदा पदान्तर
184 C अत्र···प्रयोगात्
185 B. C. वेति युक्तम्
186 A °र्थयन्ति
187 C नियता लघुता
188 B भजतो
189 B लघुताभाङ्गपदमिति तु युक्तं
C लघुतावान्न पदं नृपश्रिय इति युक्तम्
190 B निःश्रीकाः काश्चिदंतर्दिश इव दधिर इति कम्पमाना···
191 B omits च
192 C °भ्यस्यताम्
193 B विश्रब्धं
194 B वराहततिभिर्मुस्ता-
195 B विश्रांतिं° लभता°
196 C वरामुस्ताक्षतिमित्य°
197 B °मन्यत्राप्यनुसर्तव्यं
198 B omits यथा
199 C °दनन्तरं चकारो
200 B. C. पुनः
201 B. C. न्याय्यं तथा लग्नं
202 C पदयुक्तः
203 A °णोदा ॥
B °णोदाहरणं
204 B निष्यंद सरसा°
C °निस्यन्दसुरसा
205 B स्फुरति
206 B मध्यात्मक
207 B कथं प्रसन्ना भवन्तु
208 B भवंत्विति
209 C संक्षेपार्थ इति कष्टम्
210 C gives the whole verse no 259
Read no. 210 on कृतमनु
211 B omits अत्र
212 C धुरं
213 B omits पुनरुक्तः
214 B °स्य प्रथमनिर्देशो°
215 A. B. रूपकं instead of कूर्परं
216 C gives the whole verse no. 263
217 B °स्यासीन्न
218 C अत्र द्वितीयशस्त्र
219 B omits यथा वा
220 C has अत्र पादा'
221 B omits न पुनरङ्कुरोद्गमः
222 B येना
223 B °रूपतया कथितेति
224 B °रागं विना
225 B °शास्त्रविरुद्धम्
226 B omits अत्र

227 C विहितमिति°
228 B omits एतत्कामशास्त्रेण
229 C अत्र
230 B omits ततः
231 C संप्रज्ञातसमाधिः पश्चा°
232 C has एतद्योगशास्त्रेण
233 B विद्यांतरेपि
Read no. 233 on विद्यान्तरै°
234 B संप्रीणिताः
235 C °ताक्षरं हि निखिलं
Read no 235 on °खिताक्षमेव°
236 B वक्त्राम्भोजे
237 B स्मितं instead of श्रियम्
238 C ज्यौत्स्नीमिति
239 B मकराकर
240 B omits अत्र
241 B इत्यत एवात्र समाप्यं
C इत्यन्तमेव
242 C श्रुतादिभिरु°
243 C सहचरितै°
244 C has विनयेन…युक्तः
245 C gives the whole verse no 281
246 B °मुपैतु
Read no. 246 on °मपैतु
247 C सुखेन…युक्तम् after इति विधेयम्
248 B °रण मधुपश्रेणि°
249 B °ञ्चेत्यत्र विदितं…
250 B omits उद्यतस्य परं
251 A. B. हन्तुमेव प्रवृत्तस्य स्तब्धस्य°
252 B यथाशु जायते
253 B omits प्रतीतिः
254 B प्रकाशितस्तत्र
255 B °त्वात्तत्प्रकाशनं
256 B संनिकर्षादि०
257 B बोधार्थो
258 C °तेत्यर्थमस्याः
259 C प्रतीत्यर्थाः
260 B. C. लङ्केश्वरेणोषितमा
261 C इत्यत्र केवलो
Read no. 262 on इति
262 B °रत्नानामिश्रत्व
Read no. 262 on° रत्नामि°
263 B °कान्ताकर्षति
Read no. 263 on कान्ता°
264 C पुष्पविषये पुष्पशब्दः
265 B °ण त्वेनापि
Read no. 265 on °विशेषणत्वे–
266 B. C. °णत्येऽपि
267 B °प्रतीतौ गतार्थं°
268 B drops क्वचित्
269 C युक्तम्
270 B युक्तं त्वेवं
271 B °मतिद्रुतम्
272 C व्रजन्नेष
273 B खिद्यत
274 B इत्युदाहार्यं
275 C has सर्वेषां श्रुति°
276 B. C. °मद्राक्षमित्यादि
Read no, 276 on °क्षुषमद्राक्षी
277 A drops क्वचिन्न दोषो न गुणः
278 C च instead of वा
279 B रौद्रे च रसे
280 A °णोदा
B °णोदाहरणं
281 B किङ्प्रत्यय°
C क्विप्प्रत्यय°
Read no. 281 on क्षित्प्रत्यय°
282 B भूरिभीषण
283 B. C. प्राग्भार
284 B °पोंढुतं
285 C वाच्यवशाद्यथा
286 C पुरः instead of शनैः
287 B वाताभिभूतं शिरः
288 B घटयत्येष उल्ला°
289 C श्लेषादावदुष्टौ
Read no. 289 on श्लेषादौ

290 A omits ताम्बूल…स्याम्
Read no. 290 on ताम्बूल
291 B. C. °लौडिते°
292 C सूचकम्
293 B. C. प्रतीतिकृत्त्वेन व्याज…
294 C प्रतीतं
295 B विहितमतयो
296 B सत्त्वोद्रेका°
C ज्ञानोद्रेका°
297 B वेत्तु
298 B. C. °मृग्यमाणः instead of °ईश्यमानः
299 C फलुकुरं
300 C कमलकूरणिहं वहन्ति
301 B सिंदु
302 C दे instead of ते
303 C °दस्त°
304 C दे instead of ते
305 B विइइ
C विअइ
306 B °नतरं
307 B इत्यन्तै°
308 B. C. यथा वा
309 C क्वचिद्गुणो
310 B. C. °स्यानुवाद्यत्वे
Read no. 310 on विहितस्यानू°
311 A °णोदा
312 A. B. धरणीधव
313 A. C. जाअन्ति
314 A. B. एहि
Read no. 314 on सहिअएहि
314a B. C. घेप्पन्ति
315 B. C. रइ
316 B. C. हिआइँ
Read no. 316 on °हियाइ
317 B वाक्यार्थान्तरमेव
318 B. C. अपदस्थसमासं
319 C तुमम्मि
320 B. C. पत्तिहि
321 C पुह्मसिमि
322 C लक्ष्याल्लक्ष्यम्
323 B omits रसदोषानाह
Read no. 323 on रसदोषा°
324 B स्वपदोपादानं
Read no. 324 on स्वशब्दो°
325 B वाच्यत्वे
326 B °मूलवीक्षितां
327 B तरङ्गणमातनोति
328 A कणत्कारैः
B झणत्कारैः
329 A °कृसि
Read no. 329 on कृसि°
330 B °अनुभावाः पर्य°
Read no. 330 on अनुभाव°
331 B °लतितरां परिवर्तते
Read no. 331 on भृशं°
332 B यत्नप्रतिपाद्यः
333 B. C. णिहुअर
334 B. C. लोअण
335 B. C. °हिअआ
Read no. 335 on °हियआ
336 B रतिविलापेषु
Read no. 336 on रति°
337 B वेणीसंवरणे द्वितीये
338 B drops वीर
Read no. 338 on वीर
Omit no. 338 on page 178, line 5
339 A वृत्ते
340 C वर्णनम्
341 A. B. drop अकाण्डे
342 A उत्तमाधममध्यमाश्च
343 B °माश्च एवंस्थिते तत्र इति…
344 B °रूपो
345 A °त्युक्त इव भ्रु°
346 C °तः क्रोधः सद्यः फलदः
Read no. 346 on वर्जितः

347 B. C. स्वर्गपाताल
348 B गमनं
349 C °नाद्युत्साह°
350 B drops तु
351 C °वदानं
352 B निबंधव्यं Read no. 352 on निबद्धव्यम्
353 B °सत्यत्वप्रतिभासेन
354 C °मप्यन्यथा°
355 B °वत्रित्याद्युत्तमे नाधमेन
356 C भट्टारकेति नोत्तमेन
Read no. 356 on भट्टारकेति
357 C drops परमेश्वरेति न मुनिप्रभृतौ
Read no. 357 on परमेश्वरेति
Omit no. 357 on प्रकृति°
358 B °दिसमुचित°
C °दिकमुचित°
359 B निबंद्धव्यं
360 C च कृतं वसन्त°
361 B नायककोपोपवर्णनम्
362 A. B. प्रसिद्धौचित्यबंधस्तु
Read no. 362 on औचित्यो°
363 B. C. अप्येते
364 C इत्युच्यन्ते
365 B संरोहत्फुलका°
366 B °दुत्सुकमागत इत्यादौ
367 B °पत्तिकारणत्वा°
368 C नं परमदोषः
Read no. 368 on °नोक्तिर्न°
369 B after कुलं adds भूयोपि दृश्येत सा दोषाणामुपशांतये श्रुतमहो कोपेपि कांतं मुखमित्यादौ
370 B. C. वदनं
371 B हृदन्ते
372 B पाण्डुत्वादी°
373 B °त्वेनोक्तम्
374 B °त्वमति°
Read no. 374 on° स्थिरत्वमिति
375 B. C. °न्तर्येण यो रसः
376 B °शृङ्गारयोर्वीररसोंतर्निवेशितः ।
377 B. C. यथा
378 B °त्कर्षीत्यादि
C has the whole verse no. 337
379 B °णं पोषयति
380 B. C. चमत्कारकारिणि°
381 B °लोकयत्सस्पृह°
382 B °देता°
383 C °दृशो मुनय
384 B विषया या रतिः प्रतीयते
385 A °र्थिभिरिति
386 B सास्त्रनेत्रो°
387 C तथा शरा°
388 B नात्र स्थायिभाव
Read no. 388 on शब्देनात्र

उल्लासः ८

1 C °रस्य तथा
2 C गुणा°
3 B °दिरसव्यंजक
4 C सुकुमारादिवर्णानां
5 C मधुरादिव्यव°
6 B. C. विश्रान्तप्रतीति°
7 B संश्रिताः instead of जातुचित्
8 B ये वाच्यवाचकलक्षणा°
9 B °रसव्यक्तिस्तत्रोक्तिवैचित्र्य°
10 B °पर्यवासिताः
11 B writes यथा and omits क्रम उदाहरणानि
C यथाक्रम उदाहरणानि
12 B दूरमेव
13 B मनोरोगस्तीव्रं
14 B. C. न मां त्रातुं तातः

15 B बहुट्टदि
C विहट्टदि
16 C टुट्टदि
17 C गुणेसु
18 B सेज्जासु
C सज्जासु
19 B लुट्टदि
20 B. C. °म्मुहसुं°
21 B पयट्टदि
22 C टुट्टदि
23 B °सन्नां
24 C सारसम्
25 B वक्रांकेन
26 B. C. कण्ठे
27 B गुणालंकारभेदः
28 B. C. भेदः । ओजःप्रभृतीनामनु-
प्रासो···
29 B गड्डुरिकाप्रवाहेणैषां
C गड्डुलिका
30 B. C. वस्त्वलंकारा
31 B drops यतः
32 B. C. समस्तैर्गुणैः
33 B. C. गौडी
34 B तदद्रावत्र
35 B omits सत्सु
36 C व्यवहारस्य प्रवर्तकौ
37 B °वृत्योपचारेण
38 B दुष्टत्वाभिधान°
39 B स्वीकृते
40 B वाक्यरचना
41 B. C. प्रौढिर्व्यास···
P. प्रौढिर्व्याससमासौ च
साभिप्रायत्वमस्य च ।
42 B omits च
43 C त्वरूपोदारता
Read no. 43 on °त्ववपुरु°
44 B °रूपं
45 C °न्यस्य प्रस्तावे
46 B वक्तुं न्याय्याः instead of
वाच्या वक्तव्याः
47 C गुणाश्च ये
48 B °नास्तेषां
49 B °वर्जाः
50 C योगेष्व रचना
51 A. B. उदा instead of उदाहरणम्
52 C चिन्तवानि
53 C °भ्यामन्त्ययोस्तद्वि°
54 B. C. वा instead of च
55 C संबन्धष्ट°
Read no. 55 on संबन्धः
56 B दीर्घः
57 A. B. उदा
58 C शब्दात्तु
59 B यत्रार्थप्रत्ययो°
60 B गुणो भवेत्
C गुणो मतः
61 C रसानां संघटनानां i. e. omits
समासानां
62 A. B. उदा
63 B परिवलन
64 B रचनायाः
65 B °प्रतुकुह°
66 C कुहरचलन्म°
Read no. 66 on °रवलन्म°
67 C °ताडितोसौ
68 B °धेयार्थे
69 B उद्धतरचनादयः
70 B °नपेक्षया प्रबंधौ
71 B °चित्यादेवते
72 B. C. °मसृणवर्णादयः
Read no. 72 on मसृणा°

उल्लासः ९

1 B. C. पदभङ्गश्लेषेण
2 B. C. अभङ्गश्लेषेण
3 A गुरुपर°
4 A °तया बत
B °तया बत दूरं देश
5 B रसाद्यनुगुणः
6 A. B. उदा
7 C °रिकोच्यते

8	B	°दूरमेव
9	A. C.	गौडी
10	C	रीतयो मताः
11	B	°भेदेपि तात्पर्यमात्रभेदात् ।
12	B	°लुभत्वाल्लाटानुप्रासः
13	A. B.	उदा
14	A. B.	उदा
15	A. B.	उदा
16	A	धरणीधव
17	B	प्रथमश्चतुर्थे द्वितीयस्तृतीये प्रथमो द्वितीये तृतीयश्चतुर्थे इति द्वे
18	C	तृतीयश्चतुर्थे प्रथमश्चतुर्थे
19	B. C.	प्रथमपादादिभागः
20	C	नासौ
21	[illegible]	°नुसरणे नेकभेद
	C	°नुसारेणानेक
22	C	आद्यन्तिकम्
23	A	मध्यान्तेकं
	B	°मादिममध्यांतकं तेषां
24	C	स्थान आवृत्ति
25	B	°त्काव्येन्तर्गडु°
	C	काव्यान्तर्गडु°
26	A. B.	°त्रं चोदाह्रियते
27	C	°माय ततस्त्वं
28	A	°वस्यमबलं
29-30	B	°दावानल
31-32	B	क्षेत्रे
33	B	°वनं
34	B	°विचित्रत्वसहस्रैः
35	B	°ब्दा युगपदुच्चारणे
36	A. B.	क्रमेणोदा
37	B	°रकरोटी परिजनो
38	B	लावण्यस्य महानिधी°
39	B	युष्माकं तनुतां
40	B	एषवचन°
41	B	प्रथम
42	A. B.	उदा
43		No variant.
44	C	तदभावादभिन्न
45	C	°धोप्यर्थो
46	B	°मध्ये गणितो°
47	A	°कार उच्यते । उच्यते
48	C	विराजिता इत्यभङ्गः
49	B	°भङ्गपदश्लेषश्चेति
50	B. C.	यथा श्लोके°
51	B	°सदृशी चेष्टा तुला
52	B	चेति
53	B	°चोपमा
		Read no. 53 on चायमुपमा°
54	C	सुधांशु
		Read no. 54 on सितांशु
55	A	इत्यादि
56	B. C.	इत्यादिः
		Read no. 56 on इत्यादौ
57	B	चोपमाद्यलंकार
58	B. C.	विविक्तोऽस्ति
59	B	इत्युपपत्तिपर्या°
60	B	श्लेषाभास इव श्लेषः
61	C	तदेवमादिषु
62	B	अहो देवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः ।
	C	अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः ।
		Read no. 62 on अहो
63	B	देवगति°
64	B	लक्ष°
65	B	वोच्यते
66	B	omits च
67	B	°प्रेक्षित्वमेषां
68	B	°व्यपेक्षित्वे°
69	B. C.	°सादीनामलंकारता
70	B	°पेक्षयैव स्थिति°
	C	पेक्षयैव व्यवस्थिति°
71	C	प्रसज्यतामित्येव
72	B	°स्वयं प्रयोज्यं
73	B	कष्टकाव्य°
74	A. B.	उदा
75	B	तदर्ति°
76	A. B.	°दुमादिजा
	C	°दुमादिमा
77	A. B.	omit बन्धः

78 A °पद्मः and omits बन्धः
B पद्मं and omits बन्धः
79 B सर्वतोभद्रः
80 B °न्ये भेदाः
81 B. C. न प्रदर्श्यन्ते
82 B एकार्थतेव शब्दस्य भिन्नरूप°
83 B °र्थत्वेनेव मुखेव भासमानं
84 A. B. उदा
85 A. B. उदा
86 C तनुवपुरजघन्योसौ

उल्लासः १०

1 B omits तु
2 B यथेव वा शब्दा
3 B. C. विशेषणान्ये ते
4 C °पादाने श्रौती ।
5 A तुल्य°
B °तुल्यमित्यादा°
6 B °रिति तत्र साधर्म्यं
7 C तुल्यं क्रिया चेद्वतिः इत्यनेन
8 C इवेन नित्यसमासो°
9 B °शब्दप्रयोगे
10 A. B. °क्रमेणोदा
Read no. 10 on क्रमेणो°
11 B लक्ष्मीनिवास
Read no. 11 on लक्ष्मी°
12 B स्वाधीनभर्तृका कांतं
13 B कान्तं यथा भजमाना
14 B रसादिरूपस्तु
15 B त्वैवैतदलं°
16 A. B. उदा
17 B सयल
18 B. C. सम्मइ
19 B. C. समेत्तेण
20 A. B. omit समासेन
21 B कर्मण्यधि°
22 B करणे चोत्पन्ने क्यचि°
23 A. C. क्यचा
24 C कर्तुः
25 A क्यङ । च
C क्यङ । कर्म°
26 A. C. °मुला
27 A. B. उदा
28 C चरितानि
29 B एतयोर्द्वयोर्धर्म°
30 A. B. उदा
31 B संपराय
32 A. B. उदा
33 B ढुंढुंलंतो°
C ढुण्ढुण्णन्त
34 B मरिहिसि
35 C कण्टअकलि°
36 C भ्राई
37 B. C. वणाइं
38 B. C. ण
39 B पाविहिसि
40 B कुसुमेन
41 B. C. सममिति
42 B आसो निरासः । उदा । अराति···
43 C gives त्रयाणां वादिधर्मोपमाना-नाम् after उदा ।
44 B विशरा
45 C राचितांतरा
46 C हरते
47 C भवतः तदेदमुदाहरणम्
48 B °ध्यवसानादयः
49 A त्रिलोपे इयमुपमा
50 C सा च विधा°
51 C इहाभिन्ने°
52 B °साधारणधर्मे
53 B °सुधेव instead of सुरेख
54 C भिन्न च तस्मिन्
55 B. C. °मानत्वे पूर्व°
56 B. C. सभा
57 B रसनोपमा
58 A. B. उदा
Read no. 58 on उदाहरणम्
59 B उपमानोपमेययोः
60 B °नोपमेत्युपमेयो°
61 B यो न मम सहते
62 C असत्पुरुषसेवेव
दृष्टिर्विफलतां गता ।

63	B	°पादत्रयं
64	A. B.	omit इति
65	B	°करशंका
66	B	adds अथवा । न्यस्तं लांछनमंजनं कुमुदिनी प्रोल्लाससिद्धिप्रदमिति चतुर्थः पादः । एवं च रूपकेणैव निर्वाहः ॥ श्रौता··· after कार्या
67	B	°देश
68	B	°लयम्
69	B	°देश°
70	B	°पमाया इवैकस्मिन्निह बहव
71	C	बाणाः instead of प्राणाः
72	B	दुर्गाणामामार्गेण
73	B	°यः पराभव°
74	B	°देशवृत्ति ही°
75	B. C.	भुजः
76	B	वाच्यकुञ्जर
77	B. C.	भुजस्या°
78	B	कैर्भवानिति
79	B	°मतिवर्तित°
80	B	च मालारूप°
81	B	°मानं यत्तत्यतया स्थाप्यते
82	A. B.	सापह्नुतिः
83	A	°स्पन्द
84	B. C.	रोद्धासि
85	B	°भक्तयंतरै°
86	A	दिग्मालिन्यं
87	C	°पादकवाक्येन
88	C	°तस्यार्थस्या°
89	B	जीए
	C	तीए
90	B	जयलछी
91	C	हुजला
92	B	°वंशतरणमित्यु°
93	B. C.	मायां पर्यवस्यति Read no. 93 on मा°
94	C	स्वस्वरूप°
95	B	°न्धोवगम्यते
96	C	ब्रुवन्
97	B	omits च
98	C	omits अर्थस्या°
99	C	omits सा च
100	C	निपतद्धाराश्रुणा
101	C	कुत्रोड्डीय
102	C	ममत्व Read no. 102 on महत्त्व
103	C	प्रशमयसि Read no. 103 on शमयसि
104	B	तदात्वमेव
	C	तत्त्वमेव
105	B	तुल्यांतरस्याक्षेपहेतुः
	C	तुल्यातुल्यस्य
106	B	°स्याक्षेपहेतुः
107	B	लज्यते
108	B	विस्फुर्यते
	C	विस्फुर्जसे
109	B	omits भवति
110	B. C.	यथा । अब्धे··· Read no. 110 after भवति. Omit no. 110 on °स्थगितभुवना°
111	B	अब्धेरर्णः Read no. 111 on अब्धे°
112	B. C.	°पाया इह
113	B	अंभो रिक्तः
114	B	काचित्वध्यारो°
	C	क्वचिदध्या°
115	B	°कारकरणी
116	C	क्वचिदंशेष्व°
117	B	यत्र तदे°
118	B. C.	°तणअं
119	B. C.	अण्णा
120	B. C.	विअ
121	B	घि
	C	वि
122	C	च्छाआ
123	B	°ण्णपयाव°
124	C	°वड्डणो
125	C	होई
126	B	°चेच्छब्देनोक्तौ
127	B	कथितपदस्य

128	B	दुष्टताया
129	B	यथा । त्वयि···
130	B	कुमुदं
131	B. C.	करं
132	B	किअणाण
	C	किवणाणँ
133	B	णाआण
	C	णाआणँ
134	B	केसराइ
	C	केसराइँ
135	C	सीहाणं
136	B	आण
	C	आणँ
137	B	अथणा
	C	थणआ
138	A. B.	कत्तो
139	C	अमुआणम्
140	B	नवपरिणयता
141	B	°नोतरोत्तरं
142	B	°संगतेन
143	C	देवाकर्णय येन येन सहसा यद्यत्समासादितम् ।
		Read no. 143 on संप्राप्ते
144	C	येन त्वं भवता च कीर्तिरतुला कीर्त्या च लोकत्रयम् ।
145	B	पुनः instead of वपुः
146	B	omits °नील°
147	B	तदाननस्य
148	B	°योपि वर्धते
149	C	नित्यं
150	B	श्लेषे
151	C	उपमानगतमपकर्ष°
152	B	अर्थेन
153	C	आर्थेन च क्रमेणो°
154	C	°शतिभेदाः
155	B. C.	ह्यायोपि
156	C	महाध्वनिः
157	C	अत्र तुल्यार्थे
158	B	अत्रेवाहि तुल्या°
159	B	°विरहे आक्षिप्तै°
		Read no. 159 on. °विरहेणाक्षि°
160	C	श्लिष्टः । शाब्दमौपम्यम् ।
161	C	मालाप्रतिवस्तूपमावन्मालाव्यतिरेकोपि संभवति तस्यापि भेदा एवमूह्याः । दिङ्मात्रं चोदाह्रियते ।
		Read no. 161 on श्लिष्टः
162	C	यथा
163	C	चाति
164	B	अत्राक्षिप्तैवोपमा ।
	C	अत्र ह्याक्षिप्तैवोपमा भास्वतेति श्लिष्टः
		Read no. 164 on यथा
165	B	अत्रेवादेस्तु
	C	अत्रेवादीनां तुल्या°
166	B	omits च
167	B. C.	एवंजातीयकाः
168	B	योग्यपदस्य
169	B. C.	तेऽपि
170	B. C.	दिशा द्रष्टव्याः
	A	दशा
171	B	°पसर्जनीयकार्ये°
172	B	°कंपि
173	B. C.	णिक्किव
174	B. C.	ण
175	B	°कर्पूरः
176	B. C.	कार्यस्याकथनं
177	B	सुंदरमपि भाति
178	B. C.	सुहृदः
		Omit no. 178 on गौर्गली
179	B	omits अपि
		Read no. 179 on °धेऽपि
180		No variant.
181	B	द्वाभ्यामपि द्रव्यं
182	B	संगररंगसक्त°
183	B	संततमुस°
184	B	सतत्त्वविदां
185	B	निःशंकतरं°
	C	निस्यन्दतरङ्गि°
186	B. C.	°चूडापगापि°
187	B. C.	पश्चार्दघ्री
188	B	सटाधूलिध्रूमा
189	B	दिअहणिसाहिं
	C	दिअहणिसाइं

190	B. C.	एहिं
191	A	तीइओव्वेविरीए
192	B	तीए उव्वेविरीए
193	B	जीवितासा
194	B. C.	तु सहार्थ°
195	B. C.	सन्ननेतरः
196	B	यथा instead of उदाहरणम्
197	B	°भ्रमिमुदित°
		Read no. 197 on भ्रमिरुदित°
198	B	omits अत्र
199	B	यथा instead of उदाहरणम्
200	B	अत्राद्यैर्ध्रे
201	B. C.	पुरारे न प्रायः क्वचिदपि
202	B. C.	संप्रत्यहमतनुरप्रेप्यनवतिभाङ्
203	B. C.	पततु
204	B	°जन्मनोरमननं भुज°
205	B	°मुक्तरूपं च हेतुः
206	C	यद्वचः instead of वस्तु यत्
207	B. C.	यतोऽभिन्ना°
208	A	°जैनीभिः कृताः
209	B. C.	बालाङ्ग्रि°
210	B. C.	संभवन्ति
211	B	°श्रुतिशालिनी°
		Read no. 211 on श्रुतशालिनी
212	C	°निरापतत्वरस्यैः
213	B. C.	°सोदरश्रि
214	B	°एकस्मिंश्चदेश इति
215	B	°कस्मिन्नपि भवति
216	B	°वा यत्सपर्यायः
	C	Interchanges the verses 513 and 514
217	B	°श्रोणीभागस्त्यजति°
218	B	तु instead of च
219	B. C.	णिवेसिअं
220	C	कुसुमबाणेन
221	C	मोहहेतुमन्तर्गत°
222	B. C.	समारोपितः
223	B	°व्यतिरेकत्वेन
		Read no. 223 on व्यतिरेक°
224	B	°योगव्यवच्छेदो
225	C	विकल्पेन किंचिद्वैचित्र्यमिति तथा
226	B	°न भिन्नवृत्तयः
227	B	°पुष्टार्थस्य स्त्री°
228	B	प्रतिभिन्नं
229	B	°स्येहाभावात्
230	B	यथा instead of उदा°
231	C	विसंष्ठुला°
232	B	यत्प्रकल्प्यते
233	B	अत्र कथनं प्रश्नपूर्वकं च तदन्यथा
234	B	सलिलमनवद्यं
235	B. C.	दोषः
236	B	जनानुरागप्रभवा
237	B	कांचिदर्हति
		Read no. 237 on कदा°
238	B	तु instead of पुनर्
	C	पुनर्हेत्व°
239		यथा instead of उदा°
240	B. C.	सरेहिं
		Read no. 240 on सरोहि
241	B. C.	हंसेहिं
242	B. C.	अण्णोण्णं
243	B. C.	विअ
244	B	णवर
	C	णवार
245	B. C.	अन्ति
246	C	कल्प्यते
247		यथा instead of उदाहरणम्
248	B. C.	वाणिअअ
249	C	कुत्तो
250	C	वग्घकित्ती
251	B. C.	अ
252	C	जाव
253	B	लुलियालयमुही
254	B	परिसुक्कए
255	B	सुह्लो
	C	सोहूला
256	C	ता मूल्येन
257	C	क्रेतुर्वच°

258	B	यथा
	B	दिव्व गई
259	C	देव गई
260	C	किंदुल्लहं
261	B	गुणग्राही
262	B	सोख्खं
	C	सोक्खं
263	B. C.	दुक्खंगं
264	C	°ईष्टा
265	C	कृपाणपाणिता
266	B	यथा instead of उदा
267	B	वसुधायां पत्तनं पुरे
268	B. C.	फलरूपयोरपि
269	B. C.	वेअणा
270	B. C.	अलिअम्
271	B. C.	कवोले
272	B	बहूए
	C	वहूएँ
273	B	वेअणा
	C	वेंअणा
274	B	सवत्तीए
	C	सवत्तीणम्
275	B	चैव
276	B	°मारब्धमाधीयते
277	B	°दिष्ट्यैतदुदीर्णं
278	C	तत्सद्योगेऽसद्योगे च ।
279	B	°नुपमे
280	B	चेत्तदेत
281	B	प्रतिपद्यते
282	B	यच्चापि किंचिदा°
283	C	विषयमासा
284	B	जग्राह
285	B	पुरः
286	B	°योगमनुमंतव्यं
287	B. C.	°सितुमशक्तेन
288	B	केनापि तमेव प्रतिपक्ष°
289	B	विजेय इत्यर्थः
290	C	°शयादिव कामः
291	B	omits मुख
292	C	यत्किञ्चित्
293	B	°नचिदिह वस्तु
	C	नचिद्वस्तु°
		Read no. 293 on °नचिदिह

294	B	°मंगकैर्मृग°
295	A	°कृतमदो
296	B	°लत्वादि
297	B	°मंतुकतया तत्प्रभ°
298	B	नता च
299	B. C.	पूर्वं पूर्वं
300	B	यत्रोत्तरस्य
301	C	यत् स्थापनं
302	B	°रेकावली गण्यते
	C	°रेकावली भण्यते
303	B. C.	प्रतिषेधेप्येवं
304	C	यदा
305	B	यथा instead of उदाहरणम्
306	B. C.	°कुहरेषु
307	A	चलदशा
308	B. C.	संभरिअ
309	C	पअ
310	B	जण्णस्स
	C	अण्णस्स
311	B	कण्णस्स
312	B. C.	तदिति अन्यदप्राकरणिकं
313	B	°रूपकमुपमावातिशयोक्ति°
314	C	योक्तिर्वा
315	B. C.	वस्तुतो
316	B	°चार्थानुगमने संज्ञा°
317	B	कपोले
318	B	विभ्रमयति
319	C	निबंधना
320		No variant.
321	B	यदि वा
322	B. C.	कल्प्यते
323	C	°पमानप्रतिकूल°
324	B. C.	वअणिज्जम्
325	C	उ अमिज्जइ
326	B. C.	वअज्जिम्
327	C	व्यङ्ग्यस्तिर°
328	B	युगलेन वहसि किं
329	B	मुग्धे
	C	°भद्रे
330	B. C.	रीत्या
331	C	°हल मा स्म तात°

332 B बुध्यते
333 B °पि लक्षितुं
334 B यदप्रस्तुतपदार्थेन
335 C संपृक्तमप°
336 B तत्सामान्यम् । उदा
337 B. C. निबन्धनात्सामान्यं
338 B omits रस
339 B °रन्यूनातिरिक्ततया
340 B °भावेन नानयोरुप°
341 B विशिष्ट°
342 C वअणेसु
343 C अह्मारि
Read no. 343 on अम्हा°
344 A उवास
B उवासं
C ओआसो
Read no. 344 on उवासो
345 C णत्थि
Read no. 345 on कत्थ
346 C पावाणम्
Read no. 346 on पावाण
347 B. C. यद्पि किंचि°
348 B सोप्यपरो
349 C सखी
350 C त्वां वद किं
351 B सर्वत्र चैवंविधे विषये
C सर्वत्रैवंविध°
352 B °लंकाररूपत्वायोगात्
353 C सर्वत्र
Read no. 353 on सर्वैव
354 B कविना कार्यः
355 B. C. रुचारुचं
356 B. C. प्रगुणवर्णता
357 B omits तत्
358 C जहवि
359 A तए
B. C. तुए
360 B हिअयं
C हिअअम्
361 B. C. राअ

362 C सुअहणि°
363 B अत्रातिरिक्तेनापि
364 B omits प्रकृतेन
365 B drops इति
366 B. C. गाङ्गमम्बु
367 B जिगीषुतया
368 C यदेकत्र
369 C °संसृष्टिर्यथा
370 C कुसुमसौरभ
371 C °संसृष्टिस्तु
372 B दृष्टिर्निष्फलतां
373 B omits तु
Read no. 373 on °योस्तु
374 B. C. एत्थ
375 B. C. एअं
376 B. C. लाअण्णम्
377 C परिसप्पन्ती°
378 C णिवारेइ
379 C एत एव यदात्म°
380 C सीमन्तरले
381 B. C. °ताटङ्क
382 C °चेतसां प्रभूतचमत्कृति°
383 B. C. °मित्वनयोरङ्गा°
384 B °मिति च रूपक°
385 B रूपकत्वेन तिरो°
Read no. 385 on रूपकत्वे°.
386 B omits रूप
387 B योग्यतया
388 C शशाङ्केन केवलं कलङ्कस्य
389 B °रपि दृश्यते
390 B. C. °विरत
391 B °लोमं प्रतिलोमं च
392 B. C. युगपदवस्थानम् । न
393 B परिहारे वा बाधक°
394 C एव परिगृह्येत
395 C गहिरो
396 B रअण
C रअण्ण
397 B. C. णिम्मल°
398 B तह किं

399 C एसो
400 B. C. जलणिही
401 C ण किओ
402 B प्रतीतिरियम°
C प्रतीतेरियम°
403 C °रुद्राशमविशीर्ण°
404 B उत तद्वदनस्थें°
405 B चैत°
406 B अथैतयोः
407 B °मानहसितद्युति°
408 B °इत्युपमायां
409 B. C. साधकम्
410 B omits शशिनि…अबाधकता
411 B °भ्युद्गत इत्य°
412 B. C. °कस्य साधक°
413 B पर प्रेयसी
414 A. B. omit आनन्द…सुरस्य
C has first two lines as
आनन्दमन्थरपुरंदरमुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य
415 B °सिंजि°
416 B °सिंजि°
417 B. C. बाधकम्
418 B विध्युपसंमर्दिनो
419 B. C. अभिन्ने एव पदे
420 C स्फुटतया
421 B व्यवस्थिततां
422 B omits च
423 B. C. त्रिप्रकार एव
424 B पुनरेष प्रतिनियमो
425 C यदीयान्वयव्यतिरेकावनुविधत्ते
426 B व्यवस्थित इति
427 B. C. भासः
428 B °न्यासादयोपि द्रष्टव्यः
429 A प्रष्टव्याः
430 C वाच्यालंकारमध्ये
431 B. C. परस्परव्यति°
432 C °ध्वन्तः भवन्तीति
433 B °पुष्टार्थतां
434 B नातिक्रामंति
435 B. C. °रुचेः°
436 B. C. °ह्लासिनि
437 B. C. मे
438 B °सिञा°
439 C इत्यपुष्टा°
440 B °पुष्टार्थतयैवानु°
441 C अत्र शृङ्गारे
442 C °डम्बरः
443 C °कारित्या
444 B. C. °नुप्रासोऽत्र
445 C °र्णतैव वृत्ति°
446 B यमनप्रयुक्तत्वं
447 C चेतः प्रसभं स°
448 B °पमानगतस्य जाति°
449 C °गतन्यूनत्व°
450 A °पदतां च
B. C. पदत्वं च
451 B °मिव ते नाभिस्तनौ
452 C प्रतीयमानेन धर्मेण
453 B drops अपि
454 A. B. लिङ्गवचसोः
455 B. C. °रनर्घ्यैः
456 A. B. इवेति
C drops इति
457 B °भेदेन न तथा
458 B °रूपतया न विश्रान्ति°
459 B °वपि भिन्नप्रक्रम°
460 B. C. परभागस्या°
461 B. C. कश्चित्का°
462 B. C. अवगम्यते
463 B सत्यवादीति । तत्र
464 B drops सत्यवाद्यथं
C सत्यवाद्यथं सत्यं
465 B न च
466 B रयिपौषं
467 C °ष्ठिर इव सत्य°
468 B सत्यवचने सत्य°
469 B वस्तुतस्तुप्रतीतिविघातादिति
470 B गृह्णाति
471 B. C. निपेतु°
472 B संभावनायां ध्रुवे°

473 C वक्तुं सहन्ते
474 B drops इति
475 B °कत्वदोषः
476 B चातुत्वशंका°
477 B °वर्जितत्वात्तन्निरूपा°
Read no. 477 on परिवर्जितत्वा°
478 B °यदर्थोत्तरन्यासो°
479 B. C. °न्यासोपादा°
480 C शिरसामतीव°
481 C संभवतीति
482 B एतत्प्रयोजित°
483 B °वितेन स्वरूपेण
484 B °र्थनाय यत्नः
485 B °शेषं प्रतिपादयतीति तस्मात्र
486 B प्रतिनायकत्वेन
C प्रतिन.यकात्वेन
487 A. B. प्रदेति
C omits इति
488 C रीत्या
489 B कदर्थनान्वेयं
C कदर्थतां
490 B drops यथा
491 C मध्ये वा रिधि वा
492 B विशंस्तृण°
493 B. C. रुचम्
494 C अत्राचेतनस्य प्रभो°
495 B. C. पूर्वोक्तयैव
496 B. C. °जात्यान्तर्भाविता

A ends समाप्तोयं काव्यप्रकाशः काव्यलक्षणं। कृती राजानकमम्मटालकयोः। संवत् १२१५ अश्विन शुदि १४ बुधे अद्येह श्रीमदणहिलपाटके समस्तराजावलीविराजितमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारक उमापतिवरलब्धप्रसादप्रौढप्रतापनिजभुजविक्रमरणांगणविनिर्जितशाकंभरीभूपालश्रीकुमारपालदेवकल्याणविजयराज्ये पण्डित श्रीलक्ष्मीधरेण पुस्तकं लिखापितमिति।

B ends समाप्तोयं काव्यप्रकाशः। शाके चन्द्रविलोचने(?न्दु)शशिभिः क्रूसे खरे वत्सरे ज्येष्ठे मासि सिते दले गुरुयुते पंचम्यभिख्ये तिथौ॥ साधूनां परितोषपोषविधये श्रीविष्णुभट्टात्मजेनायं लक्ष्मणसूरिणा विलिखितः काव्यप्रकाशः स्वयं। शुभमस्तु। सं. १५३६ वर्षे श्री अहम्मदावादनगरे वा० दयासागरगणिभिः परिगृहीता प्रतिरियम्॥

* *
*

II

काव्यादर्शकाव्यप्रकाशसंकेतस्य पाठान्तराणि

N. B.—Pratikas are followed by various readings.

प्रथम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१	११	°रूपा वक्ष्यमाण C °पा च वक्ष्यमाण
२	२५	प्रभुसंमिते° C प्रचुसं°
३	१७	लोके C लोकि
,,	२७	°वैदग्ध्यशालि° C °वैदस्य शा°
४	१९	°वपीहामो A °वपीच्छामो C °वपीछामो
५	१५	विशाखि° C विश्वाखि°
,,	१६	°मोक्षाः B मोक्षो
,,	१९	कामोपचारनैपुणम् B omits नैपुणम्
६	१४	चक्षुरादेर° C चक्षुरादिर°
,,	१५	शिवचन्द्रस्य बालत्वं, कामस्य C शिवचन्द्रज्ञातास्तत्वं, का°
,,	१७	स्वदन्ते C तदन्ते
,,	२४	घटेत C घटते
७	१६	°न्याद्यन्यभि° C न्यान्यभि°
,,	२०	शाकटिक वा° B शाक वा°
,,	२७	स्वदते C सूदते
९	२३	भमेति A भ्रमेति
	२६	°म्यामङ्गल A. B. C. °ग्रामङ्गल
१०	२१	तात्पर्यमनपेक्ष्य B. तात्पर्यायामनपेक्ष्य

द्वितीय उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
११	१६	अर्थोऽपि के° C °पीति के°
११	२७	तदन्वितपदे A. C. तदन्वितः
१४	३०	उपचयापचययो B omits °चयाप°
१५	८	भिद्यमानेष्व° B omits भिद्यमानेष्व
,,	१७	शब्दार्थ B शब्दार्थे C शब्दोर्थे
१६	११	शब्देलक्षणा° C शब्दलक्षणा
,,	२४	°क्षणोऽर्थः B लक्षणस्य
,,	२४	°ब्दव्या° C °ब्दस्य व्या°
१७	६	अभिधेयेन संबन्धाद् B. omits. A adds afterwards.
१७	१३	प्रतिपत्तिस्तेषां B. omits
१९	२०	°मिश्रां B. मिश्रा
,,	२०	यत्रा A rubs out ा from त्रा with हरताल B writes यत्र
१९	२८	°न्तरिति A. B. °न्त इति।
२१	१४	स्वाभिधान°. माणिक्य writes स्वाभिमान°
,,	१७	चतुर्थकक्षायां B. चतुर्थकक्ष्यायां
२२	१२	गौरनुबन्ध्य B °नू°
२२	२२	°र्थ्यादिति इन्द्रार्थेति राजकीय इति A omits इतिs. C. °र्थ्यात् इ°
२२	२४	न प्रयोजनम् A adds न afterwards. B. C. omit न
२३	१९	बद्धास्पदत्व A बद्धा··· B omits बद्धास्पदत्व
२३	२६	पारिमाण्ड° B. पारिमंड°
	२७-२८	बाधितो···शब्देन B omits बाधितो···शब्देन
२४	१०	आर्द्र B omits आर्द्र
२४	१६	यत्र B अत्र
,,	१८	°रि ढोलु प° C °रिर्ढेनायकलु प°
,,	२३	तद्वारेण B omits त
२५	१५	बटु° A. B. वटु
,,	१८	°यितव्ये B. omits व्ये
२५	२९	गतिरवबोधन B. गतिरे° A °यति°

पृ.	पं.	प्रतीक
२६	१६	गमयितव्ये B गमय्यतव्य । C °यति व्ये
२६	१७	व्याचष्टे A. व्याचष्टे Here व्य is rubbed out
,,	२८	प्रयोजने C °जन
२७	२१	अञ्जनमिति B omits अञ्जनमिति A adds afterwards.
२७	२५	संसर्गिणो B संसर्गिणा
,,	२६	विशेषप्र° C °शेषे प्र०
२८	२१	यथा C यथा
,,	२८	स वस्तुनि कथाप्र° C °स्तुप्र°
२९	१६	°र्थान्तरप्र° C °न्तरे प्र°
२९	१९	[रन्वय] A. B. omit [रन्वय] माणिक्य has this reading.
,,	२४	°श्लेषाल° C श्लेषोल°
३०	२५	असंबद्ध° B. संबद्ध° A corrects afterwards

तृतीय उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३१	१८	°पेक्षणीयमित्याह B °क्षेपणीयत्व-मित्याह A rubs out त्व
३१	२२	अइ पिहुलमिति B अइनि पिहुलमिति
३१	२५	सहि B omits सहि A adds afterwards
३२	१८	सहदेवे B सहदेवो
,,	२६	कपोलौ C कपालौ
३२	२७	वाच्यविशेषाद् यथा B omits A adds afterwards
३३	२४-२५	प्रस्ताव…'सुब्वइ' इति° B omits and A adds afterwards.
३३	२७	आश्वस्तां…°पान्तेति B omits and A adds afterwards.
३४	१०-११	प्रोल्लास्येति…भवतीति B omits and A adds afterwards
३५	१०	इति भट्टश्री° C इति श्रीभ°

चतुर्थ उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३६	६	निर्णयः A. B. निर्नयः
,,	१४	त्रिविध A विविध
,,	१५	विशेष B repeats विशेष
,,	१८	वक्रोक्त्य B वाच्या
,,	२१	एवालंकारा B omits एवा
३७	११	स्यत् B. स्यात्
,,	२४	°परिणतोऽर्थो° B °परिणतः। अर्थो°
३८	१३	लक्ष्यद् अप° B writes लक्ष्यदु° while A has corrected दु and writes द्
,,	१६	मूले द्वि° C मूलं द्वि°
३९	२७	चोद्रि° B याद्रि
४०	१६	जायन्ते A ज्ञायन्ते
,,	२२	सामाजिकः A. B. सामजिकः
,,	२९	तेनानुभावैः B writes तेन विभावैः A has corrected °नानु°
४३	२-३	प्रतीयते…स B omits प्रतीयते…स
,,	४-५	तथाहि…युक्तम् B omits तथाहि…युक्तम्
,,	५	यथैव असौ C यथैव मसौ
	७	नरगतं C नटगतं
	१२	°भावि B °भाव
	१३	कथं न B omits न
,,	१९	शंकुको° C संकुको°
४४	८	परगतो C परमनो
,,	१३	°धा योगो C °धा भागो
४४	२४	प्रतीत्यादि B प्रीतिरित्यादि
,,	२६-२७	नित्यो वाऽसन् वा रसः B नित्येवा सत्वारसः
,,	२७	वस्त्वस्तिताव्यव° B वस्त्विवतिव्यव
४५	९	निर्वेदादिभिश्च B omits °भि°
,,	१४	रसना वार्ता C रसनार्ता

पृ.	पं.	प्रतीक
४५	१४	यन्मुनिः B ये°
,,	१४	भावयतीति भावः B भावयंतीति भावाः
,,	१४	पदार्थ° B पादार्थ°
,,	२०	कक्ष्या B. कक्षा°
,,	२८	योग्यत्व° C भोग्यत्व°
,,	२९	°रूपरञ्जनं A °रूपरञ्जनं
४६	१२	°म्बी अत B इत्यत
	१५-१६	°दिना तावन्नटबुद्धि B omits.
	२२	च B च्च
४८	२१	°भावस्यानु° B omits °भावस्यानु°
,,	२९	°रीतः क° C रीतस्ततः क°
४९	९	°स्य इतीयद् C °स्य यद्
,,	११	°स्य आनन्द- A °स्यानं° B °स्यामं°
,,	१६	°त्तमस्यो° B omits °त्तमस्यो°
,,	२२	न चेद् B च चेद्
,,	२३	एव B omits एव
,,	२३-२४	तथा ह्यभि° C तथा भि°
,,	२४	गतं A has only one गतं while B has two
५१	१७	न वाच्यम् C न चान्यम्
५१	२१	°जातैर्हसिता° B °जातैर्हसितो° while A has written first °तो and then corrected as °ता
,,	२१	°तापहसिता A °तापहिसिता° । C drops अपहसिता
,,	२६	अस्थानं B स्वस्थान°
५२	१४	°षादचर° C °षादमर°
,,	२१	स्थैर्यगांभीर्य° C °र्य धैर्यगां°
,,	२६	रौद्र ममता C रौद्रे ममता
५२	२७	च B C चा A has written first चा then corrected as च
५२	२९	चलद् दृष्टि A. B. चलद्दृष्टि°
५३	२०	°मोह° B मोद° A has written first मोद° and then corrected as मोह°

पृ.	पं.	प्रतीक
५३	२०	व्यभिचारी जुगु° C °चारिणी जुगु°
,,	२८	°वर्तन्ते A C repeat वर्तन्ते
५४	११	°लोचो B °लोको
,,	२२	दम्भस्या° B तस्या°
५८	२७	वस्तुमात्रं मात्रग्रहणेन C °मात्रं ग्रहणेन
५९	६	रसः काव्य° C रसः स काव्य°
,,	७	शत्रुविषये B शत्रुविषय°
,,	१२	°र्ध्वनिनव्या° B °र्ध्वनिर्व्या°
,,	२६	यत्र B यत्रा
६०	१७-१८	मधुरा...यस्य A has added afterwards; B omits
,,	१८	°प्रयोजनं B °प्रयोजन
६०	२४	°माद्यलंकार° B omits द्य
,,	२८	उन्नतं B उन्नत
६१	१५	तदास्स्वेति A. B. तदास्वेति
,,	२८	°न्निष्पन्नः B °निष्पन्नः
६२	२४	°जाता B जा
,,	२७	°रिति B omits
६३	२८	फणा° B फेणा°
६४	२२	क्रान्ते B क्रान्ताः
,,	२५	°वर्तमानत्वे B °वमानत्वे
,,	२६	विशेषोक्त्यलं B °विशेषोक्ता°
६५	२३	इत्यष्टादश° A इत्याष्टादश°
६६	११	न पदे यथाउ° B omits न पदे यथा उ°
,,	१८	संदर्भविशेषः B संदर्भः विशेषः
,,	२२	पदद्योत्येन B पदद्योतेन
६७	१०	विमुह्यन्ति B omits विमुह्यन्ति
६७	१२	व्यवसायां° A व्यवसाया°
,,	१२	प्रेक्ष्यपूर्वका° B प्रेक्षापूर्वका°
,,	२४	असावपि आप्यायिका A असौ अप्यायिका B असौ आप्यायिका
६९	१९	°माहात्म्याद् A °महात्म्याद् चलयन् B वलयन्
७०	२५	चलयन् B वलयन्
७०	२९	स्मरः सुरतसंगरे जयति B स्मरो जयति

पृ.	पं.	प्रतीक
७१	१७	स ह्यभिलाष° B सह्याभिलाष°
७३	२०	वर्णानामपि B वर्णानाम
	२९	संपाद्यते B संपद्यते
७४	१८	°गमशंकया C °माशं°
,,	२१	ध्वन्यत C ध्वन्यते
,,	२६-२७	करणानां मान° C °णानां मानिनीना मान°
७४	२७,२८	किरण° B करण°
७५	२०-२१	परिपोषः ततः B परिपोषभूतः
७५	२६	°च्यते C °च्येत
,,	२८	°ज्यते C °ज्येते
७६	१९-२०-२१	हि वाक्यार्थ...चञ्चल B omits
७७	२३	°मुपांशु B °मुपंशु
७८	२४	°स्यातिव° C °स्याप्यतिव°
७९	१२	°स्य सुयोधन B omits °स्य सुयोधन
,,	१८	°त्वेन नि° C °त्वे नि°
,,	२४	प्रतिभाषते C °भासते
८०	१३	रतिभोगार्थं B रातिभोगार्थं
,,	१७	सागरिकायाः C °रिकया
	२७	स्वप्रभेदै° B स्वभेदै°
,,	२९-३०	शुद्धाभेदै° C शुद्धभेदै°
८१	११	परितोष्यताम्° B परितोषिताम्
	१३-१४	कोप...बाध° B omits कोप... बाध°
,,	१५	°माणभा° C °माणाभा°
८२	८	°परिणत° B °परिपात°
,,	२२	कान्तेः B कान्तैः
८३	१७	°र्थसहाय° A. B. °र्थसाहाय°

पञ्चम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
८६	१८	°रतितरां B omits °रतितरां
८७	२८	°पमर्दनो- B omits
८८	२१-२२	ध्वन्यते तथापि B omits
८९	१५	°वृत्तान्तमपेक्षेते...नायिका B omits
,,	२१	वाक्यमात्रां C वाच्य मात्रा°
९१	२४	°बलान्निषेध्य° °लान्निषेधस्य निषध्य°
९२	१२	पारितम् A. B. पारितां
,,	२०	ध्वन्यङ्गता° B ध्वन्यङ्गतां
,,	२५	गुणीभूतव्यङ्ग्येन B omits °भूत°
९३	३-४	°नां हिना B omits
९४	१५-१६	°न्योन्यम...अन्यो B omits
	२०	मात्रमिति B omits
	२९	वा B ता
९५	१४	एतेन संवेदन C °न स्वसं°
९५	२८-२९	°नि अं B omits
९६	१६	°श्रवृद्धा B omits
,,	२३	°विषये B °विषयो
९७	१३	शब्दकारि° B °शब्दकारणि°
,,	१७	पदार्था° B शब्दार्था°
,,	२०	पदार्थान्तरै° A त्वापदार्थान्तरै B त्वादर्थान्तरै°
९८	१४	°न्वितवि° C °न्वितावि°
९८	२१	इषुरुरच्छदमुरश्च B इषुरुरदमुरश्च
,,	२८	अवमतं C अवगतं
९९	२९	°क्षणमनु° A. B. °क्षणमानु°
,,	३०	प्रतिपत्त्या A. B. C. प्रतिपत्ता
९९	३०	°देतद् गृहभोजन° B °देत इह भोजन°
१००	१५-१७	स दुर्बलः···व्यापारगम्यं C drops
,,	१७	°वैविध्यात् C वैचित्र्यात्
,,	२५	°तिष्ठते B °तिष्ठति
,,	२९	छागमालभेत B छागमालभते
१०१	६	क्रमेण C क्रयेण
१०१	१२	दधिरस्यदर्थो B दधिरस्यदथो
,,	१९	तेष्वङ्गभाव B तेद्यङ्गभाव
,,	२०	°अर्थविप्रकर्षात् B omits अर्थ
,,	२२	द्वितीयया B द्वितीया
१०२	२२	कष्टत्वादीनामिति A. B. drop ना
१०३	१९	तेन B drop तेन
,,	२२	वेद्यते C drops
१०४	२५	°कक्ष्यायां B °कक्षायां
,,	२७	°दृष्टनष्टदिव्य° B °दृष्टदिव्य°
१०६	१३	°र्व्यञ्जनात्मनो B °र्व्यञ्जनो

पृ.	पं.	प्रतीक
१०७	१९	वाक्यार्थमतये B वाक्यार्थमितये
१०८	२१-२३	गोदावरी...कुडङ्गवासिणा इति B adds afterwards.
१०९	१८	°प्रतीतानां B °प्रतीतीनां

षष्ठ उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१११	१८	°मुपजनयति B °मुपरंजयति
	१९	अत्र चेति A omits

सप्तम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
११३	१७	तदपाण्डु° C तदापाण्डु°
,,	२२	प्रसिद्धत्वाल्लोकमात्र C drops
११४	२६	°भंगेपि C भंगोपि
११५	२१	जानुनोरध° A. B. C. जानुध°
,,	२५	°र्भावाद् A. C. °र्भावात B °र्भावाता
११६	२१	°भिधानुकारः C भिधानानुकारः
,,	२५	°मर्थानुकार° C °मर्थानु°
,,	२८	न च तत् B न चेतत्
११७	२६	°भासः C °लाभः
११८	२१	तन्नेयार्थ° C तन्नयार्थ°
११९	११	शब्दार्थस्य B शब्दार्थ
११९	२५	शून्ये C शून्यो
१२१	२८	बीभत्से चन्दनादयो B omits
१२२	२३	युष्मभ्यं B युष्म
	२६	पटूकरोषि B पटूकरोपि
	२६	सरितो B omits सरितो
१२४	१७	°कालनै° C °कालं नै° °सेवितो C °सेविता
१२४	२१-२२	°तः तीव्र...भिलाषव° B omits.
	२३	वक्षेत्यादि B omits
	२४,२५ २६,२७	क्षतं...रजःपरा वेदय...अपूर्व-बन्धेति } B omits
१२५	२२	भाष्य° C महाभाष्य°
,,	२६	लोकप्र° C लोके प्र°
१२६	१७	विधेयत्वप्रतीति° B विधेयत्वा°
१२६	१८	°निदेशेनो° C °निर्देशनो°
१२७	२८	°ब्दानन्तरो A °ब्दानं [त] रो B °दानांतरो
१२८	२३	यत्रैव B omits यत्रैव
१२९	२१	सा च बहु° C drops च
१३०	२	सिद्धस्थो B सिद्धस्वो
,,	२२	°परिवर्त्ति B °परिवर्त्त
,,	२४	रिपुस्त्रीणामिति च B omits
,,	२५	यद् B यदिद्
,,	२८	विधेयत्वं चैतत्प्रा° B omits
१३१	१७	क्लिश्नातु A. B. क्लिस्नातु
,,	१८-१९	यथा सौधादु° B omits
,,	२३	°कर्तृकानेका B °कर्तृकानेक
,,	२७	बहुवकर B बहुकर
,,	२८	अनुरक्त B मुरक्त
१३४	२१	मतिविकासा° B omits मति
,,	२७	°वर्णत्वेन B °वर्णने
१३५	१५	कुतुकः C कुन्तकः
१३५	१६	अत्रा° B अत्र°
,,	२७	त्वविधाने B त्वं विधाने
१३६	१८	°मणि° B omits
,,	२७	°विद्जन° B व्यंज°
१३८	१८	द्वितीयार्धे C द्वितीयेर्धे
,,	१९	विश्वा°···निमित्तं C drops
,,	२१-२२	पुत्रा···ददासि C omits
१४०	१५	°मर्थाना° B omits
,,	१९	°चारिभिः B चारिणाभि°
,,	२२	प्रधानेन B प्राधान्येन
१४१	२२	प्रति···इत्युत्तराध° C omits
,,	२६	कोदण्डादिर्येन B. कोदण्डादि येन
१४३	१९	°नुक्तेः C °नुक्तैः
,,	२६	इत्याहु B इहु
१४४	२८	इति प्रतीतिः B omits
१४८	२८	समासा° A सामासा
१५०	१८	सहाय° A. B. साहाय

पृ.	पं.	प्रतीक
१५१	१८	°श्रानुभूत B. °श्रानुभूयत
	२२	यत्तु उद्देशिना B यद्देशिना
१५३	१६	स्त्रियाश्च° B स्त्रियश्च
१५३	२२	तत्र आर्थ° C तत्त्वार्थ°
१५४	२-३	बहुव्रीहि...त्वर्थाभ्यां B drops
,,	६	यत्र च B drops च
,,	११-१२	तव प्रसादात्... पिनाकपाणेः B drops
,,	१४	अथ यथा B drops
,,	१५	सहस्युत्त° B सहस्युत्त°
,,	२९	कटो C घटा
१५५	२८	तुरंगम् A. B. तुरगम्
१५७	२८	अङ्गनं B अङ्गणं
,,	२९	°मासनप्राणायाम B °मासनायाम
१५८	७	चित्तस्वरूपा° B भिन्नस्वरूपा°
,,	२१	°काकुश्राव B °काकिश्राव°
,,	२८	जातिर्भिन्न° B जातेर्भिन्न°
१५९	२८	°मयोर्विशेषयोः C °मयोर्विशेषाविशेषयोः
१६०	२९	वाच्ये C विशेषे वाच्ये
१६१	२४	पदान° C पदादन°
१६१	२७	लोकमवबाध° B लोकमपबाध°
१६४	२५	मालाया B मालया
१६५	१८	°प्रत्युक्त° C °प्रयुक्त°
१६६	२५	समुद्भूत° B सद्भूत°
१६६	२६	दिधीङ् इति C देधीङिति
,,	२९	कष्टत्वं गुणः B. C. omit
१६८	२१	पीडितवान् B पीठितवान्
१६९	२४	भेदज्ञान° B भेदेन ज्ञानज्ञान
,,	२५	अयं B omits
,,	२७	समापत्तिः B समापत्ति
,,	२८	पुराणः B पुराण
१७०	१०	नाथो B नाथ
१७०	१५	भवतीत्याह B भवतीह
,,	२७	सिद्धतमपदं B सिद्धंतमूपदं
१७३	१६	विषमबाण° B विषयबाण°
१७५	२५	°भावाभिनेया° C °भावाभिनया°
१७५	२६	शृङ्गारादयः B omits

पृ.	पं.	प्रतीक
१७६	२५	प्रत्युक्त° C प्रयुक्त
१७७	१५	°निवेशन° B निवेशने°
१७८	२०	°मोहत्वं C मोहितत्वं
१७९	३	धीरोदात्तादि° C उत्तमादि°
१७९	९	क्लृप्ता° B कृष्टा°
,,	,,	°लेहिनाम् B °लेहिताम्
१७९	१२	°भावे द्वितीया C °भावे च द्वि°
,,	२२	°निहतं B निहितं
१८१	७	°नैपुण्याभ्यां A °नैपुणाभ्यां
,,	१३	कलहान्तरिता B omits
१८२	२३	प्रभावा° B प्रभव
१८४	९	पुण्ड्र B मुद्र
,,	१३	°केरल° B °करेल°
,,	१६	वज्जुरातुङ्ग B वक्षुरात्वंग
,,	१९	°पीलु B °वीलु
,,	२१	°वानायु° B °व भायु°
,,	,,	°लम्पाक B लम्पाका°
,,	,,	°कीरतङ्गण° B °कीरत्तूगण°
,,	२३	कुहूदे° B कुह्वदे°
,,	२४	°वैदूर्या A. B. °वैडूर्या
१८५	९	°शिलीन्ध्र° B °सिलीन्ध्र°
१८५	१४	°क्षितिरोधः B °क्षिरोधः
१८६	१	च्युत° B युत°
,,	२	न B omits
,,	९	चिरोर्जितं B चिरोजितं
,,	११	सेविते C सेवते
१८७	२३	प्रकृतरस° C प्रकृते रस°
१८८	१९	°स्थ्यसं° B °स्थासं°
१८९	२१	°मधमपा...°वितत्या B. omits
१९०	१७	°पल्लवो° B °पल्लवे°
१९२	१७	भयं B अयं
,,	१७	°गमनतया B °गमनभया
,,	२२	प्राधान्य° A. B. प्रधान्य°
१९३	१८	°ताडनं B ताडन
१९४	४	प्रतिपद्यमानेन B प्रतिपाद्यमानेन
,,	१२	°विरुद्धम् B °निरुद्धम्
१९५	१५	समवेतानां B omits
,,	२०	भट्टसोमेश्वर B भट्टश्रीसोमेश्वर

N. B. Here ends ms B

अष्टम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१९७	२७	°लंकारो यथा C °लंकारोपकारो यथा
१९८	२६	°भङ्गोऽनपेक्षम् C °भङ्गानपेक्षम्
२००	२६	°वाध्यारोपाया अनु° C °वाध्यारोपरूपाया अनु°
२०१	२३	°त्युपमा प्रकृतस्य C °त्युपमया प्रकृतस्य
२०२	२०	वामनोक्तं C वामनेनोक्तं
२०७	२१	अनायासेनोपपत्तिः C अनायासोपपत्तिः
२०८	१९	°शनैर्न दृश्यसे C °शनैर्न दृश्यसे
२०९	२१	°वान्तैर्मलिन° C °वान्तैमालेन
२१०	२३	प्रतीतेरप्रयो° C प्रतीतिरप्रयो°
२१६	८	संस्फेटो C संस्फुटो
२२१	१२	°गीतवृत्तयुता C °गीतनृत्तयुता

नवम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२२९	१३	°संदंशावृति° C °संदंशावृत्ति°
२३०	१०	ततोऽत्रापि C ततो वापि
	२२	°पादादिगतान्त्या° C °पादादिगान्त्या°
२३३	६	तत्समुच्चये C तत्समुच्चयो
२३५	५	°तृतीयौ त्वन्तरितौ C °तृतीयौ त्वंतरितानंतरितौ
	६	एते चादिमस्य व्य° C एते चादिमध्यस्य व्य°
२३६	६	काव्यगडुभूता C काव्यगडुभूतता
	९	°तरवक्त्रादिभिदा C °तरचक्रादिभिदा
२३७	१३	अन्त्वसन्ते° C अन्वसंते°
२३८	२४	असतामहितो C असितामहितो
२४०	१७	द्विचतुःपञ्चषण्णां C द्वित्रिचतुःपञ्चषण्णां
	१८	चतुर्योगे विंशतिः C omits विंशतिः
२४२	२७	शब्दगतत्वेन C omits शब्द
२४३	१३	दीपमानाभ्यां C दीप्यमानाभ्यां
	१४	तत्र तु लुब्धा° C omits तु
२४५	२२	C adds the whole verse from अनुरागः to समागमः।
२४७	१८	शरद्वर्णनोऽयं C omits अयं
२४८	१०	तथा भाशब्दः C तथा हि भाशब्दः
२५०	४	°भूषणैस्तया C °भूषणैस्तस्याः
	१४	अपुरुषस्य पथेति C अपुरुषस्य यथेति
२५२	२७	इति भट्टश्रीसोमेश्वर° C इति श्रीभट्टसोमेश्वर

दशम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२६५	१०	व्यापनादि उत्प्रेक्ष्यते इत्याह व्यापनादीति। C व्यापनादि उत्प्रेक्षाविषयं लेपनवर्षणक्रिये तु तमो न भोगतत्त्वेनोत्प्रेक्ष्येते इत्याह व्यापनादीति।
	१३	क्षलितकपिशे C ज्वलितकपिशे
	२१	असंतोषो दिवाकृष्ट° C असंतोषादिवाकृष्ट°
२६६	२७	संभावनाया C संभावनाय
२६८	२१	सामानाधिकरण्यमुत्पाद्यते C सामाधिकरण्यमुपपद्यते
२६९	१३	अध्यारोपस्य आरोपः शब्दो° C अध्यारोपः शब्दो°
२७०	२४	प्रेमलतिकामिति C प्रेमलतिकेति
२७१	१६	रस्यतया C रम्यतया
	२५	°मुखः भ्रमरः C °मुखः स्मरः
२७४	२२	व्योमग्राह्य° C व्यामग्राह्य°
२७६	२१	वागाद्यनेकार्थप्रत्यायने अनेकोऽर्थ इति विभ्रां C वागाद्यनेकार्थ इति विभ्रां
२७९	१८	कारणकार्ययोः C कार्यकारणयोः
	१९-२०	समन्वयेन···भावलक्षण° C omits from उपमेयस्या to °सिद्ध्यर्थत्वेन
	२८	विशेषे प्रस्तुते सामान्यस्य C omits प्रस्तुते
२८२	२८	वाच्यार्थे C वाच्येर्थे
२८३	२४	अत्र चेतनेन C अत्राचेतनेन
२८६	११	विनावन्तीन् न C विनावन्ती न
	२६	प्रतिबिम्बभावः संगच्छते यत्र तु C प्रतिबिम्बत्वेनोपात्तः यथा चंद्रा-

पृ.	पं.	प्रतीक
२८६	२६	लोके भावः संगच्छते यत्र तु
२८७	१५	दैवीं C देवीं
	२५	असकृद्वृत्तौ C असकृद्वृत्तांतौ
२८८	२१	तुल्यस्वभावात् C तुल्यस्वभावत्वात्
२९१	१६	विहितवतिना च आक्षिप्ते इति C विहितवतिना च योयमार्थः क्रमः सामर्थ्यापरपर्यायार्थशब्द-लब्ध आकारप्रश्लेषादर्थशब्द-लब्धो वातेन आक्षिप्ते इति ।
	२१	स्रयो यस्य लक्षितः इति C स्रयोर्थतयमालक्षितः लक्षत इति
	२९	चतुष्कपञ्चकेऽपि दर्शितदर्शिना उदाहरणैरन्यद् C चतुष्कपञ्चकेपि दर्शिते दर्शितो-दाहरणैरप्यन्यद्
२९४	१५	अत्रापि श्लिष्टो° C अत्रोपश्लिष्टो°
२९५	२३	सौकर्येणान्यकृतये C सौकर्षेणान्यकृतये
२९६	११	अपि तु उत्पन्नस्य तस्य बाधस्तया C अपि उत्पन्नस्य बोधस्तया
	१४	प्रवर्तनाद् C प्रवर्तमानाद्
	१५	कारणसत्ता C कारणसत्ताया
	१६	भिद्यते C भिद्येता
	२५	अभेदाध्यवसायकत्वमिति C अभेदाध्यवसायादेकत्वमिति
२९७	१३	प्रयोज्यमाना C प्रयुज्यमाना
२९८	१३	°गतसंबन्धः C °गतः क्रमसंबन्धः
	१९	घनेन्दुरवी C घनेंदुरीची
	२२	क्रमसंबन्धावगतिरिति आर्थी C क्रमसंबंधात् गतिरित्यार्थी
२९९	११	विशेषरूपं क···वैधर्म्येण यथा C विशेषरूपं वैधर्म्येण यथा
३००	२२	जवः सैन्यं च C जवः पांशूनामिति सैन्यं च
	२४	°जातेर्निम्नत्व° C जातेरनिम्नत्व°
	२५	विश्वंभरात्वजाते C विश्वभरत्वे जाते
	२७	°त्वमपि अत्र पांशूनाम् इति पांशुत्वजाते° C °त्वमपि अत्र पांशुत्वजाते°

पृ.	पं.	प्रतीक
३०१	१७	शातपातः C सातपतेः
	२९	विरोधेन द्वयोरपि C विरोधिनोर्द्वयोरपि
३०२	८	संकरत्वाशङ्का C संकरत्वात् शंका
	१०	जस्सेग्गवणो C जस्से यवणो
	१८	°लंकार्यः कवि° C °लंकार्यै कवि° °विशेषस्तु C विशेषतस्तु
	२७	दोषज्ञैरपुष्ट C दोषज्ञैरनुष्ट
३०४	१०-११	भणित्वा उन्मूलिता C भणित्योन्मूलिता
	१२	तेनापि C केनापि
	१६	तद्रु[? किं भू]पतीनां C तदुपनीतां
	२०	उव्विग्गिरीए C उव्विविरीए
३०५	७	°रूपमेव एकाल° C °रूपमेवैकाल°
३०६	२२	समानोत्कृष्ट° C समेनोत्कृष्ट°
३०७	२३-२४	ताटस्थ्येन प्रतीतिः C ताटस्थेन प्रतीतेः
३१०	२२	°रसादिविषये रसादिध्वनि° C drops विषये
३१२	१४	अशोभनानामेवेति C अशोभननो चेदिति
३१४	२४	चुम्बनादिसक्तं C भुवनादिसक्तं
३१५	१८	धर्मः C धर्मी.
३१६	९	साधनस्येति यथा रुद्रटेनोक्तं C आदौ साधनस्योक्तिस्तदनु साध्य-स्येति यथा रुद्रटेनोक्तं
३१८	२८	परपुरुषे तथा कुचयुगले C परपुरुषे न वा कुचयुगले
३२१	२३	अनयोश्चेति प्रतिवचनयोः C अनयोश्चेति प्रश्नप्रतिवचनयोः
३२२	२१	°रूपेणाकारेण C °रूपेणालंकारेण
३२३	१७	वणो C वर्णो
३२५	१९	°योगेऽनुप° C °योगोनुप°
३३५	२४	°व्यङ्ग्यावसररस° C °व्यङ्ग्यावसरे रस°
३३६	१७	संयोजनेन चारु° C संयोजने चारु°
३५०	१२	भङ्क्षुण्टसिति C भंकुंटसिति
३५२	१७	वर्त्म विद्वदादीनां ध्वनि° C वर्त्म विदुषां ध्वनि°

---

*N. B.—It need not be pointed out that the A B C mss. of K. D. K. P. S. are different from A. B. C. mss. of K.P. For their sources see Introduction, pp. 4-6.

काव्यप्रकाशस्य A संज्ञित-ताडपत्रादर्शस्य टिप्पणानि ।

प्रथम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१	३	परामृशति note स्मरति
	५	जयति note अत्र नमस्कृतिर्वस्तुध्वनिर्व्यतिरेकोऽलंकारः (= ग्रंथस्य गीः प्रमाय (?) निर्माप्यत्वाद्भारती उचिता ध्वनिर्भावो रन(?)=) ब्रह्मणो शक्तिविशेषस्तथा
२	४	इह note काव्यालंकारे
६	१	°प्रवृत्तिः note अभ्यासः
	२	निर्माणे note असच्छत्तयाधानद्वारेण
		समुल्लासे note सच्छक्तिसंस्कारद्वारेण
७	९	अत्र हि note विशेषोक्तिरखंडेषु कारणेषु फलावच इति वचनात्तच्छायामात्रमत्र
८	५	°रन्यैः note आनंदवर्धनप्रभृतिभिः
		न्यग्भावित note न्यग्भावितं वाच्यं यस्मिन् व्यंग्ये तस्य व्यंजनं तल्लक्षमस्य
१०	६	अह्नाय note झगिति
	७	दर्दुरः note मंडूकः

द्वितीय उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
११	८	°योग्यतां note भट्टमतं
	९	°पदार्थोऽपि note अपि – शब्देन पदार्थस्य वाक्यार्थवाचि प्रभाकरस्याक्षेपः ।
	१०	वाच्य note पदेनेति विशेषः
१२	१५	°संकेतस्य note नरस्य शब्दादर्थविशेषप्रतिपत्ते°
१३	८	°वयवः क्रिया° note अवयवक्रियैव रूपं यस्योपाधेः
१४	४	परमाणुत्वादीनां note वैशेषिकसिद्धांतत्वात् कथं
	८	हिम note वाक्यादिरित्येकं पक्षं व्याख्याय जातिरेव वेति द्वितीयं व्याचष्टे हिमेत्यादि
१५	२	कैश्चिद् note यौगसौगतैः
	५	स note स साक्षात्संकेतिते मुख्येऽर्थः तत्र मुख्येऽर्थेऽस्य शब्दस्य यो व्यापार स मुख्य उच्यतेऽभिधा वा
	६	मुख्यार्थबाधे note तस्य मुख्यस्यार्थस्य योऽग्रे संबंधेऽनेकप्रकारे लक्ष्येणार्थेन सह
१७	२	लक्षणं note……लक्षणोक्ता तस्या एतौ भेदौ । रूढिलक्षणायास्तु योगप्राचुर्यान्नास्ति नैयत्याऽतोऽभिधातुल्यैवैषां
	३	कुन्ताः note भट्टमुकुलमतमपाकरोति
१७-१८	३	कुन्तादिभिः note स्ववाच्यमत्यजद्भिः
१८	१	स्वसंयोगिनः note अनेन तद्योग उक्तः
	३	गौरनुबन्ध्य-note प्रयोजनमत्र पुरुषाणां बाहुल्यप्रतीतिर्न तु भयंकरत्वादि । एवं ह्येतत् गौणी साध्यवसाना स्यात् लक्षणा । गौरयमिति यथा
१८	१०	श्रुतार्थो note अभिहितान्वयवादिमते
१९	१	उभयरूपा note यत्र वस्तु वस्त्वन्तरे उपचर्यते तत्रोपचारमिश्रणमस्ति यथा गौर्वाहीक इत्यत्र
	२	लक्ष्यस्य note तटादेः
	२	लक्षकस्य note गंगादेः

पृ.	पं.	प्रतीक
१९	१	उभयरूपा note यत्र स्वमर्थं सर्वथा त्यजन् शब्दोऽन्यल्लक्षयति तत्र लक्षणेन लक्षणा यत्र स्वार्थमपि वदन् अन्यमुपादत्ते सोपादानलक्षणा यथा कुंताः प्रविशन्ति ।
	४	तत्त्व note एकत्व
	९	सारोपा note यथा गौर्वाहीकः
२०	२	साध्यवसाना note गौरेवायं
	४	गुणौ note गुणा जात्यादयस्तैर्निर्वृत्तौ गुणौ
२१	१	अत्र हि note स्वार्थं गोत्वं तत्सहचारिणो जाड्यादयस्त एवैकार्थसमवायात्
	२	परार्थ note वाहीक
	८	लक्ष्यमाणगुणैः note लक्ष्यमाणाश्च ते गुणाश्च लक्ष्यमाणस्य गुणा इति वा तत्राद्येन समासेनाद्यौ द्वौ पक्षौ गृह्येते गुणलक्षणाप्रधानत्वात् द्वितीयेन तु तृतीयपक्षोऽवच्छिद्यते तल्लक्षणाप्रधानत्वात्. ।
	८	वृत्तेः note शब्दव्यापारस्य
	१०	लक्षणा note पूर्वोपात्तोपादानलक्षणा
३०	३	अर्थान्तर note अर्थान्तरं प्रतिपाद्यार्थलक्षणं प्रतिपादयन्नेव सन्
३०	४	तत्र note शब्दस्य व्यंजकत्वे

तृतीय उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३१	२	अर्था प्रोक्ताः note व्यंजकतया
	४	अर्थव्यंजकता note अर्थाः कथं व्यंजका भवन्तीति
	११	अइपिहुलं note अयि पिहुलमित्यादीन्युदाहरणानि वाच्यमथमपेक्ष्य दृष्टानि (?)
	१३	गम्यते note तटस्थेन
३३	१२	गुरु note कालविशेषाद्यथा

चतुर्थ उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३७	१	यस्तत्र note उत्तरत्र ध्वनावित्यनुवादात्स ध्वनिरिति योज्यं
	३	°मूल° note लक्षणामूलं च तद्रूढ्यं(?)यं च तस्य प्रासत्यविवक्षितं
	८	वचना° note न वचनमात्रं ब्रवीम्यपि त्वाप्ततयोपदेशं ते यच्छामीति समग्रोपि ध्वनिरेव उपदेशरूपतया परिणमतीति अत्र वच्मीत्यनेन नोपदेशदानं लक्ष्यमस्य त्वाप्तत्वं व्यंग्यं ।
३८	२	बहु यत्र note उपकृते
	३	°मास्व note अत्र प्रियस्वेति ध्वन्यते
३९	१	भावशान्ति note अत्र कार्यतया स्थित इति संबंधः ।
	२	रसाद्यलं° note रसवदाद्यलंकाराद्
	३	प्रधानतया note इंगितया
४२	१	बलाद् note विभावादिकारणरूपाः काव्यबलादनुसंधेयाः । अनुभावास्तु भुजाक्षेपकटाक्षादयः कार्यरूपाः शिक्षातोनुप [ादेयाः।] (न ह्यशिक्षितो नटः एताननुसंधातुं समर्थः । व्यभिचारिणस्तु सहकारिरूपाः कृत्रिमनिजानुभावार्जनबलादनुसंध (।तव्याः ॥)
	२	°रपि note न हि नाट्यसमये सीतादयो मुख्याः सन्ति ।
	५	तत्रा note वस्तुनः
	६	चर्व्यमाणो note स्वाद्य एव केवलं विदग्धसभ्यानां
४४	१	चाभिधातो note विभावादयो न ममैव नापि परेषामेव किंतूभयसाधारणाः । ततश्च न ताटस्थ्येन नात्मगतत्वेनेति सिद्धं भवति ।
४५	१	अनुमाने note विषये
	७	नियत° note यः शृणोति पश्यति स नियतः ।

पृ.	पं.	प्रतीक
४५	८	प्रमातृ note प्रमाता हि सामाजिकः कश्चिद्विदन्यः भवति जानाति···रसस्तथान्येषामपीति
४६	१	स्वाकार note प्रमातुरात्मीयाकार एव
	६	विभावादि note काव्योक्तैर्नटेन प्रकाशितैः
४७	१	°वबोधशालि note अवबोधः शालि च तत् मितयोगिज्ञानं च
	३	प्रत्येयोऽप्यभि° note ज्ञाप्यः
	६	°चोभयात्मक° note कार्यज्ञाप्यत्वं
	११	°नैकान्तिक note °एते विभावाद्याः अस्यैव रसस्येत्येकांतो नास्ति।
	११	सूत्रे° note विभावानुभावे हि भरतोक्ते सामान्येन
४८	९	केवलानामेवास्ति स्थितिः note एते ह्येकैकशोपि शृंगारं न व्यभिचरंति
	११	°न्तिकत्वं note संयोगाद्रसनिष्पत्तिरित्यस्य
५०	४	नेत्रोत्सवा note सख्येव नायिकैव नेत्रोत्सवः स्त्रीजनस्य
	६	प्रवास note जालिका
	८	परिचया note पुनः पुनः करणं परिचयः
	११	लयः note तन्मयत्वं चेष्टामयत्वं
	१२	अन्यत्र note अन्यस्यां
	१५	वृत्त note अंतःपुरमध्ये । न बहिरिति सतीत्वमनेनोक्तं
	१४	निशान्तान्तरे note संजातः
	१६	एषा विरह note नाम
	१८	वक्रोक्ति note वलना (? च्)च वक्रोक्तिश्च
५१	३	गतं note रोदनेनापि गलितमित्यर्थः
	१२	आकुञ्च्य note वक्रीकृत्य
	१२	अञ्चुचिं note वाममित्यर्थः
५२	२	अशनि note अशनिनामा हुत-

पृ.	पं.	प्रतीक
५२		वहः
	३	घर्घर note घर्घराश्च ता मध्यरुद्धाश्च ताः करुणाश्च
	५	कृतमनुमतं गुरुपातकं note द्रोणाचार्ये स्वपितरि पांडवैर्मारिते अश्वत्थामा तत्पुत्र आह
	७	किरीटिना note अर्जुन
	९	विजहति note पंचमो मध्यमपुरुषस्य तः—
५३	४	प्रयाति note मृगः
५६	१	हरत्य° note देवविषयात्र रतिः
	२	योग्यतां note मुनिविषयात्र
	३	अन्यद् note गुर्वादिविषयं
	११	स्तुमः note पुंश्चलीं प्रत्याह
	१२	विलेभे note विभाजीचकार
	१५	अनेक note शाब्द्या तु वृत्त्या एककामुकविषयमेव
	१६	उपादानं note कर्तृ
५७	७	कोपस्य note शांतिरिति योगः
	१२	औत्सुक्यस्य note उदयः
	१३	पराक्रम° note परशुरामस्य
	१६	स्निग्धो note संधिः। अत्राद्यार्धेनावेगः। द्वितीयेन हर्षः।
	१८	क्वाकार्यं note पुरूरवाः प्रलपति क्काकार्यं
५८	१	भावं note ननु यथा भावस्य शांत्यादयस्तथा भावस्थितिरपि कैश्चिदुक्ता तत्कथं भवतामित्याह भावस्थि°
	२	मुख्ये note नन्वेवं भावादीनामपि व्यंग्यत्वान्मुख्यत्वं प्रसक्तं ततस्तेषामप्यंगित्वात्प्राधान्यं स्यादित्याह मुख्ये र°। रस एव मुख्यः। परं मुख्ये रसेपि कदाचित् भावप्रशांत्यादयो मुख्या भवंति यथा परिणीयमानं भृत्यमनुवर्तते राजेति भृत्यस्य प्राधान्यं°
	२	कदाचन note पाश्चात्येषूदाहरणेषु
५८	३	अंगित्वं note प्राधान्यं

पृ.	पं.	प्रतीक
५८	४	°स्वानाभ° note अनुस्वानश्चासौ संलक्ष्य क्र० स्थितिश्च तत्र वाच्योर्थो घंटाध्वानायते व्यंग्योनुरणनायते
५९	१	देवेन note भव्यता मेघाभिधेयेने···येत्यर्थः इंद्रो वै वर्षतीति
	३	°भिधाय note अथ राजा वर्णयितुं प्रक्रांतः अथ च मेघाभिधायकः कश्चिदुच्यते
	४	°मानो° note भवता देवेनेव करवालमंबुवाहमिव ऊर्जितेन गर्जितेनेव । धाराभिर्जलैरिवेति ।
६०	३	एकैकस्य note समासापेक्षया ऐकपद्यं
	४	उत्कर्षे note उत्सवैः
		हर्षदः note प्रमोदखंडनः
	९	अलंकार्यस्य note ध्वन्यमानत्वेन
६१	३	कवेस्तेनो note तेन कविना निबद्धो यः कश्चित्तस्य वा यत्प्रौढोक्तिमात्रं तस्मात् ।
६२	१४	विरोघा note यो हि निजमप्यधरं दशति स कथमरिवधूनामधरान्मोचयतीति
	२२	येषां note दिग्मातंगानां
	२२	अर्थाधि note कीर्तिरियं बिसिनीत्याद्युल्लेखेन
६३	४	°दर्शनात् note हेतुः
	५	तिष्ठन्ती note साध्यं
	५	ततः note राज्ञः सकाशात्
	६	त्यजन्ती note कंदराभिः शरणं दत्तमित्यर्थः
	११	थेरं···क इव note ब्रह्मा हि जडे जलजे उपविष्टः । इयं तु वाणी सचेतने
६४	१२	अनुदिण note तनोस्तनूकरणं विना नान्यत्कर्म यस्याः
६६	२	व्युत्थ note यो यं व्युत्थः स वाक्य एव । न पदे । क्रियावच्छिन्नं च वाक्यं सर्वत्र

पृ.	पं.	प्रतीक
६९	१	तद्प्रा° note एतौ विष्णुपुराणश्लोकौ
	११	°द्द्यो note लिंगव्यत्ययः प्राकृतत्वात्
	१५	काव्यलिङ्गम् note यत्र हेतुरेव परिचुम्बनादिको वाक्यार्थत्वं भजते स हेतुः ।
७०	५	वयस्सराले note तारुण्ये वक्रे
	७	व्यतिकर „ मिश्रीभावं यौगपद्येनेत्यर्थः
		समुन्मिष „ उत्पद्यन्ते
		अवस्थाः „ कामिनामिति शेषः
	१०	वारिजन्तो „ विरहावस्थायां हि न प्रतिभासते हारः
	११	°वअस्सएण note स्तनभर एव वयस्यो यस्य सोपि विषमोन्नतत्वाच्चलयत्येनं यतः न क्रमति
	१५	सरो note स्मरः किलाभिलाषमुत्पादयति
७१	१	णवपुण्णि note सोपि क्षणमात्रमेव रज्यते यतः
		को तं note केन संबंधेन भ्रातृत्वादिना संबंधः
	३	न तत note न तदनंतरं
	६	निवारिओच्चिअ note घनालिंगनाद्वारितः
	६	उव्वयरंत note अधिकीभवन् स्पर्शविघ्नहेतुत्वात्
		रमिअं note तदोक० एतावन्मयापि दृष्टं ततस्तदनंतरे कथं रमितं त्वयेति कथय
	१०	किं ति note किमिति
७२	२	व्याजेन note एवं रूपयाऽपह्नुत्या
	१४	°संवादादौ note गृध्रगोमायुसंवादं भारते प्रकरणं
	१८	स्थितो note न त्वस्तमितः
७४	२	लोकोत्तरेणैव note चुंबनरूपेण

पृ.	पं.	प्रतीक
७४	२	तदेवो° note लोचनं
७५	१४	षष्ठ्याः note व्यंजकत्वं इति योगः
७६	१-२	°व्यत्ययस्य note प्रहासो व्यंग्य इत्युत्तरेण योगः
	५	मन्ये note त्वमेव मन्यसे यथाहमनया सह क्रीडिष्यामीत्यर्थः
७८	३	सर्वनामवचनप्रातिपादिक note एकवचनबहुवचनरूपाणां व्यंजकत्वमिति योगः।
	४	°पिणो note व्यंजकत्वं
	१०	अन्येषां note पदैकदेशानां
८१	२	पडोहर note पश्चाद्भागशून्यगृहे

पञ्चम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
८५	२	द्रोणाद्रि note यत्र संरोहिण्यो मूलिकाः संति।
	१०	करः note करि अवसः। (?)
	१६	रसः note अंग
८६	१	अत्युच्चाः note पंचाक्षरी ना (?) कविर्भोजदेवस्येति।
	१३	अस्माकं note प्रत्यर्थिनां
	१५	भावस्य note रतेः
		रसाभास note शृङ्गार
		भावाभास note रति
		°भासौ note अङ्गं
८७	१	भावप्रशम note भावस्य रसाख्यस्यांगमिति योगः
	१५	कंचित् note रत्यर्थिनं पांथं
८८	२	°योक्तानि note प्राक्तनैः
		कश्चिद् note प्राक्तनादिकः
९१	१०	व्यङ्ग्यं note काक्वाक्षिप्तमिति योगः
९२	१	एषां note गुणीभूतव्यंग्यभेदानां
		पूर्ववत् note ध्वनाविव पंचात्रिंशदादयः प्रागुक्ता ये ते सर्वेपि शुद्धध्वनिवत् गुणीभूतव्यंग्येपि भेदा इत्यर्थः।
	४	ध्वन्यङ्गता note ध्वनिरूपजा

पृ.	पं.	प्रतीक
९२	४	तदाश्रयात् note अलंकृतिषु विश्रान्तत्वात्
	७	संकरैः note त्रेधा संकरः अनुग्राह्यानुग्राहकः १। ससंदेहः २। एकपदप्रतिपाद्यश्च ३। उदा० यत्ते सीमंतचिह्ने मरकतिनीत्यादि। १ जह गंभीरो जह रयणेत्यादि। २। स्पष्टोत्थसत्किरणकेसरसूर्यबिंबविस्तीर्णेत्यादि ३.
	६	व्यंग्यत्वं note इदमत्रैदंपर्यं। सर्वेपि प्राच्या भेदा गुणीभूतव्यंग्यस्यापि वक्तव्याः। परं वस्तु वालंकृतिर्वेत्यादौ प्रागुक्ते सूत्रे यत्र वस्तुमात्रेणालंकारो व्यज्यते न तत्र गुणीभूतव्यंग्यमिति। यदि तत्र व्यंग्येऽर्थो मुख्यो न भवेत्तदा वस्त्वेव मुख्यं स्यान्न च वस्तुमात्रे काव्यशब्दप्रवृत्तिः। शब्दचित्रत्वेन जघन्यत्वात्
	८	तैः note गुणीभूतव्यंग्यभेदैरिव
	९	स च प्रभेदैः note ध्वनिः
९५	२	°र्थान्तरसं° note त्वामस्मि वच्मि वि···
	३	°तिरस्कृत note उपकृतं बहु य°
	५	°मूले note उल्लास्यकलिकरवा°
		नियंत्रणेन note अभिधायादारस्य (?) नैयत्ये वाक्यार्थस्य शब्दस्यैतानि
	६	°मूले note अर्थशक्त्युद्भवेऽप्यर्थोयं भेदाः १२ यथा अरसासि रमणी इत्यादि।
९६	८	°रखण्ड° note लोकरूढापेक्षापि···न्वितामिधानवादिनां···
९८	९	दीर्घदीर्घतरो note यथेषुश्चर्म भित्त्वा मांसं भिनत्ति तद्भित्त्वाऽस्थि। तदपि भित्त्वा जीवितं गृह्णाति एवं वाक्यमेव परंपरया व्यंग्यमभिधत्ते इति तात्पर्यशक्तिवादिनः।
	१०	अत्र note निःशेषच्युतेत्यत्र

पृ.	पं.	प्रतीक
१०२	१८	°ध्यात्मना note स्वरूपस्य भेदेऽपीति शेषः
	२०	किमु स्मरस्मेरविलोकिनीनां note स्त्रीणां
१०३	५	°स्तुतिवपुषा note रूपेण
	११	सव्वणं note सव्रणं
१०४	४	°मर्थापेक्षा note संकेतितार्थवाचकत्वात् ।
१०५	९	शक्यते note तद्योग इति वचनात्
	१३	महं णुमजिहि note महमित्यव्ययमावयोरित्यर्थः
	१४	°बाधः note यतोयमभिधामूल एवेत्यर्थः ।
१०६	३-४	पुच्छभूता note एवं चाभिधावयवत्वमस्याः
	५	तदनु° note लक्षण
	६	तदनु° note लक्षण
		तदनुगतमेव note ध्वननं
१०७	१	नियतसंबद्धः note नियतेन नियतत्वेन इयत्तयेत्यर्थः संबद्धो नियंत्रितः
	२	अनियतसंबद्धः note अत्र ह्यनियतोऽर्थो व्यंग्यः । कामुकस्यान्यः । समीपस्थसखीनां त्वन्यः ।
	९	वाक्यार्थः note न पदार्थः
		वाक्यमेव note न पदं
	१०	येऽप्या note शब्दब्रह्मवादिनः
१०८	१	अनुमान note अनुमानचर्चान्यायप्रवेशतर्कादवगंतव्यः ।
		तद्रूपः note व्यंग्योऽर्थ इति योगः
	५	गृहे note यत्र सा दुःशीलास्ते
१०८	५	श्रमणं note कर्तृ
	६	अश्रमणं note कर्म
१०९	५	अत्रैव note अत्रापीत्यर्थः
	९	व्यक्तिवादिना note ध्वनिवादिना

षष्ठ उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
११०	३	तत्र note शब्दार्थचित्र—
११०	३	काव्यद्वये
		स्थितिः शब्दार्थचित्रयोः note यत्र शब्द शब्देचित्रप्राधान्यं तत्राप्यर्थचित्रं गौणं समस्त्येव । एवमर्थचित्रप्राधान्येऽपि शब्दचित्रं गौणं । न त्वकैकं चित्रं क्वापि काव्ये समस्ति ।
	१०	तदेतद् note सुप्तिङ्व्युत्पत्तिलक्षणं
	११	द्वयं तु नः note भामहस्य शब्दालंकाराऽर्थालंकाराश्च मता इत्यर्थः

सप्तम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
११२	३	तदाश्रयाद् note रसस्याश्रयभूतो यतो वाच्यस्ततोसावपि मुख्यः
	४	उभय note रसवाच्य
		शब्दाद्या note शब्दवर्णरचनानामपि रसे वाच्ये चोपयोगसद्भावाद्दोषा वाच्या इत्यर्थः तेषु note शब्दादिषु
	७	दुष्टं note पदारब्धत्वाद्वाक्यस्यादौ पददोषानाह
	९	°मथ note एते क्लिष्टाद्याः ३ समासार्थे वेत्यर्थः
	१०	°मेव note एते १६ पददोषाः
	१२	°रंगितैः note उपलक्षितया
११२	१३	कार्तार्थ्यं note कृतार्थत्वं
११३	२	तिन्दुक note टिंबरूयं
	११	दैवतो note अधिष्ठाता
११४	५	उज्वलीकृत note प्रशोभीकृत
	८	सत्रिभिः note यायजूकैः
११५	२	°दरः note आदरः भयं च
	१०	°गतं note तदप्यवाचकं
	१३	नृत्ता° note नृत्यंती झटिति यत्पादमूर्ध्वं करोत्यसौ दंडशब्दः
	१४	विदधत् note बिभ्रत्
११६	४	अरालितां note वक्रितां
११७	२	°कलापो note घनं निबिडं

पृ.	पं.	प्रतीक
११७	२	रुचिरः। स चासौ कलापश्च अस्य note बर्हिणः
	११	°शयता° note व्याप्त आशयो यस्य स तथा शुद्धाशय इत्यर्थः तस्य भावस्तत्र।
	१३	एतत् note हिंसादिकं
	१४	योगशास्त्रादौ note योगशास्त्रादौ न तु व्याकरणे
११८	१	°न्निषिद्धं note रूढि° प्रयोजनं वा विना
	१२	मूर्ध्ना···note रावणः प्राह
	२०.	°मात्र° note न तु मौर्वी। सा हि धनुष्मतः सामान्येन सिद्धैव°
११९	७	°मुक्ता note न मुक्ता या प्रागभवताऽतिप्रियत्वात्
	९	तां तिं note खेदं विरक्तत्वात्
		अस्मान् note सखी आह
१२१	१	न त्रस्तं यदि···note भार्गवः प्राह
१२२	५	इंद्रः। मूकबधिरोऽनेडमूकः note अप्रयुक्तः
	९	प्रसिद्धाः note अतो निहतार्थं दोषः
	१०	कुविन्दस्त्वं note राजपक्षे पृथ्वीलाभयुक्तः। कोलिकश्चान्यपक्षे पटयसि note पटू करोषि पटं करोषि गुणाश्च ग्रामाश्च सरितश्च नद्यः ता। दवरकसंदोहा तां याः सरमः। ताम्भः।
	११	वनस्थाः note किन्नराः। वने जले तिष्ठंति वनस्था धीवराः
	१३	विगता note या हि पटं करोति तद्भार्या कथं विगताच्छादनं भ्रमति
१२३	३	°सर्पति note गच्छंती रतार्थं गच्छंती च
		कंपना note सेना। रागवशाच्च ला–च
		वामलोचना note वामे शत्रौ लोचनं यस्या वल्गुलोचना च
	४	प्रहण note प्रहार
१२३	५	मोहन° note मूर्च्छां सुरतं शत्रूणामेव भूपतेश्च
	१०	पावका° note पवित्रान्वये
	११	°र्थत्वं note एषु त्रिधाऽश्लीलं
	१५	°संदेहः note इति संदिग्धदोषः
१२४	१	°प्रतीताः note इत्यप्रतीतदोषः
	५	रजः note क्षतं सत्त्वरजोभ्यां परं तमो यस्यां
	६	वेदय note बोधय–रविकिरणैर्भूमिहततमाः कृता। तत्त्वं जागृहीत्यर्थः।
१२९	४	प्रतिजहि note स्फेटय
	११	मात्रा note भरतसंबंधिन्या
१३०	१	उदाहार्यं note अविमृष्टविधेयांशं
१३१	५	विरुद्धा प्रतीतिः note इति विरुद्धमतिकृद्दोषः
१३२	३	त्वादिति note श्रुतिकटु
	४	लभ्य note भविष्यत्येव
	१२	निषेक note अश्रुपयसां निषेकं कुरुते दशां कासामिव चेतोभुवो भल्लीनामिव
	१३	कुरुते note भल्लिः पाठ्यत इति यद्रूढं तदिव कुरुत इत्यर्थः
१३३	१२	°शब्दः note एषु त्रिषु वृत्तेषु पेलपूंसप्रेतशब्दैकदेशाः व्रीडाजुगुप्सा अमंगलार्थाः
	१३	°तरां note प्रभवति
	१५	संदेहः note विवक्षितश्च साधुषु चरतीति।
	२०	°मेव note न क्षमते
१३४	६	वाक्यमेव note वाक्य एवैते दोषा इत्यर्थः
	१३	°घस्मर note कर्मधारयः
		अस्त्राणि note मंत्रायुधानि
	१५	अत्र note रौद्ररसे
		विकट note कठोर
	१६	निशुंभ note भंग
१३४	१७	°विद्धः note मुक्तः
१३५	४	संधे° note परः संनिकर्षः संहिता। सैव चात्र संधिः

पृ.	पं.	प्रतीक
१३५	९	°सपदमेषु note चरितेषु
	१३	प्रगृह्य note यत्स्वरेण न संधीयते तत्प्रगृह्यं पदं
१३६	२	°मुत्तपते note दीप्यते
	३	संधा० note दुड्डी-लण्ड-चिंकु शब्दाः कस्मीरदेशे वरांगमेढ्रयोनि-मणिवाचकाः
	४	उर्व्यसावत्र note कष्टत्वं यथा
	६	हृतं लक्षणा note छंदोलक्षण
	१३	अत्र यदिहान्यत्स्वादु note एवं नाम सुंदरत्वमस्य कामस्य यत्क्षण-मपि परिहर्तुं न शक्यतेऽयं च दोषो यस्य विपक्षैरपि ब्रह्मचारिभिः प्रपन्नः । गुण एवेत्यर्थः ।
१३७	१	°भकारौ note एतौ क्वापि च्छंदसि निषिद्धाविति ज्ञायते ।
	६	कन्या note कुमारीमृत्तिका
	७	संभाराः note संभारा मृदंत-क्षेप्या लाक्यादयः
	१२	मुग्ध note मुग्धाया विदग्धायाश्च सभाया मध्ये रत्नं
१३८	६	रतं वा note इदमप्यनुचित-मक्रमश्चेति योगः
१३९	११	द्वितीया note द्वितीयस्मिन्नर्द्धे गत एको वाचकशेषः शब्दांशो यस्य प्रथमार्धस्य तत् ।
१४०	१	गुणानां note विशेषणानां
१४१	१४	नरपति note युधिष्ठिरः
१४७	५	प्रकृतेः note भग्नः प्रक्रम इति योगः
१५०	८	°जेयं note स्त्रीपक्षे निष्करुण-कुलजा
	८	भुज note दोषाकरो यत्कुलं तस्य श्रीः
	९	कुट्टनी note महती चासौ कुट्टनी च
	१०	सर्वगा note गम्यागम्यगामिनी
१५२	३	विशेषा° note नियमानियमयोः विशेषाविशेषयोः परिवृत्तं विनि-मयो येषु वाक्यार्थेषु ते तथा
१५२	५	विध्यनु° note विध्यनुवादाव-युक्तावनुचितौ यत्र
	६	दुष्ट note दुष्टं पदमित्येतदेव दुष्ट इति लिंगविपरिणामेन संध्यत इत्यर्थः
	१२	परिमलं note चमत्कारं कमल-गंधं च
	१४	रुचयः note अभिलाषाः किरणाश्च
१५३	६	पस्पश° note आलमाल-प्रायाः (?) । निरर्थकाः ।
१५५	३	कर्णालं note कर्ण । कृप । हार्दिक्याः राजविशेषाः ।
१५६	१	न्याय्यः note न चेदेकत्र । इति दुष्क्रमो नाम दोषः ।
	२	स्वपिति···note सूत्रहव्यां कोपि वेश्यामाह । ग्राम्यत्वोदाहरणमिदं
	१२	इदं ते केनोक्तं note प्रसिद्धि-विरुद्धो यथा
	१३	हेम्नः note हेमकटकाख्ये वस्तुनि
	१६	प्रसिद्धं note इति लोकविरुद्धं
१५७	३	प्रसिद्धः note न त्वंकुरोद्गमः । इति कविप्रसिद्धिविरुद्धं
	५	महसि note सति
		सुदृशि note कामिन्यां
		यान्त्यां note उपपतिसमीपे
	१५	°शास्त्रेण note विरुद्धं
	१८	विहितम् note इति कामशास्त्र-विरुद्धं
१५८	२	विमुक्तः note मुनि
१५९	१०	°विषादिता note अत्र किमद्भुतं । सदैव । प्रकृतिरेव । इत्येतेषां ततः किमित्येक एवार्थः ।
१६०	१५	°द्वक्त्र note तस्या वक्त्रं
	१६	ज्योत्स्नामिति note ज्योतिष्मती रात्रिर्ज्योत्स्ना
१६१	४	अर्थित्वे note माल्यवान् रावण-मातामहः प्राह

पृ.	पं.	प्रतीक
१६१	६	परस्य note रामस्य
	१३	रावणः note जगदाक्रंदकारित्वाद्यर्थांतरसंक्रमितवाच्यः
१६२	८	प्रयत्नपरिबोधितः note अश्वत्थामा दुर्योधनं प्रत्याह । मां चेद्द्रोणाचार्यपदे करोति तदाहं सर्वान् रिपून्हन्मि । ततस्त्वं निश्चिततया रात्रौ सुखं शेषे ततः शयितः सन् स्तुतिभिरेव यदि परं बोध्यसे न चिंतया । अत्र शेषे विधेयमयुक्तं प्रयत्नेन बोध्यसे इत्यस्यैव विधेयत्वात् ।
	१६	°जाल्मो note मूर्खः
१६४	७	अन्यत्र note आरूढत्वावगतिर्यत्र नास्ति तत्र केवलो ज्या-शब्द इति योगः
१६५	१	समर्थनं note रूढेष्वेवायमपवादः
१६६	१	दोषाणां note अदुष्टता
१६७	८	वचसि note कष्टत्वं गुणः ।
१६८	११	°राजते note व्रीडाश्लीलमिदं
	१४	अक्रमेः note अमंगलाश्लीलं
१७५	१०	व्रीडा note स्वशब्देनोपादानं
	१३	मील note मीलंत्यौ भ्रुवौ यस्याः
१७६	१	°दुच्च° note उच्चे भुजमूले लोक्यते आलोकेन तां
	३	कोमल° note कोमलकपोलतलेऽभिषिक्तो रोमांचादिना व्यक्तो योनुरागस्तेन
	५	°मतिवृत्य note तारुण्य इत्यर्थः
	६	°तनोति note कोपि स्वजायां पश्यन् विकारैरात्मानं मोटयतीति तात्पर्यं ।
	८	प्रहारा° note संग्रामे आयुधैः प्रहाराः
१७७	१३	निहुअर note उपपतौ
१७८	३	रतिविलापे note तत्र हि करुणस्य पुनः २ प्रकाशनं कृतं
	९	°वधे note तत्र हि मूलनायको विष्णुः

पृ.	पं.	प्रतीक
१८२	७	°वदातं note अवदातं सातिशयं कर्म
	९	°पूभयथापि note दिव्यप्रतिबद्धमदिव्यप्रतिबद्धं च वर्ण्यमित्यर्थः
१८९	१	सरसं note एकत्र सामं । अन्यत्र सस्नेहं
१८९	६	°मधेः note शृङ्गारविभावप्रतिपादनं
	७	प्रसिद्ध° note प्रसिद्धेन तेन गुणेन अधिकत्वलक्षणेन या उपमानता तया उपात्तमस्थिरत्वं
१९०	५	रसान्तर° note अविरुद्धं
१९१	४	स्मर्यमाण note स्मर्यमाणः शृंगारः करुणस्तु साक्षात्प्रतीयमानः विरुद्धोपि न दुष्टः । तथा विरुद्धेन सह साम्येन विवक्षितो विरुद्धोपि न दुष्टः
१९४	१	उपोद्बल्यते note उद्धतबलः क्रियते
	२	गुणः note अप्रधानो रसः °संस्कार note रसांतरेणोपोद्बलितः प्रधानं note अंगिनं रसं
	३	तथा note तेन प्रकारेण कृतात्मसत्कार इत्यर्थः
१९५	१	रसस्य note करुणस्य रसान्तरेण note शृंगारेण
	२	रसशब्देन note अंगिन्यंगत्वमाप्तौ यौ इत्यत्र अंगिनि रसे इत्यत्र शब्देन स्थायिभावो रत्यादिर्लक्ष्यते । स चांगित्वेनोदाहरणद्वये दर्शित एव

अष्टम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१९५	६	शौर्यादि note शूर इति व्यवहरंतीति योगः ।
	९	°विश्रांत° note पृथग्जनाः
	१२	°वंध्या note वामनादयः
१९७	१	उपकुर्व° note गुणविवेकमुक्त्वाऽलंकारविवेकमाह

पृ.	पं.	प्रतीक
१९७	९	°मुखेन note शब्दालंकारतया इत्यर्थः
	१३	भवती note नमनाय यंती
२०२	१०	गुणनिर° note न हि व्यक्तो गुणोत्र कोपि प्रतीयत इत्यर्थः
२०३	२	°गलित note चित्तस्येति शेषः
	११	शुष्के note शुष्कंधनस्याग्निरिति सः
२०६	१	गुणः note मुख्यवृत्त्या तु रस एवेत्यर्थः
२०८	९	स्पर्शाः note वर्गाः
		लघू note लघ्वंतरितौ
२०९	५	शान्ता note शांतमपस्य नतांगीशरीरव्यतिरिक्तस्य चिंतनं येषु
२११	३	कृष्णा note द्रौपदी
	६	काव्य note नाटकादि । तत्र चानुद्धता एव रचनादयः इति कविसमयः

नवम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२२३	६	पदभङ्गे श्लेषेण यथा note वक्रोक्तिर्हि द्वेधा पदानां भंगेन अभंगेनेत्यर्थः
२२४	६	छेक note छेकाश्च वृत्तयश्च ताः गतः प्रासः ।
२२५	१६	शाब्दस्तु note न तु वार्णः
२२६	१३	एक note तत्रेति व्याचष्टे
		भिन्ने note अन्यत्र । तं व्याचष्टे
२४२	६	कष्टत्वा note शब्ददोषाः शब्दगुणाः शब्दालंकाराः अर्थदोषाः अर्थगुणाः अर्थालंकाराः
२४६	४	य note शब्दोर्थो वा
	५	°भूमि note तेन स्वयं च पल्लवेत्यादावपि शब्द एव कविप्रतिभासंरंभगोचर इति शब्दालंकारतैव युक्तेति
	७	रसादि note अर्थमुखप्रेक्षित्वमेव भावयति ।

दशम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२५३	३	साधर्म्य note सामान्यं
		भेदे note विशेषे
२५६	६	स्थितौ note आर्थी भवति
	१०	स्वप्नेऽपि note आर्थी
	१२	चकित note आर्थीपूर्णा वाक्ये
	१४	सरसिज note पूर्णा श्रौती वाक्ये
२५७	१	अत्यायतै note पूर्णा श्रौती समासे
	५	अवितथ note पूर्णा आर्थी समासे
	९	गाम्भीर्य note पूर्णा श्रौती तद्धिते
	१०	दुरालोकः note पूर्णा आर्थी तद्धिते
२५८	९	तद्वत् note तया पूर्णोपमया तुल्या वर्तते या लुप्तोपमा सा तद्वत्
	१०	पंच note न तु षट् । वाक्ये समानधर्मलोपे श्रौती
२५९	३	करवाल note समासे समानधर्मे लोपे श्रौती १
		°पमा note तत्र समास आर्थी १
	४	विषकल्पं note तद्धिते धर्मलोपे आर्थी 'तद्धिते श्रौती निषिद्धा ४
२६०	१२	रुहरुहि note औत्सुक्यं
२६१	१	क्विप् note क्विप् आयि लोपः । समासश्च । तौ गच्छति इति द्वौ भेदौ ।
	९	मरीहसि note मरिष्यसि
२६२	१	त्रिलोपे note धर्मे उपमानवादि
२६९	२	आरोप note ज्योत्स्नादयः
		आरोप्य° note भस्मादयः
	७	कापालिकी note रात्रिरेव का° योगिनी
	८	मुद्रा note मुद्राशब्दः प्रशंसार्थः परिमलशब्दोप्येवं
	१०	पादत्रये note समस्तवस्तुविषयस्योदाहरणं पादत्रयं चतुर्थपादे त्वपह्नुतिः ।
२७१	७	नियता note नियतस्यारोपणं तदेवोपायो यस्य ।
२७२	५	वैरिञ्च note सहस्रं युगपर्यंतमहर्यै ब्रह्मणो विदुः इत्यादि

पृ.	पं.	प्रतीक
२७२	९	°मारोपण note आरोपणं निमित्तं यस्य
२७६	१२	भूपौ note विभाकरराजाभिधः
२७७	१	भेदकैः note विशेषणैः
		श्लिष्टैः note समानैः
	३	विशेष्यस्य note उपमेय
२८५	३	चरमं note पश्चात् अधिष्ठितमिति
२८६	४	°बिम्बनं note ननु प्रतिवस्तूपमायामिवैकार्थमेव साम्यवाचकं पदद्वयमिह प्रयुज्यते=परिवारपद-परिभोगयोग्यत्वयोरेकरूपत्वात् । अत्र तु निर्वाणमनोभवज्वलनविकासौ भिन्नावेकार्थौ
२९१	२	आक्षिप्ते note व्यंग्ये
२९९	७	अहो हि मे···note विशेषः
		वाच्य° note सुहृदं प्रति
	८	त एव धन्याः note इदं सामान्यं
		दृष्टैव note वैधर्म्यं
३०१	१	सुतत्त्व note परमार्थविदां
३०३	२	व्याजेन note कोर्थः श्रौती स्तुतिः परमार्थतस्तु निंदेति
३०६	६	मतं note अभीष्टं
३०७	३	न्यूनेन note प्रहारलक्षणेन
		उत्तमस्य note वसुधारूपस्य
३०९	८	यं प्रेक्ष्य···note हयग्रीवं राजानं
	१२	दृष्टे note निर्विकल्पेन
३०९	१३	यथा दृष्टं note भेदविकल्पौ हि विकल्पस्यैव व्यापारः । स ह्यभिन्नमपि वस्तु गौः शुक्लश्चल इत्येवं भिनत्ति । भिन्नमपि पदार्थ··· गौरित्येवं संसृति
३१०	८	उपलक्षणीये note वर्णनीये वाक्यार्थकृत इत्यर्थः

पृ.	पं.	प्रतीक
३१६	१	पौर्वापर्यं note आदौ साध्यनिर्देशः । यद्वा आदौ साधनोक्तिः पश्चात्साध्योक्तिरिति
३१७	८	गूढो note हस्तस्योपगूढं उपगूहनं
३१८	९	यदासत्त्या note येषु प्रागुक्तेषु आसत्त्या
३२२	२	°दृष्ट्वा भिन्नं note व्यासं
	३	वयस्या note विपरीतरतिकारिण्याः
३२३	६	एषा note विरोधः सो विरोधेऽपि विरुद्धद्वन्द्वेन यद्वच इति विरोधलक्षणमत्राप्यास्ति
३२५	११	सिंहिकासुत note सिंहः
	१२	सुतः note राहुः
३२६	५	महतो note तनुत्वेप्याश्रयाश्रयिणौ यन्महीयांसौ स्यातामिति योगः ।
	१२	अत्र note अत्राश्रयस्त्रिजगद्रूपः तनुरपि महतो यशोराशेर्मात्रैव मानेनाधिकस्याभवनान्महीयस्त्वेनोक्तः
	१४	°द्विष° note अत्र मुद आश्रितास्तन्व्योपि विधात्रा तनुलक्षणे आश्रये अमातान्महीयस्तयोक्ता
३२७	१२	कृती note उपहासे
	१३	संबंधि note विष्णुसंबंधिना मुखेन संबंधः सादृश्यरूपः ।
३२७	१४	लक्ष्मणा note कृत्वा
३४३	१५	°नियमेन note चक्री कर्ता चक्रारिपंक्तिमेव स्तौति तान्यदिव्यादिरूपेण
३४६	९	काकुत्स्थात् note कुशात्
		कुमुद्वती note कुशभार्या
३४७	६	उपात्तेनैव note न तु गम्यमानेन

*
*   *

काव्यादर्शकाव्यप्रकाशसंकेतस्य A. B. संज्ञितादर्शयोः पार्श्वगतानि टिप्पणानि ।

प्रथम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३	१०	शास्त्रं B. note वेदः
	११	°त्याख्यान° B. note दृष्टान्तः पुराणेतिहासयोः
७	१४	°रेकस्य A. note व्यतिरिक्तत्वेन
९	१७	क्षालितम् A. note प्रक्षालितमिति ह्युक्ते न व्यङ्ग्यं प्रतीयते क्षालनस्य वाच्यामेव संभवात्
		निर्मृष्टो A. note नितरां

द्वितीय उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१४	१९	विभिन्नेषु A. note वक्ष्यमाणं
१६	२३	अन्योऽर्थ A. note गङ्गाशब्देन साक्षात्तटस्यानुक्तेः
	२४	लक्षणोऽर्थ A. note °णो योऽर्थ B. लक्षणस्य
१९	१२	यत्र शब्दः A. note यथा गङ्गायां घोषः यथा कुन्ताः प्रविशन्ति
२४	२४	तस्य A. note लक्ष्यस्य

तृतीय उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३४	१३	उदाहृतं A note माए घरोवयरणमित्यादिना

चतुर्थ उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
३७	२८	धर्मान्तरं B. note आप्तत्वं
४०	१३	वासनात्मया A. note जन्मकालेऽपि पुरुषेण सहोत्पन्न इति हृदयम्
४२	८	°भावार्जनं A. note यतो व्यभिचारिणां निजानिजानुभावाः सन्ति
४३	७	तच्छ° A. note नट
	८	तन्निष्ठं A. note शरीर
		प्रतिशीर्षकादि A. note आहार्यानुभाव
		भुजाक्षेप A. note सात्त्विक
		भ्रूक्षेपकटाक्षादिकं A. note उपाङ्गानुभाव
४५	१२	लोकनाट्यधर्मि A. note स्वभावाभिनयोपेतं नानास्त्रीपुरुषाश्रयं
४५	१२	नाट्यं लोकधर्मी । स्वरालंकारसंयुक्तमस्वस्थपुरुषाश्रयं नाट्यं नाट्यधर्मी ।
४७	१९	°हितपर° A. note मितेतर
५८	११	रतिर्देवादिविषया A. note व्यभिचारिभावो ह्यत्र स्थित एव प्रतीयते, न शान्त्यादिविशेषणविशिष्टः ।
६०	१९	पक्षस्याग्रणीः A. note स्वकीयवर्गस्य
६०	२२	°लंकारो A. note व्यतिरेकाख्यः । व्यङ्ग्यो हि व्यतिरेकोऽत्र । व्यङ्ग्यं चालंकार्यमेव न त्वलंकारो भवति इत्यर्थः ।
६३	२६	कुर्वन्तीति A. note मानिन्यः
६४	२५	°वर्तमानत्वे A. note विषये
७५	२६	संबन्धमात्रं A. note गूढं
७६	२८	जितमिति A. note फलप्राप्तिः

पञ्चम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
८६	२५	ऊर्जस्वि A. note हननवृत्तेः
८७	२१	असोढेति A. note भावसंधिर्भावस्याङ्गं यथा 'असोढेति' ।
	२५	पश्येत् A. note भावशबलता भावस्याङ्गं यथा
	२७	°व्युत्क्रम° A. note विरुद्धोऽयं क्रम इति
	२७	विबोधः A. note विशिष्टो बोधः
८९	११	वाच्यतामिति A. note वाच्याङ्गतां
९२	२५	स्वे A. note स्वकीया
९२	२६	तात्पर्यम् A. note एकत्रैव वृत्तेर्ध्वनिर्गुणीभूतव्यङ्ग्यं चालंकारश्च भवत्येवेत्यर्थः ।
९३	२९	कषायवर्णीकृतः A. note प्रियः
९७	२६	°समितत्वाद् A. note असंकेतितत्वात्
१००	२७	बहिर्देव A. note लिङ्गतो यथा
१०१	१७	उद्गाता A. note समाख्याया यथा

पृ.	पं.	प्रतीक
१०४	१२	अपराधो A. note अलिनाऽधरः खण्डितो न त्वन्येनेति
	१३	प्रियाया A. note प्रियायाः सव्रणमधरं दृष्ट्वा रोषो भवति । अप्रियायास्तु दृष्ट्वा परिहारहेतुरानन्दो भवति । तद्धर्षो मा युष्माकं भूदिति
	१५	सखीविषयं A. note नायिका

षष्ठ उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
११०	२७	अत्रानुप्रासे A. note छेकानुप्रासे शब्दालंकारे

सप्तम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
१२५	९	इत्यादौ A. note असावस्याः स्पर्शो वपुषि बहलश्चन्दनरसः अयं कण्ठे बाहुः शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः ।
१३३	२५	अश्लीलः A. note न फलमद्यापि लभते सा विरहिणीत्वादित्यर्थः ।
१३६	१८	°संधौ A. note ढढणपरस्तु इत्यादिरर्ते तद्वर्गपञ्चमं ।
१५१	२६	निशाचरी A. note ताडका
१६०	२३	वक्त्राम्भोज A. note भोजराजं प्रतिच्छिन्ना वक्ति
१६७	२८	तद्विद्य° A. note सा विद्या येषां ते
१७०	२५	यथावज्जानते A. note तथा भूतप्रकाशात्मना प्रकाशन्ते ये ते तथा ।
१७०	२७	°ध्येयं A note अनेन भूसंविदित्वं तस्योक्तम्
१७५	२७	°पादान A. note द्वेषः
१७७	२०	तथात्रेति A. note तथाविधच्छायया उत्केर भावात् । अतोऽत्रानुभावानां कष्टकल्पनव्यक्तिः

अष्टम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२१२	७	मन्थल्लिका A. note मन (? त) ल्लिका
	१४	पर्यायबन्धेषु A. note संज्ञायां कनि

नवम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२२३	२०	श्लेषेण A. note भङ्गश्लेषेण अभङ्गश्लेषेण च ।
	२२	न A. note भङ्गे तु
	२३	°न्यस्य A. note द्वितीयस्य
२२४	१५	यायावरीयस्तु A. note पण्डितनाम
२२६	२३	अनन्वयेन A. note अ[न]न्वयनाम्नाऽलंकारेण ।

दशम उल्लासः

पृ.	पं.	प्रतीक
२६७	१३	तिकाल A. note भाल
३०३	११	क्रिया A. note अंह्रिप्रसारण-अङ्गदीर्घीकरण-कण्ठवक्रीकरण-मुखवक्षोलग्नानि संस्थानोक्तयः ।
३०८	२३	°घण्टो A. note कापालिकः ।
	२४	शस्त्रम् A. note पतति भुजं इत्येत् पदद्वयार्थतया परिणत इत्यर्थः ।

काव्यप्रकाशस्थविषयाणां अकाराद्यनुक्रमः†

विषय	पृष्ठ
अ	
अकाण्डे छेदः	१७८
अकाण्डे प्रथनम्	१७८
अक्रमम्	१५०
अगूढव्यङ्ग्यम्	८४
अगूढव्यङ्ग्या लक्षणा	२४
अङ्गस्यातिविस्तृतिः	१७८
अङ्गिनोऽननुसंधानम्	१७८
अतद्गुणः	१८७
अतिशयोक्तिः	२८४
अत्यन्ततिरस्कृतम्	३८
अद्भुतरसः	५२
अधमकाव्यलक्षणम्	१०
अधिकपदम्	१३७
अधिकम्	२७९
अनङ्गस्याभिधानम्	१८७
अनन्वयः	२६३
अनभिहितवाच्यम्	१४२
अनवीकृतः	१५९
अनियमपरिवृत्तः	१६०
अनुचितार्थम्	११४, १२२
अनुप्रासः	२२४
अनुप्रासदोषाः	२९५
अनुभावविभावयोः कष्टकल्पनया व्यक्तिः	१७७
अनुमानम्	३१५
अनुवादायुक्तः	१६२
अन्यशब्दसंनिधिः	२७
अन्योन्यम्	३२०
अपदयुक्तः	१६२
अपदस्थपदम्	१४४
अपदस्थसमासम्	१४५
अपराङ्गव्यङ्ग्यम्	८५
अपस्मारः	५४
अपह्नुतिः	२७५
अपुष्टः	१५२
अप्रतीतम्	११७, १२४
अप्रयुक्तम्	११३, १२२
अप्रस्तुतप्रशंसा	२७९
अप्रस्तुतप्रशंसादोषाः	३०१
अभवन्मतयोगम्	१३९
अभिधामूलव्यञ्जना	२७
अभिधालक्षणम्	१५
अभिनयः	२८
अमतपरार्थम्	१५१
अमर्षः	६४
अर्थः	२७
अर्थदोषः	१५२
अर्थभेदाः	११
अर्थव्यञ्जकत्वम्	३१
अर्थशक्त्युद्भवध्वनिः	४१
अर्थान्तरन्यासः	२४८
अर्थान्तरे संक्रामितम्	३७
अर्थालंकाराः	२६३
अर्थान्तरैकवाचकम्	१३९
अलंकारदोषाः	२९५
अलंकारलक्षणम्	१९७
अलंकारव्यङ्ग्यत्वम्	५८
अलंकारस्योपकारत्वम्	१९७
अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यः	३८
अवहित्थम्	५४
अवाचकम्	११४, १२३, १३३
अविमृष्टविधेयांशम्	११८, १२४
अविवक्षितवाच्यः	३७
अविशेषपरिवृत्तः	१६०
अश्लीलम्	११५, १२३, १३३, १३६, १६३
असंगतिः	२७७
असमर्थम्	११३
असुन्दरव्यङ्ग्यम्	९१
असूया	५३
अस्फुटव्यङ्ग्यम्	९०

† Adopted from the Ānandāśrama edition of K. P. S. of Manikyacandra.

विषय	पृष्ठ
आ.	
आक्षेपः	२९४
आलस्यम्	५३
आवेगः	५४
आशीः	२८८
उ.	
उग्रता	५४
उत्तमकाव्यलक्षणम्	८
उत्तरम्	३२०
उत्प्रेक्षा	२६४
उत्प्रेक्षादोषाः	३००
उदात्तम्	३१०
उन्मादः	५४
उपनागरिका	२२५
उपमा	२५३
उपमादोषाः	२९६
उपमेयोपमा	२६४
उपहतलुप्तविसर्गम्	१३५
उपादानलक्षणा	१७
उपाधिभेदाः	१३
उभयालंकाराः	२५१
ए.	
एकावली	२८२
ओ.	
ओजः	२०३
औ.	
औचिती	२७
औत्सुक्यम्	५४
क.	
कथितपदम्	१३८
करुणरसः	५१
कष्टः	१५३
काक्वाक्षिप्तव्यङ्ग्यम्	९१
कारणमाला	२७३,३१९
कालः	२७
काव्यफलम्	२
काव्यभेदाः	८
काव्यलक्षणम्	७
काव्यलिङ्गम्	३०७
काव्योद्भवकारणानि	४
कोमला	२२५
क्लिष्टम्	११८, १२४
ख.	
खड्गबन्धः	२४७
ग.	
गर्भितम्	१४६
गर्वः	५४
गुणभेदाः	२०२
गुणलक्षणम्	१९६
गुणालंकारभेदः	२०१
गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदगणना	९२
गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदाः	८४
गूढव्यङ्ग्या लक्षणा	२३
गौडी	२२५
गौणी लक्षणा	२०
ग्राम्यम्	११२, ११७, १२४, १५६
ग्लानिः	५३
च.	
चपलता	५४
चित्रकाव्यस्वरूपम्	११०
चिन्ता	५३
च्युतसंस्कृतिः	११३
छ.	
छेकानुप्रासः	२२४
ज.	
जडता	५४
त.	
तद्गुणः	३३४
तात्पर्यार्थः	११
तुल्यप्राधान्यम्	९०
तुल्ययोगिता	२८९
त्यक्तपुनःस्वीकृतः	१६३
त्रासः	५४
त्रिलुप्तोपमा	२६२
द.	
दीपकम्	२८७

विषय	पृष्ठ
दुष्क्रमः	१५५
दृष्टान्तः	२८६
देशः	२७
दोषगुणालंकाराणां शब्दार्थगतत्वम्	२४२
दोषलक्षणम्	११२
दोषापवादः	१६३, १८७
दैन्यम्	५३
द्विलुप्तोपमा	२६१
ध.	
धृतिः	५३
ध्वनिभेदपरिगणनम्	६१
ध्वनिभेदाः	३७
ध्वनेः संसृष्टिसंकरौ	८०
न.	
निदर्शना	२७८
निद्रा	५४
निरर्थकम्	१२१, १३२
निर्वेदः	५३
निर्हेतुः	१५६
निहतार्थम्	११४, १२२, १३२
नेयार्थम्	११७, १२४, १३३
न्यूनपदम्	१३७
प.	
पतत्प्रकर्षम्	१३९
पददोषाः	११२
पदानुप्रासः	२२६
पद्मबन्धः	२४८
परिकरः	३१६
परिवृत्तिः	३०६
परिसंख्या	३१७
परुषा	२२५
पर्यायः	३१३
पर्यायोक्तम्	३०९
पाञ्चाली	२२५
पुनःपुनर्दीप्तिः	१७८
पुनरुक्तः	१५३
पुनरुक्तवदाभासः	२५१
पूर्णोपमा	२५४
प्रकरणम्	२७
प्रकाशितविरुद्धः	१६२
प्रकृतिविपर्ययः	१७९
प्रतिकूलवर्णनम्	१३४
प्रतिकूलविभावादिग्रहः	१७८
प्रतिवस्तूपमा	२८५
प्रतीपम्	३३०
प्रत्यनीकम्	३२७
प्रबन्धगतध्वनिः	७२
प्रयोजनलक्षणा	२३
प्रसादः	२०२, २१०
प्रसिद्धिमतिक्रान्तम्	१४६
प्रसिद्धिविरुद्धः	१५७
फ.	
फलस्य व्यङ्ग्यत्वम्	२५
ब.	
बन्धः	२४७
बीभत्सरसः	५३
भ.	
भग्नप्रक्रमम्	१४७
भयानकरसः	५३
भावः	५५
भावशबलता	५७
भावशान्तिः	५७
भावसंधिः	५७
भावस्थितिः	५७
भावाभासः	५६
भाविकम्	३०७
भावोदयः	५७
भ्रान्तिमान्	३२९
म.	
मङ्गलाचरणम्	१
मतिः	५४
मदः	५३

विषय	पृष्ठ
मध्यमकाव्यलक्षणम्	९
मरणम्	५४
माधुर्यम्	२०३
मालादीपकम्	२८९
मालोपमा	२६३
मीलितम्	३२७
मुरजबन्धः	२४७
मोहः	५३
य.	
यत्तच्छब्दविचारः	१२६
यथासंख्यम्	२९७
यमकदोषाः	३४४
यमकम्	२२७
र.	
रशनोपमा	२६३
रसदोषाः	१७४
रसदोषापवादाः	१७०
रसभेदाः	४८
रसस्य शब्दवाच्यता	१७५
रसस्वरूपम्	३९
रसादीनां पदैकदेशादिगतत्वम्	७३
रसाभासः	५६
रीतयः	२२५
रूढिलक्षणा	२३
रूपकम्	२६८
रौद्ररसः	५२
ल.	
लक्षणलक्षणा	१८
लक्षणामूलव्यञ्जना	२४
लक्षणास्वरूपम्	१५
लक्ष्यार्थस्य व्यञ्जकत्वम्	१२
लाक्षणिकशब्दः	२४
लाटानुप्रासः	२२५
लिङ्गम्	२८
लुप्तोपमा	२५८
व.	
वक्त्रादिवैशिष्ट्यम्	३१
वक्रोक्तिः	२२३
वस्तुव्यङ्ग्यत्वम्	६२
वाक्यगतध्वनिः	६६

विषय	पृष्ठ
वाक्यदोषाः	१२१, १३४
वाचकस्वरूपम्	१२
वाच्यसिद्ध्यङ्गव्यङ्ग्यम्	८९
वाच्यार्थविचारः	१२
वाच्यार्थस्य व्यञ्जकत्वम्	११
वामनोक्ता गुणाः	२०५
वितर्कः	५४
विद्याविरुद्धः	१५७
विध्ययुक्तः	१६२
विनोक्तिः	३०५
विप्रयोगः	२७
विप्रलम्भशृङ्गारः	५१
विबोध	५४
विभावना	२९५
विरुद्धमतिकृत्	१२०, १३१
विरोधः	२९९
विरोधिता	२७
विवक्षितान्यपरवाच्यः	३८
विशेषः	३३३
विशेषपरिवृत्तः	१६०
विशेषोक्तिः	२९७
विषमः	३२५
विसंधिः	१३५
वीररसः	५२
वृत्त्यनुप्रासः	२२५
वैदर्भी	२२५
व्यक्तिः	२७
व्यङ्ग्यार्थस्य व्यञ्जकत्वम्	१२
व्यञ्जकशब्दः	३०
व्यञ्जनास्थापनम्	९५
व्यतिरेकः	२९०
व्यभिचारिणः शब्दवाच्यता	१७५
व्यभिचारिभावाः	५३
व्याघातः	३३५
व्याजोक्तिः	३१७
व्याजस्तुतिः	३०३
व्याधिः	५४
व्याहतः	१५३
व्रीडा	५४

विषय	पृष्ठ
श.	
शक्तिसंकोचकाः	२७
शङ्का	५३
शब्दभेदाः	११
शब्दार्थोभयशक्तिमूलध्वनिः	६४
शब्दालंकाराः	२२३
शब्दालंकारार्थालंकारभेदः	३४३
शान्तरसः	५४
शुद्धा लक्षणा	१७
शृङ्गाररसः	५१
श्रमः	५३
श्रुतिकटु	११२, १२१, १३२
श्रुतिलिङ्गादिविचारः	१००
श्लेषः	२३९, २७६
श्लेषोपमा	३४९
स.	
संकरः	३३७
संकीर्णम्	१४५
संदिग्धः	११७, १२३, १५६
संदिग्धप्राधान्यम्	९०
संदेहसंकरः	३३८
संभोगशृङ्गारः	४९
संयोगः	२७
संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यम्	५८
संसृष्टिः	२०२
सनियमपरिवृत्तः	१६०
सभङ्गाभङ्गश्लेषः	२४३
समम्	३२४

विषय	पृष्ठ
समाधिः	३२३
समाप्तपुनरात्तम्	१४६
समासोक्तिः	२७७
समासोक्तिदोषाः	३४८
समुच्चयः	३१०
सर्वतोभद्रम्	२४८
ससंदेहः	२६७
सहचरभिन्नः	१६१
सहोक्तिः	३०४
साकाङ्क्षः	१६१
साधकबाधकप्रमाणानि	३३९
साध्यवसानलक्षणा	१९
सामर्थ्यम्	२७
सामान्यपरिवृत्तः	१६०
सामान्यम्	३३२
सारः	३२२
सारोपलक्षणा	१९
साहचर्यम्	२८
सुप्तम्	५४
सूक्ष्मम्	३२१
स्थायिनः शब्दवाच्यता	१७६
स्थायिभावाः	५३
स्मरणम्	३२९
स्मृतिः	५३
स्वभावोक्तिः	३०२
स्वरः	२८
ह.	
हतवृत्तम्	२८३
हर्षः	५४
हास्यरसः	५१
हेतुः	३१९

*

* *

काव्यप्रकाशोदाहृतपद्यानामकाराद्यनुक्रमः

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
३	१३	अयि पिहुलं जलकुंभं	३१
७	२५२	अकलिततपस्तेजोवीर्य° (महावीरच० अं. २ श्लो. ३०)	१४९
७	२०८अ	अकुण्ठोत्कण्ठया पूर्ण	१३४
१०	५८१	,, ,,	३४४
१०	४६७	अखण्डमण्डलः श्रीमान्	२९२
१०	४५०	अण्णं लडहत्तणयं	२८४
४	७३	अतन्द्रचन्द्राभरणा	६४
१०	५९३	अतिथिं नाम काकुत्स्थात् (रघु० स. १७ श्लो. १)	३४६
७	२०४	अतिपेलवमतिपरिमित°	१३३
७	२५६	अतिविततगगनसरणि°	१५२
५	१३७	अत्ता इत्थ णिमज्जइ	१०५
३	२३	अत्ता एत्थ णिमज्जइ	३४
१०	३९४	अत्यायतैर्नियमकारिभि०	२५७
५	११९	अत्युच्चाः परितः स्फुरन्ति (पञ्चाक्षरी)	८६
५	११६	अत्रासीत्फणिपाश० (बालरामायणम् अं. १० श्लो. २०)	८५
७	१५९	अत्रिलोचनसंभूत०	११८
५	१२९	अदृष्टे दर्शनोत्कण्ठा	९०
७	२३९	अद्यापि स्तनशैलदुर्ग० (पद्यवेणी ५, हनुमन्ना० २)	१४५
८	३४६	अद्रावत्र प्रज्वलत्यग्निरुच्चैः	२०२
७	२२४	अधिकरतलतल्पं	१३८
७	१४२	अनङ्गमङ्गलगृहा०	११२
८	३४८	अनङ्गरङ्गप्रतिमं तदङ्गं	२०९
१०	५८०	अननुरणन्मणि० (रुद्रटालंकारः अ. २ श्लो. २३)	३४४
९	३६४	अनन्तमहिमव्याप्त० (आनन्दवर्धनः देवीशतकम्)	२३७
७	२६९	अनन्यसदृशं यस्य	१५७
१०	४१०	अनयेनेव राज्यश्रीः	२६३
१०	४१२	अनवरतकनकवितरण०	२६३
९	३८२	अनुरागवती सन्ध्या (ध्वन्यालोकः १)	२४५
७	२९९	अन्त्रप्रोतबृहत्कपाल० (महावीरच० अं. १ श्लो. ३५)	१६६
३	२०	अन्यत्र यूयं कुसुमावचायं	३३
४	३४	अन्यत्र व्रजतीति का	५६
७	२१९	अन्यास्ता गुणरत्नरोहण०	१३७
८	३४२	अपसारय घनसारं (कुट्टिनीमतम् श्लो. १०३)	१९७
९	३५६	,, ,,	२२५
१०	५४७	अपाङ्गतरले दृशौ	३२८
७	१८५	अपाङ्गसंसर्गितरङ्गितं	१२६
७	२८८	अपूर्वमधुरामोद०	१६४
७	२३४	अप्राकृतस्य चरितातिशयैः (महावीर० अं. २ श्लो. ३९)	१४२
९	(वृ०)	अबिन्दुसुन्दरी नित्यं (उद्भटालं.)	२४४
१०	४४६	अब्धेरम्भः स्थगित०	२८२
१०	४८२	अभिनवनलिनीकिसलय०	३००
४	५७	अमितः समितः प्राप्तैः	६०
१०	४३२	अमुष्मिँल्लावण्यामृत०	२७५
४	९७	अमुं कनकवर्णाभं (म. भा. शां. प.)	७३
७	२१६	अमृतममृतं कः संदेहः (वामन सू० ३. २.)	१३६
१०	५११	अयमेकपदे तया वियोगः (विक्रमो० अं. ४ श्लो. १०)	३१२
१०	५८५	अयं पद्मासनासीनः (सरस्वतीकण्ठा० परि. १ श्लो. ६१)	३४४
१०	४१८	अयं मार्तण्डः किं स खलु	२६७

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	४९०	अयं वारामेको निलय० (भल्लटशतकम् श्लो. १०८)	३०१
५	११७	अयं स रशनोत्कर्षी (म. भा. स्त्रीप.)	८५
७	३३७	,, ,,	१९१
९	३७३	अयं सर्वाणि शास्त्राणि	२४१
१०	४०८	अरातिविक्रमालोक०	२६१
९	३८९	अरिवधदेहशरीरः (उद्भटालं० व. १)	२५१
१०	४९६	अरुचिर्निशया विना	३०५
७	२८४	अरे रामाहस्ताभरण	१६३
७	२७८	अर्थित्वे प्रकटीकृतेऽपि (महावीर. अं. २ श्लो. ९)	१६१
९	३६९	अलंकारः शङ्काकर०	२३९
७	१९८	अलमतिचपलत्वात् (बिह्लणचरितम् श्लो. ५८)	१३१
७	२०२	अलसवलितैः	१३२
४	६१	अलससिरोमणि धुत्ताणं	६१
४	९४	अलं स्थित्वा श्मशाने (म. भा. शां. प.)	७२
१०	४२७	अलौकिकमहालोक०	२७३
७	१४९	अवन्ध्यकोपस्य (किरातार्जुनीयम् स. १ श्लो. ३३)	११५
१०	४३०	अवाप्तः प्रागल्भ्यं	२७५
१०	३९५	अवितथमनोरथपथ०	२५७
१०	५२७	अविरलकमलविकासः (रुद्रटालं० अ. ७ श्लो. ६०)	३१९
५	१२१	अविरलकरवाल०	८६
७	२७१	अष्टाङ्गयोगपरिशीलन०	१५७
१०	४०२	असितभुजगभीषणा०	२६०
१०	४६३	असिमात्रसहायस्य	२९१
१०	४६४	असिमात्रसहायोऽयं	२९२
५	१२३	असोढा तत्कालोल्लसद०	८७
७	१९१	असौ मरुच्चुम्बित० (हनुमन्ना०, पद्यवेणी ५)	१२८

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
७	२६०	अस्त्रज्वालावलीढप्रति० (वेणी० अं. ३ श्लो. ७)	१५५
७	२८७	अस्याः कर्णावतंसेन	१६३
१०	४२०	अस्याः सर्गविधौ (विक्रमो० अं. १ श्लो. १०)	२६८
१०	५५७	अहमेव गुरुः सुदारुणानां	३३१
९	३५३	अहो केनेदृशी बुद्धिः	२२३
१०	५४३	अहो विशालं भूपाल (काव्यादर्शः परि. २ श्लो. २१९)	३२६
१०	४८१	अहो हि मे बह्वपराद्ध०	२९९
४	४५	अहौ वा हारे वा (उत्पलः। भर्तृ. वै. श.(?))	५५
४	३८	आकुञ्च्य पाणिमशुचिं	५१
१०	३९८	आकृष्टकरवालोऽसौ	२५९
५	१२६	आगत्य संप्रति वियोग०	८९
७	२७९	आज्ञा शक्रशिखामणि० (वा. रा. अ. १ श्लो. ३६)	१६१
१०	५७१	आत्ते सीमन्तचिह्ने (हनुमत्कविः खण्डप्रशस्तिः)	३३७
७	३०८	आत्मारामा विहितरतयो० (वेणीसं० अ. १ श्लो. २३)	१६९
९	३८३	आदाय चापमचलं	२४५
१०	४४५	आदाय वारि परितः (भट्टेन्दुराजः)	२८२
७	२०१	आदावञ्जनपुञ्जलिप्त०	१३२
४	९६	आदित्योऽयं स्थितो (म. भा. शां. प.)	७२
१०	५४१	आनन्दममन्दमिमं (रुद्रटालंकारः अ. ९ श्लो. ४७)	३२५
७	१६३	आनन्दसिन्धुरति०	११९
१०	४२६	आलानं जयकुञ्जरस्य	२७२
७	१५५	आलिङ्गितस्तत्र भवान्	११७
७	३२३	आलोक्य कोमलकपोल०	१७६
१०	५००	आसीदञ्जनमत्रेति	३०७

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	६०२	आहूतेषु विहङ्गमेषु (भल्लटशतकम् ६९)	३४९
७	२२३	इदमनुचितमक्रमश्च	१३८
७	२६५	इदं ते केनोक्तं कथय	१५६
१०	४१९	इन्दुः किं क कलङ्कः	२६७
१०	४६५	इयं सुनयना दासीकृत० (उद्भटालं०)	२९२
२	८	उअ णिच्चल णिप्पन्दा (गाथासप्त० श. १ गा. ४)	१२
३	१४	उण्णिद्दं दोब्बल्लं	३१
७	१८८	उत्कम्पिनी भयपरि०	१२६
४	४३	उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं (माल. मा. अं. ५ श्लो. १६)	५३
७	३०५	उत्तानोच्छूनमण्डूक०	१६८
७	१४८	उत्फुल्लकमलकेसर० (नागानन्दम् अं. १ श्लो. १४)	११४
४	५३	उत्सिक्तस्य तपः परा० (महावीरच० अं. २ श्लो. २२)	५७
१०	४३६	उदयति विततोर्ध्वरश्मि० (शिशुपाल० स. ११ श्लो. २०)	२७८
१०	४३३	उदयमयते दिङ्मालिन्यं	२७६
७	२४५	उदेति सविता ताम्रः	१४७
३	१७	उद्देशोऽयं सरसकदली०	३२
७	२८६	उद्यतस्य परं	१६३
१०	५९८	उद्ययौ दीर्घिकागर्भात्	३४८
१०	४३८	उन्नतं पदमवाप्य यो लघुः	२७९
५	११५	उन्निद्रकोकनदरेणु०	८४
१०	४१६	उन्मेषं यो मम न सहते	२६५
४	२५	उपकृतं बहु तत्र	३८
७	२६६	उपपरिसरं गोदावर्याः	१५६
७	२१५	उर्व्यसावत्र तर्वाली	१३६
४	५५	उल्लास्य कृष्णकरवाल०	५९
४	७१	उल्लोलकर०	६४
१०	४७१	ए एहि किंपि कीएवि	२९५
१०	५५५	ए एहि दाव सुन्दरि	३३१
१०	४७७	एकस्त्रिधा वससि चेतसि	२९८
४	५२	एकस्मिन् शयने (अमरुश० श्लो. २२)	५७
१०	४४१	एतत्तस्य मुखात्कियत् (भल्लटश० श्लो. ९४)	२८१
७	१४३	एतन्मन्दविपक्व०	११३
२	११	एद्दहमेत्तत्थणिया	२८
७	२३५	एषोऽहमद्रितनयामुख० (उदाहरणम्)	१४३
७	३४०	एहि गच्छ पतोत्तिष्ठ ध्वन्या० ३)	१९२
७	३३०	औत्सुक्येन कृतत्वरा (रत्नावली अं. १ श्लो. २)	१८७
७	२२५	कः कः कुत्र न घुर्घुरायित०	१३९
४	४६	कण्ठकोणविनिविष्टमीश (उत्पलः)	५५
५	१३५	कथमवनिपदर्पो	१०३
१०	५५३	कपाले मार्जारः पय० (शार्ङ्ग० भासः)	३३०
१०	४४९	कमलमनम्भसि	२८४
९	(वृ०)	कमलमिव मुखं	२४३
१०	४१५	कमलेव मतिर्मतिरिव	२६४
१०	५५२	करजुअगहिअजसोआ	३२९
१०	३९९	करवाल इवाचारस्तस्य	२५९
७	१९२	करवालकरालदोःसहायो०	१२८
७	३०४	करिहस्तेन संबाधे	१६८
१०	४७५	कर्पूर इव दग्धोऽपि (बालरामायणम् अं. ३. श्लो. ११)	२९७
७	३२५	कर्पूरधूलिधवल०	१७६
१०	५१२	कलुषं च तवाहितेष्व०	३१२
७	१९५	कल्याणानां त्वमसि महसां (मा. मा. अं. १ श्लो. ५)	१२९
७	२७७	कल्लोलवेल्लितदृषत् (भल्लटशतकम् श्लो. ६२)	१६०
१०	४४७	कस्त्वं भो कथयामि	२८३
७	२०७	कस्मिन्कर्मणि सामर्थ्य०	१३३
५	१३६	कस्स व न होइ रोसो	१०३

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
७	२५०	काश्चित्कीर्णा रजोभिः (माघ० स. १५ श्लो. ९६)	१४८
७	१८६	कातर्यं केवला नीतिः (रघु० स. १७ श्लो. ४७)	१२६
१०	५३०	का विसमा देव्वगई	३२१
१०	५२२	किमासेव्यं पुंसां	३१८
७	२४०	किमिति न पश्यसि कोपं (रुद्रटालं० अ. ६ श्लो. ४१)	१४५
७	२०८	किमुच्यतेऽस्य भूपाल	१३३
१०	४५७	किवणाण धणं णायाण	२८७
१०	४२९	किसलयकरैर्लतानां (रुद्रटालं० अ. ८ श्लो. ५०)	२७३
१०	५२३	किं भूषणं सुदृढमत्र	३१८
७	१९६	किं लोभेन विलङ्घितः	१२९
१०	४६१	कुमुदकमलनीलनीर०	२९०
१०	४२३	कुरङ्गीवाङ्गानि स्तिमितयति	२७०
१०	५०८	कुलममलिनं भद्रा मूर्तिः	३११
७	१७४	कुविन्दस्त्वं तावत्पटयसि	१२२
१०	४७३	कुसुमितलताभिरहता	२९६
४	४०	कृतमनुमतं दृष्टं वा यैः (वेणी० अं. ३ श्लो. २४)	५२
७	२५९	,, ,, ,,	१५३
४	१०९	कृतं च गर्वाभिमुखं	७७
१०	(वृ०)	कृपाणपाणिश्च भवान्	३१३
४	६६	केसेसु बलामोडिअ	६३
४	६५	कैलासस्य प्रथमशिखरे	६२
५	११८	कैलासालयभाल०	८५
१०	५२४	कौटिल्यं कचनिचये (रुद्रटालं० अं. ७ श्लो. ८१)	३१८
७	३३९	क्रामन्त्यः क्षतकोमला० (ध्वन्यालोकः ३)	१९२
७	२२६	क्रेङ्कारः स्मरकार्मुकस्य	१३९
७	३२९	क्रोधं प्रभो संहर (कुमार० स. १३ श्लो. ७२)	१८२

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	४८८	क्रौञ्चाद्रिरुद्दामदृषद् दृढो०	३०१
१०	४३५	क्व सूर्यप्रभवो वंशः (रघु० स. १ श्लो. २)	२७८
४	५४	काकार्यं शशलक्ष्मणः	५७
७	(वृ०)	,, ,,	१८८
४	८३	क्षणदासावक्षणदा	६९
७	३४१	क्षिप्तो हस्तावलग्नः (अमरुश० श्लो. २)	१९३
१०	४६२	क्षीणः क्षीणोऽपि शशी (रुद्रटालं० अ. ७ श्लो. ९०)	२९०
४	४१	क्षुद्राः संत्रासमेते	५२
४	७५	खलववहारा दीसन्ति	६७
१०	५९५	गङ्गेव प्रवहतु ते	३४७
५	१२८	गच्छाम्यच्युतदर्शनेन	९०
१०	५५६	गर्वमसंवाह्यमिमं (रुद्रटालं० अ. ८ श्लो. ७८)	३३१
१०	५६६	गाङ्गमङ्गसितमम्बु	३३५
५	११६	गाढं वक्षसि ताडिते	८५
४	६४	गाढकान्तदशनक्षत०	६२
७	३११	गाढालिङ्गनवामनीकृत (अमरुश० श्लो. ४०)	१७१
४	६७	गाढालिंगणरहसुज्जुअम्मि	६३
४	१०२	गामारुहम्हि गामे	७५
१०	३९६	गाम्भीर्यगरिमा तस्य	२५७
७	२५१	गाहन्तां महिषा निपान० (शाकुन्त० अ. २ श्लो. ६)	१४८
१०	४८३	गिरयोऽप्यनुन्नतियुजो०	३००
१०	४८०	गुणानामेव दौरात्म्यात्	२९९
१०	५९१	गुणैरनर्घ्यैः प्रथितो०	३४६
३	२१	गुरुअणपरवसपिअ	३३
९	३५४	गुरुजनपरतन्त्रतया	२२४
१०	५६३	गृहिणी सचिवः सखी (रघु० ९ स. ८ श्लो. ६७)	३३३
७	२६४	गृहीतं येनासीः परिभव० (वेणी० अ. ३ श्लो. १९)	१५६
७	१६९	गोरपि यद्वाहनतां	१२१
१०	५९६	ग्रथ्नामि काव्यशशिनं	३४७

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१	३	ग्रामतरुणं तरुण्याः (रुद्रटालं० अ.७ श्लो. ३९)	९
४	४२	ग्रीवाभङ्गाभिरामं (शाकुन्तलम् अं. १ श्लो. ७)	५३
९	३९०	चकासत्यङ्गनारामाः	२५१
१०	३९३	चकितहरिणलोललोचनायाः	२५६
१०	५७८	चक्री चक्रारपङ्क्तिं (सूर्यशतकम् श्लो. ७१)	३४३
१०	५८३	चण्डालैरिव युष्माभिः (वामनसू० ४।२)	३४४
७	२३२	चत्वारो वयमृत्विजः (वेणीसं० अ. १ श्लो. २५)	१४१
७	२९५	चन्द्रं गता पद्मगुणान्न (कुमारसं० स. १ श्लो. ४३)	१६५
७	२९४	चरणत्रपरित्राण०	१६५
७	२०३	चापाचार्यस्त्रिपुर० (बालरामायणम् अं. २ श्लो. ३७)	१३२
७	२३१	,, ,, ,,	१४१
८	३४४	चित्ते चहुट्टदि णखुट्टदि	२०१
१०	५३७	चित्रं चित्रं बत बत	३२४
४	४४	चित्रं महानेष बतावतारः	५३
४	८२	चिन्तयन्ती जगत्सूतिं (विष्णुपुराणम्)	६९
१०	५८९	चिन्तारत्नमिव च्युतोऽसि	३४५
७	१६७	चिरकालपरिप्राप्त०	१२०
४	११२	छणपाहुणिआ	८१
७	२५८	जगति जयिनस्ते ते (माल० माध० अं. १ श्लो. ३९)	१५३
७	२९३	जगाद मधुरां वाचं	१६५
७	११५	जङ्घाकाण्डोरुनालो नख०	११५
७	२३३	,, ,, ,,	१४२
१०	५७२	जटाभाभिर्भाभिः करधृतः	३३७
५	१२५	जनस्थाने भ्रान्तं (भट्टवाचस्पतिः)	८८
१०	४२२	जस्स रणन्तेउरए करे	२७०
१०	५३४	जस्से अ वणो तस्से अ	३२३
१०	५७४	जह गंभिरो जह रअणा०	३३९
७	२१७	जं परिहरिउं तीरइ (आनन्दवर्धनः पञ्चबाणलीला)	१३६
४	६८	जा थेरं व हसन्ती	६३
४	४८	जाने कोपपराङ्मुखी (सुभा० । शार्ङ्ग)	५६
१०	४६६	जितेन्द्रियतया सम्यक्	२९२
७	३१७	जितेन्द्रियत्वं विनयस्य	१७२
१०	५२६	,, ,,	३१९
७	१६५	जुगोपात्मानमत्रस्तः (रघु० स. १ श्लो. २१)	१२०
४	६९	जे लंकागिरिमेहलाहि (कर्पूरमञ्जरी जव. १ श्लो. २०)	६३
४	९३	जोह्नाए महुरसेण	७२
७	२९०	ज्याबन्धनिष्पन्दभुजेन (रघु० स. ६ श्लो. ४०)	१६४
१०	४२१	ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला	२६९
१०	४७२	ज्योत्स्नामौक्तिकदाम	२९५
१०	४११	ज्योत्स्नेव नयनानन्दः	२६३
१०	४०७	ढुण्ढुल्लिन्तु मरिहसि	२६१
४	८९	णव पुण्णि मामियं कस्स	७१
३	१८	णोल्लेइ अणुल्लमणा	३३
३	१६	तइआ मह गंडत्थल०	३२
७	२१३	तत उदित उदारहारहारि	१३५
१०	४०१	ततः कुमुदनाथेन (महाभा० द्रो० प०)	२६०
९	३५५	ततोऽरुणपरिस्पन्द०	२२५
१०	५१६	तं ताण सिरिसहो अर० (आनन्दव० विषमबाणलीला)	३१४
३	१५	तथाभूतां दृष्ट्वा (वेणीसंहारम् अं. १ श्लो. ११)	३२
७	२२१	,, ,,	१३७
४	८१	तदप्राप्तिमहादुःख० (विष्णुपुराणम्)	६९
१०	५०६	तदिदमरण्यं यस्मिन् (रुद्रटालं० अ. ७ श्लो. १०४)	३१०

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
७	१९९	तद्गच्छ सिद्धयै कुरु (कुमारसं० स. ३ श्लो. १८)	१३२
१०	५१८	तद्गेहं नतभित्ति (आनन्दवर्धनः ध्वन्यालोकः)	३१४
१०	५९२	तद्वेषोऽसदृशोऽन्याभिः	३४६
९	३९१	तनुवपुरप्योऽसौ	२५२
७	१४७	तपस्विभिर्या सुचिरेण	११४
४	१११	तरुणिमनि कलयति	७८
१०	४०९	तरुणिमनि कृतावलोकना	२६२
१०	४५६	तवाहवे साहसकर्म	२८७
७	१८०	तस्याधिमात्रोपायस्य	१२३
४	५१	तस्याः सान्द्रविलेपन० (अमरु० श्लो. २६)	५७
४	१०३	ताण गुणग्गहणाणं	७५
७	३२२	तामनङ्गजयमङ्गलश्रियं	१७६
७	१८१	ताम्बूलभृतगल्लोऽयं	१२४
७	३१६	ताला जायन्ति गुणा (आनन्द० विषमबाणलीला)	१७२
४	५६	तिग्मरुचिरप्रतापो	६०
७	३१२	तिष्ठेत्कोपवशात्प्रभाव० (विक्रमो० अं. ३ श्लो. ९)	१७१
७	१४५	तीर्थान्तरेषु स्नानेन	११३
४	८४	तुह वल्लहस्स गोसम्मि	६९
६	१४१	ते दृष्टिमात्रपतिता	१११
७	१७७	तेऽन्यैर्वान्तं समश्नन्ति	१२३
७	२४७	ते हिमालयमामन्त्र्य (कुमारसं० स. ६ श्लो. ९४)	१४७
७	२२९	त्वमेवं सौन्दर्या स च (वामनसू० ३.२.)	१४०
१०	४५५	त्वयि दृष्ट एव तस्याः	२८६
७	२३६	त्वयि निबद्धरतेः प्रिय० (विक्रमोर्व० अं. ४ श्लो. ५५)	१४३
४	३२	त्वं मुग्धाक्षि विनैव (अमरु० श्लो. २७)	५०
१०	५४५	त्वं विनिर्जितमनोभव०	३२७
४	२४	त्वामस्मि वच्मि विदुषां०	३७
४	३७	त्वामालिख्य प्रणयकुपितां (मेघदू० उ. मे. श्लो. ४२)	५१
७	३३८	दन्तक्षतानि करजैश्च	१९१
४	६३	दर्पान्धगन्धगज०	६२
१०	५६०	दिवमप्युपयातानां (रुद्रटालं० अ. ९ श्लो. ६)	३३३
१०	५९९	दिवाकराद्रक्षति यो (कुमारसं० स. १ श्लो. १२)	३४८
७	२९७	दीधीङ्वेवीङ् समः कश्चित्	१६६
१०	५०७	दुर्वाराः स्मरमार्गणाः (शार्ङ्ग० प० । शङ्कुकः)	३११
४	३०	दूरादुत्सुकमागते (अमरु० श्लो. ४९)	४८
७	३३१	दूरादुत्सुकम्	१८७
१०	५६७	दृशा दग्धं मनसिजं (विद्धशालभञ्जिका अं. १ श्लो. २)	३३५
९	३७९	देव त्वमेव पाताल०	२४४
१०	४६३	देवीभावं गमिता (रत्नावली ?)	२८६
७	२०९	देशः सोऽयमरातिशोणित० (वेणीसं० अं. ३ श्लो. ३३)	१३४
४	२७	दैवादहमत्र तया (रुद्रटालं० अ. ७ श्लो. २९)	४१
१०	४३७	दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्ग०	२७८
५	(वृ०)	द्वयं गतं संप्रति (कुमारसं० स. ५ श्लो. ७१)	१०२
७	१८७	द्वयं गतं संप्रति (कुमारसं०)	१२६
७	२५३	,, ,,	१५०
३	२२	द्वारोपान्तनिरन्तरे	३३
१०	३९७	धन्यस्यानन्यसामान्य०	२५८

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
४	६२	धन्यासि या कथयसि (शार्ङ्ग० । विज्जिका)	६२
७	१८३	धम्मिल्लस्य न कस्य (वामनसू० २-१)	१२४
१०	५६५	धवलोसि जइवि (गाथासप्त० श. ७ गा. ६५)	३३४
१०	५३६	धातुः शिल्पातिशय०	३२४
७	२११	धीरो विनीतो निपुणो०	१३५
१०	(वृ०)	धुनोति चासिं तनुते	३१३
१०	४१४	न केवलं भाति नितान्त०	२६३
४	९५	न चेह जीवितः कश्चित् (महाभा० शां. प.)	७२
१०	५५०	न तज्जलं यन्न सुचारु० (भट्टि० स. २ श्लो. १९)	३२९
७	१६८	न त्रस्तं यदि नाम (महावीर० अं. २ श्लो. २८)	१२१
१०	५१३	नन्वाश्रयस्थितिरियं (भल्लटश० श्लो. ४)	३१३
१०	५७५	नयनानन्ददायीन्दोः	३३९
७	१६४	नवजलधरः संनद्धोऽयं (विक्रमो० अं. ४ श्लो. ७)	१२०
७	२४४	नाथे निशाया नियतेः	१४७
१०	४९९	नानाविधप्रहरणैर्नृप	३०६
९	३५२	नारीणामनुकूलमाचरसि	२२३
९	३८१	नाल्पः कविरिव स्वल्प०	२४५
१०	४७८	निजदोषावृतमनसा०	२९८
१०	४६९	नित्योदितप्रतापेन	२९३
१०	४७४	निद्रानिवृत्तावुदिते	२९७
१०	५९७	निष्पेतुरास्यादिव तस्य	३४८
१०	५५१	निम्ननाभिविवरेषु यदम्भः	३२९
१०	४२८	निरवधि च निराश्रयं च	२७३
४	५८	निरुपादानसंभार० (नारायणभट्टः । स्तव-चिन्तामणिः)	६०
७	३०६	निर्वाणवैरदहनाः (वेणीसं० अं. १ श्लो. ७)	१६८
४	८६	निशितशरधिया	७०
७	३२८	निहुअरमणम्मि	१७७

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१	२	निःशेषच्युतचन्दनं (अमरु० श्लो. १०५ (?))	९
७	१८४	न्यक्कारो ह्ययमेव मे	१२४
४	१००	पथि पथि शुक चञ्चु०	७४
४	५९	पंथिअ ण इत्थ	६०
७	२४१	परापकारनिरतैः	१४६
४	१०८	परिच्छेदातीतः (माल. माध. अं. १ श्लो. ३४)	७७
१०	४८९	,, ,,	३०१
१०	४०६	परिपन्थिमनोराज्य०	२६१
४	२९	परिमृदितमृणालीम्लान० (मा. माध. अं. १ श्लो. २५)	४७
८	३४९	परिम्लानं पीनस्तनजघन० (रत्नावली० अं. २ श्लो. १२)	२१०
७	३२६	परिहरति रतिं मतिं	१७७
४	९१	पविसंती घरवारं	७१
१०	४९२	पश्चादङ्घ्री प्रसार्य (हर्षचरितम् उछ्वास ३ श्लो. ५)	३०२
५	१२४	पश्येत्कश्चिच्चलचपल	८७
७	३३२	पाण्डु क्षामं वक्त्रं	१८९
१०	४६०	,, ,, वदनं	२८९
१०	५८६	पातालमिव नाभिः (वामनसूत्र० ४-२)	३४४
१०	५७६	पादाम्बुजं भवतु नो धर्माचार्यैः। (पञ्चस्तवी घटस्तवः १.)	३४१
७	१७८	पितृवसतिमहं व्रजामि	१२३
१०	५४९	पुराणि यस्यां सवराङ्गनानि (नवसाहसाङ्क च० स. १ श्लो. २२ पा. गृहाणि)	३२८
१०	४४३	पुंस्त्वादपि प्रविचलेत् (भल्लटश० श्लो. ७९)	२८१
७	३०७	पृथुकार्तस्वरपात्रं	१६९
९	३७०	,, ,,	२३९
१०	४८७	पेशलमपि खलवचनं	३०१
१०	४०३	पौरं सुतीयति जनं	२६०

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	५०२	प्रणयिसखीसलील० (माल० माध० अं. ५ श्लो. ३१)	३०८
१०	५९४	प्रत्यग्रमज्जनविशेष० (रत्नावली अं. १ श्लो. २०)	३४६
६	१४०	प्रथममरुणच्छायः	११०
४	१०६	प्रधनाध्वनि धीरधनुर्ध्वनि०	७६
७	२८२	प्रयत्नपरिबोधितः (वेणीसं० अं. ३ श्लो. ३४)	१६२
७	३२७	प्रसादे वर्तस्व प्रकटय (शार्ङ्गधर० चन्द्रकः)	१७७
४	३६	प्रस्थानं वलयैः कृतं (अमरु० श्लो. ३५)	५१
७	२१०	प्रागप्राप्तनिशुम्भ० (महावीरच० अं. २ श्लो. ३३)	१३४
७	३१८	,, ,, ,,	१७२
७	२९१	प्राणेश्वरपरिष्वङ्ग०	१६४
७	२७२	प्राप्ताः श्रियः सकलकाम० (भर्तृह० वै० श० श्लो. ६७)	१५९
७	१७५	प्राभ्रभ्राड्विष्णुधामा०	१२२
७	२३७	प्रियेण संग्रथ्य विपक्ष (किरातार्जु० स. ८ श्लो. ३७)	१४४
४	३३	प्रेमार्द्राः प्रणयस्पृशः (मा. मा. अं. ५ श्लो. ७)	५०
४	९९	प्रेयान् सोऽयमप्राकृतः (वामनसू० ३)	७४
८	३५१	प्रौढच्छेदानुरूपोच्छलन० (छलितरामम्)	२११
७	३१०	फुल्लुकरं कलमकूरसमं (कर्पूरमञ्जरी ज. १ श्लो. १९)	१७०
१०	४३१	बत सखि कियदेतत्	२७५
५	१२०	बन्दीकृत्य नृप द्विषां	८६
१०	५१५	बिम्बोष्ठ एव रागस्ते (नवसाहसाङ्क० स. ६ श्लो. ६०)	३१४
५	१३१	ब्राह्मणातिक्रमत्यागो (महावीर० अं. २ श्लो. १०)	९१
९	३७१	भक्तिप्रह्वविलोकन०(सुभा० । भागवतामृतवर्धनः)	२३९
१०	५२५	भक्तिर्भवे न विभवे	३१८
१०	५७९	भण तरुणि रमण० (रुद्रटालं० अ. २ श्लो. २२)	३४३
२	१२	भद्रात्मनो दुरधिरोह०	२९
५	१३९	भम धम्मिअ वीसत्थो (गाथासप्त० श. २ गा. ७५)	१०८
१०	५०३	भस्मोद्धूलन भद्रमस्तु	३०८
९	३८७	भासते प्रतिभासार	२४८
४	७९	भुक्तिमुक्तिकृदेकान्त०	६८
१०	५८२	भुजंगमस्येव मणिः	३४४
७	१७६	भूपतेरुपसर्पन्ती	१२३
७	२६१	भूपालरत्ननिर्दैन्य०	१५५
४	१०७	भूयो भूयः सविध० (माल. माध. अं. १ श्लो. १८)	७६
७	३३४	भूरेणुदिग्धान् नवपारि. (ध्वन्यालोक ३)	१९०
५	१२७	भ्रमिमरतिमलस० (ध्वन्यालोकः २. ३.)	८९
१०	४१३	मतिरिव मूर्तिर्मधुरा	२६३
६	१३२	मथ्नामि कौरवशतं (वेणीसं. अं. १ श्लो० १५)	९१
९	३६८	मधुपराजिपराजित (हरिविजयम्)	२३८
१०	५१७	मधुरिमरुचिरं वचः	३१४
८	३४३	मनोरागस्तीव्रं विषमिव (माल० माध० अं. २ श्लो. १)	१९७

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
८	३५०	मन्थायस्तार्णवाम्भःप्लुति० (वेणीसं. अं. १ श्लो. २२)	२११
१०	५५८	मलयजरसविलिप्त० (वामनसू०)	३३२
७	२२७	मसृणचरणपातं (बालरामायणम् अं. ६ श्लो. ३६)	१३९
९	३७२	महदेसुरसंधम्मे (आनन्द० देवीशतकम्)	२४०
७	२४३	महाप्रलयमारुत० (वेणीसं० अं. ३ श्लो. ४)	१४६
४	७२	महिलासहस्सभरिए (गाथासप्तशती श. २ गा. ८२)	६४
७	२४८	महीभृतः पुत्रवतोऽपि (कुमारसं० स. १ श्लो. २७)	१४७
१०	५२०	महौजसो मानधना (किरातार्जु० स. १ श्लो. १९)	३१६
२	६	माए घरोवयरणं	१२
७	३००	मातङ्गाः किमु वल्गितैः	१६६
९	३८५	माता नतानां संघट्टः (रुद्रटालं० अ. ५ श्लो. ७)	२४७
५	१३४	मात्सर्यमुत्सार्य (भर्तृ. शृं. श. श्लो.३६)	१०२
७	२६३	,, ,,	१५६
१०	५३५	मानमस्या निराकर्तुं (दण्डी काव्यादर्शः परि. २ श्लो. २९९)	३२४
९	३८४	मारारिशक्रामेभ० (रुद्रटालं० अ. ५ श्लो. ६)	२४६
८	३४५	मित्रे क्वापि गते सरोरुह०	२०१
१०	५०५	मुक्ताः केलिविसूत्रहार०	३१०
२	९	मुखं विकसितस्मितं	२३
४	७७	मुग्धे मुग्धतयैव (अमरुशतकम् श्लो. ७०)	६७
७	१६०	मूर्ध्नामुद्वृत्तकृत्ता० (हनुमन्नाटकम्)	११८
७	२९६	मृगचक्षुषमद्राक्षी०	१६६
१०	४९७	मृगलोचनया विना	३०६
७	१५४	मृदुपवनविभिन्नो (विक्रमो० अं. ४ श्लो. २२)	११७
१०	४०४	मृषे निदाघघर्मांशु	२६०
१०	५०४	यं प्रेक्ष्य चिररूढापि (मेण्ठः हयग्रीववधम्)	३०९
१	१	यः कौमारहरः (शार्ङ्ग० शिलाभट्टारिका)	७
७	२०५	यः पूयते सुरसरिन्मुख०	१३३
७	१९४	यत्तदूर्जितमत्युग्रं (वेणीसं० अं. १ श्लो. १३)	१२८
७	२७४	यत्रानुल्लिखिताक्षमेव	१६०
१०	५१९	यत्रैता लहरीचलाचलदृशः	३१५
७	१४४	यथायं दारुणाचारः	११३
७	२९८	यदा त्वामहमद्राक्षम्	१६६
९	३६५	यदानतोऽयदानतो० (आनन्द० देवीश०)	२३७
७	२७३	यदि दहत्यनलोऽत्र (आनन्द० देवीश०)	१५९
१०	४५४	,, ,, ,,	२८६
७	३१३	यद्वञ्चनाहितमतिर्बहु (ध्वन्यालोकः ३)	१७१
७	२४६	यशोऽधिगन्तुं सुख० (किरातार्जु० स. ३ श्लो. ४०)	१४७
७	२००	यश्चाप्सरोविभ्रम० (कुमारसं० स. १ श्लो. ४)	१३२
१०	५४६	यस्य किंचिदपकर्तुं० (माघ० स. १४ श्लो. ७८)	३२७
९	३५७	यस्य न सविधे दयिता	२२६
४	७४	यस्य मित्राणि मित्राणि	६६
५	११४	यस्यासुहृत्कृततिरस्कृति०	८४
१०	४३९	याताः किं न मिलन्ति (अमरु० श्लो. १०)	२८०
७	१४६	यावकरसार्द्रपाद०	११४

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	५४४	युगान्तकालप्रतिसंहृता (माघ० स. १ श्लो. २३)	३२६
१०	५४८	ये कन्दरासु निवसन्ति	३२८
७	३०३	येन ध्वस्तमनोभवेन (सुभा० । चन्द्रकः)	१६८
७	१९०	ये नाम केचिदिह (माल० माध० अं. १ श्लो. ८)	१२७
१०	४४४	येनास्यभ्युदितेन चन्द्र	२८२
१०	४८४	येषां कण्ठपरिग्रह०	३००
७	२२८	येषां तास्त्रिदशेभदान०	१३९
४	१०५	येषां दोर्बलमेव दुर्बल०	७६
७	१९३	योऽविकल्पमिदमर्थ० (उत्पलाचार्यः)	१२८
९	३७६	योऽसकृत्परगोत्राणां	२४१
४	९८	रयिकेलिहिअणियंसण० (गाथा० श. ५. गा. ५५)	७३
७	३०१	रक्ताशोक कृशोदरी क्व नु	१६७
७	३१९	,, ,	१७३
९	३७४	रजनिरमणमौलेः	२४१
९	२८८	रसासार रसा सार० (रुद्रटालं० अ. ३ श्लो. ३९)	३४८
१०	४५१	राकायामकलङ्कं चेत्	२८४
७	१५७	राकाविभावरी कान्त०	११७
४	५०	राकासुधाकरमुखी	५६
१०	५७३	राजति तटीयमभिहत० (हरविजयम् स. ५ श्लो. १३७)	३३८
१०	(वृ०)	राजनारायणं लक्ष्मीः	३४०
१०	४४०	राजन्राजसुता न पाठयति	२८०
७	२१२	राजन्विभान्ति भवतः	१३५
१०	५३३	राज्ये सारं वसुधा (रुद्रटालंकारः अ. ७ श्लो. ९७)	३२२
७	२५५	राममन्मथशरेण ताडिता (रघु० स. ११ श्लो. २०)	१५१
४	११०	रामोऽसौ भुवनेषु (राघवानन्दम्)	७७
४	८५	राईसु चंदधवलासु	६९

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
४	७८	रुधिरविसरप्रसाधित०	६८
४	१०४	रे रे चञ्चललोचनाञ्चित०	७६
७	२४२	लग्नं रागावृताङ्ग्या (वेणीदत्तः पद्यवेणी २)	१४६
७	(वृ०)	,, ,, ,,	१५०
७	२८१	,, ,, ,,	१६२
७	२८५	,, ,, ,,	१६३
७	२३८	लग्नः केलिकचग्रह०	१४५
१०	४९८	लतानामेतासामुदित०	३०६
१०	४३४	लहिऊण तुज्झ बाहुप्फंसं	२७७
४	७६	लावण्यं तदसौ कान्तिः	६७
१०	५५४	लावण्यौकसि सप्रताप० (खण्डप्रशस्तिः)	३३१
४	१०१	लिखन्नास्ते भूमिं (अमरुश० श्लो. ७)	७५
१०	४१७	लिम्पतीव तमोऽङ्गानि (बा. च. अं. १ श्लो १५ (मृच्छकटिकम् अं. १ श्लो. ३४)	२६५
१०	५६९	,, ,, ,,	३३६
७	१५३	लीलातामरसाहतो० (अमरु० श्लो. ७२)	११६
१०	५३१	वक्त्रस्यन्दिस्वेदबिन्दु०	३२२
७	२७५	वक्त्राम्भोजं सरस्वत्यधि० (भोजप्र० श्लो. २३० पृ. ५१)	१६०
१०	(वृ.)	वक्त्रेन्दौ तव सत्ययं	३४०
१०	५६८	वदनसौरभलोभ० (माघ० स. ६ श्लो. १४)	३३६
९	३५८	वदनं वरवर्णिन्यास्तस्याः	२२६
७	३१४	वद वद जितः स शत्रुः (रुद्रटालं० अ. ६ श्लो. ३०)	१४२
१०	५०१	वपुः प्रादुर्भावादनु०	३०७
७	१६२	वपुर्विरूपाक्षमलक्ष्य० (कुमार० स. ५ श्लो. ७२)	११९
७	१८२	वस्त्रवैदुर्यचरणैः	१२४
१०	५८४	वह्निस्फुलिङ्ग इव (वामनसूत्र० ४.२)	३४४

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	५२९	वाणियअ हत्थिदन्ता	३२०
५	१३३	वाणीरकुडंगुड्डीण०	९१
७	२८३	वाताहारतया जगत् (भल्लटशतकम् श्लो. ८७)	१६२
४	८७	वारिजन्तो वि पुणो	७०
७	२१८	विकसितसहकारतार०	१३७
१०	५१०	विदलितसकलारिकुलं (रुद्रटालं० अ. ७ श्लो. २८)	३१२
७	२८९	विदीर्णाभिमुखाराति०	१६४
१०	४२५	विद्वन्मानसहंस	२७२
७	२७०	विधाय दूरे केयूर०	१५७
७	२०६	विनयप्रणयैककेतनं	१३३
९	३६१	विनायमेनो नयता (रुद्रटालं० अ. ३ श्लो. १५)	२३६
१	५	विनिर्गतं मानदमात्म० (मेण्ठः हयग्रीववधम्)	१०
७	२४९	विपदोऽभिभवन्त्यविक्रमं (किराता० स. २ श्लो. १४)	१४८
५	१३८	विपरीयरए लच्छी	१०७
१०	५४२	विपुलेन सागरशयस्य (माघ० स. १३ श्लो. ४०)	३२४
१०	५६४	विभिन्नवर्णा गरुडा० (माघ० स. ४ श्लो. १४)	३३७
७	३३६	विमानपर्यङ्कतले (ध्वन्यालोकः ३)	१९६
४	२८	वियदलिमलिनाम्बु०	१४
४	९२	विहलंखलं तुअ सहि	७१
७	२१४	वेगादुड्डीय गगने	१३६
१०	५५९	वेत्रत्वचा तुल्यरुचां	३३२
७	(वृ०)	व्यानम्रा दयितानने	१७५
७	२५४	शक्तिर्निस्त्रिंशजेयं तव	१५०
४	६०	शनिरशनिश्च तमुच्चैः	६०
७	१५८	शरत्कालसमुल्लासि०	११८
१०	५०९	शशी दिवसधूसरो (भर्तृ० नीतिश० श्लो. ४५)	३११
१०	५३८	शिरीषादपि मृद्वङ्गी (नवसाहसाङ्क० स. १६ श्लो. २८)	३२५
७	३०२	शीर्णघ्राणाङ्घ्रिपाणीन् (सूर्यशतकम् श्लो. ६)	१६७
४	३१	शून्यं वासगृहं (अमरु० श्लो. ८२)	४९
१०	५२१	शैलेन्द्रप्रतिपाद्यमान०	३१७
७	२७६	श्यामां श्यामलिमान० (विद्धशाल० अं. ३ श्लो. १)	१६०
७	१९७	श्रितक्षमा रक्तभुवः	१३१
२	१०	श्रीपरिचयाज्जडा अपि (सुभा० । रविगुप्तः)	२४
७	२८०	श्रुतेन बुद्धिर्व्यसनेन	१६२
१०	५१४	श्रोणीबन्धस्त्यजति	३१३
७	३०९	षडधिकदशनाडीचक्र० (माल० माध० अं. ५ श्लो. १)	१६९
१०	४००	सअलकरणपरवीसाम०	२५९
१०	४७६	स एकस्त्रीणि जयति	२९७
९	(वृ०)	सकलकलं पुरमेतत्	२४३
४	७७	सख्यैवं प्रतिबोधिता	६८
१०	५९०	सक्तवो भक्षिता देव	३४५
१०	५३२	संकेतकालमनसं	३२२
७	२३०	संग्रामाङ्गणमागतेन (खण्डप्र० । सदुक्तिकर्णामृतम्)	१४१
१०	४५९	,, ,, ,,	२८९
१०	४८६	सततं मुसलासक्ताः	३००
७	३३३	सत्यं मनोरामा रामाः	१८९
९	३६२	स त्वारम्भरतोऽवश्य० (रुद्रटालं० अ. ३ श्लो. १८)	२३७
९	३६३	सत्वारम्भरतोऽवश्य० (रुद्रटालं०)	२३७
७	२५७	सदा मध्ये यासामियममृत०	१५२
७	२६८	सदा स्नात्वा निशीथिन्यां	१५७
१०	५४०	सद्यः करस्पर्शमवाप्य (नवसाहसाङ्क स. १ श्लो. ६२)	३२५

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
९	३८०	सद्वंशमुक्तामणिः	२४५
९	३६०	सन्नारीभरणोमाय० (रुद्रटालं० अ. १० श्लो. २७)	२३६
१०	५८८	स पीनवासाः प्रगृहीत०	३४५
१०	४९१	समदमतङ्गजमदजल०	३०१
१०	५८७	स मुनिर्लाञ्छितो० (वामनसू० ४. २)	३४५
७	३२४	संप्रहारे प्रहरणैः	१७६
७	१५६	सम्यग्ज्ञानमहाज्योतिः	११७
९	३८६	सरला बहुलारम्भ० (रुद्रटालं० अ. ५ श्लो. १९)	२४७
९	३६६	सरस्वति प्रसादं मे (आनन्द० देवीश०)	२३७
७	१७२	स रातु वो दुश्च्यवनो	१२२
९	३७५	सर्वस्वं हर सर्वस्य	२४१
१०	४०५	सविता विधवति विधुरपि	२६१
७	३२१	सव्रीडा दयितानने	१७५
७	३३५	सशोणितैः क्रव्यभुजां	१९०
९	३६७	ससार साकं दर्पेण (रुद्रटालं० अ. ३ श्लो. ३५)	२३८
१०	४९५	सह दिअसणिसाहिं (कर्पूरमञ्जरी ज. २ श्लो. ९)	३०४
४	९०	सहि णवनिहुयणसमरम्मि	७१
४	७०	सहि विरइऊण माणस्स	६४
५	१२२	साकं कुरङ्गकदृशा	८७
७	१७०	सा दूरे च सुधा०	१२१
७	१५२	साधनं सुमहद्यस्य	११६
७	१८९	साधु चन्द्रमसि पुष्करैः	१२७
४	३५	सा पत्युः प्रथमापराध० (अमरु० श्लो. २९)	५०
७	१७३	सायकसहायबाहोः	१२२
४	८०	सायं स्नानमुपासितं	६८
१०	५६१	सा वसइ तुज्झ हिअए	३३३

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
२	७	साहेन्ती सहि सुहयं	१२
७	३१५	सितकरकररुचिरविभा	१७२
९	३५९	,, ,,	२२७
१०	५३९	सिंहिकासुतसंत्रस्तः	३२५
७	१६६	सुधाकरकराकार०	१२०
७	१७९	सुरालयोल्लासपरः	१२३
३	१९	सुव्वइ समागमिस्सदि	३३
७	२६७	सुसितवसनालंकारायां	१५७
१०	४७९	,, ,,	२९९
१०	४४२	सुहृद्वधूबाष्पजल०	२८१
१०	४८५	सृजति च जगदिदमवति	३००
४	२६	सेयं ममाङ्गेषु सुधारस०	४१
१०	५७०	सो णत्थि इत्थ गामे	३३६
७	१७१	सोऽध्यैष्ट वेदान् (भट्टिकाव्यम् स. १ श्लो. २)	१२२
१०	४४८	सोऽपूर्वो रसनाविपर्यय० (भल्लटश० श्लो. १८)	२८३
४	८८	सो मुद्धसामलंगो	७०
७	२९२	सौन्दर्यसंपत् तारुण्यं	१६४
१०	४२४	सौन्दर्यस्य तरङ्गिणी	२७१
१०	(वृ.)	सौभाग्यं वितनोति	३४०
४	४९	स्तुमः कं वामाक्षि	५६
९	३७८	स्तोकेनोन्नतिमायाति	२४३
४	११३	स्निग्धश्यामलकान्ति० (ध्वन्यालोकः २)	८१
१०	५७७	स्पष्टोल्लसत्किरण० (हरिविजयम् १९)	३४१
१०	६००	स्पृशति तिग्मरुचौ (हरिविजयम् ३)	३४९
७	२२२	स्फटिकाकृतिनिर्मलः	१३८
१०	५६२	स्फुरदद्भुतरूपमुत्प्रताप०	३३३
७	१६१	स्रस्तां नितम्बादव० (कुमार० स. ३ श्लो. ५५)	११८
१	४	स्वच्छन्दोच्छलदच्छ०	१०
१०	४७०	स्वच्छात्मतागुणसमु०	२९३
७	२६२	स्वपिति यावदयं निकटे	१५६
१०	३९२	स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां	२५६
९	३७७	स्वयं च पल्लवाताम्र० (उद्भटालं०)	२४३

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	६०१	स्वयं च पल्लवाताम्र० (उद्भटालं० व. ४ श्लो. १५)	३४९
८	३४७	स्वर्गप्राप्तिरनेनैव	२०२
१०	४५८	स्विद्यति कूणति	२८८
४	४७	हरत्यघं संप्रति हेतु० (माघ० स. १ श्लो. २६)	५६
१०	४६८	हरवन्न विषमदृष्टिः	२९३
५	१३०	हरस्तु किंचित्परिवृत्त० (कुमार० स. ३ श्लो. ६७)	९०
१०	५२८	हंसाण सरोहि सिरी	३२०

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
७	१५०	हा धिक् सा किल	११५
७	२२०	हा नृप हा बुध हा कवि०	१३७
४	३९	हा मातस्त्वरितासि (नारायणभट्टः)	५२
१०	४९३	हित्वा त्वामुपरोध०	३०३
७	३२०	हुमि अवहत्थिअरेहो (आनन्दवर्धनः विषमबाणलीला)	१७३
१०	४५२	हृदयमधिष्ठितमादौ (कुट्टिनीमतम् पृ. २३ श्लो. ९७)	२८५
१०	४९४	हे हेलाजितबोधिसत्त्व (पुञ्जराजः)	३०३

काव्यप्रकाशोदाहृतप्राकृतपद्यानां संस्कृतच्छायासहितानामकाराद्यनुक्रमः ।

उल्लासः क्रमाङ्कः पद्यम् पृष्ठे

३ १३ अयि पिहुलं जलकुंभं ३१
अतिपृथुलं जलकुम्भं गृहीत्वा
समागतास्मि सखि त्वरितम् ।
श्रमस्वेदसलिलनिःश्वासनिःसहा
विश्राम्यामि क्षणम् ॥

१० ४५० अण्णं लडहत्तणयं २८४
अन्यत्सौकुमार्यम् अन्यैव
च कापि वर्तनच्छाया ।
श्यामा सामान्यप्रजापतेः रेखैव
च न भवति ॥

५ १३७ } अत्ता इत्थ णिमज्जइ } १०५
३ २३ } श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं } ३४
दिवसके प्रलोकय ।
मा पथिक रात्र्यन्ध शय्या-
यामावयोर्निमङ्क्ष्यसि ॥

४ ६१ अलससिरोमणि धुत्ताणं ६१
अलसशिरोमणिर्धूर्तानाम-
ग्रिमः पुत्रि धनसमृद्धिमयः ।
इति भणितेन नताङ्गी प्रफुल्ल-
विलोचना जाता ॥

२ ८ उअ णिच्चलनिप्फन्दा
(गाथासप्त० श० १
गा. ४) १२
पश्य निश्चलनिष्पन्दा
बिसिनीपत्रे राजते बलाका ।
निर्मलमरकतभाजनपरिस्थिता
शङ्खशुक्तिरिव ॥

३ १४ उण्णिद्दं दोब्बल्लं ३१
औन्निद्र्यं दौर्बल्यं चिन्ता-
लसत्वं सनिःश्वसितम् ।
मम मन्दभागिन्याः कृते
सखि त्वामपि अहह
परिभवति ॥

४ ७१ उल्लोल्लकरअरअण० ६४
आर्द्रार्द्रकरजरदनक्षतैस्तव
लोचनयोर्मम दत्तम् । रक्तां-
शुकं प्रसादः कोपेन पुनरिमे
नाक्रान्ते ॥

१० ४७१ ए एहि किंपि कीएवि २९५
ए एहि किमपि कस्या अपि
कृते निष्कृप भणामि ।
अलमथ वा
अविचारितकार्यारम्भकारिणी
म्रियतां न भणिष्यामि ॥

१० ५५५ ए एहि दाव सुन्दरि ३३१
अयि एहि तावत् सुन्दरि कर्णं
दत्त्वा शृणुष्व वचनीयम् ।
तव मुखेन कृशोदरि चन्द्र
उपमीयते जनेन ॥

२ ११ एद्दहमेत्तत्थणिया २८
एतावन्मात्रस्तनिका
एतावन्मात्राभ्याम-
क्षिपत्राभ्याम् ।
एतावन्मात्रावस्था
एतावन्मात्रैर्दिवसैः ॥

१० ५५२ करजुअगहिअजसोआ ३२९
करयुगगृहीतयशोदास्तन-
मुखनिवेशिताधरपुटस्य ।
संस्मृतपाञ्चजन्यस्य नमत
कृष्णस्य रोमाञ्चम् ।

५ १३६ कस्स व न होइ रोसो १०३
कस्य वा न भवति रोषो दृष्ट्वा
प्रियायाः सव्रणमधरम् ।
सभ्रमरपद्माघ्रायिणि वारित-
वामे सहस्वेदानीम् ॥

१० ५३० का विसमा देव्वगई ३२१
का विषमा दैवगतिः
किं लब्धव्यं यद् जनो
गुणग्राही ।
किं सौख्यं सुकलत्रं किं
दुःखं यत् खलो लोकः ॥

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
१०	४५७	किवणाणँ धणं णायाणं कृपणानां धनं नागानां फण- मणिः केसराः सिंहानाम् । कुलबालिकानां स्तनाः कुतः स्पृश्यन्तेऽमृतानाम् ॥	२८७
४	६६	केसेसु बलामोडिअ केशेषु बलात्कारेण तेन च समरे जयश्रीर्गृहीता । यथा कन्दराभिर्विधुरास्तस्य दृढं कण्ठे संस्थापिताः ॥	६३
४	७५	खलववहारा दीसन्ति खलव्यवहारा दृश्यन्ते दारुणा यद्यपि तथापि धीराणाम् । हृदयवयस्यबहुमता न खलु व्यवसाया विमुह्यन्ति ॥	६७
४	६७	गाढालिंगणरहसुज्जुअम्मि गाढालिङ्गनरभसोद्यते दयिते लघु समपसरति । मनस्विन्या मानः पीडनभीत इव हृदयात् ॥	६३
४	१०२	गामारुहम्हि गामे ग्रामरुहास्मि ग्रामे वसामि नगरस्थितिं न जानामि । नागरिकाणां पतीन् हरामि या भवामि सा भवामि ॥	७५
३	२१	गुरुअणपरवस पिअ गुरुजनपरवशप्रिय किं भणामि तव मन्दभागिनी अहकम् । अद्य प्रवासं व्रजसि व्रज स्वय- मेव श्रोष्यसि करणीयम् ॥	३३
८	३४४	चित्ते चहुट्टदि ण खुट्टदि (कर्पूरमञ्जरी ज. २ श्लो. ४) चित्ते विघटते न त्रुटयति सा गुणेषु शय्यासु लुठति विसर्पति दिङ्मुखेषु । वचने वर्तते प्रवर्तते काव्यबन्धे ध्यानेन त्रुट्यति चिरं तरुणी प्रगल्भा ॥	२०१

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
४	११२	छणपाहुणिआ देअर क्षणप्राघुणिका देवर जायया सुभग किमपि ते भणिता । रोदिति गृहपश्चाद्भागवलभी- गृहेऽनुनीयतां वराकी ॥	८१
१०	४२२	जस्स रणन्तेउरए करे यस्य रणान्तःपुरे करे कुर्वतो मण्डलाग्रलताम् । रससंमुख्यपि सहसा पराङ्मुखी भवति रिपुसेना ॥	२७०
१०	५३४	जस्से अ वणो तस्से अ यस्यैव व्रणस्तस्यैव वेदना भणति तज्जनोऽलीकम् । दन्तक्षतं कपोले वध्वाः वेदना सपत्नीनाम् ॥	३२३
१०	५७४	जह गंभिरो जह रअणा० यथा गभीरो यथा रत्ननिर्भरो यथा च निर्मलच्छायः । तथा किं विधिना एष सरस- पानीयो जलनिधिर्न कृतः ॥	३३९
७	२१७	जं परिहरिउं तीरइ (आनन्दवर्धनः पञ्चबाणलीला) यत् परिहर्तुं तीर्यते मनागपि न सुन्दरत्वगुणेन । अथ केवलं यस्य दोषः प्रतिपक्षैरपि प्रतिपन्नः ॥	१३६
४	६८	जा थेरं व हसन्ती या स्थविरमिव हसन्ती कवि- वदनाम्बुरुहबद्धविनिवेशा । दर्शयति भुवनमण्डलमन्यदिव जयती सा वाणी ॥	६३
४	६९	जे लङ्कागिरि मेहलाहि (कर्पूरमञ्जरी ज. १ श्लो. २०) ये लङ्कागिरिमेखलासु स्खलिताः संभोगखिन्नोरगी- स्फारोत्फुल्लफणावलीकवदने प्राप्ता दरिद्रत्वम् । त इदानीं मलयानिला विर- हिणीनिःश्वाससंपर्किणो	६३

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
		जाता झटिति शिशुत्वेऽपि बहलास्तारुण्यपूर्णा इव ॥	
४	९३	जोह्लाए महुरसेण ज्योत्स्नया मधुरसेन च वितीर्णतारुण्योत्सुकमनाः सा । वृद्धापि नवोढेव परवधूरहह हरति तव हृदयम् ॥	७२
१०	४०७	ढुण्ढुल्लिन्तु मरिहसि ढुण्ढुणायमानो मरिष्यसि कण्टककलितानि केतकीवनानि । मालतीकुसुमसदृक्षं भ्रमर भ्रमन् न प्राप्स्यसि ॥	२६१
४	८९	णवपुण्णिमामियंकस्स नवपूर्णिमामृगाङ्कस्य सुभग कस्त्वमसि भण मम सत्यम् का सौभाग्यसमग्रा प्रदोषरजनीव तवाद्य ॥	७१
३	१८	णोल्लेइ अणुल्लमणा नुदत्यनार्द्रमनाः श्वश्रूर्मां गृहभरे सकले । क्षणमात्रं यदि संध्यायां भवति न वा भवति विश्रामः ॥	३३
३	१६	तइआ मह गंडत्थल० तदा मम गण्डस्थलनिमग्नां दृष्टिं नानैषिरन्यत्र । इदानीं सैवाहं तौ च कपोलौ न सा दृष्टिः ॥	३२
४	१०३	ताण गुणग्गहणाणं तेषां गुणग्रहणानां तासामुत्कण्ठानां तस्य प्रेम्णः । तासां भणितीनां सुन्दर ईदृशं जातमवसानम् ॥	७५
७	३१६	ताला जायन्ति गुणा (आनन्दवर्धनःपञ्चबाणलीला) तदा जायन्ते गुणाः यदा ते सहृदयैर्गृह्यन्ते । रविकिरणानुगृहीतानि भवन्ति कमलानि कमलानि ॥	१७२
१०	५१६	तं ताण सिरिसहोअर (आनन्दव० विषमबाणलीला) तत्तेषां श्रीसहोदररत्नाभरणे हृदयमेकरसम् । बिम्बाधरे प्रियाणां निवेशितं कुसुमबाणेन ॥	३१४
४	८४	तुह वल्लहस्स गोसम्मि तव वल्लभस्य प्रभाते आसीदधरो म्लानकमलदलम् । इति नववधूः श्रुत्वा करोति वदनं महीसंमुखम् ॥	६९
१०	५६५	धवलोऽसि जइ वि (गाथास० श. ७ गा. ६५) धवलोऽसि यद्यपि सुन्दर तथापि त्वया मम रञ्जितं हृदयम् । रागभरितेऽपि हृदये सुभग निहितो न रक्तोऽसि ॥	३३४
७	३२८	निहुअरमणम्मि निभृतरमणे लोचनपथे पतिते गुरुजनमध्ये । सकलपरिहारहृदया वनगमनमेवेच्छति वधूः ॥	१७७
४	५९	पंथिअ ण इत्थ पथिक नात्र स्रस्तरमस्ति मनाक् प्रस्तरस्थले ग्रामे । उन्नतपयोधरं प्रेक्ष्य यदि वससि तदा वस ॥	६०
४	९१	पविसंती घरवारं प्रविशन्ती गृहद्वारं विवलितवदना विलोक्य पन्थानम् । स्कन्धे गृहीत्वा घटं हा हा नष्ट इति रोदिषि सखि किमिति ॥	७१
७	३१०	फुल्लुक्करं कलमकूरसमं पुष्पोत्करं कलमभक्तनिभं वहन्ति ये सिन्धुवारविटपा	१७०

उल्लासः क्रमाङ्कः पद्यम् पृष्ठे

मम वल्लभास्ते। ये गालितस्य
महिषीदध्नः सदृक्षास्ते किं च
मुग्धविचकिलप्रसूनपुञ्जाः ॥

५ १३९ भम धम्मिअ वीसत्थो
(गाथासप्त० श. २
गा. ७५) १०८
भ्रम धार्मिक विश्रब्धः स
शुनकोऽद्य मारितस्तेन ।
गोदानदीकच्छकुञ्जवासिना
दृप्तसिंहेन ॥

९ ३७२ महदे सुरसेयं मे (आनन्द-
वर्धनः देवीशतक) २४०
मम देहि रसं धर्मे तमोवशाम्
आशां गमागमात् हर नः ।
हरवधु शरणं त्वं चित्तमोहो-
ऽपसरतु मे सहसा ॥

४ ७२ महिलासहस्सभरिए ६४
महिलासहस्रभरिते तव
हृदये सुभग सा अमान्ती ।
अनुदिनमनन्यकर्मा अङ्गं
तन्वपि [तनुकमपि]
तनयति ॥

२ ६ माए घरोवयरण १२
मातर्गृहोपकरणमद्य खलु
नास्तीति साधितं त्वया ।
तद्भण किं करणीयमेवमेव
न वासरः स्थायी ॥

४ ९८ रयिकेलिहिअणियंसण
(गाथा० श. ५
गा. ५५) ७३
रतिकेलिहृतनिवसनकर-
किसलयरुद्धनयनयुगलस्य ।
रुद्रस्य तृतीयनयनं
पार्वतीपरिचुम्बितं
जयति ॥

४ ८५ रायीसु चंदधवलासु ६९
रात्रीषु चन्द्रधवलासु
ललितमास्फाल्य यश्चापम् ।
एकच्छत्रमिव करोति
भुवनराज्यं विजृम्भमाणः ॥

उल्लासः क्रमाङ्कः पद्यम् पृष्ठे

१० ४३४ लहिऊण तुज्झ बाहुप्फंसं २७७
लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं
यस्याः स कोऽप्युल्लासः ।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न
खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा ॥

१० ५२९ वाणियअ हत्थिदन्ता ३२०
वाणिजक हस्तिदन्ताः कुतो-
ऽस्माकं व्याघ्रकृत्तयश्च ।
यावत् लुलितालकमुखी
गृहे परिष्वक्कते स्नुषा ॥

५ १३३ वाणीरकुडंगुड्डीण सउणि ९१
वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनिकोला-
हलं शृण्वन्त्याः । गृहकर्म-
व्यापृताया वध्वाः सीदन्त्य-
ङ्गानि ॥

४ ८७ वारिज्जन्तो वि पुणो ७०
वार्यमाणोऽपि पुनः संताप-
कदर्थितेन हृदयेन ।
स्तनभरवयस्येव विशुद्ध-
जातिर्न चलत्यस्या हारः ॥

५ १३८ विपरीयरए लच्छी १०७
विपरीतरते लक्ष्मीर्ब्रह्माणं
दृष्ट्वा नाभिकमलस्थम् ।
हरेर्दक्षिणनयनं रसाकुला
झटिति स्थगयति ॥

४ ९२ विहलं खलं तुअ सहि ७१
विशृङ्खलां त्वां सखि दृष्ट्वा
कुटेन तरलतरदृष्टिम् ।
द्वारस्पर्शमिषेण चात्मा
गुरुक इति पातयित्वा
विभिन्नः ॥

१० ४०० सअलकरणपरवीसाम० २५९
सकलकरणपरविश्राम-
श्रीवितरणं न सरस-
काव्यस्य । दृश्यतेऽथवा
निशम्यते सदृशम्
शांशमात्रेण ।

१० ४९५ सह दिअसणिसाहि
(कर्पूरमञ्जरी ज. २
श्लो. ९) ३०४

उल्लासः	क्रमाङ्कः	पद्यम्	पृष्ठे
		सह दिवसनिशाभिर्दीर्घाः श्वासदण्डाः सह मणि- वलयैर्बाष्पधारा गलन्ति तव सुभग वियोगे तस्या उद्विग्नायाः सह च तनुलतया दुर्बला जीवि- ताशा ॥	
४	९०	सहि णवनिहुयण- समरम्मि सखि नवनिधुवनसमरे- ऽङ्कपालीसख्या निबिडया । हारो निवारित एवोच्छ्रिय- माणस्ततः कथं रमितम् ॥	७१
४	७०	सहि विरइऊण माणस्स सखि विरचय्य मानस्य मम धीरत्वेनाश्वासम् । प्रियदर्शनविशृङ्खलक्षणे सहसेति तेनापसृतम् ॥	६४
१०	५६१	सा वसइ तुज्झ सा वसति तव हृदये सैवा- क्षिषु सा च वचनेषु । अस्मादृशीनां सुन्दर अवकाशः कुत्र पापानाम् ॥	२२२
२	७	साहेन्ती सही सुहयं साधयन्ती सखि सुभगं क्षणे क्षणे दूनासि मत्कृते । सद्भाव- स्नेहकरणीयसदृशकं तावद्विर- चितं त्वया ॥	१२
३	१९	सुव्वइ समागमिस्सदि श्रूयते समागमिष्यति तव प्रियोऽद्य प्रहरमात्रेण । एवमेव किमिति तिष्ठसि तत् सखि सज्जय करणीयम् ॥	३३
१०	५७०	सो णत्थि स नास्त्यत्र ग्रामे य एनां मह- महायमानलावण्याम् । तरु- णानां हृदयलुण्ठाकीं परिष्वक्क- माणां निवारयति ॥	२२६
४	८८	सो मुद्धसामलङ्गो स मुग्धश्यामलाङ्गो धम्मिल्लः कलितललितनिजदेहः । तस्याः स्कन्धाद्बलं गृहीत्वा स्मरः सुरतसंगरे जयति ॥	७०
१०	५२८	हंसाण सरोहि सिरी हंसानां सरोभिः श्रीः सार्यते अथ सरसां हंसैः । अन्योन्यमेव एते आत्मानं केवलं गरयन्ति ॥	३२०
७	३२०	हुमि अवहत्थि (आनन्दवर्धनः विषमबाणलीला) भवाम्यपहस्तितरेखो निरङ्कु- शोऽथ विवेकरहितोऽपि । स्वप्नेऽपि त्वयि पुनः प्रतीहि भक्तिं न प्रस्मरामि ॥	१७३

* *
*

संकेते प्रमाणत्वेनोदाहृतानां संदर्भाणामकाराद्यनुक्रमणी ।

प्रमाणं	पृष्ठाङ्कः
अग्निरन्नस्यान्नपतिः [का. सं. ५. १; ३२. १]	१०१
अग्निषोमौ वृत्रहणौ [का. सं. ५. १; मा. श्रौ. सू. १. ४. २. ५]	१०१
अक्रान्तपात्रैरङ्कास्यम् [द. रू. प्र. १. का. ६२]	२१८
अत एवाभिधेयं ते [व्य. वि. वि. २. श्लो. ११५. पृ. १०८]	३०२
अतिक्रान्तर्तुलिङ्गम् [का. मी. पृ. १०९]	१८६
अत्रालुप्तविसर्गान्तैः [व. जी. उन्मेष. १. का. ४७]	१३५
अनुवाद्यमनुक्त्वैव [व्य. वि. वि. २. श्लो. ९४. पृ. ९७]	१२५
अनेकनर्तकीयोज्यम् [अ. भा. अ. ४. पृ. १८३]	२२१
अनौचित्यप्रवृत्तानाम् [उ. का. सा. सं. व. ४. का. २०]	८६
अन्तर्जवनिकासंस्थैः [ना. शा. अ. १९. श्लो. ११३]	२१८
अपारे काव्यसंसारे [ध्व. उद्योत. ३. पृ. ४९८]	१
अप्राधान्यं विधेर्यत्र	१२०
अभिधात्री श्रुतिः काचित् [तं. वा. ३।१. ७।१३। पृ. ७०० आ. सं. सि.]	१००
अभिधा भावना चान्या [अ. भा. अ. ६. पृ. २७७]	४४
अभिधेयेन सम्बन्धात् [आचार्यभर्तृमित्र]	१७
अमृता बहुला नाम	१७०
अरुणया एकहायन्या [ज्योतिष्टोमे श्रुतम् । तं. वा. ३।२। ६।१९। पृ. ७६९ आ. सं. सि.]	१०१
अर्थदोषः स दोषज्ञैः [व्य. वि. वि. २. श्लो. १२२. पृ. १०९]	३०२
अर्थवदधातुरप्रत्ययः [पा. अष्टा. अ. १. पा. २. सू. ४५]	२२६
अर्थोपक्षेपकैः [द. रू. प्र. १. का. ५८]	२१८
अलङ्कारकृतां येषाम् [व. जी. उन्मेष. १. का. ११]	३०२
अलम्बुसा कुहूश्चैव	१७०
अविकृतं भाषाचारम् [ना. शा. अ. १८. श्लो. १०४]	११७
असमासा समासेन [ध्व. उद्द्योत. ३. का. ५.]	२०४
अस्थानहसितम् [ना. शा. अ. ६ श्लो. ५८]	५१
आकुञ्चिताक्षिगण्डम् [ना. शा. अ. ६ श्लो. ५६]	५१
आक्रोशवत्यवजानाति [का. द. परि. २. श्लो. ५७]	२५५
आत्मानुभूतशंसी [ना. शा. अ. १८. श्लो. १०८]	२१७
आरोपाध्यावसानाभ्याम् [अ. वृ. मा. का. ४. ५]	२२
आरोह पूर्वोऽवरोहः [वा. का. लं. सू. अधि. ३. अ. १. सू. १३ वा.]	२०५
आविद्धदङ्गनाबाल [भा. का. लं. परि. २. श्लो. ३]	२०३
इडा च पिङ्गला चैव	१७०
इतिना नेवेतरेषाम् [व्य. वि. वि. २. श्लो. ३५. पृ. ६९]	१५१
इववद्वायथाशब्दाः [का. द. परि. २. श्लो. ५७]	२५५
ईषद्विकसितैर्गण्डैः [ना. शा. अ. ६. श्लो. ५४]	५१

प्रमाणं	पृष्ठाङ्कः
ईहामृगेऽपि तस्यात्	२१६
[ना. शा. अ. १८. श्लो. ८१]	
उक्त्यन्तरेणाशक्यम्	८३
[ध्व. उद्योत. १. का. १५]	
उक्तिस्वरूपावच्छेदकरः	१५१
[व्य. वि. वि. २. श्लो. ३३. पृ. ६८]	
उचिते वासके स्त्रीणाम्	१८१
[ना. शा. अ. २२. श्लो. २१०]	
उच्यते वस्तुनस्तावद्	३०२
[व्य. वि. वि. २. श्लो. ११४ पृ. १०८]	
उद्धतपुरुषप्रायः	२१६
[ना शा. अ. १८. श्लो. ७९]	
उपमैव तिरोभूतभेदा	२६८
[का. द. परि. २. श्लो. ६६]	
एवंविधस्तु कार्यो०	२१६
[ना. शा. अ. १८. श्लो. ९३]	
ऐन्द्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते	१००,१०१
ऋतुवर्णनसंयुक्तं	२२१
[अ. भा. अ. ४. पृ. १८१]	
कटुकौषधवच्छास्त्रं	४
कथाशरीरमुत्पाद्य	७९
[ध्व. उ. ३. परिकरश्लोकः पृ. ३३४]	
करुणप्रेक्षणीयेषु	२०५
[वा. का. लं. सू. अधि. ३ । अ. १. सू. ९.]	
करुणरसप्रायकृतः	२१७
[ना. शा. अ. १८. श्लो. ९५]	
कर्मधारयमत्वर्थीयाभ्याम्	१५४
[व्य. वि. वि. २. श्लो. ५१. पृ. ८३]	
कल्पदेशीयदेश्यादि	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ६०]	
कवितारः सन्दर्भेष्वलंकारान्	२०२
कारकोपनिबन्धः स्यात्	११
काष्ठा निमेषा	१८५
[का. मी. पृ. ९८]	
कैशिकीश्लक्ष्णनेपथ्या	२२५
[ना. शा. अ. १. श्लो. ४५]	
गर्भनिर्भिन्नबीजोऽर्थः	२२१
[ना. शा. अ. १९. श्लो. ४२]	
गान्धारी हस्तिजिह्वा च	१७०
गोष्ठे यत्र विहरतः	२२१
ग्रैष्मिकसमयविकासी	१८६
[का. मी. अ. १८. पृ. १०९]	
छन्नानुरागगर्भाभिः	२२१
[अ. भा. अ. ४. पृ. १८१]	
त एते यौवनोन्माद०	३
तच्च न शब्दपुनरुक्तम्	१५३
तत्पदव्यां पदं धत्ते	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ६४]	
तत्रभवन् भगवन्निति नार्हत्यधमो	१८३
[रु. का. लं. ६. १९]	
तत्रभवन् भगवन्निति नैवार्हत्युत्तमो	१८३
[रु. का. लं. ६. २०]	
तत्रैकमस्य सामान्यम्	३०२
[व्य. वि. वि. २. श्लो. ११४. पृ. १०८]	
तथा हि दर्शने स्वच्छे	३
[भट्टतोतः]	
तदिष्टस्य निषेधत्वम्	२९५
[तिलकः]	
तमन्वेत्यनुबध्नाति	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ६४]	
तमर्थमवलम्बन्ते	१९६
[ध्व. लो. उद्योत. २. का. ६]	
तस्य चानुकरोतीति	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ६५]	
तस्य पुष्णाति सौभाग्यम्	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ६३]	
तात्पर्ययोगः काले च	१९८
तालुजिह्वाभजिह्वा च	१७०
तुल्यसंकाशनीकाश	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ५७]	
तेन सार्धं विगृह्णाति	२५५
[का. द. परि. २. श्लो. ६३]	
दधिरस्यदर्थीभूयांसम्	१०१
दयितजनरुक्षाक्षराक्षेप०	२०५
दर्शनाद्वर्णनाच्चाथ	३
[भट्टतोतः]	
दानवीरं धर्मवीरं	५२
[ना. शा. अ. ६. श्लो. ७९]	
दासविटश्रेष्ठियुतम्	२१४
[ना. शा. अ. १८ श्लो. ५०]	

प्रमाणं	पृष्ठाङ्कः
दिव्यपुरुषाश्रयकृतो [ना. शा. अ. १८. श्लो. ७८]	२१६
देवा धीरोद्धता ज्ञेयाः [ना. शा. अ. ३४. श्लो. १८. चौ. सं. सि.]	१८०
देवासुरबीजकृतः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ६३.]	२१५
धर्मार्थकाममोक्षाणामुप०	३
धांशस्तु धैवतन्यासः	१५८
धीरप्रशान्ता विज्ञेया [ना. शा. अ. ३४. श्लो. १९ चौ. सं. सि.]	१८०
धूर्तविटसंप्रयोज्या० [ना. शा. अ. १८. श्लो. ११०]	२१८
न च दिव्यनायककृतः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ९२]	२१६
नञर्थस्य विधेयत्वे [व्य. वि. २. श्लो. ५. पृ. ३९]	१२१
न पर्यन्तो विकल्पानाम् [का. द. परि. २. श्लो. ९६]	२७४
नानाविभूतिभिर्युतम् [ना. शा. अ. १८. श्लो. ११]	२१३
नानाव्याकुलचेष्टः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ९६]	२१७
नानृषिः कविरित्युक्तम् [भट्टतोतः]	३
निरूढा लक्षणाः काश्चित् [तं. वा. ३।१.६।१२। पृ. ८३. आ. सं. सि.]	१६
निर्घातोल्कापातैः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ८६]	२१६
निर्विशेषं न सामान्यम् [श्लो. वा. सू. ५. आकृतिवाद. श्लो. १०. पृ. ५४८ चौ. सं. सि.]	९७
नोदात्तनायककृतम् [ना. शा. अ. १८. श्लो. ४९]	२१४
परवचनमात्मसंस्थैः [ना. शा. अ. १८. श्लो. १०९]	२१८
परिपाट्या फलार्थे वा [ना. शा. अ. २२. श्लो. २०९]	१८१
पृथग् भावा भवन्त्यन्ये [द. रू. प्र. ४. का. ४]	५५

प्रमाणं	पृष्ठाङ्कः
प्रकरणनाटकभेदाद् [ना. शा. अ. १८. श्लो. ५८]	२१५
प्रकृतमपि यत्र हित्वा	१७४
प्रकृतिप्रत्ययमूला व्युत्पत्तिः [रु. का. लं. अ. ६. का. २७]	११३
प्रख्यातवस्तुविषयम् [ना. शा. अ. १८. श्लो. १०]	२१३
प्रख्यातवस्तुविषयश्च [ना. शा. अ १८. श्लो. ९४]	२१७
प्रख्यातवस्तुविषयः प्रख्या० [ना. शा. अ. १८. श्लो. ८४]	२१६
प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्वि [का. द. परि. २. श्लो. ५८]	२५५
प्रतिबिम्बप्रतिच्छन्द° [का. द. परि. २. श्लो. ५९]	२५५
प्रतिभाति न सन्देह° [अ. भा. अ. ६. पृ. २७३]	४१
प्रधानगुणभावाभ्याम् [ध्व. उद्द्योत. ३. का. ४१]	१०
प्रधानत्वं विधेर्यत्र	१२०
प्रयोजनमनुद्दिश्य [श्लो. वा. सू. ५. श्लो. ५५. पृ. ६५३ चौ. सं. सि.]	२
प्राधान्येऽन्यत्र वाक्यार्थे	३९
बहवश्च तत्र पुरुषा° [ना. शा. अ. १८. श्लो. ९१]	२१६
बहवोऽर्था विभाव्यन्ते [ना. शा. अ. ७. श्लो. ४]	४०
बहुशो यच्छ्रुतमभिहितम् [ना. शा. अ. १६. श्लो. १०४]†	२०५
बहूनां समवेतानां [ना. शा. अ. ७. श्लो. ११९ a.]	१९५
बीजस्योद्घाटनं यत्र [ना. शा. अ. १९. श्लो. ४०]	२२१
बीजार्थयुक्तिमानङ्को [ना. शा. अ. १९. श्लो. ११५]	२१८
भगवत्तापसविप्रैरन्यैरपि [ना. शा. अ. १८. श्लो. १०३]	२१७

† Prose sūtra form in Saṃketa

प्रमाणं	पृष्ठाङ्कः
भावनाभाव्य एषोऽपि [अ. भा. अ. ६. पृ. २७७]	४४
मण्डलेन तु यद् नृत्तं [अ. भा. अ. ४. पृ. १८१]	२२१
मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो [का. द. परि. २. श्लो. २३४]	२६४
मायेन्द्रजालबहुलो० [ना. शा. अ. १८. श्लो. ८७]	२१७
यतस्ते चादय इव [व्य. वि. २. श्लो. ३६. पृ. ६९.]	१५१
यत्र कविरात्मशक्त्या [ना. शा. अ. १८. श्लो. ४५]	२१४
यत्रैककर्तृकानेका [व्य. वि. २. श्लो. २२. पृ. ५५]	१३१
यदनार्षमनाहार्यं [ना. शा. अ. १८. श्लो. ४६]	२१४
यद्यदाकाङ्क्षितं योग्यं	११
यन्नाटके मयोक्तं [ना. शा. अ. १८. श्लो. ४७]	२१४
यमकानुलोमतदितरं	२३६
यस्य पदार्थाभिनयं	२२२
यस्मिन् कुलाङ्गना पत्युः	२२१
यः संयोगविभागाभ्यां [भर्तृहरिः]	८
यस्मिन् सति नृत्यन्तीव [वा. का. लं. सू. अधि ३. अ. १. सू. २३ वार्तिक]	२०५
यस्मिन् सति बहून्यपि [वा. का. लं. सू. अधि. ३. अ. १. ११. वार्तिक]	२०५
योगमेकत्वमिच्छन्ति वस्तुनोऽन्येन वस्तुना	१६९
रङ्गं प्रसाद्य मधुरैः [द. रू. प्र. ३. का ४.]	२१९
राजोपचारयुक्ता [ना. शा. अ. १८. श्लो. ६०]	२१५
लवणो रसमयः सुरोदकः [का. मी. पृ. ९१]	१८४
वंशस्थकादिचरणान्तनिवेशितस्य	११९
वक्ता हर्षभयादिभिः [रु. का. लं. अ. ६. का. २९]	१७२
वक्राभिधेयशब्दो० [भा. का. लं. परि. १. श्लो. ३६]	३३४
वक्रोक्तिरनुप्रासो [? रु. का. लं. अ. २. का. १३.]	२२३
वर्णैः कतिपयैरेव	१५४
वस्तुमात्रानुवादस्तु [व्य. वि. २. श्लो. १२२. पृ. १०९]	३०२
वाच्यात् प्रतीयमानोऽर्थः [व्य. वि. २. श्लो. ३९. पृ. ७३]	३५१
वाक्यार्थमतये हि [श्लो. वा. अधि. ७ श्लो. ३४३. पृ. ९४३. चौ. सं. सि.]	१०७
विचकिलकेसर [का. मी. पृ. ११०]	१८६
विच्छित्तिशोभिनैकेन [ध्व. लो. उ. ३. परिकरश्लोक. पृ. ३०२]	६६
विज्ञानं वेदना संज्ञा	१६७
विडम्बयति संधत्ते [का. द. परि. २. श्लो. ६२]	२५५
विधेयोद्देश्यभावोऽयं [व्य. वि. २. श्लो. ९५. पृ. ९७]	१२५
विप्रवणिक्सचिवानां [ना. शा. अ. १८. श्लो. ४८]	२१४
विभागे सति साकाङ्क्षम् [जैमिनि. मी. द. अ. २. पा. १. अधिः १४. सू. १६. पा. भे. अर्थैकत्वादेकवाक्यं साकाङ्क्षं चेद्विभागे स्यात्]	९९
विरुद्धबुद्ध्यसंभेदाद् [अ. भा. अ. ६. पृ. २७३]	४१
विशिष्टमस्य यद्रूपं [व्य. वि. २. श्लो. ११६]	३०२
विशेषणवशादिच्छेद् [व्य. वि. २. श्लो. ५३. पृ. ८३]	१५४
विष्कम्भकप्रवेशकरहितो	२१८
वृत्तयः काव्यमातृकाः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ४.]	२२५

प्रमाणं	पृष्ठाङ्कः
वृत्तवर्तिष्यमाणानां [द. रू. प्र. १. का. ५९]	२१८
वेश्याचेटनपुंसकं [ना. शा. अ. १८. श्लो. १०५]	२१७
व्यङ्ग्यस्य यत्राप्राधान्यं	८९
व्यञ्जकत्वं शब्दानां गमकत्वं	१०७
व्यधिकरणे वा यस्मिन् [रु. का. लं. अ. ७. सू. २२]	३१२
व्यायोगस्तु विधिज्ञैः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ९०]	२२६
शब्दप्रवृत्तिहेतौ [रु. का. लं. अ. ६. का. ६]	१३३
शब्दव्यापारतो यस्य [अ. वृ. मा. का. १]	१५
शब्दार्थवर्त्यलङ्कारा॰ [उ. का. लं. सा. सं. व. ५. का. २२]	३४२
शब्दार्थशासनज्ञानमात्रेणैव [ध्व. उद्द्योत. १. का. ७]	१०३
शषाभ्यां रेफसंयोगैष्टवर्गेण [उ. का. लं. सा. सं. व. १. का. ६]	२२५
शृङ्गारहास्यवर्जम् [ना. शा. अ. १८. श्लो. ८५]	२१६
शृङ्गारे कैशिकी [द. रू. प्र. २. श्लो. ६२]	२२१
श्रव्यं नातिसमस्तार्थशब्दं [भा. का. लं. परि. २. श्लो. ३]	२०३
श्रुतिलिङ्गवाक्यप्रकरणस्थानसमाख्यानां [मी. द. अ. ३. पा. ३. अधि. ७. सू. १४]	१००
श्लेषगर्भत्वे	३०१
श्वेतं छागमालभेत	१००
षाड्जीवैवार्षभी चैव [ना. शा. अ. २८. श्लो. ४२.]	१५९
षोडशनायकबहुलः [ना. शा. अ. १८. श्लो. ८८]	२१७
स एव सत्कविगिराम् [व्य. वि. २. श्लो. ११६. पृ. १०८]	३०२
स एव सर्वशब्दानाम् [व्य. वि. २. श्लो. ११५. पृ. १०८]	३०२
संस्कृतप्राकृतमागध॰ [रु. का. लं. अ. २. श्लो. १२. पा. भे. प्राकृतसंस्कृत]	२४०
सत्त्वे निविशतेऽपैति [पा. म. भा. सू. (IV. I. 44) वोतो गुणवचनात्]	१३
सदृक् सदृशसंवादि [का. द. परि. २. श्लो. ५८]	२५५
सन्ति तत्र त्रयो मार्गाः [कुन्तकः व. जी. उन्मेष. १. का. २४. पा. भे. संप्रति तत्र ये.]	१५२
समासश्च बहुव्रीहिः [का. द. परि. २. श्लो. ६१]	२५५
समासोक्तिः सहोक्तिश्च	३०५
समिधो यजति	१०१
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च [पुराण १, १, ३७-३८, वायुमत्स्यादयः]	३
सर्वरसलक्षणाढ्या [ना. शा. अ. १८. श्लो. ११२]	२१८
सलक्षणसदृक्षाभाः [का. द. परि. २. श्लो. ५९]	२५५
सवर्णतुलितौ शब्दौ [का. द. परि. २. श्लो. ६०]	२५५
सामान्यान्यथासिद्धेः	९५
साम्यरूपा विवक्षायां [भामहोत्प्रेक्षालक्षणे २]	२०
सुप्तिङन्तचयो वाक्यं [अ. को. का. १. व. ६ श्लो. २. पा. भे. तिङ्सुबन्त]	२८८
स्त्रीप्राया चतुरङ्का [ना. शा. अ. १८. श्लो. ५९]	२१५
स्थानाभिधानभाञ्जि [रु. का. लं. अ. ३. का. ५२]	२३४
स्थायिनोऽर्थे प्रवर्तन्ते	१५९
स्पर्धते जयति द्वेष्टि [का. द. परि. २. श्लो. ६१]	२५५
हास्यप्रायं प्रेरणं तु [अ. भा. अ. ४. पृ. १८१]	२२१
हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं [का. मी. पृ. ९४]	१८४
हेतुश्च सू[क्ष्मो] लेशोऽथ [भा. का. लं. परि. २. श्लो. ८६]	३२०
हृदयानुप्रवेशेन	३

संकेतोदाहृतपद्यानामकाराद्यनुक्रमणी

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
अकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम् [कु. सं. स. १. श्लो. ४]	२६६
अक्षराणामकारोऽहम् [सु. श्लो. २४६०]*	१४२
अग्रादपि मध्यादपि [प. प्रा. स्थापना. श्लो. ४. पृ. २]†	२०८
अचिराभामिव [कु. म. श्लो. २५८]	२६६
अत्रानुगोदं मृगयानिवृत्त° [र. वं. स. १३. श्लो. ३५]	३२९
अथ नयनसमुत्थं [र. वं. स. २. श्लो. ७५]	२०६
अथ पक्त्रिमतामुपेयिवद्भिः	२७५
अथ भूतानि वार्त्रघ्नः शरेभ्यस्तत्र० [कि. स. १५. श्लो. १]	१५४
अदादिन्द्राय कुण्डले	१६४
अनेन कल्याणि करे गृहीते [र. वं. स. ६. श्लो. ६३]‡	१०१
अनेन सार्धं विहराम्बुराशे° [र. वं. स. ६. श्लो. ५७]	३०५
अन्ययान्यवनितागतचित्तं [शि. व. स. १०. श्लो. २८]	२९९
अप्यवस्तुनि कथाप्रवृत्तये [कु. सं. स. ८. श्लो. ६]	२८
अब्धिर्लङ्घित एव वानरभटैः [Quoted in अ. स. पृ. ७२]	२८७
अभिनवकुशसूचि [का. मी. पृ. १११]	१८६
अरण्यानी क्वेयम्० [नवसाहसाङ्के पल्लवस्य$ न. सा. स. ५. श्लो. ८१]	३२५
अलंकृतजटाचक्रम्	२०२
अलोलकमले चित्तम् [दे. श० श्लो. ७४]	२४०
अवैमि तदपध्यानात्	१४१
अश्वीयसंहतिभिः	१५३
असतामहितो महितः [रु. का. लं. अ. ३. श्लो. ५५]	२३८
असंतोषो (? षा) दिवाकृष्ट०	२६५
असंभृतं मण्डनमङ्गयष्टेः [कु. सं. स. १. श्लो. ३१]	२९६
अस्त्युत्तरस्याम् [कु. सं. स. १. श्लो. १]	२०५
अहिणवकमलदलारुणि [रु. का. लं. पृ. ६०]	२५०
आकाशयानतटकोटिकृतैकपादाः [का. मी. पृ. ४३]	१७९
आगामिनीं जगृहिरे [शि. व. स. ५. श्लो. १४]	१५३
आचार्यस्य त्रिभुवनगुरोः [वे. सं. अं. ३. श्लो. २०]	२१८
आनन्दमन्थरपुरन्दर [चन्द्रचूडचरिते]	३४१
आयुर्घृतं नदी पुण्यम्	३१९
आवर्जिता किंचिदिव [कु. सं. स. ३. श्लो. ५४]	२६६
आश्वपेहि मम सीधुभाजनात्	२०८
आसीन्नाथ पितामही तव	३०४
इतः स दैत्यः प्राप्तश्रीः [कु. सं. स. २. श्लो. ५५]	२८
इदं ते केनोक्तम्	२७६
इन्दुर्लिप्तमिवाञ्जनेन [बा. रा. अं. १. श्लो. ४२]	२८०

* Attributed to Bhāskarasena. The reading is somewhat different: °विष्णुः स्वयं ब्रुवन्। भवता सोऽपि यत्सत्यमाकारेण लघूकृतः ॥

† पा. भे. मूलादपि मध्यादपि विटपादप्यङ्कुरादशोकस्य । पिशुनस्थमिव रहस्यं समन्ततो निष्क्रसति पुष्पम् ॥

‡ पा. भे. अनेन पाणौ विधिवद् गृहीते

$ परिमलापरनाम्नः पद्मगुप्तस्य according to B. S. S. edition

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
उत्क्षिप्तं सह कौशिकस्य	३०५
उत्तिष्ठन्त्या रतान्ते भरमुरगपतौ [वे. सं. अं. १. श्लो. ३]	१३०
उदन्वच्छिन्ना भूः स च [बा. रा. अं. १. श्लो. ८]	१४८
उदाररचनारोचिर्भासुरा राजते कथा	२२८
उदेति सविता ताम्रः [सु. श्लो. २२० क्षेमेन्द्रस्य]	२२८
उद्दामोत्कलिकाम् [र. अं. २. श्लो. ४]	१९९
उद्यता जयिनि कामिनीमुखे	१५०
उन्नत्यै नमति प्रभुं [सु. श्लो. ३२३५]	३२६
उपोढरागेण विलोलतारकम् [सु. श्लो. १९६९. पाणिनेः]	१७७
एकत्रासनसङ्गते [अ. श. श्लो. १९]	१८०
एकस्मिन् शयने पराङ्मुखतया [अ. श. श्लो. ८३]	४९
एकाकिनी यदबला [सु. २२३४. रुद्रटस्य]	३२१
कटस्थलप्रोषितदानवारिभिः	११४
कदा नौ सङ्गमो भावी [का. द. परि. २. श्लो. २६१]	२९
कपोलफलकावस्थाः [उ. लं. ल. वृ. ३]	२६५
कण्ठस्य तस्याः स्तनबन्धुरस्य [कु. सं. स. १. श्लो. ४२]	३२०
कष्टं कथं रोदिति थूत्कृतेयम्	११३
कष्टा वेधव्यथा नित्यम् [अ. रा. अं. १. श्लो. ४०]	१४५
काराविऊण खउरम्	१५६
कालिङ्गं लिखितमिदं वयस्य	१५९
किं वृत्तान्तैः परगृहकृतैः [सु. श्लो. २५४४ मार्तण्डदिवाकरस्य]	३०३
किं ददातु किमधातु भर्तव्य-भरणाकुलः	३२६
किमित्यपास्याभरणानि यौवने [कु. सं. स. ५. श्लो. ४४]	३०६

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
कीर्तिप्रतापौ भवतः	१५१
कीर्तयस्तव लिम्पन्तु	१८३
कुशलसखीजनवचनैः	३५०
कोपात्कोमललोलबाहुलतिका [अ. श. श्लो. ९]	२००
कश्चित्काले प्रसरता	३५०
क्षितिविजितस्थिति [का. द. प. ३. श्लो. ८५]	२४९
क्षुण्णं यदन्तःकरणेन वृक्षाः	११६
क्षुण्णं यदन्तःकरणेन नाम	११७
गतासु तीरं तिमिघट्टनेन [न. सा. स. १. श्लो. ५२]	२६५
गतोऽस्तमर्को भाति [का. द. प. २. श्लो. २४४]	२०२
गर्भग्रन्थिषु वीरुधाम् [का. मी. पृ. १०८]	१८६
घनाघनार्यं न नभा [रु. का. लं. अ. ३. श्लो. ५४]	२३८
चकाशे पनसः प्रायैः	१३६
चकासतं चारुचमूरुचर्मणा [शि. व. स. १. श्लो. ८]	१५४
चकोरा एव चतुराः	२८६
चञ्चद्भुजभ्रमित° [वे. सं. अं. १. श्लो. २१]	७९
चन्दनासक्तभुजग°	२६५
चन्द्रबिम्बादिव विषम् [का. द. प. ३. श्लो. ३९]	२६६
चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि [अ. शा. अं. १. श्लो. २०]	१९८
चारुता वपुरभूषयदासाम् [शि. व. स. १०. श्लो. ३३]	१४९
च्युतसुमनसः कुन्दाः [औ. वि. च. पृ. १४६. मालवकुवलयस्य]	१८६
च्युता दिवः स्थास्नुरिवाचिरप्रभा	२६६
जयति क्षुण्णतिमिरः	२२७
जयति चतुर्दश°	१८३
जयमदन गजदमन	२४९
जहि शत्रुकुलं कृत्स्नम् [का. द. प. ३. श्लो. १३१]	१५३

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
जालेन सरसि मीना [रु. का. लं. अ. ८. श्लो. १०४]	२८८
ज्योत्स्नापूरप्रसरविशदे [का. मी. पृ. ४३]	१७९
तं कृपामृदुरवेक्ष्य भार्गवं [र. वं. स. ११. श्लो. ८३]	११९
ततः कुमुदनाथेन [म. भा. द्रो. प. अ. ८. श्लो. ४०८]	२५३
तत्पादनखरत्नानां	२७८
तदीयमातङ्गेति	१५४
तद्वक्त्रं यदि मुद्रिता [बा. रा. अं. २. श्लो. १७]	३५२
तद्वक्त्रचन्द्रे नवयौवने० [वि. शा. भं. अं. १. श्लो. १४]	३३९
तनुमतोऽनुमतः सचिवैः	२२८
तरङ्गय दृशोऽङ्गणे [बा. रा. अं. ३. श्लो. २५]	३५१
तव कुसुमशरत्वम् [अ. शा. अं. ३. श्लो. ३]	१४९
तव प्रसादात् कुसुमायुधोऽपि [कु. सं. स. ३. श्लो. २०]	१५४
तस्यारिजातं नृपतेः	२२८
तापोऽम्लुः प्रसूतिं (see दाहोऽम्भः)	२८५
तीर्त्वा भूतेशमौलिस्रजम् [अ. रा. अं. ५. श्लो. २]	२७४
तीर्थे तदीये गजसेतुबन्धात् [र. वं. स. १६. श्लो. १३]	१५१
तुरङ्गकान्ताननहव्यवाह° [शि. व. स. ३. श्लो. ३३]	१६
तेषां गोपवधूविलाससुहृदाम्	९२
त्यज करिकलभ	१६४
त्वत्काटाक्षावलीलीलाम्	५७
त्वक्सारवी निवसनं मृगचर्मशय्या [बा. रा. अं. ६. श्लो. ४०]	१२५
त्वगुत्तरासङ्गवतीमधीतिनीम् [कु. सं. स. ५. श्लो. १६]	१५४
त्वमेवं सौन्दर्येति [वा. का. लं. सू. अधि. ३. अ. २. सू. १३]	२०७
दलत्कन्दलभारभूमिः	१३८
दशरश्मिशतोपमद्युतिम् [र. वं. स. ८. श्लो. २९]	२२७
दामोदरकराघातः [सु. र. भाण्डागारे बाणस्य]	३३०
दारुणरणे रणन्तम्	२०९
दाहोऽम्भः प्रसूतिं पचः [वि. शा. भं. अं. २. श्लो. २१ पा. भे. तापो]	२८५
दिग्मातङ्गघटा विभक्तचतुरा [औ. वि. च. पृ. १३८. भट्टप्रभाकरस्य]	१७३
दिलीप इति राजेन्दुः [र. वं. स. १. श्लो. १२]	३५१
दिव्येयं न भवति किन्तर्हि मानुषी	२०६
दीर्घीकुर्वन्पटुमदकलम् [मे. दू. श्लो. ३१]	९३
दुग्धोदधिशैलस्थौ [रु. का. लं. अ. ७. श्लो. ३७]	२९८
दूरागाधभवान्ध [संकेतकारस्य सोमेश्वरस्य]	२२४
दृढतरनिविष्टमुष्टेः	१४२
दृष्ट्या केशव गोपरागहृतया	३०
द्युवि यद् गामिनी [कि. स. १५. श्लो. ४३]	२५०
द्रविणमापदि भूषणमुत्सवे [भ. श. श्लो. ५]	३५०
द्वयं गतं संप्रति शोचनीयताम् [कु. सं. स. ५. श्लो. ७१]	१४३
द्विषतां जहि निःशेषम्	२२८
द्विषतां मूलमुच्छेत्तुम्	२२८
द्विषद्भयस्त्वस्यसि कथम्	२२८
द्वीपादन्यस्मादपि [र. अं. १. श्लो. ६]	२१९
धूलीकदम्बपरिधूसर° [का. मी. पृ. १०९]	१८६
न मया गोरसाभिज्ञम् [का. द. परि. ३. श्लो. १०८]	२५०
नमस्त्रिभुवनाभोग° [का. मी. पृ. ९०]	१८३
नयाशु च रथम्	२२८
नववयोलास्याय वेणुस्वनः	१७३

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
नवीनविभ्रमोद्भेद०	२९२
नानाकारेण कान्तभ्रूः	२२८
निम्नमभिमुख (:)	२६४
नियतमगम्यदश्यम्	२४९
[रु. का. लं. अ. ५. श्लो. २८]	
निरर्थकं जन्म गतं नलिन्या	३०६
[बि. का. श्लो. ३२]	
निरानन्दः कौन्दे मधुनि	२०५
[वा. का. लं. । अधि. ३. अ. १ सू. १३]	
निरीक्ष्य संरम्भनिरस्तधैर्यम्	१५५
[कि. स. ३. श्लो. २१]	
निर्णेतुं शक्यमस्तीति	३१६
[का. द. परि. २. श्लो. २१८]	
निर्मोकमुक्तिमिव०	३५०
निवेदितं निःश्वसितेन	२९
[कु. सं. स. ५. श्लो. ४६]	
न्यञ्चत्कुञ्चितमुत्सुकम्	३१२
न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र	३१६
[कु. सं. स. १. श्लो. ७]	
पतिते पतङ्गमृगराजि	३५०
[शि. व. स. ९. श्लो. १८]	
पत्युः शिरश्चन्द्रकलामनेन	८८
[कु. सं. स. ७. श्लो. १९]	
पयस्विनीनां धेनूनां	२५१
पर्याप्तपुष्पस्तबकस्तनीभ्यः	५६
[कु. सं. स. ३. श्लो. ३९]	
पशुपतिरपि तान्यहानि	३१६
[कु. सं. स. ६. श्लो. ९५]	
पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णं	१७४
[का. द. परि. २. श्लो. २५७]	
पाण्डोर्नन्दन नन्दनम्	१७९
[का. मी. पृ. ४२]	
पाण्ड्योऽयमंसार्पितलम्बहारः	१६४
[र. वं. स. ६. श्लो. ६०]	
पातालमेतन्नयनोत्सवेन	२६५
[न. सा. स. १४. श्लो. २३]	
पायात् स शीतकिरणाभरणो भवो वः	१५४
पिबतो वारि तवास्याम्	२५०
[रु. का. लं. अ. ५. श्लो. ३०]	

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यात्	२८५
[कु. सं. स. १. श्लो. ४४]	
पृथुरसि गुणैर्मूर्त्या	१७
प्रत्याख्यातरुषः कृतं समुचितं	१०५
प्रभ्रस्यत्युत्तरीयत्विषि	७७
प्रसीदत्यालोके	१८०
[धनिकस्य द. रू. प्र. २. सू. ७]	
प्राचेतसो मुनिवृषा प्रथमः कवीनाम्	२१९
[म. च. अं. १. श्लो. ७]	
बर्हिर्दैव सदनं दामि	१००
बाले नाथ विमुञ्च मानिनि	११३
[अ. श. श्लो. ५७]	
बालेन्दुवक्राण्यविकाशभावात्	२६६
[कु. सं. स. ३. श्लो. २९]	
बिभ्राणः शक्तिमाशु	१३१
[सू. श. श्लो. २५]	
बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः	१५४
[मे. दू. श्लो. ११]	
भर्तृदारिके दिष्ट्या वर्धामहे	२८
[मा. मा. अं. १. पृ. ५४]	
भाति पतितो लिखन्त्याः	४२
[र. अं. २. श्लो. ११]	
भैरवाचार्यस्तु दूरादेव	३५०
[ह. च. उ. ३. पृ. १०५]	
भ्रमर द्रुमपुष्पाणि	२२९
मदो जनयति प्रीतिं	२८८
[भा. का. लं. परि. २. श्लो. २७]	
मधु द्विरेफः कुसुमैकपात्रे	५७
[कु. सं. स. ३. श्लो. ३६]	
मधुपराजिपराजितमानिनी	२२७
मधुसुरभिणि षट्पदेन	२७१
[कि. स. १०. श्लो. ३४]	
मध्ये व्योम त्रिशङ्कोः शतमखविमुखः	११९
मनीषिताः सन्ति गृहेऽपि	३०८
[कु. सं. स. ५. श्लो. ४]	
मनुष्यवृत्त्या समुपाचरन्तम्	७७
मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा	२८
[पा. शि. ५२. म. भा. वॉ. १. पृ. २]	
मय्यासक्तश्चकितहरिणीहारिनेत्रत्रिभागः	१०६

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
मरुल्लास्यं त्यजति	३१५
महदपि परदुःखं शीतलं	११६
[विक्र. अं. ४. श्लो. २३]	
महेश्वरे वा जगताम्	२०५
[भ. वै. श. श्लो. ८४]	
मा गाः पातालमुर्वि	१७९
[का. मी. पृ. ४३]	
मालाकार इवारामे	१६४
मूर्खत्वात् पाशवेन इन्द्रः	२५१
मूर्ध्ना जाम्बवतोऽभिवाद्य	२२०
मृग्यश्च दर्भाङ्कुरनिर्व्यपेक्षाः	३०८
[र. वं. स. १३. श्लो. २५]	
मैनाकः किमयं रुणद्धि	२२०
[हनु. अं. ४. श्लो. ९]	
यथा रन्ध्रं व्योम्नश्चलजलद०	३१५
यदुवाच न तन्मिथ्या यद्	१२६
[र. वं. स. १७. श्लो. ४२]	
यद्यप्य (न) नुपचरितः	२९४
यमिन्द्रशब्दार्थनिषूदनम्	११६
[शि. व. स. १. श्लो. ४२]	
यः स्थलीकृत	१३०
याते द्वारवतीं तदा मधुरिपौ	१७६
यातो विक्रमबाहुरात्मसमताम्	२२०
[र. अं. ४. श्लो. २० पा. भे. नीतो विक्रम०]	
या घर्मभासस्तनयापि०	३५१
[शि. व. स. १२. श्लो. ६७ पा. भे. या घर्मभानोः]	
यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य	२७७
[अ. रा. अं. १. श्लो. ४]	
या शैशिरी श्रीस्तपसा	२९४
यां दृष्ट्वापि समुत्सुके मनसि मे०	१५५
ये सन्तोषसुखप्रबुद्धमनसः	२०४
[भ. वै. श. २९]	
योगपट्टो जटा जालम्	२९०
यो यः शस्त्रं बिभर्ति	२०३
[वे. सं. अं. ३. श्लो. ३२]	
रक्तच्छदत्वं विकचा वहन्तः	२४२
[सु. श्लो. १८१७ शकवृद्धेः]	
रक्तस्त्वं नवपल्लवैरहमपि	१९९
[सु. श्लो. १३६४. श्रीयशोवर्मणः]	
रघुर्भृशं वक्षसि तेन	३०४
[र. वं. सः ३. श्लो. ६१]	
रविसंक्रान्तसौभाग्य	६७
[रा. अ. का. स. १६. श्लो. १३]	
रागस्यास्पदमित्यवैमि	१९०
[ना. अं. १. श्लो. ५]	
लाक्षालक्ष्यललाटपट्टम्	१८०
[अ. श. श्लो. ६०]	
लावण्णुज्जलङ्कु	२४
लीलावधूतपद्मा	१९९
[र. अं. २. श्लो. ८]	
वदनमिदं सममिन्दोः	३३१
[रु. का. लं. अ. ८. श्लो. ७७]	
वदामि भवतस्तत्त्वम्	१४६
वल्लीवल्कपिनद्धधूसरशिराः	३०३
वस्त्रायन्ते नदीनाम्	२२७
[वा. का. लं. सू. अधि. ४. अ. १. सू. १०]	
वागर्थाविव संपृक्तौ	२५५
[र. वं. स. १. श्लो. १]	
वाताहारतया जगद्	१९९
[भ. श. ८७]	
वारणागगभिरासा	२४९
[शि. व. स. १९. श्लो. ४४]	
विकसति सति तस्मिन्	१७९
विभजन्ते न ये भूपम्	१२३
विराटस्यास्माभिः	१३८
[वे. सं. अं. १. श्लो. ११]	
विलसदमरनारीनेत्रनीलाब्जखण्डा०	२७६
विवृद्धात्माप्यगाधोऽपि	४२
विशन्तु वृष्णयः शीघ्रम्	३५०
विश्वामित्रः श्वमांसं श्वपच इव	१३८
[ना. अं. ४. श्लो. १४]	
वेगं हे तुरगाणाम्	२२८
व्रीडायोगान्नतवदनया	७९
[सु. श्लो. १३३५ यशःस्वामिनः]	
शक्या भङ्क्तुण्टसिति (१)	३५०

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
शश्वद्दर्शनलोपि संततमः° [संकेतकारस्य सोमेश्वरस्य]	१३१
शिशिरमासमपास्य गुणोऽस्य [शि. व. स. ६. श्लो. ६५]	१५४
शीतांशोरमृतच्छटा यदि कराः	१७४
शीर्णपर्णाम्बुवाताश° [उ. का. लं. २. पृ. ३७]	२९१
श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी° [मे. दू. श्लो. ४१]	२००
श्रवणैः श्रव्यमनेकैः [बा. रा. अं. ३. श्लो. १२]	२१९
श्रियः पतिः श्रीमति शासितुम् [शि. व. स. १. श्लो. १]	१७९
श्रीहर्षो निपुणः कविः [र. अं. १. श्लो. ५; प्रि. द. अं. १. श्लो. ३; नागा. अं. १. श्लो. ३]	२१९
श्रुतिसमधिकमुच्चैः [शि. व. स. ११. श्लो. १]	१५८
श्रुत्वापि नाम बधिरः	१५५
श्रोणीबन्धस्त्यजति तनुताम्	३१३
संचारपूतानि दिगन्तराणि [र. वं. स. २. श्लो. १५५]	२८८
स त्वं सम्यक् समुन्मील्य	२५२
स दक्षिणापाङ्गनिविष्टमुष्टिम् [कु. सं. स. ३. श्लो. ७०]	३०३
सद्यं बुभुजे महाभुजः [र. वं. स. ८. श्लो. ७]	३१७
समतया वसुवृष्टिविसर्जनैः [र. वं. स. ९. श्लो. ६]	१४९
समुत्थिते धनुर्ध्वनौ [अर्जुनचरिते]	१९०
सम्पदो जलतरङ्गविलोला	१४३
स रणे सरणे न [रु. का. लं. अ. ३. श्लो. ५३]	२३८
सर्वकार्यशरीरेषु [शि. व. स. २. श्लो. २८]	१६७
सर्वक्षितिभृतां नाथ [वि. क्र. अं. ४. श्लो. ५१]	१७२
सर्वाशारुधि दग्धवीरुधि सदा [सु. श्लो. १७०८ भट्टबाणस्य]	२२४
स वः पायादिन्दुः	२६५
सस्नुः पयः पपुरनेनिजुः [शि. व. स. ५. श्लो. २८]	१४९
सा बाला वयमप्रगल्भ॰ [अ. श. श्लो. ३४]	३२३
साम्यं सम्प्रति सेविते [वि. शा. भ. अं. १. श्लो. २५]	१८६
सा रक्षतादपारा ते [दे. श. श्लो. १६]	२३६
सितनृशिरःस्रजा (च)	२५०
सौजन्याम्बुमरुस्थली॰	२७४
सौधादुद्विजते त्यजत्युपवनम् [वि. शा. भ. अं. ३. श्लो. २]	१३१
स्तनयुगमश्रुस्नातम् [का. श्लो. २१. पृ. २६]	१३०
स्त्रीणां केतकगर्भ°	२०६
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः [कु. सं. स. १. श्लो. १]	२६६
स्नेहं समापिबति कज्जलमादधाति	१३१
स्रस्तः स्रग्दामशोभाम् [र. अं. १. श्लो. १६]	१९८
स्वचरणविनिविष्टैः	२०५
स्वञ्चितपक्ष्मकवाटम् [भासस्य]	२००
स्वीकृत्य कल्पतरुतो [संकेतकारस्य सोमेश्वरस्य]	३५२
हन्त हन्तररातीनाम्	२२९
हरेः कुमारोऽपि कुमारविक्रमः [र. वं. स. ३. श्लो. ५५]	२०६
हर्षस्य सप्तभुवनप्रथितोरुकीर्तेः	१८३
हा वत्सा खरदूषणप्रभृतयः [म. च. अं. ४. श्लो. ११.]	२२०
हिरण्मयी साऽऽस लतेव जङ्गमा [भ. का. स. २. श्लो. ४७]	२६६
हृदि विगतरजोविकारे	२५२

संकेतोदाहृतानां प्राकृतपद्यानां संस्कृतच्छाया-सहितानामकाराद्यनुक्रमः ।

पद्यं	पृष्ठाङ्कः
अहिणवकमलदलारुणि णमोणु फुरन्तेण केण । जाणिज्जइ तरुणीअणहु णिद्धा भणु, अहरेण ॥ [अभिनवकमलदलारुणेन मौनं स्फुरता केन । ज्ञायते तरुण्याः स्नेहः स्निग्ध ! भण, अधरेण ॥]	२५०
काराविऊण खउरं गामउडो मज्जिऊण जिमिऊण । नक्खत्तं तिहिवारे जोअसिअं पुच्छिउं लग्गो ॥	१५६
[कारयित्वा क्षौरं ग्रामवृद्धो मंक्त्वा भुंक्त्वा । नक्षत्रं तिथिवारौ ज्यौतिषकं प्रष्टुं लग्नः ॥]	२४
लावण्णुज्जलङ्कु घरि ढोल्लु पइट्ठा । [लावण्योज्ज्वलाङ्गो गृहे धवः प्रविष्टः ।]	

संकेतस्थानां विशिष्टानां शब्दानामकाराद्यनुक्रमः

	पृष्ठाङ्कः
अघोरघण्ट	३०८
अङ्क	२१९
अङ्ग (जनपद)	१८४
अगुरु (उत्पाद)	१८४
अजिन (उत्पाद)	१८४
अधीरा (नायिका)	१८१
अनिरुद्ध (कामसुत)	१४३
अनुकूल (नायक)	१८०
अन्तादिक (यमक)	२३१
अपभ्रंश (भाषा)	२४०
अभिसारिका (नायिका)	१८१
अर्जुन	१५३
अर्थ (शास्त्र)	१५७
अर्धपरिवृत्तिसंज्ञ (यमक)	२३२
अर्बुद (गिरि)	१८४
अवरुद्धा (स्त्री)	१८१
अवलोकिता	२१८
अश्मक (जनपद)	१८४
अश्व (उत्पाद)	१८४
अश्वत्थामन्	१५३,१५६,१६२
आख्यान (लक्षण)	३,२१२
आख्यायिका	२११
आग्नीषोमीय (याग)	१०१
आग्नेय (याग)	१०१
आत्मीया (स्त्री)	१८१
आद्यन्तक (यमक)	२३५
आनर्त (जनपद)	१८४
आरभटी (वृत्ति)	१८०,२२१
आर्यावर्त	१८४
आवृत्ति (यमक)	२२९,२३०
आश्वयुज	१८५
इतिहास (लक्षण)	३
इन्दुकील (गिरि)	१८४
इन्द्रद्वीप	१८४
इभमुख (विनायक)	२४६
इषः	१८५
ईहामृग (रूपकभेद)	२१३
उत्कल (जनपद)	१८४
उत्तरापथ	१८४

	पृष्ठाङ्कः
उत्तरायण	१८५
उत्सृष्टिकाङ्क (रूपकभेद)	२१३
उपकथा (कथाभेद)	२१२
उपनागरिका (काव्यालंकारवृत्ति)	१८७,२२४
उपमा	२५३
उपलावती (नदी)	१८४
उर्वशी	२१३
उषा	१४३
ऊर्जः	१८५
ऊर्जस्विन् (बन्ध)	८६
ऐरावती (नदी)	१८४
कच्छीय (जनपद)	१८४
कथा	२११
कनिष्ठा (नायिका)	१८१
कन्यकुब्जीय (देश)	१८७
कपिमा(? शा) (नदी)	१८४
कम्बोज (जनपद)	१८४
करतोया (नदी)	१८४
करभ (उत्पाद)	१८४
करीर (उत्पाद)	१८४
कलहान्तरिता (नायिका)	१८१
कला (चतुःषष्टि)	५
कलापक (काव्यभेद)	२१२
कलिङ्ग (जनपद)	१८४
कलिन्द (गिरि)	१८४
कविप्रसिद्धि	१५७
कविसमय	१८४
कसे(रु)मत् (द्वीप)	१८४
कश्मीर (देश)	१३६
कस्तूरिका	१८४
काकतालीय (न्याय)	१५०
काञ्ची (यमक)	२३५
कादम्बरी [? कामन्दकी]	२१८
कामरूप (गिरि)	१८४
काम (शास्त्र)	१५७
कामशास्त्रभाषा	१२३
कामसुत (अनिरुद्ध)	१४३
कावेरी (नदी)	१८४
काव्यगिर् (लक्षण)	३
काष्ठा (निमेषा दशपञ्चैव)	१८५

	पृष्ठाङ्कः
किंपुरुष (वर्ष)	१८४
कीरत् (जनपद)	१८४
कुङ्कुम (उत्पाद)	१८४
कुण्डल (जनपद)	१८४
कुभूत (,,)	१८४
कुमारीद्वीप	१८४
कुलक (काव्यभेद)	२१२
कुहू (नदी)	१८४
कृष्णवेणी (नदी)	१८४
केकय (जनपद)	१८४
केरल (जनपद)	१८४
केशव	२५४
कैशिक (जनपद)	१८४
कैशिकी (वृत्ति)	१८०,१८७,२२१
कोङ्कण (जनपद)	१८४
कोल्लगिरि	१८४
कोसल (जनपद)	१८४
क्रथ (जनपद)	१८४
क्षुद्रकथा (कथाभेद)	२१२
खड्ग (यमक)	२४७
खड्गादिसन्निविष्टत्व	२४६
खण्डकथा	२११
खण्डिता (नायिका)	१८१
खर्जूर (उत्पाद)	१८४
गङ्गा (नदी)	१८४
गन्धर्व (द्वीप)	१८४
गर्भ (यमक)	२३०
गभस्तिमत् (द्वीप)	१८४
गाङ्ग (देश)	१८४
गिरिनगर	१८४
गीत (कला)	५,१५७
गीतविरुद्ध	१५८
गुग्गुल (उत्पाद)	१८४
गेय (काव्य)	२२१
गोदावरी (नदी)	१८४
गोवर्धन	१८४
गौरी	१५९
ग्रन्थि (उत्पाद)	१८४
ग्राम्य	१८७
ग्रीष्म	१८५
घुरी (वाद्य)	१८५
चकोर (गिरि)	१८४
चक्र (काव्यप्रकार)	२४९
चक्रक (यमक) (काव्यप्रकार)	२३२
चतुःषष्टि (गीतनृत्तनाट्यचित्र–कर्मादिका)	५,१५७
चन्द्रभागा (नदी)	१८४
चन्द्राचल (गिरि)	१८४
चमर (उत्पाद)	१८४
चम्पू (वासवदत्तादिवत्)	२१२
चातुर्वर्ण्य	१८४
चारी (नृत्त)	१५९
चारुदत्त	१८०
चिकु	१०१,१३६
चित्तवृत्तिविशेष (रसादि)	१११
चित्र (कला)	१५७
चित्रकर	६०
चित्रकलाविरोध	१५९
चेरल (जनपद)	१८४
चेष्टाविशेष-रसोचित (वृत्ति)	२२५
चैत्र	१८५
[चो]ड (जनपद)	१८४
छेकानुप्रास	२२५
जनक	१६१
जनपद	१८४
जम्बूद्वीप	१८३,१८४
जाति (अष्टादश)	१५८
जालन्धर (गिरि)	१८४
जिन (दन्तक्षत)	१९२
ज्येष्ठा (नायिका)	१८१
डिम (रूपकप्रकार)	२१३
तङ्कण (जनपद)	१८४
तपस्	१८५
तपस्य	१८५
ताण्डव (नृत्त)	१५९
तापी (नदी)	१८४
ताम्रलिप्त (जनपद)	१८४
ताम्रपर्णी (नदी)	१८४
ताम्रपर्ण्य (द्वीप)	१८४
त्रवण (जनपद)	१८४

	पृष्ठाङ्कः
तुङ्गभद्रा (नदी)	१८४
तुरुष्क (जनपद)	१८४
तुवार (,,)	१८४
तोटक (काहलाद्युक्त)	२१३
तोसल (जनपद)	१८४
दक्षिण (नायक)	१८०
दक्षिणपाद (गिरि)	१८४
दक्षिणापथ	१८४
दक्षिणायन	१८५
दण्डक (जनपद)	१८४
दण्डनीति	१५७
दर्दुर (गिरि)	१८४
दाशरथि	२००
दासेरक (जनपद)	१८४
दुड्डी	१३६
दुर्योधन	१६२
दुष्यन्त	१९८
देवदारु	१८४
देवसभ (गिरि)	१८४
देविका (नदी)	१८४
दैवज्ञ	१८५
द्राक्षा (उत्पाद)	१८४
द्रुतविलम्बित (छन्दः)	२१३
द्रोणाचार्य	१५५
द्विपदीच्छन्दः	३३२
धनुः (चित्रकाव्यप्रकार)	२४९
धर्म (शास्त्र)	१५७
धर्मार्थकाममोक्षशास्त्र (विद्या)	१५७
धीरप्रशान्त (नायक)	१८०
धीरललित (नायक)	१८०
धीरा (नायिका)	१८१
धीराधीरा (नायिका)	१८१
धीरोद्धत (नायक)	१८०
धीरोदात्त (,,)	१८०
धृष्ट (नायक)	१८०
नगद्वीप	१८४
नभस्	१८५
नभस्य	१८५
नरकासुर	२८१
नरवाहनदत्तादिचरित	२१२

	पृष्ठाङ्कः
नर्मदा (नदी)	१८४
नागपाश (चित्रकाव्यप्रकार)	२४९
नागर	१८७
नाटक	१५९,१८१,२१९
नाटकमण्डप	४५
नाटकादिनाट्य	१५९
नाटिका (रूपकभेद)	२१३
नाट्य	१५७,१५९
नायक	१८१
नायिका	१८१
नासिक्य (जनपद)	१८४
निदर्शन (कथाभेद)	२१२
निर्वहण (संधि)	२२१
नृत्त	५,१५७,१५९
नृत्तकलाविरोध	१५९
नेपाल (जनपद)	१८४
पङ्क्ति (यमक)	२२९,२३०,२३५
पञ्चाङ्ग	१६७
पताका (अर्थप्रकृति)	२१९
पत्रविद् (आम्नायः)	१५९
पद्यमयी (कथा)	२११
पयोष्णी (नदी)	१८४
परस्त्री (नायिका)	१८१
परिकथा (कथाभेद)	२११
परिवृत्त (यमक)	२२९
परिवृत्ति (यमक)	२३०
पर्णक (उत्पाद)	१८४
पर्या (काव्यभेद)	२१२
पल्लव (जनपद)	१८४
पश्चाद्देश	१८४
पाटलिपुत्र	२५४
पाण्डव	१९४
पाण्डवादिकथा	१८३
पाण्ड्य (जनपद)	१८४
पादसमुद्गक (यमक)	२३४,२३७
पाश (चित्रकाव्यप्रकार)	२४९
पिशाच (भाषा)	२४०
पीलु (उत्पाद)	१८४
पुच्छ (यमक)	२२९,२३०
पुण्ड्र (जनपद)	१८४

	पृष्ठाङ्कः
पुरूरवस्	२६८
पुष्पिताग्रा (छन्दः)	१३७
पुनरुक्ताभास (शब्दालंकार)	२५२
पुराण	३
,, (लक्षण)	१४३
पूर्वदेश	१८४
पृथूदक	१८४
प्रकरण (रूपकभेद)	२१३,२१४
प्रकरी (अर्थप्रकृति)	२१९
प्रतिनायक	१८१
प्रतिभान	४
प्ररोचना (भारतीवृत्त्यङ्ग)	२१९
प्रवह्लिका (कथाभेद)	२१२
प्रवृत्ति (वेषविन्यासादि)	२२१
प्रवेशक	२१९
प्रस्तावना	२१९
प्रहणन	१२३
प्रहसन (रूपकभेद)	२१३
प्रहेलिका	२५१
प्राकृत (भाषा)	२४०
प्राग्ज्योतिष (जनपद)	१८४
प्रेक्ष्य (गेयकाव्य)	२२१
प्रोषितभर्तृका (नायिका)	१८१
प्रौढा (नायिका)	१८१
बर्बर (जनपद)	१८४
बाण (चित्रकाव्यप्रकार)	२४९
बाणासुरसुता	१४३
बाह्लीक (जनपद)	१८४
बिन्दु (अर्थप्रकृति)	२१९
बीज (अर्थप्रकृति)	२१९
बृहत्कथा	२१२
बृहद्गृह (गिरि)	१८४
ब्रह्मोत्तर (जनपद)	१८४
ब्राह्मणवाह	१८४
ब्राह्मणश्रमण	६०
भगवदादि (प्रहस्यमान)	२१७
भरत (जाति)	२२१
भरतप्रसिद्ध (वृत्ति)	१८७
भरद्वाज (कुलोत्तंस)	३५२

	पृष्ठाङ्कः
भाण (रूपकभेद)	२१३
भारत (वर्ष)	१८१,१८४
भारती	१८०,२२१
भारत्यङ्ग	२१९
भार्गव	१७२
भावकत्व	४
भृगुकच्छ (जनपद)	१८४
भैमरथी (नदी)	१८४
मगध (जनपद)	१८४
मठ, मठहर (?) (जनपद)	१८४
मथुरा	२५४
मध्य (यमक)	२३२,२३५,२३९
मध्यदेश	१८४
मध्या (नायिका)	१८१
मधु (मास)	१८५
मन्थल्लिका (कथाभेद)	२१२
मलय (गिरि)	१८४
महाकाव्य	२१३,२१९
महाचारी (नृत्त)	१५९
महायमक	२२९
महाराष्ट्र (जनपद)	१८४
मही (नदी)	१८४
महेन्द्र (गिरि)	१८४
मागध (भाषा)	२४०
माधव (मास)	१८५
माधव	१५३,१८०,३०८
माधवचारुदत्तादि	१८०
मालती	१५३,३०८
माला (यमक)	२३५
माल्यशिखर (गिरि)	१८४
माहिष्मक (जनपद)	१८४
माहिष्मती	१८४
मिश्रा (वृत्ति)	२२१
मुक्तक (काव्यभेद)	२१२
मुख (यमक)	२२९,२३०
मुग्धा (नायिका)	१८१
मुद्गरक	१८४
मुरजबन्ध (चित्रकाव्यभेद)	२४७
मुरल (जनपद)	१८४

	पृष्ठाङ्कः
मुरारि	१८७
मुशल (चित्रकाव्यभेद)	२४९
मुशलिन् (बलराम)	२४६
मूलदेव	२१४
मूलप्रति (हस्तलिखित)	२३१
मेकल (गिरि)	१८४
मेरु („)	१८४
मोक्ष (शास्त्र)	१५७
म्लेच्छ (जाति)	१८७
यमक	२५२
यमुना (नदी)	१८४
यवन (जनपद)	१८४
युग्मक (यमक)	२३०
रङ्गद्वार	१५९
रमठ ? (जनपद)	१८४
रसमथ (समुद्र)	१८४
राम (बलराम)	२४६
राम (दाशरथि)	२७७
रामचरित	३१०
राम-युधिष्ठिर (नायक)	१८१
रावण	२००
रावणगङ्गा (नदी)	१८४
रावण-दुर्योधन (प्रतिनायक)	१८१
रूपक	२१४
लक्षणा (पञ्चधा)	१७
लक्ष्मण	१२९
लण्ड	१३६
लम्पाक (जनपद)	१८४
लवण (समुद्र)	१८४
लवली	१८४
लाटानुप्रास	२२५,२२६
लाटी	१८६
लेखकवैगुण्य	२३१
लोहितगिरि	१८४
लोहित (नद)	१८४
लोकयात्राविद्	१८५
वंश (यमक)	२३१,२३२
वक्त्र (यमक)	२३५

	पृष्ठाङ्कः
वञ्जुरा (नदी)	१८४
वत्सराज	५०,१२६,१९९
वरुण (द्वीप)	१८४
वर्षा	१८५
वसन्त	१८६,२५४
वसन्ततिलकादि (छन्दः)	११९,२१३
वानवासिक (जनपद)	१८४
वानायुज („)	१८४
वाराणसी	१८४
वार्त्रघ्नी (नदी)	१८४
वासकसज्जा (नायिका)	१८१
वासवदत्ता	१७८
वासुदेव (भगवद्)	१९४
वितस्ता (नदी)	१८४
विदेह (जनपद)	१८४
विन्ध्य (गिरि)	१८४
विपाशा (नदी)	१८४
विप्रलब्धा (नायिका)	१८१
विरहोत्कण्ठिता („)	१८१
विशेषक (काव्यभेद)	२१२
विष्णु	१५९,२८१
वीथी (रूपकभेद)	२१३
वृत्ति (लक्षण)	२२५
वृत्त्यनुप्रास	२२५
वृष्णि	१९९
वेणी (नदी)	१८४
वेश्या (नायिका)	१८१
वेषविन्यासादि	२२१
वैतालीयादि (छन्दः)	२१३
वैदर्भ (जनपद)	१८४
वैदूर्य	१८४
वैयाकरण	८,१६६
वक्तृ	१६६
व्यस्त (यमकभेद)	२३१,२३२
व्यस्तरूप („)	२३४
शक (जनपद)	१८४
शकुन्तला	१९८
शक्ति (चित्रकाव्यभेद)	२४९
शठ (नायक)	१८०

	पृष्ठाङ्कः
शतहृदा (नदी)	१८४
शाक्य	२१७
शार्दूलविक्रीडितादि (छन्दः)	२१३
शास्त्र (लक्षण)	३
शिखा (यमकभेद)	२३५
शिव	१५९
शिवा-सुता (उषा)	१४३
शिशिर	१८५
शुक्र	१८५
शुचि	१८५
शूद्रकादिवत् (परिकथा)	२११
शूरसेन्यादिभाषा	२१९
शूल (चित्रकाव्यभेद)	२४९
शोण (नद)	१८४
शौरसेनी (भाषा)	२४०
श्रव्य	२०३
श्रावण	१८५
श्रीगदितादि (गेयप्रेक्ष्यकाव्यप्रकार)	२२१
श्रीपर्वत	१८४
श्लोकावृत्ति (यमक)	२३७
श्वभ्रवती (नदी)	१८४
संस्कृत (भाषा)	२४०
सकलकथा (कथाभेद)	२११
सट्टक (रूपकभेद)	२१३
सत्यभामा	१७८
सन्दंश (यमकभेद)	२२९,२३०
संदष्टक (यमकभेद)	२३०,२३५
सन्दानितक (काव्यभेद)	२१२
सप्तद्वीप	१८३
समवकार (रूपकभेद)	२१३
समस्त (यमकभेद)	२३१,२३२,२३७
समुद्गक (यमकभेद)	२२९,२३०,२३५
समुद्र	१८४
समुद्रदत्त	२१४
सरल (उत्पाद)	१८४
सरस्वती (नदी)	१८४
सर्वाङ्गना (वेश्या)	१८१
सर्वतोभद्र (चित्रकाव्यभेद)	२४८
सहस्	१८५
सहस्य	१८५
सहृदय	४
सह्य (गिरि)	१८४
सात्वती (वृत्तिभेद)	१८०
सात्त्विक (भाव)	५५
सागरिका	१९९,२१९
सिंहल (जनपद)	१८४
सिन्धु (नदी)	१८४
सीता	१४४
सुग्रीव	२७७
सुब्रह्म (जनपद)	१८४
सुराष्ट्र (,,)	१८४
सुरोदक (समुद्र)	१८४
[? सुह्म] (जनपद)	१८४
सूर्पारक (,,)	१८४
सैन्धव (उत्पाद)	१८४
सौदामिनी	२१८
सौम्य (द्वीप)	१८४
सौवीर (उत्पाद)	१८४
स्रग्धरादि (छन्दः)	२१३
स्रोतोञ्जन (उत्पाद)	१८४
स्वस्तिक (चित्रकाव्यभेद)	२४९
स्वस्त्री (नायिका)	१८१
स्वाधीनपतिका (,,)	१८१
हयग्रीव	१७८
हर (?) (जनपद)	१८४
हरहूर (?) जनपद	१८४
हरिणी	१३६
हरिवर्ष	१८४
हरि	१७८
हर्ष	२११
हल (चित्रकाव्यभेद)	२४९
हिडिम्बा (नदी)	१८४
हिमवत् (गिरि)	१८४
हिमालय (गिरि)	१८४
हूण (जनपद)	१८४
हूर (?) (,,)	१८४
हेमन्त	१८५,२५४
हैमन्त	१८५

संकेते निर्दिष्टानां ग्रन्थानामकाराद्यनुक्रमः ।

	पृष्ठाङ्कः
अनङ्गवती (मन्थल्लिका)	२१२
अभिज्ञानशकुन्तला	२१२
अर्जुनचरित	१९०
अर्थशास्त्र	१५७
आयुर्वेद	५
उदात्तराघव	१८२
ऋग्वेद	१०१
कामशास्त्र	५,१२३
कादम्बरी	१७८,२११
काव्यकौतुक	५५
,, (तद्वृत्ति)	५५
काव्यादर्श (नामक का. प्र. सं.)	३५२
कुट्टनीमत	२१२
कुमारसम्भव	१८२,२११
गीता	५
गोरोचना (मन्थल्लिका)	२१२
गोविन्द (आख्यान)	२१२
चन्द्रचूडचरित	३४१
चाणक्यादि	५
चेटक (प्रवह्लिका)	२१२
ज्योतिःशास्त्र	५
तद्वृत्ति (काव्यकौतुकवृत्ति)	५
तर्क	५
तापसवत्सराज (नाटक)	१७८
दण्डनीति	१५७
दर्शपौर्णमासप्रकरण	१०१
धनुर्वेद	५
धातुवाद	५
नवसाहसाङ्क	३२५
नागानन्द	२१३
पञ्चतन्त्र	२१२
पञ्चबाणलीलाकथा	१३६
पुराण	३

	पृष्ठाङ्कः
बालरामायण	२१९
बृहत्कथा	२१४
भट्टिकाव्य	१२२
भामहविवरण	२०१
मधुमथनविजय	७३
मयूरमार्जार (निदर्शन)	२१२
महाभारत	१९४
मालतीमाधव	१८०
मुनिसूत्र (भरतमुनि)	४७
मूलदेवचरित	२१४
मृच्छकटिक	१८०
यजुः (वेद)	१०१
रतिप्रलाप (रघुवंश स० ८)	५०
रत्नपरीक्षा	५
रत्नावली	५०,७९
राघवानन्द (नाटक)	७८
रामायण	१५१,१८२,१९५
लीलावती	२११
वात्स्यायन (कामशास्त्र)	१२३
वासवदत्ता (चम्पू)	२१२
विषमबाणलीला	१७२,१७३
वेणीसंहार	८०,१५३
वेद	१५१
वेदवाक्य	७
वृत्ति (अभिनवगुप्तकृता काव्यकौतुकवृत्ति)	५५
शूद्रक (परिकथा)	२११
सप्तशतक	२१२
साम (वेद)	१०१
सामयजुर्ऋग्वेद	१०१
सेतुबन्ध	२१३
हयग्रीववध	२१३
हरिविजय	१७८,३२२
हर्षचरित	२११

संकेते निर्दिष्टानां वादिनां ग्रन्थकृतां च अकाराद्यनुक्रमः

	पृष्ठाङ्कः
अद्यतन	२७४,२९६
अनुमानवादिन्	१०७
अन्य	८,५४,५९,२३१,२३५,२६८,२९६,२९७
अन्विताभिधानवादिन्	९६,९८,१०१
अभिनवगुप्त	४७,५५
अभिहितान्वयवादिन्	११
अमरुक	२१२
अलङ्कारकार	३६
आचार्यभर्तृमित्र	१६
आनन्दवर्धन	१३६
उद्भट	३६,१११,१७५,२०१,२४२,२४३,२४४,२४६,२७२,२७९,३१७,३२०,३४२
कपिलमुनि	२७४
कापिल	४९
काव्यप्रकाशकार	२४५
(see ग्रन्थकृत् & कार)	
काहल	२१३
कुन्तक	१३५
कुन्तक	१५२
कुमारिल (भट्ट)	१६
केचित्	५९,२०१,२०४,२२८,२३१,२४२,२५१,२६२,२७८
केनचित्	२६
कैश्चित्	३०२
ग्रन्थकार (काव्यप्रकाशकार)	२९३
ग्रन्थकृत् (,,)	२३५
चन्द्रिकाकार	५५
चिरन्तन	३४३
जैमिनि	९९,१४०
तात्पर्यवादिन्	९८
तिलक	२९५
तोत (भट्ट)	४३,५५
दण्डिन्	२०५
दण्डिप्रभृति	२८५
धनिक	५५
ध्वनिकार	३६,१८९
ध्वनिकारादि	३५२
नायक (भट्ट)	३,३६
नैयायिकादि	२६
पल्लव	३२५
प्रभाकर	११,२६
प्राभाकर	९८
बौद्ध	१५
भट्ट	११,१५
भट्टकुमारिल	१६
भट्टतोत	४३,५५
भट्टनायक	३,३६
भट्टमुकुलादि	१८
भट्टोद्भट	१७५,२०१,३४२
भरत	३४,८०,२०५
(see मुनि)	
भर्तृमित्र (आचार्य)	१६
भामह	२०,३६,११०,२०३,२८८,३२०,३३४
भाष्यकार (पतञ्जलि)	१२५,२६२
भोजराज	३३५
मम (सोमेश्वर)	१३१
मीमांसक	१८,१००
मीमांसकादि	७
मुनि (see भरत)	४३,५१,५२,५६,१५८,२१३,२२५
मुनि (वाल्मीकि)	१९५
मुरारि	२८७
मुकुलादि (भट्ट)	१८
यायावरीय	२२४
रत्नाकर	३२२
रुद्रट	३६,१५२,१५७,२३४,२८५,२९०,३००,३११,३१२,३१६,३१९
लोल्लट	२३६
लोल्लटादि	४१
वक्रोक्तिजीवितकार	३६
वयम् (सोमेश्वर)	१४४
वाक्पतिपाद	२७७
वामन	३६,१४५,२०५,२७७,३०५

	पृष्ठाङ्कः		पृष्ठाङ्कः
	१९६,२२६	वैयाकरण	८,२९५
	२९६	वैशेषिक	१५
ee मुनि)	६७,१९५	व्यक्तिविवेककार	३७
	५	व्यास	१९५
	५	शङ्कुक	४१,४३
	२६२	शब्दालङ्कारैकान्तवादिन्	११०
	२६,२९२	श्रीहर्ष	२१९

संकेतावतरणानां संपादकेन समुपलब्धानां मूलग्रन्थानामकाराद्यनुक्रमः ।

	पृष्ठाङ्कः
अनर्घराघव	१४५,२७४,२७७
अभिधावृत्तिमातृका	१५,२२
अभिनवभारती	४१,४४,२२१
अभिज्ञानशाकुन्तल	१४९,१९८
अमरकोश	२८८
अमरुशतक	९,४९,११३,१८०,३२३
अलङ्कारसर्वस्व	२८७
उद्भटकाव्यालङ्कारसारसंग्रह	८६,२२५,२६५,२९१,३४२
औचित्यविचारचर्चा	१७३,१८६
काठकसंहिता	१०१
कादम्बरी	१३०
काव्यमीमांसा	१७९,१८३,१८४,१८५,१८६
काव्यादर्श (दण्डिन्)	२९,१५३,१७४,२०२,२४९,२५०,२५५,२६४,२६६,२६८,२७४,३१६
किरातार्जुनीय	१५४,१५५,२५०,२७१
कुमारसंभव	२८,२९,५६,५७,८८,१४३,१५४,२०५,२६६,२८५,२९६,३०२,३०३,३०६,३०८,३१६
कुट्टनीमत	२६६
तंत्रवार्तिक	१६,१००,१०१
दशरूपक	१८०,२१८,२१९,२२१
,, (धनिक)	५५
देवीशतक	२३६,२४०
द्रोणपर्व (महाभारत)	२५३
ध्वन्यालोक	१,१०,६६,७९,८३,१०३,११६,२०४
नवसाहसाङ्कचरित	२६५,३२५
नागानन्द	१३८,१९०,२१९
नाट्यशास्त्र	४०,५१,५२,१५९,१८०,१८१,१९५,२०५,२१३,२१४,२१५,२१६,२१७,२१८,२२१,२२५
पद्मप्राभृतक (चतुर्भाणी)	२०८
पाणिनीयाष्टाध्यायी	२२६
पाणिनीयशिक्षा	२८
पातञ्जलमहाभाष्य	१३
प्रियदर्शिका	२१९
बालरामायण (नाटक)	१२५,१४८,२१९,२८०,३२२,३५१
ब्रह्माण्डपुराण	३
बिह्लणकाव्य	३०६
भल्लटशतक	१९९,३५०
भट्टिकाव्य	२६६
भर्तृहरिवैराग्यशतक	२०४,२०५
भामहकाव्यालङ्कार	२०३,२८८,३२०,३३४
महावीरचरित	२१९,२२०
मानवश्रौतसूत्र	१०१
मालतीमाधव	२८
मीमांसादर्शन	९९,१००
मेघदूत	९३,१५४,२००
रघुवंश	१०१,११९,१२६,१४९,१५१,१६४,२०६,२१९,२२७,२५५,२८८,३०४,३०५,३०८,३१७,३२९,३५१
रत्नावली	४२,१९८,१९९,२१९,२२०
रामायण	६७
रुद्रटकाव्यालङ्कार	११३,१३३,१७२,१८३,२२३,२३४,२३८,२४०,२४९,२५०,२८८,२९८,३१२,३३१
वक्रोक्तिजीवित	१३५,१५२,३०२
वामनकाव्यालङ्कारसूत्र	१२३,२०५,२०७,२२७
विक्रमोर्वशीय	११६,१७२
विद्धशालभञ्जिका	१३१,१८६,२८५,३३९
वेणीसंहार	७९,१३०,१३८,२०३,२१८
व्यक्तिविवेक	१२१,१२५,१३१,१५१,१५४,३०२,३५१
शिशुपालवध	१६,११६,१४९,१५३,१५४,१५८,१६७,१७९,२४९,२९९,३५०,३५१
श्लोकवार्तिक	२,९७,१०७
सुभाषितावली	७९,१४२,१७७,१९९,२२४,२२८,२४२,३०३,३२१,३२६
सूर्यशतक	१३१
हर्षचरित	३५०

ADDITIONS AND CORRECTIONS

INTRODUCTION

Page	Line	
3	24	Read प्रतिरियं for प्रतिरियं
6	7	Read A and B and C mss. for A and B mss
9	28	Read Māṇikyacandra for Māṇikycandra.

TEXT

Page	line				
५	13	Read	नार्या	for	नार्यो
	18	,,	निबद्धुं शक्यम् ।	,,	निबद्धुं । शक्यम्
९	24	,,	°प्राप्तकालयोः	,,	°प्राप्त कालयोः
१६	12	,,	°त्वादेः	,,	°त्वादे
	29	,,	°भर्तृमित्रेण	,,	°भतृमित्रेण
१८	20	,,	इति	,,	इमिति
१९	21	,,	यत्र नेति	,,	यत्रानेति
२२	14	,,	आयुर्घृतम्	,,	आयुर्घृतद्
२३	20	,,	मर्त्याश्रित°	,,	मत्याश्रित°
३०	27	,,	°स्तद्व्यञ्जकः	,,	°स्तद्व्यञ्जकः
४५	28	,,	सकलभोग्यत्व°	,,	सकलयोग्यत्व°
४८	24	,,	दूराद्	,,	राद्
४९	11	,,	°ह्येकघनशोक°	,,	°कघमशोक°
६०	29	,,	निद्रां	,,	निद्रा
६१	13	,,	अलस°	,,	अरस°
८८	29	,,	च ।	,,	चा
९२	21	,,	°व्यापारस्य	,,	°व्यापारस्यै
९३	13	,,	वाच्यो ध्वनि°	,,	वाक्योर्ध्वनि°
९५	15	,,	मुख्येऽर्थे°	,,	मुख्येऽथ
१०१	6	,,	क्रयेण	,,	क्रमेण
११९	27	,,	°तिप्रिय°	,,	°तिप्रय°
१२०	27	,,	°नूद्य गोप°	,,	°नूद्यगोप°
१५०	18	,,	शोच्या	,,	शोभ्या
१६२	20	,,	निकृष्टै°	,,	निकृष्ट°
१६८	29	,,	पुंव्यञ्जनं	,,	व्यञ्जनं
१७२	16	,,	°त्पुनरुक्तं	,,	°त्पुनरु
१७३	30	,,	नन्वत°	,,	न त्वेत°
१८४	8	,,	°कलिङ्गकोसल	,,	°कलिङ्गकासल°
	24	,,	°स्रोतोञ्जन°	,,	°स्रोताञ्जन°
	27	,,	प्रत्यगेव	,,	प्रत्यमेव

Page	line				
१८६	15	Read	°क्रान्ततुंलिङ्गं	for	°क्रान्ततृंलिङ्गं
१९४	19	,,	°मवश्यमङ्गी°	,,	°मवश्ममङ्गी°
१९७	24	,,	°अलंकार्यत्वाभावात्	,,	अलंकार्यत्याभावात्
२०४	14	,,	°विषयमोजः	,,	°विषयभोजः
२०७	24	,,	द्रुमाः	,,	द्रुमः
२०८	19	,,	दृश्यसे	,,	दृश्यसे
२१२	14	,,	°श्रयेण [न] दीर्घ°	,,	°श्रयेण दीर्घ°
२१३	13	,,	उत्सृष्टिकाङ्क	,,	°उत्सृष्टिका-अङ्क
२१८	27	,,	अङ्कान्त°	,,	अङ्गान्त°
२१९	17	,,	सोऽवलग्न°	,,	साऽवलग्न°
२२१	12	,,	स्त्रीगीतनृत्तयुता	,,	स्त्रीगीतवृत्तयुता
२३६	23	,,	तृतीययोरावृत्तौ	,,	योरावृत्तौ
२३७	13	,,	उपक्षिणोति	,,	उपक्षिणो
२४१	15	,,	°वच्योः। कृन्त°	,,	°वच्योः कृन्त°
२४४	16	,,	यथाऽस्माकं	,,	यदाऽस्माकं
		,,	पूर्णोपमाया	,,	पूर्णोषमाया
२४५	28	,,	विरूपा°	,,	त्रिरूपा°
२४७	17	,,	सा-मा-मा	,,	सा-मा-म
२५३	6	,,	°नन्वयोत्प्रेक्षास°	,,	°नन्ययोत्प्रक्षो ससंदेहा°
	11	,,	विरोधयुक्	,,	विरोधमुक्
	14	,,	°नुमानतः	,,	°नुतानतः
	21	,,	प्रथमं	,,	प्रथम
२८१	27	,,	भावस्तस्यैव	,,	भाघस्तस्यैव
३०९	16	,,	°भिधायकस्य	,,	°भिधेयकस्य
३२०	23	,,	सरोभिः	,,	साराभिः
३२१	23	,,	प्रश्नप्रतिवचनयोः	,,	प्रतिवचनयोः
३३१	16	,,	सहमुंडमाला°	,,	सहजमुडमाला°
३३५	24	,,	°क्ष्यवसरे रस	,,	°क्ष्यावसररस°
३३७	28	,,	°तारापरिकर°	,,	तारापरिर°
३३८	15	,,	°त्प्रेक्षयोः	,,	°त्प्रेक्षायोः
	17	,,	कलङ्काक्ष°	,,	कलङ्काऽक्ष°
३४९	25	,,	रवौ	,,	रवेः